सीरते
ग़ौसे आज़म
आलम फ़करी
ASIF ALI BAREILLY SAHRIF

बुक पढ़ने से पहले स्केन करने वाले के लिये दुआ कीजिए नज़्आ के वक्त कलमा नसीब हो और गुम्बदे ख़ज़रा का दीदार नसीब हो

खाकसार आशिफ अली बरेली

मै शरीफ

#MessageKaro

7088866786

सीरते ग़ौसे आज़म

अदबी दुनिया
399, जामए मस्जिद, दिल्ली-110006
फ़ोन: 23250122

नाम किताब : सीरते ग़ौसे आज़म

तालीफ : आलम फ़िक्री

सन इशाअत : 1424 हि०

सफ़ाहत : 351

मतबअ : नाहिद प्रेस, दिल्ली

Publisher

ADABI DUNIYA
399, Matia Mahal, Jama Masid,
Delhi-110006
Phone: 232501222

दीबाचह

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

ऐ अल्लाह! तेरी ज़ात बेमिस्ल व यक्ता है और इस जहाँ में तुझ सा अज़ीम कोई नहीं। तेरी अज़मतों का डंका इस जगह में चारसू है। तूने हज़रते इंसान को इसलिए बनाया था के ये तादमे आख़िर तेरी अज़मतों का बोल बाला करता रहे। तेरी इनायत के गुन गाता रहे, तेरी मोहब्बत का ताज हर दम अपने सर पर सजाए फिरे। मगर ये हर किसी को नसीब ना हुआ के वो दुनिया में तेरा बन्दा कहलवाते बल्के तेरी निगाहे इनायत का और तेरे जलालो इक्राम का वही हक़दार हुआ जो दुनिया का सब कुछ लुटा कर तेरी मोहब्बत का तालिब हुआ। उसे सिवाए इसके कुछ ग़र्ज़ ही ना था के निगाहे बातिन में तू उसे हर घड़ी नज़र आए। वो सर झुकाए तो खुद को तेरी मोहब्बत में खोया हुआ पाए। वो सर उठाए तो निगाहे बातिन में तू ही उसे नज़र आए। वो जिस तरफ भी देखे उसे तेरी ज़ात के सिवा और कुछ भी भला ना लगे। ग़र्ज़ जिन्होंने तेरी मोहब्बत को अपने तन मन में बसा लिया तो फिर तू ही उनकी निगाहे नाज़ पर ज़ाहिर हुआ। तू ही उनकी गुफ्तार में बोला। वो जिधर चले तेरी अज़मतों के चर्चे करते गए। उन्हीं को ज़िन्दगी का अस्ल राज़ मिला। वो तेरे बन्दे बड़े क़लील हैं। अगरचे सदियाँ गुज़र गईं मगर आज भी उनके निशान तेरी मोहब्बत की खुश्बू फैला रहे हैं। वो कौन थे कहाँ से आए जिन पर तू बेहिजाब हुआ जो आज भी तेरी मोहब्बत के आसार हैं। वो चन्द तेरे बन्दे हैं जो तेरे बने और तू उनका बना उन्हीं बन्दों में से एक तेरे अज़ीम वली का नाम हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमत उल्लाह अलेह है।

आज दुनिया में उनके नाम का चर्चा मख़लूक़े खुदा की ज़बान पर जारी है मगर कितने लोग हैं जिनको ये मालूम है

ये अज़ीम वली कहाँ पैदा हुआ, कहाँ कहाँ से इल्म की प्यास बुझाई और कहाँ अल्लाह की मोहब्बत में ज़िन्दगी के शब व रोज़ गुज़ार गया। वो ज़िन्दगी के कौन से कठिन मराहिल थे जिन्हें वो तेरी मोहब्बत की बिना पर बिला चूँ व चरा बर्दाश्त करता गया। इस मक़सद की ख़ातिर ये तेरे एक बरगज़ीदा बन्दे की वो दास्तान है जो अहले दुनिया के सामने है। उनके हालात मुख़्तलिफ किताबों में बिखरे पड़े हैं। इस ज़रूरत के पेशे नज़र मेरे मोहतरम दोस्त जनाब आलिम फिक्री के दिल में उनकी ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ पहलूओं को उजागर करने की ख़्वाहिश उस वक़्त पैदा हुई जब वो उनके मज़ार पर 1990ई॰ में हाज़िर हुए। वो जितने दिन भी वहाँ रहे उनके दिल में यही ख़्वाहिश करवटें लेती रही, ऐ अल्लाह! वतन वापस जाकर मैं तेरे इस बरगज़ीदा वली की ज़िन्दगी के बारे में अपने क़लम से अक़ीदत के फूल न्यूछावर करूँ।

अल्लाह की अता कर्दा तोफीक़ से उन्होंने इस किताब को तालीफ किया जो आपके सामने है। अगरचे इस किताब का मवाद मुख़्तलिफ किताबों से जमा किया गया मगर जमा करने में सिर्फ इसी लगन को मद्दे नज़र रखा गया है के हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमत उल्लाह अलेह की ज़िन्दगी के हर उस गोशे को उनके चाहने वालों पर आशकार किया जाए जिसमें तेरी मोहब्बत जलवागर है और मेरे ख़याल के मुताबिक़ उन्होंने अल्लाह की तोफीक़ से उसे खूब निभाया है।

ऐ हमारे रब! अपनी बारगाह से हम पर रहमतें नाज़िल फरमा और किताब को जो के तेरे वलीऐ ख़ास की सवानह हयात पर मुशतमिल है उसे अपने बारगाह में शर्फे क़बूलियत अता फरमा। आमीन

9 मई 1995ई॰ — अहक़र

चाह मीराँ। लाहोर — अबु तय्यब मोहम्मद नवाज़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

फ़हरिस्त

आबाओ अज्दाद

हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के आबाओ अजदाद सादात अेज़ाम से थे। घराना-ए-सादात की अज़मत ज़माने भर में मश्हूर है क्योंके ख़ानदाने सादात की निसबत हज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से है इसलिये सय्यद मोअज्ज़ि और मुकर्रम हैं। आपके नाना जान हज़रत अब्दुल्लाह सोमअई(रह॰अ॰) का शुमार उस दौर के ऊरफ़ा-ए-कामिलीन में होता है। आपके वालिद सय्यद अबु सालेह भी यक्ताऐ ज़माना औलियाऐ इक्राम से थे। इसी तरह आपकी वालिदा माजिदा हज़रत उम्मुलख़ैर फ़ातिमा(रह॰अ॰) और आपकी फूफी सय्यदा आयशा(रह॰अ॰) भी आरफ़ात और सालेहात से थीं। तआरूफ़ के तौर पर उन मुक़द्दस अफ़्राद के बारे में चन्द सतूर पेशे ख़िदमत हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह सोमअई(रह॰अ॰)

हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सोमअई(रह॰अ॰) जीलान के मशायख़करान और अहले तक़्वा हज़रात से थे आप बड़े आबिदो ज़ाहिद, मुनकसिरूल मिज़ाज और साहिबे फ़ज़्लो कमाल थे। आपकी सख़ावत जीलान भर में मश्हूर थी। कहा जाता है के आप बड़े रोशन बातिन के मालिक थे इसलिये आपकी करामात मश्हूर ज़माना थीं। आप मुसतहाबुल दआवात बुज़ुर्ग थे। अगर किसी पर ग़ुस्सा आ जाता, तो अल्लाह तबारक व तआला आपके ग़ुस्से की वजह से उस पर ग़ज़ब फरमाता। इसी तरह अगर आप किसी पर शफ़्क़त फरमाते और इसके लिये कलमाऐ ख़ैर फरमाते तो अल्लाह तबारक व तआला उस पर उसको जज़ा अता फरमाता। आप ज़ईफ़ी और किब्रसिनी के बावजूद बकसरत नवाफिल पढ़ा करते थे इन्तिहाई ख़ुशूअ के

साथ ज़िक्र में मशगूल रहते थे।

आप अक्सर अमूर के वाक़ेअ होने से पहले उनकी ख़बर दे दिया करते थे और जिस तरह आप उनके रोनुमा होने का इत्तिला देते थे उसी तरह ही वाक़ेयात रूपज़ीर होते थे। (क़लायद-उल-जवाहर)

करामत:- हज़रत अबु अब्दुल्लाह क़िज़्वीनी (रह॰अ॰) फ़रमाते हैं के एक दफ़ा का वाक़ेया है के उनके कुछ इरादतमंद एक तिजारती क़ाफ़ले के साथ समरक़न्द जा रहे थे जब एक लक़ोदिक़ सहरा में पहुंचे तो मुसल्लह डाकूओं ने क़ाफ़ले पर हमला कर दिया। हज़रत के मुरीदों के मुंह से बेइख़्तियार "शेख़ सोमअई (रह॰अ॰)" निकल गया। फ़ौरन देखा के शेख़ अब्दुल्लाह सोमअई (रह॰अ॰) उनके पास खड़े हैं और बाआवाज़ बुलंद फ़रमा रहे हैं:

"सुब्बुहुन क़ुद्दूसुन रब्बुनल्लाहु तफ़र्रक़ो या ख़ैलु अन्ना"

(हमारा अल्लाह पाक और बेऐब है ऐ घुड़सवारो! दूर हो जाओ हम से)

शेख़ की आवाज़ सुनते ही डाकू भाग खड़े हुए और क़ाफ़ला बिलकुल महफ़ूज़ रहा। अहले क़ाफ़ला ने अब शेख़ को तलाश करना शुरू किया मगर वो कहीं नज़र ना आए। जब ये क़ाफ़ला वतन वापस आया और लोगों से इस वाक़ये का ज़िक्र किया तो सब ने हलफ़न बयान किया के शेख़ सोमअई (रह॰अ॰) जीलान से कहीं बाहर नहीं गए और हम उन्हें यहीं देखते रहे। इसी तरह शेख़ सोमअई (रह॰अ॰) की मुतअद्दिद करामात लोगों में मशहूर थीं।

सय्यदा आयशा (रह॰अ॰)

सय्यदा आयशा (रह॰अ॰) हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह॰अ॰) की फूफी जान थीं। आप का नाम मुबारक आयशा और कुनियत उम्मे मोहम्मद थी। आप बहुत बड़ी आबिदा, आरफ़ा, पाकबाज़ और सालेह ख़ातून

थीं मुश्किल के वक़्त लोग उनसे दुआ कराते थे और बर्कत हासिल करते थे। एक दफ़ा जीलान में सख़्त क़हतसाली थी। लोग दुआयें माँग माँग कर आजिज़ आ गए लेकिन बारिश का एक क़तरा भी ना बरसा। नमाज़े इसतसक़आ भी अदा की मगर बारिश ना हुई। आख़िरकार सय्यदा आयशा(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनसे बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त में बारिश के लिये दुआ माँगने की दरख़्वास्त की। सय्यदा आयशा(रह॰अ॰) ने उसी वक़्त घर के सहन में झाड़ू फेरी और फिर निहायत ख़ुशुअ व ख़ुज़ुअ से दुआ माँगते हुए अर्ज़ की "बारइलाही! झाड़ू तो तेरी ना चीज़ बन्दी ने फेर दी है अब छिड़काओ तू कर दे"। अभी ये अल्फ़ाज़ उनके मुंह में ही थे के बादल छाने लगे और आनन फ़आनन उस ज़ोर की-बारिश हुई के लोग भीगते हुए घरों से निकले।

हज़रत सय्यदा आयशा(रह॰अ॰) का विसाल जीलान में ही हुआ और उन्हें वहीं सपुर्दे ख़ाक किया गया।

हज़रत सय्यद अबु सालेह मूसा जंगी दोस्त

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के वालिद मोहत्रम का इस्मेग्रामी हज़रत सय्यद अबु सालेह मूसा जंगी दोस्त है। आपके जंगी दोस्त मशहूर होने की ये वजह बयान की जाती है के आपको जंगोजिहाद से बहुत उन्स था इसलिये लोग आपको जंगी दोस्त कहने लगे मगर रियाज़-उल-हयात में लिखा है के आप अपने नफ़्स से हमेशा जिहाद फरमाते थे और नफ़्स कशी को तज़किया नफ़्स का मदार समझते थे। चुनाँचे उस मुजाहिदाए नफ़्स में आपने मुकम्मल एक साल तक क़तई खाना पीना तर्क फरमा दिया था एक साल गुज़र जाने के बाद जब ज़रा ख़्वाहिश महसूस हुई तो एक शख़्स ने उम्दा ग़िज़ा और ठंडा पानी लाकर पेश किया आपने उस हदिये को क़बूल

फरमा लिया लेकिन उसी वक़्त फ़ुक़रआ को बुला कर उन्हें तक़सीम कर दिया। और अपने आपको मुख़ातिब करके फरमाया के तेरे अन्दर अभी गिज़ा की ख़्वाहिश पाई जाती है। तेरे वासते नाने जौ और गर्म पानी भी बहुत है। उसी कैफ़ियत में हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम तशरीफ़ फरमा हुए और फरमाया आप पर सलाम हो। खुदाऐ क़दीर ने आपके क़ल्ब को जंगी और आपको अपना दोस्त बना लिया है और मुझे ये हुक्म दिया गया है के मैं आपके साथ इफ्तार करूं। हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम के साथ जिस क़द्र खाना था उसको आपने तनावुल फरमाया। जभी से आपका लक़ब "जंगी दोस्त" हो गया। मूसा इस्मे शरीफ है, अबु सालेह कुनियत है। आपका चेहरा मुबारक आईनाऐ अनवारे रब्बानी का मुरक़्क़ा था।

जिस मेहफिल में आप रौनक़ अफ़रोज़ होते वो मेहफिल मुनव्वर हो जाती थी। ज़बान में बला की फसाहत और शीरनी थी। जब तक आप वअज़ का सिलसिला जारी रखते हाज़रीन सिवाए इन्तिहाई मजबूरी के मजलिसे वअज़ से जुम्बिश नहीं करते थे। अक्सरो बेश्तर आप फरमाया करते थे:

मैं खुदा का बन्दा हूं अल्लाह के बन्दों को मेहबूब रखता हूं। रब तबारक व तआला से हमेशा डरते रहो। ख़िलाफे शरीयत अमूर से एहतराज़ करो। जब किसी मेहफिल में हुज़ूर सय्यद-उल-अम्बिया सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का नाम नामी व इस्मग्रामी आ जाए तो दुरूद शरीफ़ का नज़राना पेश करो। किसी वक़्त अल्लाह तआला को ना भूलो। हर आन परवरदिगारे आलम को समीअ व बसीर जानो।

निकाह का वाक़ेया:- जवानी के आलम में आप का निकाह सय्यदा फातिमा(रह॰अ॰) से हुआ। निकाह की रिवायत यूं बयान की जाती है के अनक़वाने शबाब में सय्यद अबु सालेह अक्सर रियाज़त व इबादत में मशगूल

रहते थे। एक दफा दरया के किनारे इबादत कर रहे थे। खाना खाये हुए तीन दिन गुज़र चुके थे। नागहानी एक सेब दरया में बहता हुआ दिखाई दिया। बिस्मिल्लाह कह कर इसे पकड़ लिया। सेब खाने के बाद दिल ने आवाज़ दी ऐ अबु सालेह! मालूम नहीं इस सेब का मालिक कौन है तूने बग़ैर इजाज़त उसे खा कर अमानत में ख़्यानत की है।

ये खयाल आते ही कपड़े झाड़ कर उठ खड़े हुए और दरया के किनारे किनारे पानी के बहाओ की मुखालिफ सिम्त सेब के मालिक की तलाश में चल दिये। कई दिन के सफ़र के बाद आपको लबे दरया एक वसीअ बाग़ नज़र आया। उसमें सेब का एक तनावुर दरख़्त था। जिसकी शाख़ों से पके हुए सेब पानी में गिर रहे थे। सय्यद अबु सालेह(रह॰अ॰) के दिल ने शहादत दी के जो सेब मैंने खाया है वो इसी दरख़्त का है। लोगों से उस बाग़ के मालिक का पता दरयाफ़्त किया। मालूम हुआ के उसके मालिक हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सोमअई(रह॰अ॰) रईसे जीलान हैं। फ़ौरन उनकी खिदमत में हाज़िर हुए सारा माजरा बयान किया और बस्दे अदब बिला इजाज़त सेब खा लेने के लिये माफ़ी के ख़्वास्तगार हुए।

सय्यद अब्दुल्लाह(रह॰अ॰) खासाने खुदा में से थे। समझ गए के ये नौजवान भी अल्लाह का खास बन्दा है। दिल में तड़प उठी के उसे अपने साया ऐ आतिफ़त में कुर्बे इलाही के मदारिज तय कराऊँ। फरमाया दस साल तक उस बाग़ की रखवाली करो और मुजाहेदाऐ नफ़्स करो फिर सेब माफ करने के मुताल्लिक़ सोचूंगा। हज़रत अबु सालेह(रह॰अ॰) ने रज़ाए इलाही की खातिर फ़ौरन ये शर्त मंज़ूर कर ली और दस साल बाद सय्यद अब्दुल्लाह सोमअई(रह॰अ॰) की खिदमत में अफ्वे ग़ता के लिये हाज़िर हुए उन्होंने फरमाया नहीं अभी और दो साल मेरी

ख़िदमत में रहो फिर तुम्हारे मुताल्लिक़ सोचेंगे। सय्यद अबु सालेह ने ये दो बरस भी निहायत ख़ुशी से गुज़ार दिये के शेख़ अब्दुल्लाह की सूरत में उन्हें एक रहबरे कामिल मयस्सर आ गया था। बारह साल की तवील मुद्दत ख़त्म हुई तो हज़रत अब्दुल्लाह सोमआई(रह॰अ॰) ने उन्हें बुला कर फ़रमाया ऐ फ़रज़न्द तू आज़माईश की कसोटी पर पूरा उतरा है लेकिन अभी एक और ख़िदमत बाक़ी है। वो ये के मेरी एक लड़की है जो पाँऊ से लंगड़ी हाथों से लुंजी और कानों बहेरी और आँखों से अंधी है उस बेचारी को अपने निकाह में क़बूल कर लो तो मैं सेब तुम्हें बख़्श दूंगा।

हज़रत अबु सालेह(रह॰अ॰) ने सय्यद अब्दुल्लाह(रह॰अ॰) की ये बात भी बसरोचश्म मंज़ूर कर ली और इस तरह सय्यदा फ़ातिमा(रह॰अ॰) बिन्ते सय्यद अब्दुल्लाह(रह॰अ॰) सोमआई से उनका निकाह हो गया। शादी के बाद जब सय्यदा फ़ातिमा का सामना हुआ तो ये देख कर हैरान रह गए के उनके तमाम आज़ा सही व सालिम हैं और अल्लाह ने उन्हें कमाल दर्जे के हुस्ने ज़ाहिरी से मुतस्सिफ़ फ़रमाया है। दिल में बसवसा पैदा हुआ के शायद कोई और लड़की है। उसी वक़्त बाहर निकल गए। सुबह शेख़ अब्दुल्लाह(रह॰अ॰) की ख़िदमत में बहाले परेशान हाज़िर हुए। वो अपनी फ़रासते बातिनी से सब कुछ जान गए थे। फ़रमाया ऐ बेटे! जो सिफ़ात मैंने अपनी बच्ची की तुम से बयान की थीं वो सब सही हैं आज तक उसने किसी नामेहरम पर नज़र नहीं डाली इसलिये अंधी है। आज तक उसने ख़िलाफ़े हक़ कोई बात नहीं सुनी इसलिये बहेरी है। आज तक घर से बाहर क़दम नहीं निकाला इसलिये लंगड़ी है और आज तक ख़िलाफ़े शरअ उसने कोई काम नहीं किया इसलिये लुंजी है। शेख़ अबु सालेह भी समझ गए और उनके दिल में अपनी बीवी के लिये कमाल दर्जे की मोहब्बत व इज़्ज़त पैदा हो गई इस

तरह बर्खुरी खुशी उन दोनों पाकबाज़ हस्तियों की रफ़ाक़ते हयात का आग़ाज़ हुआ।

आपके अहेदे हयात में अलक़ादिर बिल्लाह अबु-अल-अब्बास और अलक़ायम बअमरउल्लाह अबु जाफर अब्बासी खुल्फ़ाए बगदाद में से तख़्ते खिलाफ़त पर मुतमक्किन हुए।

खानदानी अज़मत:- सीरते ग़ौसे आज़म में लिखा है के हज़रत ग़ौसे आज़म शेख़ जीलानी(रह॰अ॰) के वालिद बुज़ुर्गवार कितने बड़े जलील-उल-क़द्र रहनुमा और मुर्शिद कामिल थे। जान सभी को अज़ीज़ होती है लेकिन वक़्त का वो मर्द हक़ परस्त जान जैसी अज़ीज़ चीज़ को हक़ की राह में कुर्बान कर देने का अज़्मे मोहक्कम कर चुका था उसकी खुदा व रसूल दोस्ती और मज़हब से सच्ची मोहब्बत का भला उससे बढ़ कर और क्या सबूत हो सकता है।

जहाँ एक तरफ सरकार ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के वालिद बुज़ुर्गवार खासाने खुदा में से थे वहाँ आपकी वालिदा माजिदा वक़्त की इन्तिहाई पाक सीरत खातून और तक़वा व तहारत की बेनज़ीर मुजस्मा थीं जिनका नाम फ़ातिमा और कुनियत उम्मुलखेर थी। ये नाम ही उस बात की शहादत दे रहा है के आप तमामी इक़्सामे खेर की मुकम्मल तफ़्सीर थीं और भला क्योंकर ना होतीं जबके उन्होंने अपने वालिदग्रामी हज़रत अब्दुल्लाह सोमअई(रह॰अ॰) जैसे ज़ाहिद वक़्त से फ़ज़ायलो मुहासिन और फय्यूज़ व बर्कात की गरांमाया दौलत के हुसूल में पूरे हौस्ले से काम लिया था जो एक तरफ अगर रईसाने जीलान में शुमार किये जाते थे तो दूसरी जानिब उनके इल्मो फ़ज़्ल, ज़ुहेदो तक़्वा, फ़ेज़ ज़ाहिरी व बातिनी की जीलान के हर नगर और हर शहर में धूम मची थी।

इब्तिदाई हालात

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) नजीब-उल-तरफ़ैन सय्यद हैं जैसा के पहले बयान कर दिया गया है के आप के वालिद का नाम सय्यद अबु सालेह मूसा(रह॰अ॰) और वालिदा माजिदा का इस्मे गिरामी उम्मुलखैर फ़ातिमा और उनका लक़ब अमतुलजब्बार था।

नाम व कुनियत:- हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का अस्ल नाम हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी है। कुनियत अबु मोहम्मद है। लक़ब मुहीउद्दीन है मगर आम्मातुल मुसलिमीन में आप मेहबूबे सुबहानी, ग़ौस-उल-सिक़लैन और ग़ौस-उल-आज़म के नाम से मशहूर हैं।

सिलसिला नसब:- आप का सिलसिला नसब वालिद माजिद की तरफ से ग्यारह वास्तों से और बवास्ताए मादर मोहतरमा चौदह वास्तों से अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत अली करमल्लाहोवजह तक पहुँचता है। आप वालिद माजिद की निस्बत से हसनी हैं और सिलसिला नसब यूं है:

सय्यद मुहीउद्दीन अबु मोहम्मद अब्दुल क़ादिर बिन सय्यद अबु सालेह मूसा जंगी दोस्त बिन सय्यद अब्दुल्लाह बिन सय्यद याहिया ज़ाहिद बिन सय्यद मोहम्मद शम्सउद्दीन ज़क्रया बिन सय्यद अबुबकर् दाऊद बिन सय्यद मूसा सानी बिन सय्यद अब्दुल्लाह सानी बिन सय्यद मूसा जून बिन सय्यद अब्दुल्लाह महेज़ बिन सय्यद इमाम हसन मुसन्ना बिन सय्यद इमाम हसन बिन सय्यदना अली(र॰अ॰), रहमहमुल्लाह तआला।

आप वालिदा माजिदा की निसबत से हुसैनी हैं और सिलसिला नसब यूं है:

सय्यद मुहीउद्दीन अबु मोहम्मद अब्दुल क़ादिर बिन अमतुलजब्बार बिन्ते सय्यद अब्दुल्लाह सोमअई बिन सय्यद

अबु जमाल बिन सय्यद मोहम्मद बिन सय्यद मेहमूद बिन सय्यद अबु-अल-अता अब्दुल्लाह बिन सय्यद कमालउद्दीन ईसा बिन सय्यद अबु अलाउद्दीन मोहम्मद जव्वाद बिन इमाम सय्यद अली रज़ा बिन इमाम मूसा काज़िम बिन इमाम जाफ़र सादिक़ बिन इमाम मोहम्मद बाक़र इब्ने ज़ेनुलआबेदीन बिन इमाम अबु अब्दुल्लाह हुसैन बिन अमीर-उल-मोमिनीन अली अलमुर्तज़ा(र॰अ॰), रहमहमुल्लाह तआला।

हज़रत मौलाना जामी(रह॰अ॰) जनाब ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के आली मरतबत नसब का ज़िक्र इस तरह करते हैं।

आँ शाह सरअफ़राज़ के ग़ौस-उल-सिक़लैन अस्त
दरअस्ल सही-उल-नसबेन अज़ तरफ़ेन अस्त
अज़ सूऐ पद्रता बहसन(र॰अ॰) सिलसिलाऐ ओस्त
बज़ जानिब मादर दुर्रे दरयाऐ हुसैन अस्त

(वो बड़े मर्तबे वाले बादशाह जो ग़ौस-उल-सिक़लैन के नाम से मश्हूर हैं वो हक़ीक़त में नसब के लिहाज़ से नजीब-उल-तरफ़ेन सय्यद हैं। वालिद माजिद की तरफ से आपका सिलसिला नसब हज़रत इमाम हसन रज़ीअल्लाहो अन्ह से और वालिदा माजिदा की तरफ से आपका सिलसिला नसब हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह से मिलता है।)

<u>असली वतनः-</u> आपका अस्ल वतन क़स्बा नीफ़ इलाक़ा गीलान बिलाद फ़ारस है अरब के लोग उसी को जील और जीलान कहते हैं। क्योंके अरबी में गीलान के गाफ को बदल कर जीलान लिखा जाता है इसी तरह आपको गीलानी या जीलानी जो कुछ भी कहा जाए दुरस्त है। ये तिब्रस्तान के पास है। क्योंके इलाक़ा जील के बाशिन्दों को आम तौर पर जीली कहा जाता है। मश्हूर आलिम फ़ाज़िल हज़रत अबु-अल-फ़ज़्ल अहमद

बिन सालेह जीली उसी इलाके के जील के रहने वाले थे। अजीब बात ये है के हज़रत गौस-उल-आज़म(रह॰अ॰) ने भी क़सीदा गौसिया में अपने आपको जीली फ़रमाया है।

अनाअल जीलिव्यू मुहीउद्दीनू इस्मी

व आलामी अला रासीअलजिबाल

(यानी मैं जील का रहने वाला और महीउद्दीन मेरा नाम है और मेरी अज़मत के झण्डे पहाड़ों पर गड़े हुए हैं)

मालूम होता है जील, गील, कील, गीलान, जीलान सब एक ही इलाके के नाम हैं इस लिये हज़रत को किसी नाम से भी मनसूब किया जाए, ग़लत ना होगा। दुनियाऐ इस्लाम में आम तौर पर आप को गीलानी या जीलानी ही कहा जाता है।

बशारते औलिया क़ब्ल अज़ पैदाईश

आपकी विलादत से बहुत अर्से पहले औलियाऐकबार ने अपकी पैदाईश बुलंद शान और मुम्ताज़ मुक़ाम की बशारात दी हैं जो हस्बे ज़ेल हैं।

<u>हज़रत जुनैद बग़दादी(रह॰अ॰)</u> शेख़-अल-मशायख़ हज़रत जुनैद बग़दादी(रह॰अ॰) जो हज़रत गौस-उल-आज़म (रह॰अ॰) से दो साल पहले गुज़रे हैं एक दिन मुराक़्बे में थे के यकायक उन्होंने सर उठाया और फरमाया मुझे आलमे ग़ैब से मालूम हुआ है के पाँचवीं सदी के वस्त में सय्यद-उल-मुरसलीन अलेहिस्सलात व अलतसलीम की औलद अतहार में से एक कुतब आलिम होगा जिनका लक़ब महीउद्दीन और इस्मे मुबारक सय्यद अब्दुल क़ादिर है और वो ग़ौसे आज़म होगा और गीलान में पैदाईश होगी उनको खात्मुन्नबीय्यीन सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की औलाद अतहार में से आईम्माइक़्राम और सहाबाइक़्राम अलेहिमुर्रिज़वान के अलावा अव्वलीन व आख़रीन के हर वली और वलीय्या की गर्दन पर मेरा क़दम है, कहने का

हुक्म होगा। (तफरीह-उल-ख़ातिर)

हज़रत हसन असकरी(रह०अ०) शेख़ अबु मोहम्मद बताएहा(रह०अ०) का बयान है के इमाम हसन असकरी(रह०अ०) ने बवक़्ते विसाल अपना जुब्ह मुबारक हज़रत शेख़ मअरूफ़ कुरख़ी(रह०अ०) के सपुर्द कर के वसीयत की के ये अमानत मेहबूबे सुबहानी अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) तक पहुँचा देना के मेरे बाद आख़िर सदी पंजुम में एक बुज़ुर्ग होंगे। शेख़ मअरूफ़ कुरख़ी(रह०अ०) ने ये जुब्ह हज़रत जुनैद बग़दादी(रह०अ०) तक पहुँचाया। उन्होंने शेख़ दनवरी(रह०अ०) के सपुर्द किया। इस तरह ये मुक़द्दस अमानत मुनतक़िल होते होते आरिफ़ बिल्लाह के ज़रिये शव्वाल 497 हि० में हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०) तक पहुँच गई। यानी हक़ बहक़दार रसीद। (मख़्ज़न-उल-क़ादरिया)

शेख़ मोहम्मद शबंकी(रह०अ०) आप फरमाते हैं के मैंने अपने मुर्शिद से सुना के ईराक़ के अवताद आठ हैं। (1) हज़रत मअरूफ़ कुरख़ी(रह०अ०) (2) इमाम अहमद बिन हंबल(रह०अ०) (3) हज़रत बशर साफ़ी(रह०अ०) (4) हज़रत मनसूर बिन अम्मार(रह०अ०) (5) हज़रत जुनैद बग़दादी(रह०अ०) (6) हज़रत सरी सक़्ती(रह०अ०) (7) हज़रत सबल बिन अब्दुल्लाह तसतरी(रह०अ०) (8) हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०)।

मैंने आपकी ख़िदमते अक़्दस में अर्ज़ किया के हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) कौन हैं? तो आप ने इर्शाद फरमाया के अब्दुल क़ादिर एक अजमी सालेह मर्द होगा उसका ज़हूर पाँचवीं सदी हिजरी के आख़िर में होगा और उसका क़याम बग़दाद में होगा।(बहुज्जत-उल-असरार)

शेख़ मोहम्मद बिन नओमत-उल-सरूजी(रह०अ०) आप से किसी ने पूछा के इस वक़्त कुतब वक़्त कौन हैं? तो आप ने इर्शाद फरमाया के कुतबे वक़्त इस वक़्त मक्का मुकर्रमा में हैं और अभी वो लोगों पर मख़्फ़ी हैं। उन्हें सालेहीन के सिवा दूसरा कोई नहीं पहचानता। नीज़ इराक़ की तरफ इशारा कर के फरमाया के अनक़रीब एक अजमी शख़्स जिन का नाम नामी इस्म ग्रामी अब्दुल क़ादिर होगा। ज़ाहिर होगा जिन से करामात और ख़ोराके आदात बकसरत ज़ाहिर होंगे और यही वो ग़ौस और कुतब होंगे जो मजमाए आम में *"कदामी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीयिल्लाह"* फरमायेंगे और अपने इस क़ोल में हक़ बजानिब होंगे। तमाम औलियाए वक़्त आपके क़दम के नीचे होंगे। अल्लाह तआला उनकी ज़ाते बाबर्कात और उनकी करामात की तसदीक़ करने की वजह से लोगों को नफ़ा पहुँचाएगा(क़लायद-उल-जवाहर)

हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी(रह०अ०) मोहम्मद बिन सईद बिन ज़राअ-उल-ज़नजानी कुद्स सरह-उल-नुरानी ने अपनी किताब रोज़ात-उल-नवाज़िर व नज़हतुल ख़्वातिर के बाब शशम में उन मशायख़ का जिन्होंने हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह०अ०) के कुतबियत के मर्तबे की शहादत देने का तज़करा फ़रमाया है, ज़िक्र करते हुए लिखा है के आप से पहले औलियाए अर्रहमान में से कोई भी हज़रत का मुनकिर ना था बल्के उन्होंने आप की आमद की बशारत दी। हज़रत हसन बसरी(रह०अ०) ने अपने ज़मानाए मुबारक से लेकर हज़रत सय्यद महीउद्दीन कुतब सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) के ज़मानाए मुबारक तक बिलवज़ाहत आगाह फरमा दिया है के जितने भी औलिया अल्लाह(रह०अ०) गुज़रे हैं सब ने हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) की ख़बर दी है।

(तफ़रीह-उल-ख़ातिर)

हज़रत शेख़ ख़लील बलख़ी(रह॰अ॰) आप एक साहिब कशफ़ बुज़ुर्ग हो गुज़र हैं। एक दिन मजलिस में दर्स दे रहे थे के यकायक उन पर कशफ़ी हालत तारी हुई और फ़रमाया के अल्लाह का एक बरगज़ीदा बन्दा सर-ज़मीने ईराक़ में पाँचवीं सदी के आख़िर में ज़ाहिर होगा। दीने हक़ को उसके दम से फ़रोग़ होगा। वो अपने वक़्त का ग़ौस होगा। ख़ल्के ख़ुदा उसका इत्तिबअ करेगी और वो जुमला औलिया व अक़्ताब का सरदार होगा।

हज़रत शेख़ ख़लील बलख़ी(रह॰अ॰) ने हज़रत ग़ौस-उल-आज़म(रह॰अ॰) से बहुत मुद्दत पहले वफ़ात पाई। (अज़कार-उल-अबरार)

हज़रत अबु अब्दुल्लाह अली(रह॰अ॰) हज़रत इमाम याक़ूब हमदानी(रह॰अ॰) से रिवायत है के मेरे मुर्शिद ने एक दफ़ा मुझे बताया के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की विलादत से कई साल पहले उन्होंने शेख़-अल-मशायख़ अबु अब्दुल्लाह अली(रह॰अ॰) से सुना के ज़मानाए क़रीब में एक बुज़ुर्ग का ज़हूर सर-ज़मीने ईराक़ में होगा जो अल्लाह का ख़ास बन्दा होगा। और उसका नाम अब्दुल क़ादिर होगा। अल्लाह तआला ने इसे तमाम औलिया अल्लाह का सरताज बनाया है(इसरार-उल-मआनी)

हज़रत अबुबकर हवार(रह॰अ॰) शेख़ अबु मोहम्मद बताएही(रह॰अ॰) बयान करते हैं। के हज़रत ग़ौस-उल-आज़म(रह॰अ॰) की विलादते मसऊद से बत्तीस साल पहले रमज़ानुल मुबारक 438 हि॰ में शेख़ ज़माना हज़रत अबुबकर हवार(रह॰अ॰) एक मजलिस में वअज़ फ़रमा रहे थे के यकायक उन पर हालते कशफ़ तारी हुई और उन्होंने फ़रमाया के लोगो! आगाह हो जाओ के वो ज़माना बहुत

क़रीब है जब ईराक़ में एक आरिफ़े कामिल पैदा होगा। उसका इस्मे ग़ामी अब्दुल क़ादिर होगा और लक़ब महीउद्दीन होगा। एक दिन वो हुक्मे इलाही से फरमाएगा।

"क़दामी हाज़िही अला रकाबती कुल्ली वलीउल्लाह" (यानी मेरा क़दम तमाम औलिया अल्लाह की गर्दन पर है।) (अज़कार-उल-अबरार)

शेख़अबुअहमदअब्दुल्लाह-अल-जूनी(रह०अ०)

शेख़ अबु अहमद अब्दुल्लाह-अल-जूनी अलमुकल्लिब बिलहक़ो(रह०अ०) ने 468 हि० कोहे हुर्द में अपनी ख़लवत में इर्शाद फरमाया के अनक़रीब बिलादे अजम में एक लड़का पैदा होगा जिसकी करामात और ख़वारिक़ की वजह से बहुत शोहरत होगी। उसको तमाम औलिया अर्रहमान के नज़दीक मक़बूलियते ताम्मा हासिल होगी। उसके वजूदे बाजूद से अहले ज़माना शरफ़ हासिल करेंगे और जो उसकी ज़ियारत करेगा। नफ़ा उठायेगा। (बहुज्जात-उल-असरार)

विलादत व बशारते विलादत

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) क़सबा जीलान में यकम रमज़ान बरोज़ जुमआत-उल-मुबारक 470हि॰ मुताबिक़ 1075ई॰ को पैदा हुए। मनाक़िब मअेराजिया की रिवायत है के सय्यदना अब्दुल क़ादिर का चेहरा मुबारक बवक़्ते विलादत महेर दरख़्शाँ की तरह रोशन था।

इमाम हाफ़िज़ कसीर दमश्क़ी अपनी तसनीफ़-उल-बदाया व अलनहाया में हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का सने विलादत 470हि॰ लिखते हैं और इमाम याफ़अई(रह॰अ॰) अपनी तसनीफ़ मरात-उल-जनान व अबरात-उल-यक़ज़ान में लिखते हैं के हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) से जब किसी ने आपके साले विलादत के मुताल्लिक़ सवाल किया तो आपने जवाब दिया के मुझ को सही तौर पर तो याद नहीं अल्बत्ता इतना ज़रूर जानता हूँ के जिस साल मैं बग़दाद आया था उसी साल शेख़ अबु मोहम्मद रिज़्क़ुल्लाह बिन अब्दुलवहाब तमीमी का विसाल हुआ और ये 488हि॰ था उस वक़्त मेरी उम्र अठ्ठारह साल थी उस हिसाब से आपका सने विलादत 470हि॰ हुआ।

हज़रत अल्लामा अब्दुर्रहमान जामी(रह॰अ॰) ने नफ़हात-उल-अनस के अन्दर हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के मुताल्लिक़ जो कुछ लिखा है इमाम याफ़अई(रह॰अ॰) की किताब से लिया है और बाद के जुमला सवानेह निगारों के बयानात ज़्यादा तर नफ़हात ही से माख़ूज़ हैं उसी वजह से आम लोगों की राय यही हो गई के हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का सने विलादत 470हि॰ है। बाज़ मोर्रिख़ीन ने उससे इख़्तिलाफ़ किया है मगर बेशतर अहले तहक़ीक़ ने इसे ही तारीख़े विलादत क़रार दिया है वल्लाहू आलम बिलसवाब।

हैरत अंगेज़ वाक़ेयात हज़रत सय्यद अब्दुल
क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की विलादते मसऊद के वक़्त
बहुत से हैरत अंगेज़ वाक़ेयात ज़हूर पज़ीर हुए सबसे
बड़ी बात तो ये है के जब आप रौनक़ अफ़रोज़ आलम
हुए उस वक़्त आपकी वालिदा माजिदा हज़रत उम्मुलख़ैर
फ़ातिमा(रह॰अ॰) की उम्र साठ साल की थी जो आम तौर
पर औरतों का सनेयास होता है और उनको औलाद से
ना उम्मीदी हो जाती है। ये अल्लाह का ख़ास फ़ज़्ल था
के उस उम्र में हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) उनके बतन
मुबारक से ज़ाहिर हुए।

मुनाक़िब ग़ौसिया में शेख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी(रह॰अ॰) से
मनक़ूल है के सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की
विलादत के वक़्त ग़ैब से पांच अज़ीमुश्शान करामतों का ज़हूर हुआ।

(1) जिस रात आप पैदा हुए उस रात आपके वालिद
माजिद हज़रत सय्यद अबु सालेह ने ख़्वाब में देखा के सरवरे
कायनात, फ़ख़्रे मौजूदात, मुनव्वअऐ कमालात, बाअसे
तख़लीक़ कायनात हम्द मुजतबा, मोहम्मद मुसतफ़ा अलेह
अफ़ज़ल-उल-सलात व तसलीमात वमअे सहाबाइक्राम,
आइम्मातुलहदा और औलिया निज़ाम अलेहिमुल रिज़वान
उनके घर जलवा अफ़रोज़ हैं और इन अलफ़ाज़ मुबारका
से उनको ख़िताब फ़रमाया और बशारत से नवाज़ा "ऐ
अबु सालेह! अल्लाह तआला ने तुम को ऐसा फ़रज़न्द
अता फरमाया है जो वली है। वो मेरा बेटा है। वो मेरा
और अल्लाह तआला का महबूब है और अनक़रीब उसकी
वलियाअल्लाह और अक़्ताब में वो शान होगी जो अम्बिया
व मुर्सलीन में मेरी शान है।"

ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) दरमियान औलिया
चूं मोहम्मद(स॰अ॰स॰) दरमियाने अम्बिया(अ॰स॰)

(2) हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) पैदा हुए तो आपके

शानाऐ मुबारक पर नबी अक्रम(स०अ०स०) के क़दम मुबारक का नक़्श मौजूद था जो आप के वली कामिल होने की दलील था।

(3) आपके वालदेन को अल्लाह तआला ने आलमे ख़्वाब में बशारत दी के जो लड़का तुम्हारे हाँ पैदा होगा सुलतान-उल-औलिया होगा उसका मुख़ालिफ़ गुमराह और बद दीन होगा।

(4) जिस रात हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) की विलादत हुई। उस रात जीलान शरीफ़ की जिन औरतों के हाँ बच्चा पैदा हुआ उन सबको अल्लाह करीम ने लड़का ही अता फरमाया और वो हर नोमोलूद लड़का अल्लाह का वली बना।

(5) आप की विलादत माहे रमज़ान-उल-मुबारक में हुई और पहले दिन ही से रोज़ा रखा सहरी से लेकर इफ़्तारी तक आप वालिदा मोहत्रमा का दूध नहीं पीते थे।

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) अलमअरूफ़ गौसे आज़म की वालिदा माजिदा फरमाती हैं के जब मेरा फ़रज़न्द अरजुमंद अब्दुल क़ादिर पैदा हुआ तो रमज़ान शरीफ़ में दिन भर दूध ना पीता था। विलादत के दूसरे साल मौसम अब्र आलूद होने की वजह से लोगों को रमज़ान शरीफ का चाँद दिखाई ना दिया इसलिये लोगों ने मेरे पास आकर सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त कियां के उन्होंने दूध पिया है के नहीं! तो मैंने उनको बताया के मेरे फ़रज़न्द ने आज दूध नहीं पिया। बाद अज़ीं तहक़ीक़ात करने पर इस हक़ीक़त का इन्किशाफ हो गया के उस दिन रमज़ान की पहली तारीख़ थी यानी उस दिन रोज़ा था।

ज़मानाऐ रज़ाअत आपकी वालिदा मोहत्रमा का बयान है के पूरे ज़मानाऐ रज़ाअत में आपका ये हाल रहा

के साल के तमाम महीनों में आप दूध रहते थे लेकिन जूंहो रमज़ान शरीफ़ का महीना शुरू होता तो आप दिन को दूध की बिलकुल रग़बत ना फ़रमाते थे और रमज़ान शरीफ़ का पूरा महीना आपका ये मामूल रहता था के तुलूअे आफ़ताब से ले कर ग़रूबे आफ़ताब तक क़तअन दूध नहीं पीते थे। ख़्वाह कितनी ही दूध पिलाने की कोशिश की जाती यानी रमज़ान शरीफ़ का पूरा महीना आप दिन में रोज़े से रहते थे और जब मग़रिब के वक़्त अज़ान होती और लोग इफ़्तार करते तो आप दूध पीते थे।

वाकेयाते तरबीयत

हज़रत ग़ौस-उल-आज़म(रह०अ०) ने अभी होश नहीं संभाला था के उन्हें एक सदमाए जानकाह से दोचार होना पड़ा। यानी उनके वालिद माजिद हज़रत शेख़ अबु सालेह(रह०अ०) ने अचानक पेके अजल को लब्बेक कहा। और इस तरह आप अपने हादी व आक़ा जनाब सरवरे कोनेन सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की मानिन्द बिल्कुल कमसिनी में दुर्रेयतीम बन गए।

उस वक़्त आपके नाना हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सोमअई(रह०अ०) ज़िन्दा थे उन्होंने यतीम नवासे को अपनी सरपरस्ती में ले लिया। हज़रत अब्दुल्लाह सोमअई(रह०अ०) अपने वक़्त के एक बहुत बड़े वली अल्लाह थे ये इन्हीं का फ़ेज़ान था के हज़रत ग़ौस-उल-आज़म(रह०अ०) की वालिदा माजिदा और वालिद माजिद ने इल्मो इर्फ़ान की इन्तिहाई बुलंदियों को छू लिया था। अब हज़रत ग़ौस-उल-आज़म(रह०अ०) का उनके साया ऐ आतिफ़त में आना किसी सिर्रा इलाही की ग़माज़ी कर रहा था। हज़रत अब्दुल्लाह सोमअई(रह०अ०) का कोई फ़रज़न्द नहीं था उन्होंने अपनी तमाम तर पदराना शफ़्क़त नवासे के लिये वक़्फ़ कर दी उनकी फ़िरासते बातिनी ने मालूम कर लिया था के इस नोनिहाल की जबीने सआदत में नूर विलायत चमक रहा है इस लिये फ़ेज़ाने बातिनी से उन्होंने नन्हे अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) को ख़ूब ख़ूब सेराब किया। गोया हज़रत ग़ौस-उल-आज़म(रह०अ०) के उस्ताद और मुर्शिद अव्वल हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सोमअई(रह०अ०) जैसे जलील-उल-क़द्र आरिफ़े ज़माना थे।

खेल कूद से बे रग़बती बचपन ही से हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी को खेल कूद से कोई रग़बत

नहीं थी। निहायत साफ़ सुथरे रहते और ज़बाने मुबारक से कभी कोई कम अक़्ली की बात ना निकलती थी। अपने लड़कपन के मुताल्लिक़ खुद इर्शाद फरमाते हैं के उम्र के इब्तिदाई दौर में जब कभी मैं लड़कों के साथ खेलना चाहता तो ग़ैब से आवाज़ आती थी के लहू व लआब से बाज़ रहो। जिसे सुन कर मैं रूक जाया करता था। और अपने गर्दोपेश जो नज़र डालता तो मुझे कोई आवाज़ देने वाला ना दिखाई देता था जिससे मुझे दहशत सी मालूम होती और मैं जल्दी से भागता हुआ घर आता और वालिदा मोहत्रमा की आग़ोशे मोहब्बत में छुप जाता था। अब वही आवाज़ मैं अपनी तनहाईयों में सुना करता हूं अगर मुझ को कभी नींद आती है तो वो आवाज़ फ़ौरन मेरे कानों में आकर मुझे मुतानब्बह कर देती है के तुम को इस लिये नहीं पैदा किया है के तुम सोया करो। (खुलासातुल मफ़ाख़िर)

शिकम मादर में इल्म रिवायत है के जब आप पढ़ने के लायक़ हो गए तो आपको क़ुरआन मजीद की तालीम के लिये एक मदरसे में ले जाया गया के क़ुरआन पढ़ने के लिये वहां आपको दाख़िल करवा दिया जाए। कहा जाता है के उस्ताद के सामने आप दो ज़ानो हो कर बैठ गए। उस्ताद ने कहा पढ़ो बेटे बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम आप ने बिस्मिल्ला शरीफ़ पढ़ने के साथ साथ अलम से लेकर मुकम्मल अट्ठारह पारे ज़बानी पढ़ डाले। उस्ताद ने हैरत के साथ दरयाफ़्त किया के ये तुम ने कब पढ़ा और कैसे याद किया? फरमाया वालिदा माजिदा अट्ठारह पारों की हाफ़िज़ा हैं जिनका वो अक्सर विर्द किया करती थीं। जब मैं शिकमे मादर में था तो ये अट्ठारह पारे सुनते सुनते मुझे याद हो गए थे।

मक्तब में दाख़िला एक रिवायत में है के जीलान में एक मुक़ामी मक्तब था। जब हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०

की उम्र पाँच बरस की हुई तो आप की वालिदा मोहतरमा ने आपको उस मक्तब में बैठा दिया। हज़रत की इब्तिदाई तालीम उसी मक्तब मुबारक में हुई। उस मक्तब में आपके असातिज़ा या उस्ताद कौन थे कुतब तारीख़ व सेर इस बारे में ख़ामोश हैं। दस बरस की उम्र तक आपको इब्तिदाई तालीम में काफी दसतरस हो गई।

अपनी विलायत का इल्म होना हुज़ूर ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) फरमाते हैं के जब मैं सिग़्रसिनी के आलम में मदरसे को जाया करता था तो रोज़ाना एक फ़रिश्ता इंसानी शक्ल में मेरे पास आता और मुझे मदरसे ले जाता। खुद भी मेरे पास बैठा रहता। मैं उसको मुतलक़न ना पहचानता था के ये फरिश्ता है। एक दिन मैंने उससे पूछा आप कौन हैं? तो उसने जवाब दिया के मैं फरिश्तों में से एक फरिश्ता हूँ। अल्लाह तआला ने मुझे इस लिये भेजा है के मैं मदरसे में आप के साथ रहा करूँ (क़लायद-उल-जवाहर)

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने फरमाया के एक रोज़ मेरे क़रीब से एक शख़्स गुज़रा जिसको मैं बिलकुल ना जानता था उसने जब फरिश्तों को ये कहते सुना के कुशादा हो जाओ ताके अल्लाह का वली बैठ जाए तो उसने फरिश्तों में से एक को पूछा के ये लड़का किस का है? तो फरिश्ते ने जवाब दिया के ये सादात के घराने का लड़का है। तो उसने कहा के ये अनक़रीब बहुत बड़ी शान वाला होगा। (बहुज्जत-उल-असरार)

आपके साहबज़ादे शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ का बयान है के एक दफा हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) से दरयाफ़्त किया गया के आपको अपने वली होने का इल्म कब हुआ? तो आपने फरमाया के जब मैं दस बरस का था और अपने शहर के मक्तब में जाया करता था तो फरिश्तों को अपने पीछे और इर्दगिर्द चलते देखता और जब मक्तब में पहुँच

जाता तो वो बार बार ये कहते के अल्लाह के वली को बैठने के लिये जगह दो। अल्लाह के वली को बैठने के लिये जगह दो। उसी वाक़ये को बार बार देख कर मेरे दिल में ये अहसास पैदा हुआ के अल्लाह तआला ने मुझे दरजाऐ विलायत पर फ़ायज़ किया है।

नाना जान का इन्तिक़ाल हज़रत ग़ौस-उल-आज़म (रह॰अ॰) अभी जीलान के मक्तब में ज़ेरे तालीम थे के आप के नाना जान हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह सोमअई(रह॰अ॰) को मुनअमे हक़ीक़ी का बुलावा आ गया। और वो आलमे फ़ानी से आलमे जावदानी को सिधारे। अब उनकी सरपरस्ती और तालीमो तरबीयत का सारा बोझ वालिदा माजिदा सय्यदा फ़ातिमा(रह॰अ॰) पर आ पड़ा। उस आरिफ़ाऐ पाक बातिन ने कमाल सब्रो इसतक़ामत से अपने फ़रज़न्द जलील-उल-क़द्र की निगरानी जारी रखी और इन्ही की ज़ेरे निगरानी आप सने रूश्द को पहुँचे आपका उन्फ़ुवाने शबाब भी पाकबाज़ी और बर्कात जलीला को अपने दामन में लिये हुए था।

तहसीले इल्म के लिये ग़ैबी इशारा आपकी उम्र तक़रीबन अट्ठारह बरस की थी के एक दिन घर से बाहर सेर के लिये निकले ये योमे अरफ़ा था रास्ते में किसी किसान का बैल जा रहा था आप उसके पीछे पीछे जा रहे थे के यकायक बैल ने मुड़ कर आपकी तरफ देखा और बज़ुबाने इंसानी यूं गोया हुआ:

मा बेहाज़ा ख़ुलिक़्ता वला बिहाज़ा उमिरता। (ऐ अब्दुल क़ादिर! तू इस लिये नहीं पैदा किया गया और ना तुझे इसका हुक्म दिया गया है)

हज़रत उस पुरअसरार बैल के ज़रिये ये इशाराऐ ग़ैबी पाकर हैरान रह गए इश्क़े इलाही के जज़्बे ने जोश मारा। सीधे घर जा कर वालिदा माजिदा को ये हैरत अंगेज़

वाक़िया सुनाया और बसद अदब अर्ज़ की के तहसील व तकमील इल्म के लिये बग़दाद जाने की इजाज़त मरहमत फरमायें के वहाँ के मदारिस व मकातिब का एक आमल में शोहरा है। सय्यदा फातिमा(रह॰अ॰) चश्मे ज़दन में सब कुछ समझ गईं।

तैयारी सफर तज़करह ग़ौसे आज़म में लिखा है के जिस वक़्त ये वाक़िया पेश आया। सय्यदा फातिमा(रह॰अ॰) की उम्र अठहत्तर बरस के क़रीब थी। मशफ़िक़ बाप सय्यद अब्दुल्लाह सोमअई(रह॰अ॰) और शौहर सय्यद अबु सालेह(रह॰अ॰) का साया सर से उठ चुका था। ज़ईफुलउम्री के उस आलम में उनकी उम्मीदों का मरकज़ सय्यदना अब्दुल क़ादिर ही थे। दूसरे फरज़न्द सय्यद अबु अहमद अब्दुल्लाह(रह॰अ॰) अभी खुर्दसाल थे। जवान फ़रज़न्द का एक लम्हे के लिये आँखों से ओझल होना गवारा ना था। और फिर बग़दाद का सफर कोई मामूली सफर नहीं था। दौरे हाज़िरा के ज़राए आमदोरफ़्त का उस वक़्त तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता था। लोग काफ़िलों की सूरत में पैदल या ऊंटों और घोड़ों पर सफर किया करते थे। बग़दाद जीलान से कमो बैश साढ़े छः सौ किलोमिटर की दूरी पर था। सफर में हज़ारहा सऊबतें और ख़तरात पनेहाँ थे लेकिन जिस मक़सदे बुलंद के लिये सय्यदना अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) ने बग़दाद जाने का इज़हार किया था उससे उम्मुलख़ैर उम्मुलजब्बार सय्यदा फ़ातिमा(रह॰अ॰) जैसी पाक बातिन माँ भला अपने फ़रज़न्द को कैसे रोक सकती थीं। बाचश्म पुरनम लख़्ते जिगर के सर पर हाथ फेरा और फरमाया मेरी आँखों के नूर तेरी जुदाई तो एक लम्हा के लिये भी मुझ से बर्दाश्त नहीं हो सकती। लेकिन जिस मुबारक मक़सद के लिये तुम बग़दाद जाना चाहते हो। मैं इसके रास्ते में हायल नहीं होंगी। हसूल व तकमीले इल्म

एक मुकद्दस फरीज़ा है। मेरी दुआ है के तुम हर किस्म के उलूम ज़ाहिरी व बातिनी में दर्जाए कमाल हासिल करो। मैं शायद अब जीतेजी तुम्हारी सूरत ना देख सकूंगी लेकिन मेरी दुआएं हर हाल में तेरे साथ रहेंगी।

फिर फरमाया तेरे वालिद मरहूम(रह॰अ॰) के तर्के से अस्सी दीनार मेरे पास हैं। चालीस दीनार तेरे भाई के लिये रखती हूं और चालीस ज़ादे राह के लिये तेरे सपुर्द करती हूं। सय्यदा फ़ातिमा(रह॰अ॰) ने ये चालीस दीनार सय्यद अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) की बग़ल के नीचे आपकी गदड़ी में सी दिये। और फिर उनके हक़ में दुआऐ खैर फरमाई।

जब घर से रूख़सत होने का वक्त आया तो सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) से मुखातिब होकर फरमाया "ऐ मेरे लख़्ते जिगर अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰)! मेरी एक नसीहत को हर्ज़े जान बना लो। हमेशा सच बोलना और झूट के नज़दीक भी ना फटकना।"

सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने बा दीदाऐ गरयां अर्ज़ किया। मादरे मोहत्रमा! मैं सिद्के दिल से अहेद करता हूं के हमेशा आपकी नसीहत पर अमल करूंगा। फिर आपकी वालिदा ने आपको अपनी दुआएं के साथ रूख़सत किया।

आपकी बेमिस्ल सच्चाई हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) जीलान वालिदा माजिदा से रूख़सत होकर बग़दाद जाने वाले एक क़ाफ़ले में शामिल हो गए आप क़ाफ़ला हमदान के मशहूर शहर तक तो बख़ेरियत पहुंच गया लेकिन जब हमदान से आगे तरतंक के सुनसान कोहिस्तानी इलाक़े में पहुंचा तो साठ क़ज़ाक़ों के एक जथ्थे ने क़ाफ़ले पर हमला कर दिया। इस जथ्थे का सरदार एक ताक़तवर क़ज़ाक़ अहमद बदवी था। क़ाफ़ले के लोगों में उन खूनख़्वार क़ज़ाक़ों के मुक़ाबले की सकत नहीं थी। क़ज़ाक़ों ने क़ाफ़ले का तमाम मालो असबाब

लूट लिया और उसे तक़सीम करने के लिये एक जगह ढेर कर दिया। हज़रत ग़ौस-उल-आज़म इतमिनान से एक तरफ खड़े रहे। लड़का समझ कर किसी ने आप से कुछ तआरूज़ ना किया। इत्तिफ़ाकन एक डाकू की नज़र उन पर पड़ी और आप से पूछा क्यों लड़के तेरे पास भी कुछ है! हज़रत ने बिला ख़ौफ़ो हिरास के इतमिनान से जवाब दिया। हाँ! मेरे पास चालीस दीनार हैं। डाकू को आपकी बात पर यक़ीन ना आया और वो आप पर एक निगाहे इसतहेज़अ डालता हुआ चला गया।

फिर एक दूसरे क़ज़ाक़ ने भी आप से दरयाफ़्त किया। लड़के तेरे पास कुछ है? आपने इस भी वही जवाब दिया के हाँ मेरे पास चालीस दीनार हैं। उस क़ज़ाक़ ने भी आपकी बात को हंसी में उड़ा दिया और अपने सरदार के पास चला गया। पहला क़ज़ाक़ भी वहाँ पहले ही मौजूद था और लूट के माल की तक़सीम हो रही थी। इन दोनों क़ज़ाक़ों ने सरसरी तौर पर उस लड़के का वाक़ेया अपने सरदार को सुनाया। सरदार ने कहा उस लड़के को ज़रा मेरे सामने लाओ। दोनों डाकू भागते हुए गए और सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) को पकड़ कर अपने सरदार के पास ले गए जब एक टीले पर अपने हमराहियों के साथ लूटा हुआ माल तक़सीम करने के लिये बैठा था।

डाकूओं के सरदार ने उस फ़क़ीर मनिश नोजवान लड़के को देख कर पूछा। लड़के सच बतला तेरे पास क्या है? हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने जवाब दिया के मैं पहले भी तेरे दो साथियों को बता चुका हूँ के मेरे पास चालीस दीनार हैं। सरदार ने कहा, कहाँ हैं? निकाल कर दिखाओ। आपने फरमाया मेरी बग़ल के नीचे गदड़ी में सिले हुए हैं।

सरदार ने गदड़ी को उधेड़ कर देखा तो उसमें से

वाकई चालीस दीनार निकल आए, डाकुओं का सरदार और उसके साथी ये माजरा देखकर सकते में आ गए। कज़ाकों के कायद अहमद बदवी ने इसतअजाब के आलम में कहा, लड़के! तुम्हें मालूम है के हम रहज़न हैं। और मुसाफिरों को लूट लेते हैं फिर भी तुम हम से मुतलक़ नहीं डरे और उन दीनारों का भेद हम पर ज़ाहिर कर दिया इसकी क्या वजह है?

सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने फरमाया के मेरी पाकबाज़ और ज़ईफुलउम्र वालिदा ने घर से चलते वक़्त मुझे नसीहत की थी के हमेशा सच बोलना, भला वालिदा की नसीहत मैं चालीस दीनारों की ख़ातिर क्योंकर फरामोश कर सकता हूं।

ये अलफ़ाज़ नहीं थे। हक़ व सदाक़त के तरकश से निकला हुआ एक तीर था, जो अहमद बदवी के सीने में पेवस्त हो गया। उस पर रक़्त तारी हो गई। अश्कहाए नदामत ने दिल की शिकावत और स्याही धो डाली। रोते हुए बोला आह ऐ बच्चे! तुम ने अपनी माँ के अहेद का इतना पास रखा। हैफ़ है मुझ पर के इतने सालों से अपने ख़ालिक़ का अहेद तोड़ रहा हूं। ये कह कर इतना रोया के घिग्घी बन्ध गई। फिर बेइख़्तियार सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के क़दमों पर गिर पड़ा और रहज़नी के पेशे से तौबा की। उसके साथियों ने ये माजरा देखा तो उनके दिल भी पिघल गए और सब ने येक ज़बान कहा ऐ सरदार! तू रहज़नी में हमारा कायद था और अब तौबा में भी तू हमारा पेशरू है।

ग़र्ज़ उन सब ने भी सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के हाथ पर तौबा की और लूटा हुआ तमाम माल क़ाफ़ले को वापस कर दिया। कहते हैं के ये सब क़ज़ाक़ तौबा की बदोलत दर्जाऐ विलायत को पहुँचे सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) फरमाते हैं के ये पहली तौबा थी जो

गुमराह लोगों ने मेरे हाथ पर की।

बग़दाद में वरूदे मसऊद क़ज़ाकों के वाक़ये के बाद सारे रास्ते में काफ़ले को कोई ख़तरा पेश ना आया और वो बख़ेरो आफ़ियत बग़दाद पहुँच गया। उस तरह 488हि॰ में बग़दाद शहर में पहुँचे। जब आप बग़दाद मुक़द्दस की सरहद पर जलवा अफ़्रोज़ हुए तो बारिश हो रही थी और रात का कुछ हिस्सा गुज़र चुका था आप सीधे हज़रत हम्माद बिन मुस्लिम(रह॰अ॰) की ख़ानक़ाह में तशरीफ़ ले गए। ख़ानकाह का दरवाज़ा बन्द पाया। और बाहर के हिस्से में ही फ़िरूकश हो गए। सुबह होते ही आप ख़ानक़ाह में दाखिल हुए।

हज़रत हम्माद(रह॰अ॰) जैसे आप ही के मुन्तज़िर थे। बढ़ कर फ़ौरन ही आपका ख़ैर मक़्दम किया और मोहब्बत व रहमत के मिले जुले अंदाज़ में मोआनक़ा किया। नीज़ ख़ुशी के आंसू बहाते हुए फरमाया। फरज़न्द अब्दुल क़ादिर फ़िक्रो तसव्वुफ़ का ख़ज़ाना आज मेरे पास है। कल ये दौलत ग्रानुमाया तुम्हारे हाथों में सोंपी जाएगी। ज़रा एहतियात से इसे ख़र्च करना और ऐ सर-ज़मीने ईराक़! तेरे ऊपर एक मुक़द्दस हस्ती का आना मुबारक हो। अब तुझ पर रहमत की बदलियाँ साया फगन होंगी और इल्मो इरफान की घटा बन कर बरसेंगी जिससे सारी दुनिया के क़लूब व अरवाह हमेशा के लिये सर सब्ज़ व शादाब हो जायेंगे अब तेरी सर-ज़मीन से नफ़्स व शैतान की क़हेरमानी ताक़तों का तख़्ता उलट जायेगा और हज़ारों जाह व जलाल, अज़मत व वक़ार के साथ दीन की रहमत व करम का तख़्ता बिछेगा। मरहबा मरहबा ऐ सईद व सालेह फ़रज़न्द मरहबा!

बग़दाद में क़याम के लिए हज़रत हम्माद बिन मुस्लिम(रह॰अ॰) से मुलाक़ात के बाद बग़दाद में आप

जिस मक़्सद के लिये आये थे उसकी तरफ मुतावज्जह हुए और ज़ाहिरी उलूम के हसूल के लिये सरगर्म हो गए। क़लायन्द-उल-जवाहर में लिखा है के हज़रत शेख़ को जब ये मालूम हुआ के इल्म का हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है और हसूले इल्म जहल की तारीकियों को दूर कर के नूरानियत अता करता है। और यही बीमार दिलों की दवा, मुत्तक़ीन के लिये वाज़ेह रास्ता हुज्जतों तक पहुंचने का ज़रिया और मअेराजे यक़ीन की रफअतों तक पहुंचा कर मुतईय्यन के मदारिज की बुलंदियों का ज़रिया बनता है।

ये वो ख्यालात थे। जिन्होंने आपको हसूले इल्म की तरफ मुतावज्जह किया और आपने आईम्मा व मशायख़े वक़्त की जानिब रूजूअ किया।

दीनी उलूम का हसूल

बगदाद में पहुंचने के चन्द रोज़ बाद हज़रत सय्यद अब्दुल कादिर जीलानी(रह०अ०) ने बगदाद के मदरसा निज़ामिया के असातिज़ा से दीनी इल्म हासिल करना शुरू कर दिया। बगदाद उस वक्त बड़े नामवर असातिज़ा और मुख़्तलिफ़ फ़िनून के आईम्मा का गहवारा था। आपने उनसे बड़ी लगन के साथ इल्म हासिल किया।

आपके असातिज़ा अबु-अल-वफ़ा अली बिन अकील(रह०अ०)। अबु गालिब मोहम्मद बिन हसन बाकलानी(रह०अ०), अबु ज़करया याहिया बिन अली तबरेज़ी(रह०अ०), अबु सईद बिन अब्दुलकरीम(रह०अ०), अबु-अल-गनायम मोहम्मद बिन अली बिन मोहम्द(रह०अ०), अबु सईद इब्ने मुबारक मख़रमी(बामख़ज़ूमी) और अबु-अल-ख़ैर हम्माद बिन मुस्लिम(रह०अ०) अहबास जैसे नामवर उल्मा और मशायख़ अज़ाम के अस्मअग्रामी काबिले ज़िक्र हैं। इल्मे क़िआन, इल्मे तफ़्सीर, इल्मे हदीस, इल्मे फ़िक़ह, इल्मे लुगत, इल्मे शरीअत, इल्मे तरीक़त, ग़र्ज़ कोई ऐसा इल्म ना था जो आपने उस दौर के बाकमाल असातिज़ा व आईम्मा से हासिल ना किया हो। और सिर्फ हासिल ही नहीं किया बल्के हर इल्म में वो कमाल पैदा किया के तमाम उल्माऐ ज़माना से सब्कत ले गए।

इल्म व अदब में आपके उस्ताद अल्लामा अबु ज़करया तबरेज़ी(रह०अ०) थे जो अपने वक्त के यगानाऐ रोज़गार आलिम थे और बेशुमार किताबों के मुसन्निफ थे। उनकी तसनीफात में तफ़्सीर-उल-कुरआन वअलआराब, अलकाफ़ी फ़ी इल्म-उल-ऊरूज़ वलक़वानी तहज़ीब-उल-सलाह, शरह-उल-मफ़्ज़ीलात, शरह क़सायदुल अश्र, शरह दीवान हमासा, शरह दीवान मुतबनी, शरह दीवान अबी तमाम और शरह अलदरीदिया बहुत मशहूर हैं।

इल्मे फ़िक़ह और उसूले फ़िक़ह की तालीम आपने हज़रत शेख़ अबु-अल-वफ़ा अली बिन अक़ील हंबली(रह॰अ॰) अबु-अल-हसन मोहम्मद बिन क़ाज़ी हंबली(रह॰अ॰), शेख़ अबु-अल-ख़त्ताब अबु-अल-अली(रह॰अ॰), और क़ाज़ी महफ़ूज़-अल-कुलूज़ानी हंबली(रह॰अ॰), अबु सईद मुबारक बिन अली मख़रमी हंबली(रह॰अ॰) से मुकम्मल की।

इल्मे हदीस आपने उस दौर के मशहूर मुहद्दसीन से हासिल किया जिन में अबु-अल-बकात तलहा-अल-आक़ोली(रह॰अ॰), अबु-अल-ग़नायम मोहम्मद बिन अली बिन मेमून-अल-फ़ुरसी(रह॰अ॰), अबु उसमान इसमाईल बिन मोहम्मद-उल-सुबहानी(रह॰अ॰), अबु ताहिर अब्दुर्रहमान बिन अहमद, अबु ग़ालिब मोहम्मद बिन हसन-अल-बाक़लानी, अबु मोहम्मद जाफ़र बिन अहमद बिन अलहुसैन अलक़ारी-उल-सिराज, अबु-अल-अज़्ज़ मोहम्मद बिन मुख़्तार-उल-हाश्मी(रह॰अ॰), अबु मनसूर अब्दुर्रहमान-अल-क़ज़ाज़, अबु-अल-क़ासिम अली बिन अहमद बिन बनान-उल-कुरख़ी(रह॰अ॰), अबु तालिब अब्दुल क़ादिर बिन मोहम्मद बिन यूसुफ़(रह॰अ॰) के असमाऐ ग्रामी क़ाबिले ज़िक्र हैं।

ग़र्ज़ आठ साल की तवली मुद्दत में आप तमाम उलूम के इमाम बन चुके थे। और जब आपने माह ज़िल्हज 496 हि॰ में उन उलूम में तकमील की सनद हासिल की तो कुर्रहऐ अर्ज़ पर कोई ऐसा आलिम नहीं था जो आपकी हमसरी का दावा कर सके।

शेख़ हम्माद बिन मुस्लिम-अल-दबास(रह॰अ॰)

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) को उलूमे बातिनी का बेश्तर हिस्सा आप ही से मिला। शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) बग़दाद के नामवर मशायख़ में से थे और

बहुत बड़े वली अल्लाह थे। उस दौर के बेशुमार मशायख़ और सूफ़ियाए इल्मे तरीक़त में उनके तरबीयत याफ़्ता थे। आप आम लोगों में शेख़ दबास (शीरा फ़रोख़्त करने वाले शेख़) के लक़ब से मशहूर थे। कहते हैं। आपका शीरा निहायत पाक व साफ होता था। क्योंके आप की बर्कत की वजह से मक्खि इसके नज़दीक ना फटकती थी।

आपके बारे में शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) की राय

शाम के उल्मा में से एक आलिम जिनका नाम अब्दुल्लाह था बयान करते हैं के मैं तलबे इल्म में बग़दाद गया उस वक़्त इब्ने सक़्क़ा मेरे रफ़ीक़ थे मदरसा निज़ामिया बग़दाद में हम इबादत में मसरूफ व मश्ग़ूल रहते थे और बुज़ुर्गों की ज़ियारत किया करते थे। उस वक़्त बग़दाद में एक बुज़ुर्ग हस्ती मौजूद थी, लोग उनको ग़ौसे वक़्त कहते थे। उनके बारे में कहा जाता था के जब वो चाहते हैं पौशीदा हो जाते हैं और जब चाहते हैं ज़ाहिर हो जाते हैं। एक रोज़ मैं इब्ने सक़्क़ा और शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) (जो उस वक़्त जवाँ साल थे) उनकी ज़ियारत के इरादे से रोज़ाना हुए। रास्ते में इब्ने सक़्क़ा ने कहा के मैं उनसे एक ऐसा सवाल दरयाफ़्त करूंगा के वो उसका जवाब नहीं दे सकेंगे। मैंने कहा के मैं भी उन से एक मसअला दरयाफ़्त करूंगा। देखूंगा वो क्या जवाब देते हैं। शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) ने कहा मआज़अल्लाह के मैं उनसे कुछ पूछूं! मैं तो उनके पास इस लिये जा रहा हूं के उनकी ज़ियारत की बर्कात हासिल करूं।

अलग़र्ज़ हम तीनों जब उनके मकान पर पहुंचे तो उनको उनकी जगह पर ना पाया (जहाँ वो बैठते थे वहाँ मौजूद ना थे) कुछ देर के बाद देखा तो वो अपनी जगह पर मौजूद थे तब उन्होंने इब्ने सक़्क़ा की तरफ ग़ज़ब की नज़रों से देखा और कहा इब्ने सक़्क़ा बड़े अफसोस की बात है

के तुम मुझ से ऐसा मसअला पूछते हो जिसका मुझे जवाब नहीं आता। हालांके वो मसअला ये है और उसका जवाब ये है। और मैं देख रहा हूं के तेरे कुफ्र की आग शोअला ज़न होगी। फिर मेरी तरफ मुतवज्जह हुए और फरमाया ऐ अब्दुल्लाह! मुझ से मसअला पूछते हो और जानना चाहते हो के मैं क्या जवाब देता हूं। वो मसअला ये है और उसका जवाब ये है। तुझ को बहुत जल्द दुनिया तेरे दोनों कानों तक घेर लेगी (तू सरापा दुनिया में ग़र्क हो जाएगा) उसके बाद शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) की तरफ देखा उनको बुला कर अपने पास बैठाया और बहुत तौक़ीर से पेश आए और फरमाया ऐ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰)! तुम ने अपने अदब से खुदा और उसके रसूल(सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) को खुश किया है। गोया मैं देख रहा हूं के तुम बग़दाद में मिम्बर पर खड़े हो और कहते हो के *क़दामी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीयिल्लाह* (मेरा ये क़दम तमाम औलिया की गर्दन पर है) और तुम्हारे वक़्त के तमाम औलिया को देखता हूं के सब ने अपनी गर्दनें तुम्हारी बुज़ुर्गी की वजह से झुका ली हैं। बस ये कह कर वो ग़ायब हो गए। उस के बाद हम ने फिर उनको नहीं देखा और जैसा के उन्होंने कहा था वैसा ही हुआ। (नफ़हात-उल-अनस)

<u>हज़रत शेख़ हम्माद(रह॰अ॰)</u> सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के नामवर ख़लीफ़ा और शागिर्द हज़रत अब्दुल्लाह जबाई(रह॰अ॰) से रिवायत है के मेरे शेख़ हज़रत सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने मुझे बताया है के मेरे तालिब इल्मी के ज़माने में एक दफा बग़दाद फ़ितना व फ़साद की आमाजगाह बन गया। मैं फ़ित्री तौर पर हंगामों से मुतनफ़्फ़िर था इसलिए नित नए झगड़ों और फ़सादों को देखकर बग़दाद का क़याम मुझ

पर गाँ गुज़रने लगा। चुनाँचे एक दिन बगदाद छोड़ने का इरादा किया और कुरआने करीम बग़ल में दबा कर बाबे हल्बा की तरफ चला के वहाँ से सहेरा को रास्ता जाता था। यकायक किसी ग़ैबी ताक़त ने मुझे इस ज़ोर से धक्का दिया के मैं गिर पड़ा। फिर ग़ैब से आवाज़ आई के "यहाँ से मत जाओ। खल्के ख़ुदा को तुम से फ़ैज़ पहुँचेगा।" मैंने कहा के "मुझे खल्के ख़ुदा से क्या वास्ता मुझे तो अपने दीन की सलामती मतलूब है।" आवाज़ आई नहीं नहीं तुम्हारा यहाँ रहना ज़रूरी है। तुम्हारे दीन को कुछ ज़रर ना पहुँचेगा। चुनाँचे मनशाऐ इलाही के मुताबिक़ मैंने बगदाद छोड़ने का इरादा तर्क कर दिया।

दूसरे दिन मैं बगदाद के एक मोहल्ले से गुज़र रहा था के एक शख़्स ने दरवाज़ा खोल कर अपना सर बाहर निकाला और मुझ से मुखातिब हो कर कहा क्यों अब्दुल क़ादिर! कल तूने अपने रब से क्या मांगा था। मैं ये अचानक सवाल सुन कर हैरान रह गया और मेरी क़ुव्वते गोयाई जवाब दे गई। उस शख़्स ने अब निहायत गुस्से से अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर लिया और मैं वहाँ से चल दिया।

जब मेरे होश बजा हुए तो मेरी समझ में आ गया के ये शख़्स तो औलिया अल्लाह में से है जिसे कल के वाक़ये का इल्म हो गया। चुनाँचे मैंने उस दरवाज़े की तलाश शुरू कर दी लेकिन हज़ार कोशिश के बावजूद ना काम रहा। अब मैं हर वक़्त उस शख़्स की तलाश में रहने लगा। आख़िर एक दिन मैंने उन्हें पा लिया। ये बुज़ुर्ग हम्माद दब्बास(रह॰अ॰) थे। मैंने उनसे इल्मे तरीक़त हासिल किया और अपने अश्कालात व शकूक रफ़ओ कराए।

शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) शाम के रहने वाले थे उनकी पैदाईश दमिश्क़ के क़रीब एक गाँव में रहेबा में हुई।

बेशुमार मुजाहेदात व रियाज़ात के बाद विलायत के दर्जे तक पहुंचे और बग़दाद के मोहल्ले मुज़फ़्फ़रया आ कर मुक़ीम हुए। 525हि॰ में आपका विसाल हुआ आपका मदफ़िन मक़्बरा शोनिज़िया में है।

अज़यत आमेज़ बातें आप फ़रमाते हैं के दौराने तालीम जब मैं कभी शेख़ हम्माद के पास होता तो आप मुझे फ़रमाते। फ़क़िहा! तू यहाँ क्यों आता है कहीं अहले फ़िक़ह के पास जाया कर और जब मैं ख़ामोश रहता तो मेरे नफ़्स को बातों के ज़रिये अज़यत देते ताके मेरा नफ़्स पाक हो जाए। लेकिन जब उनके पास दोबारा जाता तो फ़रमाते के आज हमारे पास बहुत सी रोटियाँ आई लेकिन हम ने सब खा ली हैं तुम्हारे लिये कुछ नहीं बचा मेरी ये हालत देख कर शेख़ के वाबसतगान भी मुझे तकलीफ़ें पहुंचाने लगे और मुझ से बार बार कहते के तुम तो फ़क़ीहा हो, तुम्हारा हमारे पास क्या काम, तुम यहाँ मत आया करो। लेकिन जब शेख़ हम्माद को इसका इल्म हुआ तो उन्होंने ख़ुद्दाम से फ़रमाया के ऐ कुत्तो! तुम उसको तकलीफ़ क्यों पहुंचाते हो। तुम में किसी एक फ़र्द को भी ये मर्तबा हासिल नहीं है। मैं तो महेज़ इम्तेहानन उसको अज़यत देता हूँ लेकिन ये एक ऐसा पहाड़ है जिस में ज़र्रा बराबर भी जुंबिश नहीं होती।

चश्मे बातिन से मुशाहेदा अबु नजीब सहरवर्दी(रह॰अ॰) बयान करते हैं के 523हि॰ में एक मर्तबा मैं शेख़ हम्माद की ख़िदमत में हाज़िर था तो उस वक़्त शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) भी मौजूद थे और शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) से बहुत ही अजीब गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे। जिस पर शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) ने फ़रमाया के ऐ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰)! तुम तो निहायत अजीब कलाम करते हो। क्या तुम्हें इसका ख़ौफ़ नहीं के अल्लाह

तआला तुम्हें मकर में मुबतला कर दे। ये सुन कर शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) ने अपना हाथ शेख़ हम्माद के सीने पर रख कर फ़रमाया के अपनी चश्मे बातिन से मुशाहेदा फ़रमा लीजिए के मेरी हथेली में क्या तहरीर है।

ये सुन कर शेख़ हम्माद पर एक अजीब कैफ़ियत तारी हो गई और हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) ने उनके सीने पर से हाथ हटा लिया तो उन्होंने बताया के मैंने तुम्हारी हथेली पर ख़ुदा से किये हुए सत्तर मुआहेदों का मुशाहेदा कर लिया है और उनमें से एक मुआहेदा ये भी है के अल्लाह तआला तुम्हें मकरो फ़रेब में मुबतला नहीं करेगा। लिहाज़ा तुम उस वादा के बाद चाहे जैसा भी कलाम करो तुम्हें कोई ज़रर नहीं पहुँचेगा। ये ख़ुदा का फ़ज़्ल है वो जिस को चाहे मर्तबा अता कर दे वो बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

दौरे तालिब इल्मी के वाक़ेयात तालिब इल्मी के दौर में आपको काफ़ी मुश्किलात का सामना करना पड़ा। और बे पनाह मसायब आप ने बर्दाश्त किये मगर हिम्मत ना हारी। आप फ़रमाते हैं के मैंने ऐसी होलनाक सख़्तियाँ झेली हैं के अगर वो पहाड़ पर गुज़रतीं तो पहाड़ भी फट जाता। जब मसायब और शदायद की हर तरफ़ से मुझ पर यलग़ार हो जाती थी तो मैं तंग आकर ज़मीन पर लेट जाता और इस आयते करीमा का विर्द शुरू कर देता:

फ़इन्ना मअल उसरी यूसरा। इन्ना मअल उसरी यूसरा (बेशक तंगी के साथ आसानी है बेशक तंगी के साथ आसानी है)

इस आयत मुबारका की तकरार से मुझे तसकीन हासिल हो जाती और जब मैं ज़मीन से उठता तो सब रंजो कर्ब दूर हो जाता।

तहसील इल्म के ज़माना में सबक़ से फ़ारिग़ होकर

आप जंगल या बयाबान की तरफ निकल जाते और शहर की बजाये उन्हीं वीरानों में रात गुज़ारते थे। ज़मीन आपका बिस्तर होती थी। और ईंट या पत्थर तकिया। मेंह, आँधी, झक्कड़, तूफान, सर्दी, गर्मी आप हर चीज़ से बेनियाज़ हो कर बरहना-पा रात की तनहाईयों और तारीकियों में दश्त नूरदी करते रहते थे। सरे अक़्दस पर एक छोटा सा अमामा होता था। और सूफ का जबा ज़ेबे तन होता था। खुदरू बूटियाँ और सब्ज़ियाँ जो आम तौर पर दरयाए दजला के किनारे मिल जाती थीं आपकी खुराक होती थीं। ये सब जानकाहे मसायब आपको उस लज़्ज़त के मुक़ाबले में हेच मालूम होते थे जो आपको तहसीले इल्म में हासिल होती थी।

मुसलसल बीस रोज़ तक फ़ाक़ह शेख़ तलहा बिन मुज़फ़्फ़र बयान करते हैं के हज़रत शेख़ ने मुझ से फ़रमाया के क़यामे बग़दाद के दौरान मुझे बीस योम तक खाने पीने के लिये कोई मुबाह शै मयस्सर ना आई तो मैं एवाने किसरा की जानिब चल पड़ा। वहाँ देखा चालीस औलिया अल्लाह पहले ही मुबाह चीज़ों की तलाश में उन खण्डरात में मौजूद हैं। आपने उन मर्दाने खुदा के रास्ते में मज़ाहिम होना मुनासिब ना समझा। और वापस शहर तशरीफ़ ले गए। रास्ते में जीलान के एक शख़्स से मुलाक़ात हुई। जो आप ही की तलाश में सरगर्दां था। उसने आपको सोने का एक टुकड़ा दिया और कहा ऐ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰)! खुदा का शुक्र है के तुम मिल गए और मैं बारे अमानत से सबुकदोश हुआ। ये सोने का टुकड़ा तेरी वालिदा सय्यदा फातिमा(रह॰अ॰) ने तेरे लिये भेजा है।

आप अल्लाह तआला का शुक्र बजा लाये और सोने का ये टुकड़ा ले कर फौरन एवाने किसरा के खण्डरों में पहुँचे जहाँ सत्तर औलिया अल्लाह को रिज़्क़े तय्यब की तलाश में देख आए थे।

सोने का थोड़ा सा हिस्सा अपने पास रख कर बाक़ी सब उन मर्दाने खुदा की खिदमत में पेश कर दिया। उन्होंने पूछा कहाँ से लाए हो? आपने फरमाया मेरी वालिदा माजिदा ने मेरे लिये भेजा है। मेरी ग़ैरत ने ये बर्दाश्त ना किया के आप कुव्वते लायमूत की तलाश में मारे मारे फिरें और मैं आसूदा हाली से दिन गुज़ारूं इसलिये ये सोना आपके लिये ले आया हूं।

फिर आप बग़दाद तशरीफ लाए। अपने हिस्से के सोने से खाना खरीदा और बआवाज़े बुलंद फ़ुक़रआ को खाने की दावत दी। इस तरह बहुत से फ़ुक़रआ आ गए और सब ने मिल कर खाना खाया। (क़लायद-उल-जवाहर)

शिद्दत भूक का एक वाक़ेया अबुबकर तमयती का बयान है के एक मर्तबा आप के कई दिन फाक़े से गुज़र गए। आख़िर भूक से निढाल होकर एक दिन किसी मुबाह चीज़ की तलाश कर रहे थे सोक़-उल-रीहानिय्यीन (बग़दाद की एक मंडी) की मस्जिद के क़रीब पहुँचे तो इज़्मेहलाले क़ुवा-ए-इन्तिहा को पहुंच गया। शिद्दत गुरसंगी से दिमाग़ चकरा गया और आप लड़खड़ाते हुए मस्जिद के एक गोशे में जा बैठे अभी आपको बैठे थोड़ी ही देर हुई थी के एक अजमी नोजवान भुना हुआ गोश्त और रोटी ले कर मस्जिद में दाख़िल हुआ और एक तरफ बैठ कर खाने लगा। हज़रत ग़ौसे आज़म (रह०अ०) का अपना बयान है के भूक की शिद्दत से मेरा ये हाल था के उस शख़्स के हर लुक़्मे के साथ बेइख़्तियार मेरा मुंह भी खुल जाता और मेरा जी चाहता के काश उस वक़्त मुझे भी कुछ खाना मयस्सर हो जाता लेकिन आख़िर मैंने अपने नफ़्स को मलामत की के बे सब्र मत बन। आख़िर तवक्कुल और भरोसा भी तो कोई चीज़ है ग़र्ज़ आपका नफ़्स मुतमईन हो गया और आप उसी शख़्स की तरफ से बेनियाज़ हो

गए। इतने में खुद ही उसकी नज़र आप पर पड़ी और उसने आपको खाने की दावत दी। हज़रत ने इंकार किया लेकिन उसने शदीद इसरार किया। नाचार आप इसके साथ खाने में शरीक हो गए। थोड़ी देर बाद वो आपके हालात दरयाफ़्त करने लगा। आपने फरमाया मैं जीलान का बाशिन्दा हूं। और यहां हसूले इल्म की गर्ज़ से मुक़ीम हूं। ये सुनते ही वो बहुत मसरूर हुआ और कहने लगा।

मैं भी जीलान का रहने वाला हूं। क्या तुम जीलान के रहने वाले एक नोजवान अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) को जानते हो? आपने फरमाया के अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) मैं ही हूं।

ये सुनते ही वो शख़्स बेचैन हो गया और उसकी आँखें पुरनम हो गईं। फिर रक़्त आमेज़ लहेजे में कहने लगा भाई मैंने तुम्हारी अमानत में ख़्यानत की है। खुदा के लिये मुझे बख़्श दो।

आपको उस शख़्स की बातों से हैरत हुई और फरमाया भाई कैसी अमानत और कैसी ख़्यानत। अपनी बात की वज़ाहत करो।

उस शख़्स ने जवाब दिया भाई आप की वालिदा ने आपके लिये मेरे हाथ आठ दीनार भेजे थे। मैं कई रोज़ से तुम्हें तलाश कर रहा था के तुम्हारी अमानत के बार से सबुकदोश हो जाऊं लेकिन तुम्हारा कुछ पता ना चलता था और इसी वजह से बग़दाद में मेरा क़याम तूल पकड़ गया हत्ता के मेरा ज़ाती खर्च कम हो गया और फ़ाक़ों तक नौबत आ पहुँची, पहले दो तीन दिन तक तो मैंने सब्र किया आख़िर भूक की शिद्दत ने मजबूर कर दिया के तुम्हारी अमानत से खाना खरीद कर पेट के दोज़ख़ की आग ठंडी करूं। भाई ये खाना जो हम खा रहे हैं दरअसल तुम्हारा ही है क्योंके तुम्हारी अमानत से खरीदा गया है

और तुम मेरे नहीं बल्कि मैं तुम्हारा मेहमान हूं। खुदा के लिये मुझे इस गुनाहे अज़ीम के लिये बख़्श दो।

आप ने उस शख़्स को गले लगा लिया और उसके हुस्ने नीयत की तारीफ़ की और तसल्ली दी। फिर कुछ दीनार और बचा हुआ खाना देकर निहायत मोहब्बत से उसे रूख़्सत किया। (क़लायद-उल-जवाहर)

पुरअसरार आज़माईश शेख़ अब्दुल्लाह सल्मी (रह॰अ॰) से मनक़ूल है के उन्होंने एक दफ़ा शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) से एक अजीब वाक़ेया सुना। आपने फरमाया के ज़मानाए तालीम में एक मर्तबा मुझे कई दिन तक खाने के लिये कुछ मयस्सर ना हुआ उसी हालत में एक दिन मोहल्ला क़तअेय्यह शरकियह से गुज़र रहा था के एक शख़्स ने एक तहें किया हुआ कागज़ मेरे हाथ में दे कर कहा के नानबाई की दुकान पर जाओ। मैं ये कागज़ ले कर नानबाई की दुकान पर पहुंचा उसने ये कागज़ रख लिया और मुझे मैदे की रोटी और हलवा दिया। मैं ये हलवा और रोटी लेकर उस बेआबाद मस्जिद में गया जहाँ मैं अपने असबाक़ तनहाई में दोहराया करता था। अभी इस सोच में था के ये रोटी और हलवा खाऊं या ना खाऊं के नागाह एक कागज़ एक पर नज़र पड़ी। जो दीवार के साये में पड़ा हुआ था। मैंने उसे उठा कर पढ़ा तो उस पर ये इबारत लिखी थी "अल्लाह तआला के कुत्बे साबिक़ा में से एक किताब में फरमाया है के अल्लाह तआला के शेरों को लज़्ज़ाते दुनयवी से कुछ सरोकार नहीं होता। ख़्वाहिशात और लज़्ज़ात तो कमज़ोरों और ज़ईफ़ों के लिये हैं ताके वो उनके ज़रिये इबादते इलाही पर क़ादिर हों।"

ये पढ़ कर मेरे जिस्म पर कपकपी तारी हो गई। हर मोए बदन ख़ौफ़े इलाही से खड़ा हो गया। रोटी और हलवा

खाने का ख़याल तर्क किया और दो रकअत नमाज़ अदा कर के वहां से चला आया। (क़लायद-उल-जवाहर)

शरीफ याक़ुबी की नसीहत बग़दाद के कुछ तलबा का दस्तूर था के फ़स्ल कटने के बाद ये लोग एक गांव याक़ुबा में चले जाते और वहां से अनाज मांग कर लाते। उस ज़माने में लोग तलबा को क़द्र की निगाह से देखते थे इस लिये साहिबे इसततआअत लोग ख़ुशी से कुछ गल्ला उन तलबा को दे देते। एक दफ़ा उन तलबा ने सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) को भी अपने साथ चलने के लिये कहा आप उनके इसरार की वजह से इंकार ना कर सके। और उनके साथ याक़ुबा जा पहुंचे। उस गांव में एक मर्दे सालेह रहते थे उनका नाम शरीफ याक़ुबी था। हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) उस मर्दे पाक बातिन की ज़ियारत के लिये गए। उन्होंने आपकी जबींने सआदत आसार से अंदाज़ा लगा लिया के क़तब ज़माना हैं। फरमाया:

"बेटे तालिबाने हक़ अल्लाह के सिवा किसी के आगे दस्ते सवाल दराज़ नहीं करते। तुम ख़ासाने ख़ुदा से मालूम होते हो इस तरह गल्ला मांगना तुम्हारे शायाने शान नहीं।"

हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) फरमाते हैं के उस वाक़ेये के बाद ना मैं कभी उस क़िस्म के काम के लिये किसी जगह गया और ना किसी से सवाल किया। (क़लायद-उल-जवाहर, स42)

अदायगी क़र्ज़ का वाक़ेया शेख़ अबु मोहम्मद अब्दुल्लाह(रह॰अ॰) बयान करते हैं के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर ने मुझे अपना एक वाक़ेया सुनाया के मैं एक दिन जंगल में बैठा हुआ फ़िक़ह की किताब का मुतालआ कर रहा था तो एक हातिफ़ ग़ैबी ने मुझ से कहा के हसूले इल्म फिक़ह और दीगर उलूम की तलब के लिये कुछ

रक़म लेकर काम चला लो। आप फ़रमाते हैं के मैंने कहा के तंगी की हालत में किस तरह क़र्ज़ ले सकता हूँ जबके मेरे पास अदायगी की कोई सूरत नहीं। तो उस पर हातिफ़े ग़ैबी से जवाब मिला के तुम कहीं से क़र्ज़ा ले लो, उसकी अदायगी का ज़िम्मेदार मैं हूं।

ये सुन कर मैंने खाना फ़रूख़्त करने वाले से जा कर कहा के मैं तुम से इस शर्त पर मामला करना चाहता हूँ के जब मुझे खुदावंद तआला महूलत अता फ़रमा दे तो मैं तुम्हारी रक़म अदा कर दूंगा ये सुन कर उसने रोकर कहा के मेरे आक़ा मैं हर वो शै पेश करने को तैयार हूँ जो आप तलब फ़रमायें। चुनांचे मैं उससे एक मुद्दत तक एक डेढ़ रोटी और कुछ सालन लेता रहा लेकिन मुझे ये शदीद परेशानी हर वक़्त लाहक़ रहती के जब मेरे अन्दर इसततआअत ही नहीं तो मैं ये रक़म कहां से अदा करूंगा।

इस परेशानी के आलम में मुझ से हातिफ़ ग़ैबी ने कहा के फ़लां मुक़ाम पर चले जाओ। और वहां जो कुछ रेत में पड़ा हुआ मिल जाए उसको लेकर खाने वाले का क़र्ज़ अदा कर दो और अपनी ज़रूरियात की भी तकमील करते रहो। चुनांचे जब मैं बताये हुए मुक़ाम पर पहुँचा तो वहां मुझे रेत पर पड़ा हुआ सोने का एक बहुत बड़ा टुकड़ा मिला जिसको मैंने लेकर होटल वाले का तमाम हिसाब बेबाक़ कर दिया।

आपने एक और वाक़या बयान किया के एक रात जंगल में मेरे ऊपर ऐसी कैफ़ियत तारी हुई के मैं चीख़ मार कर ज़मीन पर गिर पड़ा और मेरी आवाज़ सुन कर इलाक़े के मुसल्लह डाकू घबराए हुए आए। मेरे पास खड़े हुए और मुझे पहचान कर कहने लगे। ये तो अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) दीवाना है। अल्लाह तआला हम पर फ़ज़्ल फ़रमाए।

मुजाहेदह व रियाज़त

शरअई तौर पर कामिल उबूर हासिल करने के बाद हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) मुजाहेदात में मशगूल हो गए क्योंके तज़किया और उलूम बातिन, रियाज़त व मुजाहेदे के बगेर हासिल नहीं होता। बयान किया जाता है के आप ने बड़े तवील अर्से तक बड़े बड़े सख़्त मुजाहेदे किए बे पनाह सख़्तियाँ और मसायब बर्दाश्त किए। अलायके दुनयवी से क़तअे तअल्लुक़ कर के खुदा से लो लगाई और कसरते इबादत व रियाज़त से फ़ना फिर्रसूल और फना फिअल्लाह की मनाज़िल तय कीं। रग रग में इश्के इलाही और इश्के रसूल मोजज़न हो गया। उन मुजाहेदात ने उन्हें अज़ीमत व इसतक़ामत और इत्तिबाअे कामिल का बेमिस्ल मर्दे आहन बना दिया। आपके क़ोलो फअेल में इत्तिबाअे सुन्नत का जज़्बा घर कर गया ताके कोई क़दम भी शरअे से बाहर ना जा सके। आपका ये मुजाहेदह असहाबे सफा के तर्ज़े अमल पर था। आपके मुजाहेदात की कहानी बड़ी तवील है लिहाज़ा उनका आहाता करना मुश्किल है। अल्बत्ता मुजाहेदात के चन्द वाक़ेयात ज़ेल में दर्ज किए जाते हैं।

वीरानों मे फिरना आप पर बिलकुल जवानी का आलम था जब आप ने रियाज़त और मुजाहेदात में क़दम रखा। और अल्लाह तआला की मअरफ़त की तलाश में ईराक़ के वसीअ व अरीज़ बयाबानों में रहने लगे। दिन रात पुर ख़त्र मुक़ामात पर फिरते रहते। अगर आज यहाँ हैं तो कल कहीं और हैं। एक दफा आपने खुद फरमाया के मैं पच्चीस साल तक ईराक़ के वीरानों और जंगलों में फिरता रहा हूं। और चालीस साल तक सुबह की नमाज़ ईशा के वज़ू से पढ़ी है और पन्द्रह साल तक ईशा की नमाज़ पढ़ कर एक टाँग पर खड़े होकर सुबह तक क़ुरआने हकीम

ख़त्म करता हूं। मैंने बसाअवक़ात तीन से चालीस दिन तक बग़ैर कुछ खाए पीये गुज़ारे हैं।

फ़ाक़े में मज़ीद सब्र का वाक़ेया अब्दुल्लाह सल्मी बयान करते हैं के हज़रत शेख़ ने मुझ अपना एक वाक़ेया इस तरह सुनाया के जिस वक़्त मैं शहर के एक मोहल्ले क़तबिया शरक़ी में मुक़ीम था तो मेरे ऊपर चन्द यौम ऐसे गुज़रे के ना तो मेरे पास खाने की कोई चीज़ थी और ना कुछ ख़रीदने की इसततअत। उसी हालत में एक शख़्स अचानक मेरे हाथ में काग़ज़ की बंधी हुई पुड़िया दे कर चल दिया और मैं उसके अन्दर बंधी हुई रक़म से हलवा परांठा ख़रीद कर मस्जिद में पहुँच गया और क़िबलारू होकर उस फ़िक्र में ग़र्क़ हो गया के उसको खाऊँ या ना खाऊँ। उसी हालत में मस्जिद की दीवार में रखे हुए काग़ज़ पर मेरी नज़र पड़ी तो मैंने उठ कर उसको पढ़ा तो उसमें ये लिखा हुआ था के "हम ने कमज़ोर मोमिनीन के लिये रिज़्क़ की ख़्वाहिश पैदा की ताके वो बन्दगी के लिए इसके ज़रिये क़ुव्वत हासिल कर सकें।" आप फ़रमाते हैं के उस तहरीर को देखकर मैंने अपना रूमाल उठाया और खाना वहीं छोड़ कर दो रकअत नमाज़ अदा कर के मस्जिद से निकल आया..... (क़लायद-उल-जवाहर)

हज़रत ग़ौसे आज़म का मुजाहेदह शेख़ अबूअल सऊद अहमद बिन अबी बकर हरीमी का बयान है के मैंने हज़रत सय्यदी शेख़ अब्दुल क़ादिर (रह॰अ॰) को फ़रमाते सुना के मैं पच्चीस बरस तक ईराक़ के जंगलों और वीरानों में घूमता रहा। ना मैं ख़ल्क़ को पहचानता था और ना लोग मुझे जानते थे। मर्दाने ग़ैब और जिन्नात के गिरोह मेरे पास आते थे मैं उन्हें अल्लाह का रास्ता बताता था। पहले पहल जब मैं ईराक़ में दाख़िल हुआ था तो ख़िज़्र अलेहिस्सलाम मुझ से मिले। और कहने लगे के

मेरी बात पर अमल करना। फिर मुझे एक जगह बैठने का इशारा कर के ग़ायब हो गए। तीन साल तक हर साल एक बार आते और मुझे कह जाते के अपनी जगह पर बैठे रहना यहाँ तक के मैं वापस आऊँ। उस दौरान दुनिया की ख़्वाहिशात और ज़ेबो ज़ीनत की अशिया कई कई सूरतों में मेरे पास आतीं मगर अल्लाह तआला ने उनकी तरफ से मुझे बचाए रखा। शयातीन ख़ौफनाक सूरतें बना कर मेरे मुक़ाबले के लिए आते मगर अल्लाह तआला मुझे उन पर ग़ालिब कर देता। बाज़ अवक़ात मेरा नफ़्स मुतःशक्किल होकर मेरे सामने आ जाता। कभी अपनी पसंदीदा चीज़ के हसूल के लिए आजज़ी वज़ारी का रास्ता इख़्तियार करता और कभी मुझ से मुक़ाबला करता मगर हर दफ़ा अल्लाह तआला मुझे उस पर ग़ल्बा अता फरमा देता। मैंने अपने नफ़्स को इब्तिदाऐ हाल में सिर्फ मुजाहेदों से ही क़ाबू नहीं किया बल्के मैंने उसे गर्दन से पकड़ लिया और अपने दोनों हाथों में उसे दबोच लिया। मैं एक ज़माना तक खण्ड्रात में अपने नफ़्स को तावे करने के मुजाहेदात करता रहा उस दौरान एक साल बेकार और रद्दी चीज़ें खा कर गुज़ारा करता रहा और दूसरे साल कुछ खाता ना पीता और ना ही आराम करता।

एक दफा मैं सख़्त सर्दी के अय्याम में एवाने किसरा में सो रहा था के मुझे एहतलाम हो गया। मैं उठ कर दरया पर गया और ग़ुस्ल किया। फिर आकर सोया तो दोबारा एहतलाम हो गया। अलग़र्ज़ उस रात चलीस बार मुझे एहतलाम हुआ और चालीस बार ही मैंने दरया पर तहारत की। आख़िर में नींद के डर से एवान के ऊपर चढ़ गया। कई बरस तक मैं कुर्ख़ के वीरानों में कुछ खाए पीये बग़ैर मुक़ीम रहा। उस दौरान मैं क़ुव्वते ला यमूत के तौर पर बरवी नाम घास पर गुज़ारा करता रहा। उन दिनों

हर साल मेरे पास एक शख़्स ऊनी जुब्बह लाया करता था। मैंने हज़ार तरीक़ों से तुम्हारी दुनिया से राहत हासिल करने की कोशिश की मगर उस वक़्त मेरी पहचान ही गूंगा पन, बेवक़ूफ़ी और दीवांगी थी। मैं कांटों में नंगे पाँऊ चला करता था। जिस राह से मुझे डराया जाता मैं हमेशा वही राह इख़्तियार करता। मेरा नफ़्स अपने इरादों में कभी मुझ पर ग़ालिब ना हुआ और ना ही कभी किसी दुनयावी ज़ीनत ने मुझे अपनी तरफ खींचा रावी ने अर्ज़ की के जब आप छोटे थे तब भी? आपने फरमाया हाँ तब भी। (ख़ुलासात-उल-मफ़ाख़िर)

दश्त नूरदी का अजीब माजरा एक मर्तबा आपने फरमाया के मुजाहेदात व रियाज़ात के आग़ाज़ में मेरी दश्त नूरदी का अजीब माजरा था। कई दफ़ा मैं अपने आप से बे ख़बर हो जाता था और कुछ मालूल नहीं होता था, के कहाँ फिर रहा हूँ। जब होश आता तो अपने आपको किसी दूर दराज़ जगह पर पाता। एक दफ़ा बग़दाद के क़रीब एक सहरा में मुझ पर इसी क़िस्म की कैफ़ियत तारी हुई और मैं बेख़बरी के आलम में एक अर्से तक तेज़ दौड़ता रहा। जब होश में आया तो अपने आप को नवाह शस्त्र में पाया जो बग़दाद से बारह दिन की मुसाफ़त पर है। मैं अपनी हालत पर तअज्जुब कर रहा था के एक औरत मेरे पास से गुज़री और कहने लगी के तुम शेख़ अब्दुल क़ादिर होकर अपनी हालत पर मुतअज्जिब हो।

हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम से मुलाक़ात

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०अ०) ने एक मर्तबा फरमाया के जब पहले पहल मैंने ईराक़ के बयाबानों में क़दम रखा तो मेरी मुलाक़ात एक नूरानी सूरत शख़्स से हुई जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था उस शख़्स में एक अजीब तरह की कशिश थी और मेरी फिरासते बातिनी

कहती थी के ये शख़्स रिजालुलग़ैब से है। उस शख़्स ने मुझे कहा के क्या तू मेरे साथ रहना चाहता है? मैंने हाँ में जवाब दिया। तो उस शख़्स ने कहा के फिर अहेद करो के मेरी मुख़ालफत नहीं करोगे और जो मैं कहूंगा उस पर अमल करोगे। यानी हर मामले में बिला सोचे समझे मेरी इताअत करोगे। मैंने कहा बहेतर! मैं तुम्हारी मुख़ालफत ना करने और तेरा कहना मानने का अहेद करता हूँ।

अब उस शख़्स ने कहा के अच्छा तो फिर उसी जगह बैठा रह जब तक मैं तुम्हारे पास वापस ना आँऊ तुम यहाँ से कहीं ना जाना।

ये कहकर वो चला गया और मैं वहाँ बैठ कर इबादते इलाही में मश्गूल हो गया हत्ता के एक बरस गुज़र गया। अब वो शख़्स फिर आया। एक साअत मेरे पास बैठा फिर उठ खड़ा हुआ और कहा के जब तक मैं फिर तेरे पास ना आँऊ यहीं बैठा रह। ये कह कर वो चला गया और मैं वहीं बैठ गया। एक साल बाद वो फिर आया, थोड़ी देर बैठा और फिर मुझे वहीं बैठे रहने की तलक़ीन कर के चला गया। जब तीसरा बरस भी गुज़र गया तो वो शख़्स फिर नमूदार हुआ उसके पास रोटी और दूध था। अब उसने कहा के तुम तो अपने वादे के बड़े पक्के निकले मैं तुझे दाद देता हूँ। मेरा नाम ख़िज़्र(रह॰अ॰) है, मुझे हुक्म हुआ है के रोटी और दूध तेरे साथ खाँऊ। चुनाँचे हम दोनों ने मिल कर रोटी और दूध खाया।

जिन लोगों में आपने ये वाक़ेया बयान किया उन्होंने आप से पूछा के आप उन तीन सालों में क्या खाते थे? तो इस पर आपने फ़रमाया के मैं मुबह चीज़ों से अपनी गुज़र अवक़ात कर लेता था।

शयातीन से जंग शेख़ आरिफ़ अबु उमर व हरीफ़ीनी का बयान है के मैंने हज़रत सय्यदी अब्दुल

क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) से सुना। आप ने फ़रमाया के मैं रात दिन वीरानों में मुक़ीम रहता और बग़दाद में मुसतक़िल रिहाईश इख़्तियार नहीं करता था। शयातीन ख़ौफ़नाक सूरतों में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के हथियार लेकर मेरे पास आते। ये गिरोह दर गिरोह प्यादा और सवार होते। मेरे साथ मुक़ाबला करते और मुझ पर आग के शोले फेंकते। मैं अपने दिल में इतमिनान और सकून महसूस करता। किसी किस्म की बेचैनी ना होती। मुझे अपने बातिन से आवाज़ आती ऐ अब्दुल क़ादिर! हम ने तुझे साबित क़दम कर दिया है और अपनी इम्दाद तेरे शामिल हाल कर दी है। ये लोग तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मेरे उठने की देर होती के ये सारे शयातीन दायें बायें भाग जाते अल्बत्ता एक शयातीन अकेला मेरे पास आता और मुझे कहता यहाँ से चले जाओ वरना मैं ये कर दूंगा वो कर दूंगा अलग़र्ज़ वो डराता। मैं उसे तमाचा मारता और वो भाग जाता। मैं *लाहोला वलाक़ुव्वता इल्लाबिल्लाहिल अलीय्यिलअज़ीम* पढ़ता तो वो मेरे सामने जल जाता।

एक दफ़ा एक निहायत ही बदसूरत शख़्स मेरे पास आया उससे बदबू आ रही थी और कहने लगा मैं इब्लीस हूं तेरी ख़िदमत के लिये तेरे पास आया हूं। तूने मुझे थका दिया और मेरे चेले चाँटों को आजिज़ कर दिया। मैंने उसे कहा तू चला जा मगर उसने मेरी बात ना मानी। दरें असना ऊपर से एक हाथ नमूदार हुआ जो उसके भेजे पर पड़ा और वो ज़मीन में धंस गया। फिर आग का शोला लिए हुए मेरे पास आया और मेरा मुक़ाबला करने लगा। अचानक एक मर्द ढाटा लगाए हुए कमीयत रंग के घोड़े पर सवार मेरे पास आया उसने मुझे एक तलवार दी और ऐड़ियों के बल पर पीछे हट गया। अब के मैंने उस शैतान को देखा वो दूर बैठा रो रहा है और अपने सर पर ख़ाक

डाल रहा है और साथ ही कहता है के ऐ अब्दुल क़ादिर! मैं तुझ से ना उम्मीद हो चुका हूं। मैंने कहा अख़्लीन! दूर हो। मैं हमेशा तुझ से होशियार रहता हूं। उसने कहा मेरे लिये ये ज़्यादा सख़्ती है। फिर मुझ पर मुनकशिफ़ हुआ के मेरे इर्दगिर्द फंसाने के लिए कई रस्सियां और जाल हैं। मैंने पूछा ये क्या है? बताया गया के ये दुनिया के जाल हैं जो तुम जैसे लोगों को फंसाने के लिए बिछाए जाते हैं। मैं एक साल तक उनके पीछे लगा रहा। यहां तक के वो टुकड़े टुकड़े हो गया। फिर मैंने देखा के कई किस्म की रस्सियां हैं जो मेरे साथ वाबस्ता हो रही हैं। मैंने पूछा ये क्या है? मुझे बताया गया के ये लोगों के असबाब हैं जो तुझ से वाबस्ता हैं। मैंने साल भर उस काम में तवज्जह दी। वो सारी रस्सियां कट कटा गईं। फिर मुझे अपने बातिन का कशफ़ अता किया गया। मैंने देखा के मेरा दिल कई अलायक़ से मुतअल्लिक़ हो रहा है। मैंने पूछा ये क्या है मुझे बताया गया के ये तेरे इरादे और इख़्तियारात हैं। मैंने साल भर उनके सिसिले में मुजाहेदह किया तो वो सब ख़त्म हो गए और मेरा क़ल्ब उनसे आज़ाद हो गया। उसके बाद मुझे अपने नफ़्स का कशफ़ हुआ तो मैंने देखा के उसकी बीमारियां बाक़ी हैं और उसकी हवादेहवस ज़िन्दा है और उसका शैतान बाग़ी और सरकश है। एक बरस तक मैंने उस सिलसिले में कोशिश की तो नफ़्स की बीमारियां ज़ायल हो गईं। ख़्वाहिशात मर गईं और उसका शैतान मतीअ हो गया। अब सारा अम्र अल्लाह के लिए हो गया और मैं तनहा बाक़ी रह गया सारा वजूद मेरे पीछे है और मेरी रसाई अभी तक मतलूब तक नहीं हुई। उसके बाद मैं तवक्कुल के दरवाज़े पर गया ताके उस राह से अपने मतलूब का पता हासिल करूं। वहां मैंने हुजूम देखा। तो आगे गुज़र गया। फिर मैं शुक्र के दरवाज़े पर गया के

शायद यहाँ से मेहबूब का कोई निशान मिले तो यहाँ भी भीड़ थी। अब मैं बाबे गुना की तरफ चला मगर वहाँ भी अज़्दहाम था। उस के बाद मैं कुर्ब की दहलीज़ पर पहुँचा, के शायद यहाँ मेहबूबे हक़ीक़ी का वस्ल मिले मगर वही सूरत। फिर मैं बाबे मुशाहेदा पर गया ताके यहाँ से अपना मतलूब हासिल करूं मगर हुजूम की वजह से ना उम्मीदी हुई बिलआख़िर मैं फिर फिरा कर बाबे फिक्र पर पहुँचा। हुस्ने इत्तिफाक़ से वो खाली था। चुनांचे उस राह से मैं अपने मतलूब के पास पहुँच गया। यहाँ मैंने हर वो ख़ुशी देखी जो छोड़ आया था। यहाँ मेरे लिए ग़ैबी ख़ज़ानों के दरवाज़े खोल दिये गए। मुझे अज़ीम एज़ाज़ से सरफ़राज़ किया गया। ग़नाए सरमुदी और आज़ादीऐ कामिल की नेमतें अता की गईं। अपने बक़ा के तसव्वर को मिटा दिया गया। बशरी सिफात मनसूख़ हो गईं और वजूद हक़ीक़ी अता हुआ। (खुलासात-उल-मफ़ाख़िर)

मुख़्तलिफ़ बातों का मुशाहेदा शेख़ उस्मान हेरी(रह॰अ॰) कहते हैं के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने मुझे बताया के मुजाहेदात के दौरान मुझ पर अजीब व ग़रीब कैफ़ियात तारी हुईं। कभी मुझे मेरे बातिन और नफ़्स का मुशाहेदा कराया गया और कभी मुझे फ़िक्रो ग़ना और शुक्रो तवक्कुल के दरवाज़ों से गुज़ारा गया जब मुझे बातिन का मुशाहेदा कराया गया तो उसको बहुत से अलायक़ से मुलव्विस पाया। मुझे बताया गया के ये मेरे इख़्तियारात और इरादे हैं। मैंने एक साल तक उनके ख़िलाफ मुजाहेदह किया। हत्ता के ये सब अलायक़ मुनक़तअे हो गए। फिर मुझे अपने नफ़्स का मुशाहेदा कराया गया। मैंने उसमें भी कई अमराज़ देखे। साल भर तक मैंने उनके ख़िलाफ़ जंग की हत्ता के ये अमराज़ जड़ से उखड़ गए। और मेरा नफ़्स ताबअे इलाही

हो गया।

उसके बाद मैं तवक्कुल के दरवाज़े पर आया तो वहाँ बहुत बड़ा हुजूम देखा। मैं उस हुजूम को चीर कर निकल गया फिर शुक्र के दरवाज़े पर आया तो वहाँ भी यही हाल था। मैं उसमें से भी गुज़र गया। फिर ग़ना व मुशाहेदे के दरवाज़ों पर आया तो उन्हें बिलकुल खाली पाया। अन्दर दाखि़ल हुआ तो वहाँ रूहानी खज़ायन की इन्तिहा नहीं थी। उनमें मुझे हक़ीक़ी ग़ना, इज़्ज़त और मुसर्रत मयस्सर हुई मेरी हस्ती में इन्क़िलाब पैदा हो गया और मुझे वजूद सानी अता हुआ।

एक दफ़ा मुझ पर एक अजीब वजदानी केफ़ियत तारी हुई। मैंने बे इख़्तियार एक होलनाक चीख़ मारी। कुछ सहराई रहज़न मेरे क़रीब खेमाज़न थे। वो घबरा गए के शायद हकूमत की फौज आ गई है। भागते हुए मेरे पास से गुज़रे तो मुझे बेहोश पड़ा पाया। कहने लगे। ओहो! ये तो अब्दुल क़ादिर दीवाना है उस अल्लाह के बन्दे ने हमें ख़्वाहमख़्वाह डरा दिया। (क़लायद-उल-जवाहर)

बुर्ज अजमी में ग्यारह साल एक मर्तबा हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह॰अ॰) ने खुत्बा देते हुए फरमाया के मैं ग्यारह साल तक बुर्ज में मुक़ीम रहा हूँ और मेरे उस तवील क़याम के बाअस ही लोग उसे अजमी बुर्ज कहने लगे। मैं उस बुर्ज में हर वक़्त याद इलाही में मश्ग़ूल रहता और मैंने खुदावंद तआला से अहेद किया था के जब तक वो लुक़्मा मेरे मुंह में नहीं देगा मैं नहीं खाऊंगा और जब तक खुद ना पिलायेगा नहीं पियूंगा। एक बार चालीस रोज़ तक मैंने कुछ नहीं खाया पिया और चालीस दिन के बाद एक शख़्स आया और थोड़ा सा खाना मेरे पास रख कर चला गया। क़रीब था के मेरा नफ़्स उस पर गिरे (मैं वो खाना खा लूं) क्योंके ना क़ाबिले बर्दाश्त भूक थी।

मैंने कहा के वल्लाह! मैंने खुदा से जो अहेद किया है मैं उससे नहीं फिरूंगा। उस वक़्त मैंने सुना के मेरे अन्दर से कोई फरयाद कर रहा है और बुलंद आवाज़ से कह रहा है अलजूअ! अलजूअ! (भूक!भूक!)

उसी वक़्त शेख़ अबु सईद मख़रूमी(रह॰अ॰) मेरे पास तशरीफ़ लाए और उन्होंने ये आवाज़ सुनी और फरमाया ऐ अब्दुल क़ादिर! ये कैसी आवाज़ है, मैंने कहा ये नफ़्स का क़ल्क़ और इज़्तेराब है मगर रूह मुशाहेदाए हक़ में अपने इक़रार पर है। उन्होंने कहा के हमारे घर चलो। ये कह कर वो चले गए और मैं ने दिल में कहा के मैं यहाँ से बाहर नहीं जाऊँगा। इत्तिफाकन उसी वक़्त अबु-अल-अब्बास खिज़्र अलेहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और फरमाया के उठो और अबु सईद(रह॰अ॰) के पास जाओ। चुनाँचे मैंने तामील इर्शाद की। जब मैं उनके मकान पर पहुँचा तो शेख़ अबु सईद(रह॰अ॰) मेरे इन्तेज़ार में दरवाज़े पर खड़े थे। फरमाने लगे ऐ अब्दुल क़ादिर! क्या मेरा कहना काफी ना था के खिज़्र अलेहिस्सलाम के कहने की ज़रूरत पड़ी। ये कह कर मुझे घर के अन्दर ले गए और अपने हाथ से मुझे रोटी खिलाई हत्ता के मैं खूब सेर हो गया। (नफ़हात-उल-अनस)

शैतान के फ़रैब से बचना आपके साहिबज़ादे शेख़ ज़्याउद्दीन अबु नस्र मूसा फरमाते हैं के मेरे वालिद बुज़ुर्गवार हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने मुझे बताया के एक दफा मैं एक बे आबो गयाह बयाबान में फिर रहा था। प्यास से ज़बान पर कांटे पड़े हुए थे। उस वक़्त मैंने देखा के बादल का एक टुकड़ा मेरे सर पर नमूदार हुआ और उसमें से टप टप बूंदें गिरने लगीं मुझे मालूम हो गया के ये बाराने रहमत है। चुनाँचे बारिश के उस पानी से मैंने अपनी प्यास बुझाई और अल्लाह तआला

का शुक्र अदा किया।

फिर मैंने देखा के एक अज़ीमुश्शान रोशनी नमूदार हुई जिस से आसमान के किनारे रोशन हो गए। उसमें एक सूरत नमूदार हुई और मुझ से मुख़ातिब होकर कहा ऐ अब्दुल क़ादिर मैं तेरा रब हूं मैंने तेरे लिये सब चीज़ें हलाल कर दी हैं।

मैंने *आऊज़ु बिल्लाही मिनश्शैतानिरजीम।* पढ़ कर उसे धत्कार दिया। वो रोशनी फ़ौरन ज़ुलमत से बदल गई और वो सूरत धुंआ बन गई। उस धुंएं से मैंने ये आवाज़ सुनी, ऐ अब्दुल क़ादिर! खुदा ने तुम को तुम्हारे इल्मो तफ़क़्क़ा की बदोलत मेरे मक्र से बचा लिया वरना मैं अपने इस मक्र से सत्तर सूफ़िया को गुमराह कर चुका हूं।

मैंने कहा बेशक मेरे मौला करीम का करम है जो मेरे शामिले हाल है।

सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह०अ०) से पूछा गया। या हज़रत! आपने कैसे जाना के वो शैतान है? फरमाया उसके ये कहने से के ऐ अब्दुल क़ादिर! मैंने हराम चीज़ें तेरे लिए हलाल कर दीं। क्योंके अल्लाह तआला फहश बातों का हुक्म नहीं देता। (क़लायद-उल-जवाहर)

एक आरिफ़ा का वाक़ेया अज़कार-उल-अबरार में रिवायत है के एक दफा हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) ने फरमाया के एक मर्तबा में मक्का मुकर्रमा के सफ़र पर रवाना होकर जब मीनार उम्मुलक़रून के पास पहुंचा तो मेरी मुलाक़ात शेख़ अदी बिन मुसाफिर से हुई। (शेख़ अदी बिन मुसाफिर अमवी(रह०अ०) उस दौर के मशहूर औलिया में से थे। उनकी मुतअद्दिद करामात मशहूर हैं। 467हि० में शाम के एक गाँव बैतफार में पैदा हुए। तवील मुजाहेदात के बाद कोहे हिकार में गोशा नशीन हो गए। नव्वे साल की उम्र में 557हि० में वअसल बहक़ हुए)

आपसे मुलाक़ात के वक़्त आप जवानी के आलम में थे। उन्होंने आप से पूछा के कहाँ जाने का इरादा है? आपने जवाब में कहा के हज बैतुल्लाह के लिए मक्का मुकर्रमा जा रहा हूँ। उन्होंने कहा के क्या मैं भी उस मुक़द्दस सफ़र में आपकी हमराही इख़्तियार कर सकता हूँ। आपने कहा हाँ आप मेरे साथ चलें।

आख़िर हम दोनों इकट्ठे सफर करने लगे। कुछ दूर गए थे के हमें एक नक़ाब पोश हबशीया लड़की मिली। वो मेरे सामने खड़ी हो गई और ग़ोर से मुझे देखते हुए कहने लगी ऐ ख़ूबरू नोजवान! तू कहाँ का रहने वाला है मैंने कहा अर्ज़े गीलान का बाशिन्दा हूँ जो बिलादे ईरान में है। कहने लगी ऐ मर्दे ख़ुदा! आज तूने मुझे बहुत थकाया है। मैंने कहा, क्यों? उसने कहा के मैं हबश में थी के मुझे हालते कश्फ़ी में मालूम हुआ के अल्लाह तआला ने तेरे दिल को अपने नूर से भर दिया है और अपने फ़ज़्लो करम से तुझे वो कुछ अता किया है जो किसी दूसरे (वलीअल्लाह) को नहीं दिया। उस मुशाहेदा के बाद मेरे दिल ने कहा के तेरी ज़ियारत करूं। चुनांचे तेरी तलाश ने मुझे थका दिया है। अब मैंने तुझे देखा है तो जी चाहता है के आज तुम्हारे साथ रहूं और शाम को रोज़ा तुम्हारे साथ इफ़्तार करूं।

ये बात कह कर वो रास्ते के एक तरफ चलने लगी और हम दूसरी तरफ चलने लगे। जब शाम हुई तो हमारे पास आसमान से एक तबाक़ नाज़िल हुआ। उस तबाक़ में छः रोटियाँ, सिर्का और सब्ज़ी थी। ये देखकर उस हबशिया ने कहा:

अल्हमदुलिल्लाहील्लज़ी अक्रमनी व अकरम ज़ीफ़ी अन्नाहु लज़ालिका अहलल फ़ी कुल्ली लेलातिन युनज़्ज़िलु अला रग़ीफ़ानी व लैलातुन सित्तातू इक्रामनल्लीअम्निया फ़ी

(अल्लाह का शुक्र है जिसने मेरी और मेरे मेहमान की इज़्ज़त की। मेरे लिए हर रात दो रोटियाँ उतरा करती हैं। आज मेरे मेहमानों की इज़्ज़त के लिए छः नाज़िल हुईं)

चुनाँचे हम ने दो रोटियाँ उस सिरके और सब्ज़ी के साथ खा लीं। फिर हम पर तीन कोज़े पानी के नाज़िल हुए उनका पानी ऐसा लज़ीज़ और शीरीं था के ज़मीन के पानी को उससे कुछ निसबत ही ना थी।

फिर वो आरिफ़ा हबशिया हम से रूख़सत हो गई और हम मंज़िलों पे मंज़िलें तय करते मक्का मोअज़्ज़मा जा पहुँचे। एक दिन हम तवाफ कर थे के अदी पर अनवारे इलाही का नुज़ूल हुआ वो ग़श खा कर गिर पड़े और ऐसे बेहोश हुए के उन पर मुर्दा का गुमान होता था। इतने में मैं ने देखा के वही आरिफ़ा हबशिया शेख़ अदी(रह॰अ॰) के सर पर खड़ी है और उन्हें हिला हिला कर कह रही है। "जिस अल्लाह ने तुझे मारा है वही तुझे ज़िन्दा करेगा। पाक है वो ज़ात के जिस के नूरे जलाल के सामने किसी शै के ठहरने की मजाल नहीं है सिवाये उसके के वो खुद उसे क़ायम रखे और कायनात उसके ज़हूरे सिफ़ात के वक़्त क़ायम नहीं रहती बजुज़ उसके के वो मदद करे। उस रब्बे जुलजलाल के अनवारे मुक़द्दस ने ज़ेहनो दिमाग़ को मुनजमिद कर दिया है और अहले अक़्लो इल्म की आँखें चुन्धिया दी हैं।"

आरिफ़ा हबशिया के मुंह से ये अलफ़ाज़ निकलते ही हज़रत अदी(रह॰अ॰) को होश आ गया और वो उठ खड़े हुए। फिर अल्लाह तआला ने हालते तवाफ में मुझ पर अपने अनवारे मुक़द्दस नाज़िल फरमाए और मैंने हातिफ़े ग़ैबी को ये कहते हुए सुना:

"ऐ अब्दुल क़ादिर! तजरीद ज़ाहिर तर्क कर और तफरीद तोहीद और तजरीद तफ़रीद इख़्तियार कर। हम

तुझे अपने निशानात में अजायबात दिखाएंगे। पस अपनी मुराद को हमारी मुराद से मत मिला। साबित क़दम रह, मेरी रज़ा के सिवा किसी की रज़ा ना मांग तेरे लिये हमारा शहूदे दायमी है खल्क़े खुदा की फ़ेज़ रसानी के लिए बैठ जा। क्योंके हमारे कुछ खास बन्दे हैं जिनहें हम तेरे वसीले से अपना मुक़र्रब बनायेंगे।"

उस वक़्त मुझे उस आर्रफ़ा हबशिया की आवाज़ आई। कह रही थी।

"ऐ जवाने सालेह! आज तेरा अजीब रूत्बा है मैं देखती हूं के तेरे सर पर एक नूरानी शामियाना है और उसके इर्दगिर्द आसमान तक फरिश्तों का हुजूम है और तमाम औलिया अल्लाह की नज़रें तुझ पर लगी हुई हैं।"

ये कह कर वो चली गई और उसके बाद मैंने उसे कभी नहीं देखा। ये आर्रफ़ा हबशिया कौन थी? उसका मुताल्लिक़ तमाम सीरत निगार खामोश हैं। इतना पता ज़रूर चलता है के ये आर्रफ़ा खास-उल-खास मुक़र्रबीने इलाही से थी और सय्यदना गौसे आज़म(रह॰अ॰) के शौक़े दीद ने उसे हज़ारहा मील के सफ़र पर मजबूर कर दिया था।

मुजाहेदों में सब्र शेख़ अबु अब्दुल्लाह नजार(रह॰अ॰) बयान करते हैं। के हज़रत शेख़ ने मुझ से अपने वाक़यात इस तरह बयान फरमाए के मैं जिस क़द्र मुशक़्क़तें बर्दाश्त करता था अगर वो किसी पहाड़ पर डाल दी जायें तो वो भी पारा पारा हो जाए। और जब वो मुशक़्क़तें मेरी क़ुव्वते बर्दाश्त से बाहर हो जातीं तो मैं ज़मीन पर लेट कर कहता के "हर तंगी के साथ आसानी है बेशक हर तंगी के साथ आसानी है।"

ये कहकर अपने सर को ज़मीन से उठा लेता तो मेरी केफ़ियत बदली होती और मुझे सकून मिल जाता था। आपने फरमाया के जब मैं इल्मे फ़िक़ह हासिल कर

रहा था तो शहर के बजाये सहराओं और वीरानों में रातें गुज़ारता था। ऊनी लिबास पहन कर नंगे पाँऊ कांटों पर चला करता था और नहर के किनारे लगे हुए दरख़्तों के पत्तों और घास फूस से अपना पेट भर लिया करता। ग़र्ज़ ये के मेरे मुजाहेदात में कोई सख़्त से सख़्त चीज़ भी हायल ना होती जिससे मैं दहशत ज़दा हो जाता। इस तरह शब व रोज़ मेरे ऊपर गुज़रते और मैं चीख़ मार कर मुंह के बल गिरता यहाँ के लोग मुझे दीवाना और मरीज़ समझ कर शिफ़ाख़ानों में पहुँचा देते। कभी मेरी ये हालत होती जैसे के मुर्दा हो गया हूँ। और नहलाने वाले मुझे ग़ुस्ल देने आ चुके हैं लेकिन फिर ये केफ़ियत भी मुझ से दूर कर जाती।

इबादत का मामूल शेख़ अबु-अल-हसन अली क़ुरशी और फ़क़ीहा मोहम्मद बिन अबादा अनसारी का बयान है के ५५३ हि॰ में हमारी मौजूदगी में सय्यदी हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ख़िदमत में अर्ज़ किया गया के मुजाहेदे के आग़ाज़ और अंजाम में आप को जो जो हालात दरपेश आए उनमें से कुछ हमें बयान फरमायें ताके हम आप की पैरवी कर सकें।

आपने ये अश्आर पढ़े...

अना राग़िब फ़ीमन तग़रब वसफ़ह
व मनासिब लफ़्ती तलातिफ़ लुत्फ़ा

(मैं तो उसका जोया हूं जो नादिर ओसाफ का मालिक है और मेरी निसबमत उस शख़्स से है जो लुत्फो करम का मालिक है)

व मआरिज़-उल-अशाक़ फ़ी असरारहुम
मनकुल मअनी लम यसअनी कश्फ़ी

(मैं उश्शाक़ के साथ उनके असरारो रमूज़ में हर मअनी में मद्दे मुक़ाबिल हूं मगर मुझे उनके बयान करने की ताब नहीं)

क़द काना यसकुरनी मज़ाज शराबहू

वलयौम यसहसीनी लदेही सरफ़नी

(पहले तो मेहबूब की पानी मिली हुई शराब भी मुझे मदहोश कर देती थी मगर आज उसके पास रह कर भी मैं बाहोश हूँ)

वा ग़ैब अन रशदी बादल नज़ूरत

वलयौमे असतजलीलह सुम्मा अज्फ़ह

(इससे क़ब्ल उसकी एक निगाह से मैं होशो हवास खो बैठता था और अब मैं उसका जलवा हासिल करता हूँ और फिर उसे रूख़्सत भी करता हूँ)

उस पर लोगों ने अर्ज़ किया हुज़ूर! हम आपकी तरह रोज़े रखते हैं, नमाजें पढ़ते हैं और आपकी तरह इबादत में जद्दोजहद करते हैं मगर हमें आपके अहवाल का क़तरा भी नसीब नहीं होता। आपने फरमाया के तुमने आमाल में तो मुझ से बराबरी कर ली क्या इनायते इलाही में भी बराबरी करना चाहते हो। बख़ुदा मैंने उस वक़्त तक नहीं खाया जब तक मुझे अल्लाह ने अपने हक़ की क़सम देकर खाने के लिये नहीं फरमाया। मैंने उस वक़्त तक नहीं पिया जब तक मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम देकर पीने का अम्र नहीं फरमाया गया और मैंने कोई काम नहीं किया यहाँ तक के मुझे उसका हुक्म नहीं हुआ।

अबु हफ़्स का बयान है के शेख़ अब्दुर्रहीम असकरी ये अश्आर बसरत पढ़ा करते थे। (ख़ुलासात-उल-मफाखिर)

ख़िरक़हऐ ख़िलाफ़त व जानशीनी

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने तरीक़त की तालीम और मनाज़िले सलूक हज़रत हम्माद बिन मुस्लिम दबास(रह॰अ॰) की ज़ेरे निगरानी तय की। उनके अलावा आपने क़ाज़ी हज़रत अबु सईद मुबारक मख़रूमी(रह॰अ॰) से भी इक्तिसाबे फ़ेज़ किया। ये दोनों बुज़ुर्ग अपने दौर के औलियाऐ कामिलीन से थे। आपने उन दोनों बुज़ुर्गों की सोहबत और नज़रे इनायत से बे शुमार फ्यूज़ व बर्कात हासिल किये मगर अभी तक आपने बाज़ाब्ता किसी के दस्ते हक़ परस्त पर बअेत ना की थी अगरचे आपको पूरी तरह तज़कियाऐ नफ़्स और इल्मे बातिन हासिल हो चुका था।

बअेत आख़िर आपने सूफ़िया के दस्तूर के मुताबिक़ ज़ाहिरी तौर पर बअेत होने का फेसला किया। चुनांचे मनशाऐ इलाही के मुताबिक़ आप हज़रत क़ाज़ी अबु सईद मुबारक मख़रूमी(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और बअेत करके उनके हल्क़ाए इरादत में शामिल हो गए। शेख़ अबु सईद मुबारक(रह॰अ॰) को अपने इस अज़ीम-उल-मरतबत मुरीद पर बेहद नाज़ था अल्लाह तआला ने खुद उन्हें उस शार्गिदे रशीद के मरतबे से आगाह कर दिया था। एक दिन हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) उनके पास मुसाफिर ख़ाने में बैठे थे। किसी काम के लिए उठ कर बाहर गए तो क़ाज़ी अबु सईद मुबारक(रह॰अ॰) ने फरमाया:

"उस जवान के क़दम एक दिन तमाम औलिया अल्लाह की गर्दन पर होंगे और उस के ज़माने के तमाम औलिया उसके आगे इन्किसारी करेंगे।"

ख़िरक़हऐ ख़िलाफ़त बयान किया जाता है के हज़रत क़ाज़ी अबु सईद मुबारक मख़रूमी(रह॰अ॰) ने

जब आपको अपनी बअेत में ले लिया तो उसके बाद आपको अपने हाथों से खाना खिलाया। हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) का इर्शाद है के मेरे शेख़ तरीक़त जो लुक़मा मेरे मुंह में डालते थे वो मेरे सीने को नूरे मआरफ़त से भर देता था। फिर हज़रत शेख़ अबु सईद मुबारक(रह॰अ॰) ने आपको ख़ुरक़हए विलायत पहनाया और फ़रमाया:

"ऐ अब्दुलक़ादिर! ये ख़िरक़ह जनाब सरदार कायनात रसूले मक़्बूल सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने हज़रत अली(र॰अ॰) को अता फरमाया उन्होंने ख़्वाजा हसन बसरी(रह॰अ॰) को अता फरमाया। और उनके दस्त ब दस्त मुझ तक पहुँचा।"

ये ख़िरक़ह ज़ेबे तन करके हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) पर बैशअज़बैश अनवारे इलाही का नुज़ूल हुआ।

शज्रे तरीक़त शेख़ जीलानी(रह॰अ॰) ने ख़ुरक़ाऐ इरादत व जानशीनी अपने पीरो मुर्शिद आरिफ़ बिल्लाह शेख़ अबु सईद मख़रूमी मुबारक मख़रूमी(रह॰अ॰) से हासिल किया और उन्होंने अपने शेख़ अबु-अल-हसन अली बिन यूसुफ-अल-कुर्शी अलहनकारी से और उन्होंने आरिफ बिल्लाह शेख़ अबु-अल-फरह तोसी से और उन्होंने शेख़ अबु बकर् शिबली से और उन्होंने शेख़ अबु-अल-क़ासिम जुनैद बग़दादी(रह॰अ॰) से और उन्होंने शेख़ सरी सक्ता से और उन्होंने शेख़ मअरूफ़ कुर्ख़ी से और उन्होंने शेख़ दाऊद ताई से और उन्होंने शेख़ हबीब अजमी(रह॰अ॰) से और उन्होंने सय्यदना शेख़ हज़रत हसन बसरी(रह॰अ॰) से और उनको अमीर-उल-मोमिनीन सय्यदना अली मुर्तज़ा

करमल्लाहो वज्ह-अल-करीम ने पहनाया था और अली मुर्तज़ा(र०अ०) को सरकार दो जहाँ सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने ये ख़िरक़हए मुबारका अता फरमाया था। इस तरह बारह वासतों के ज़रिये शेख़ जीलानी मेहबूबे सुबहानी(रह०अ०) को वो ख़ुरका इरादत हासिल हुआ।

हज़रत अबु सईद मुबारक मख़्रूमी(रह॰अ॰)

हसूले इल्म आप की विलादत बा सआदत बग़दाद शरीफ़ में हुई। आपका नाम नामी मुबारक इब्ने अली बिन हुसैन बिन बन्दार-उल-बग़दादी अलमख़्रूमी है और कुनियत अबु सईद है आपने अपने वक़्त के मुमताज़ उल्मा व मशायख़ से उलूम दीनिया का इक्तिसाब फरमाया यहां तक के फ़िक़ह, हदीस और इल्म माक़ूलात व मनक़ूलात में महारते ताम्मा हासिल फरमाई और हदीस शरीफ की रिवायत क़ाज़ी अबीयअला और एक जमाअत अयम्मा से की और फ़िक़ह शेख़ अबी जाफ़र इब्ने अबी मूसा से पढ़ी।

खिलाफ़त आप मुरीदो ख़लीफ़ा हज़रत शेख़ इब्राहीम अबु-अल-हसन अली हकारी(रह॰अ॰) के हैं और आपके ख़िरक़ह मुबारक का शिजरा इस तरतीब से है:

हज़रत शेख़ अबु सईद मुबारक मख़्रूमी(रह॰अ॰) को ख़िरक़ह अता फरमाया हज़रत शेख़ इब्राहीम अबु-अल-हसन अली हकारी(रह॰अ॰) ने और उनको शेख़ अबु-अल-फरह तरतोसी ने और उनको शेख़ अबु-अल-फ़ज़ल अब्दुल वाहिद बिन अब्दुल अज़ीज़(रह॰अ॰) ने और उनको शेख़ अबुबकर शिबली(रह॰अ॰) ने।

आम हालात सुल्तान-उल-औलिया बुरहान-उल-असफिया कुत्बे आरफ़ां, क़िबलाए सालकां, वाक़िफ़ हक़ीक़त, जामअे उलूमे मअरफ़त हज़रत शेख़ अबु सईद मुबारक मख़्रूमी(रह॰अ॰), आप सिलसिला आलिया क़ाद्रया रिज़वया के सोल्हवें शेख़ तरीक़त हैं। आप ओहदा क़ज़ा पर भी मामूर हुए फिर आपने उसको तर्क कर दिया। आप हमेशा याद इलाही और इबादते मोला में मसरूफ़ रहते थे। आपकी तवज्जह ग़ैबी व मुआनक़ह में ये तासीर थी के जिस पर तवज्जह ख़ास डाल दी या

जिससे मुआनक़ाह फरमा लिया तो वो दुनिया व माफ़ीहा से बेख़बर हो जाता था। हज़रत शेख़ अपने वक़्त के मुमताज़ तरीन फ़ुक़ोहा और बुज़ुर्ग तरीन इमाम थे। और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी के मुनब्बेअे थे आप इल्मे मुनाज़रा में महारते ताम्मा रखते थे। मज़ाहिब अरबआ में से हंबली मज़हब के मुक़ल्लिद और मुतब्बअे थे। बाब-उल-अज़ज बग़दाद शरीफ़ का तारीख़ साज़ मदरसा आप ही ने क़ायम फरमाया और उसको तामीर फरमाया और अपनी हयात ही में उसको हज़रत ग़ौसीयत मआब के सपुर्द कर दिया था जिसमें आपने मुद्दतुलउम्र दर्स व तदरीस के फरायज़ अंजाम दिये। और साहबज़ादों ने भी आपकी वफ़ात के बाद उस मदरसे में पढ़ाया। आप खुद फरमाते हैं के शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) ने खिरक़ह मुझ से पहना और मैंने उनसे और हर एक ने एक दूसरे से तबर्रुक लिया और आप हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम के मसाहिब में थे। सब्रो रज़ा व तवक्कुल व तफ़्वीज़ में क़दम रासिख़ रखते थे और नज़रीद में यगानाऐ वक़्त थे और साहिबे मुक़ामाते बुलंद करामात अरजुमन्द थे।

खुल्फ़ाऐइक्राम आपके खुल्फ़ाअ व औलाद व अम्जादे की फहरिस्त से अक्सर मोअर्रिख़ीन ने सकूत इख़्तियार किया है। खुल्फ़ा में सिर्फ़ एक सय्यदना महीउद्दीन महबूबे सुबहानी अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के नाम नामी ही पर अक्सर मोअर्रिख़ीन ने इकतफ़ा किया है।

तारीख़े विसाल आपका विसाल मुबारक 27 शाबान-उल-मोअज़्ज़म बरोज़ दो शंबा 513हि॰ में बग़दाद शरीफ़ में हुआ। इन्ना लिल्लाहो व इन्ना इलेहि राजीऊन। मगर बाज़ ने 4 शाबान, दस मोहर्रमुलहराम और सात शाबानुलमोअज़्ज़म 508 भी तहरीर किया है।

बू सईद आले असद दौर ज़मन
जलवा गरशुद दर जनाँचूं माहे ईद

"क़ाफ़ला सालार" सालिशे हस्त नीज़
आबिद तय्यब मुबारक बू सईद

शम्स हक़ 508 हि० गोया ज़े क़ुत्बे आरफ़ाँ 513 हि०
साल व सलश तरफ़ा बे गुफ़्तों शनेद

मज़ारे मुक़द्दस आपका मज़ार मुक़द्दस 513 हि० बग़दाद शरीफ में आप के क़ायम कर्दा मरसे बाबुलअज़ज में मरजओ खलायक़ है।

वअज़ व तबलीग़

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने 521 हि॰ में वअज़ व तबलीग़ का सिलसिला शुरू किया। इससे पहले आप चूंके 25 साल तक मुजाहेदात में मसरूफ रहे इसलिए इस अर्से के दौरान आप वअज़ से अलहेदा रहे मगर जूंही आप हर लिहाज़ से उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी में कामिल हो गए तो आपको हुक्म दिया गया के मसनदे इर्शाद पर जलवा अफ़रोज़ हों उस हुक्म का वाक़ेया यूं बयान किया जाता है।

हुक्मे वअज़ हज़रत शेख़ का बयान है के 16 शव्वाल 521 हि॰ बरोज़ मंगल नमाज़े ज़ोहर से क़ब्ल दिन के वक़्त आप ने ख़्वाब में देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए हैं और फ़रमाते हैं ऐ अब्दुल क़ादिर! तुम लोगों को राहे हक़ बतलाने के लिए वाज़ व नसीहत क्यों नहीं करते ताके लोग गुमराही से बचें। उसके जवाब में आप ने सरकारे दो आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में इलतिजा की के या रसूल अल्लाह! मैं एक अजमी हूँ। अरब के फसोहाअ के सामने लब कुशाई कैसे करूं? उस पर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फरमाया के अपना मुंह खोलो। तो आपने तामील इर्शाद फरमाते हुए मुंह खोला। सरवरे कायनात सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने अपना लुआबे दहन आपके मुंह में डाल दिया। इस तरह सरकारे दो आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने सात मर्तबा आपके मुंह में अपना लुआब लगाया और बादअज़ाँ हुक्म दिया के अब जाओ वअज़ व नसीहत के ज़रिये लोगों को अल्लाह की तरफ दअवत दो।

आप फरमाते हैं के उस वक़्त मुझ पर एक वजदानी केफ़ियत तारी हो गई। ख़्वाब से बेदार होकर आपने

नमाज़ ज़ोहर अदा फरमाई और उसके बाद आपको जो हुक्म मिला था उसकी तामील के लिए बैठ गए। उस वक़्त आपके इर्दगिर्द काफी लोग मौजूद थे आपने सोचा के कुछ कहूं मगर यकदम हालते इसतग़राक़ की सी केफ़ियत पैदा हो गई। देखते क्या हैं हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह तशरीफ़ लाए हैं और फरमा रहे हैं के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने आपको जो हुक्म दिया है उसकी तामील शुरू कर दें। आपका इर्शाद है के मैं उस वक़्त घबराया हुआ था के क्या कहूं आख़िर आपने भी मुझे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की तरह फ़ेज़याब फरमाया और मेरे मुंह में छः मर्तबा अपना लुआबे दहन डाला और यकदम हज़रत अली(र०अ०) तशरीफ़ ले गए और इसके बाद आप सही हालत में आ गए और वअज़ कहना शुरू कर दिया। लोग आपकी फ़साहत और बलाग़त देख कर हैरान रह गए। उस रोज़ के बाद आपने मख़्लूक़े खुदा में रूश्दो हिदायत के वअज़ का सिलसिला शुरू कर दिया।

हातिफ़े ग़ैबी से इशारा आपके सवान्हे निगारों ने मनदर्जा बाला हुक्म को बाज़ कुतुब में यूं बयान किया है के एक मर्तबा हातिफ़े ग़ैबी से इशारा हुआ के ऐ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०)। बग़दाद में दाख़िल हो कर लोगों में वअज़ करो। चुनांचे जब मैंने बग़दाद वापसी के बाद लोगों को पहली ही जैसी हालत पर पाया, तो फिर वापसी का क़सद कर लिया लेकिन हातिफ़े ग़ैबी ने मुझ से दोबारा कहा ऐ अब्दुल क़ादिर! बग़दाद में लोगों को नसीहत करो। क्योंके तुम्हारी ज़ात से लोगों को बहुत फायदा पहुंचने वाला है मगर मैंने जवाब दिया के मुझे लोगों से क्या ग़र्ज़, मैं तो अपने ईमान की सलामती का ख़्वाहां हूं। इस पर मुझे जवाब मिला के वापस जा तेरा

ईमान सलामत है। आप फरमाते हैं के उसके बाद मैंने अल्लाह तआला से सत्तर अहद लिए जिनमें से एक ये था के मुझे कभी मक्र में मुब्तला ना किया जाए। दूसरा ये के मेरा कोई मुरीद बगैर तौबा करने के मरने ना पाए।

उसके बाद मैंने बग़दाद वापस आकर लोगों को पंदो नसाएहे शुरू कर दिए जिसके बाद मैंने मुशाहेदा किया के हिजाबात उठे और अनवार मेरी जानिब मुतवज्जेह हैं। जब मैंने पूछा के ये कौन सी हालत है? तो मुझे बताया गया के उन फतूहात पर मुबारकबाद देने हुज़ूरे अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ ला रहे हैं। फिर उन अनवार में मज़ीद इज़ाफ़ा होता चला गया और मुझ पर खुशी की कैफ़ियत तारी हुई और मैंने देखा के हुज़ूरे अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मिंबर पर तशरीफ फरमा रहे हैं और अब्दुल क़ादिर कह कर मुझे आवाज़ दे रहे हैं। चुनाँचे मैं फर्ते मुसर्रत के सात क़दम हवा में उड़ता हुआ आपकी जानिब बढ़ा। तब आपने सात मर्तबा मेरे मुंह में लुआबे दहन लगाया और आपके(स॰अ॰स॰) बाद तीन मर्तबा हज़रत अली(र॰अ॰) ने लुआब लगाया। और जब मैंने हज़रत अली(र॰अ॰) से सवाल किया के आपने हुज़ूर अलेहिस्सलाम की तरह क्यों नहीं किया? आपने फरमाया के हुज़ूर(स॰अ॰स॰) के अदब को मलहूज़ रखते हुए। फिर हुज़ूरे अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने मुझे खुलअत पहनाते हुए फरमाया ये तेरी विलायत की खुलअत है जो औलिया व अक़ताब के लिए मख़्सूस है।

इसके बाद मेरे लिए तक़रीर करना आसान हो गया और मैं ने खुत्बा देना शुरू कर दिया। बाद में हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम मेरे इम्तेहान के लिए तशरीफ़ लाए (जैसे वो दूसरे औलिया का इम्तेहान लेते रहे थे) तो मैंने उनसे कहा के मैं भी आप से ऐसे ही कहूंगा जैसे के आपने

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से कहा था के आपके अन्दर मेरे जैसे सब्रो तहम्मुल की ताक़त नहीं। आप इस्राईली हैं और मैं मोहम्मदी हूं। खबरदार हो जायें मैं भी हूं और आप भी। ये गेंद है और ये मैदान। ये मोहम्मद(स॰अ॰स॰) हैं और ये रहमान। ये मेरा ज़ीन कसा हुआ घोड़ा भी है और मेरी कमान का चिल्ला भी चढ़ा हुआ है और मेरी काट देने वाली तलवार भी है। (क़लायद-उल-जवाहर)

वअज़ व तबलीग़ का आग़ाज़ अपने शेखे़ तरीक़त जनाब अबु सईद मख़रूमी के मदरसे से हुआ क्योंके बयान किया जाता है के हज़रत क़ाज़ी अबु सईद मुबारक मख़रूमी(रह॰अ॰) का बग़दाद मुक़द्दस में एक बहुत बड़ा मदरसा भी था जिसमें वो वअज़ इर्शाद के अलावा तशनगाने उलूम दीनिया को दर्स भी दिया करते थे। क़ाज़ी साहब को जब आपके रूहानी फ़ज़्लो कमाल और इल्मी इसतदअदो सलाहियत और फेहमो फिरासत का अन्दाज़ाए वाफ़िर हो गया तो 521 हि॰ में आपने अपना मदरसा आप ही के हवाले कर दिया।

मजलिसे वअज़ में हुजूम शेख़ अब्दुल्लाह अलजबाई(रह॰अ॰) फरमाते हैं के मुझे सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने बताया के इब्तिदा में मेरे पास दो या तीन आदमी बैठा करते थे। फिर जब शौहरत हुई तो मेरे पास ख़ल्क़त का हुजूम आने लगा। उस वक़्त मैं बग़दाद शरीफ़ के मोहल्ला हल्बा की ईदगाह में बैठा करता था। लोग रात को मशअलें और लालटेनें लेकर आते। फिर इतना इजतमअ होने लगा के ये ईदगाह भी लोगों के लिए नाकाफ़ी हो गई इस वजह से बाहर बड़ी ईदगाह में मिंबर रखा गया। लोग दूरदराज़ से कसीर तअदाद में घोड़ों, ख़च्चरों, गधों, और ऊँटों पर सवार होकर आते। क़रीबन सत्तर हज़ार का इजतमअ होता था।

मदरसे की तामीरे नो अवाम के कसीर तअदाद में हाज़िर होने की वजह से मदरसे की इमारत की वूसअत ना काफ़ी थी। लोग बाहर फसील के नज़दीक सराऐ के दरवाज़े के क़रीब सड़क पर बैठ जाते। रोज़ बरोज़ की बढ़ती हुई तअदाद के पेशे नज़र क़र्बो जवार के मकानात शामिल कर के मदरसा आलिया की इमारत को वसी कर दिया गया अमराअ ने मदरसे की वसीअ तरीन इमारत बनवा देने में ज़रे कसीर ख़र्च किया। फ़क़्रआ और सूफ़ियअ ने अपने हाथों से काम लिया। ये अज़ीमुश्शान मदरसा आपके इस्मे ग्रामी की निसबमत से मदरसा क़ाद्रया के नाम से मश्हूर हो गया।

शौहरते आम आपके मवअज़ हसना की शौहरत बहुत जल्द क़रीब व नज़दीक फैल गई। जब मदरसे की वसीअ व अरीज़ इमारत भी लोगों के बे पनाह हुजूम का आहाता ना कर सकती थी और आप का मिंबर शहर के बाहर ईदगाह के वसीअ मैदान में रखा जाता था। हाज़रीने मजलिस की तअदाद बसा अवक़ात सत्तर हज़ार बल्के इससे भी बढ़ जाती थी।

हज़रत शेख़ अब्दुलहक़ मोहद्दिस दहेलवी(रह॰अ॰) ने अख़्बार-उल-अख़्यार में लिखा है के हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की मजलिसे वअज़ में चार सौ अश्ख़ास क़लम व दवात लेकर बैठते थे और जो कुछ आपसे सुनते थे इमला करते थे यानी आपके इर्शादात को नोट किया करते थे।

चालीस साल तक वअज़ शहबाज़ुलइम्कानी कुद्सुस्सरह-उल-नूरानी के फ़रज़न्दे अरजुमंद सय्यदना अब्दुल वहाब(रह॰अ॰) फरमाते हैं के हुज़ूर ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने 521हि॰ से 561हि॰ तक चालीस साल मख़्लूक़ को वअज़ व नसीहत फरमाया। (अख़्बार-उल-अख़्यार)

शाहे जीलान(रह०अ०) ने हफ़्ते में तीन दिन (जुमआ, मंगल और बुध) को वअज़ व नसीहत फरमाने के लिए मुतईय्यन फरमाया था।

इब्राहीम बिन साअद(रह०अ०) फरमाते हैं के जब हमारे शेख़ हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०) उल्मा का लिबास पहन कर ऊँचे मुक़ाम पर जलवा अफ़रोज़ होकर वअज़ फरमाते तो लोग आप के कलाम मुबारक को बग़ौर सुनते और उस पर अमल पेरा होते।

अम्मादउद्दीन इब्ने कसीर(रह०अ०) अपनी तारीख़ में फरमाते हैं के आप नेक बात की तलक़ीन फरमाते और बुराई को रोकने और इससे बचने की ताकीद फरमाते। अमरअ, सलातीन, ख़ास व आम को मिंबर पर रोनक़ अफ़रोज़ होकर उनके सामने नेक बात बताते। जो कोई ज़ालिम शख़्स को हाकिम मुक़र्रर करता तो उसको उससे मना फरमाते। आपको बुराई से रोकने पर किसी से क़तअन ख़ौफ व ख़त्र ना होता। (क़लायद-उल-जवाहर)

वअज़ की असर अंगेज़ी सय्यदना ग़ौसे आज़म (रह०अ०) का वअज़ हिकमत व दानिशा का एक ठांठें मारता हुआ समुन्दर होता था उसकी तासीर का ये आलम होता था के लोगों पर वज्द की केफ़ियत तारी हो जाती थी। बाज़ लोग जोश में आकर अपने कपड़े फाड़ डालते थे। बाज़ बेहोश हो जाते थे। कई दफ़ा ऐसा हुआ के मजलिसे वअज़ में एक दो आदमी ग़शी की हालत में व अस्ल बहक़ हो गए। अक्सरो अवक़ात ग़ैर मुस्लिम भी आपकी मजालिसे वअज़ में शिर्कत करने आते आपका वअज़ सुनकर उन्हें कलमाए शहादत पढ़ लेने के सिवा कोई चारा ना रहता। जो गुमराह मुसलमान आपका वअज़ सुन लेता सिराते मुसतक़ीम इख़्तियार कर लेता। मशहूर है के आपकी मजलिसे वअज़ में बकसरत रिजाल (जिन्न

व मलायक) भी शिर्कत करते थे आपके वअज़ की असरअंगेज़ी से उनके लिबास और टोपियाँ शोला फिरोज़ाँ बन जातीं और शिद्दते जज़्बात से उनमें इज़्तेराब बपा हो जाता।

आप की आवाज़ निहायत कड़कदार थी जिसे दूर व नज़दीक बैठने वाले तमाम लोग यक्साँ सुनते थे। हेबत का ये आलम था के दौराने वअज़ किसी की ये मजाल ना थी के बात करे, नाक साफ करे, थूके या इधर उधर उठ कर जाए। वअज़ क़द्रे सरअत से फरमाते थे, क्योंके इल्हामाते रब्बानी की बेपनाह आमद होती थी। उस दौर के अक्सर नामवर मशायख़ आपकी मजालिसे वअज़ में बिलइल्तेज़ाम शरीक होते थे। मजालिसे वअज़ में बकसरत करामात आपसे सरज़द हो जातीं।

आपके मवअज़ दिलों पर बिजली का असर करते थे उनमें बेक वक़्त शौकत व अज़मत भी थी और दिलआवेज़ी और हलावत भी। रसूले अक्रम(स॰अ॰स॰) के नायब ख़ास थे। आरिफ़े कामिल थे इसलिये हर वअज़ सामेईन के हालात व ज़रूरियात के मुताबिक़ होता था। लोग जब बग़ैर पूछे अपने शुबहात और क़ल्बी अमराज़ का जवाब पाते थे तो उनको रूहानी सकून हासिल हो जाता था। आपके मुवअज़े हसना के अलफ़ाज़ आज भी दिलों में हरारत पैदा कर देते हैं और उनमें बे मिसाल ताज़गी और ज़िन्दगी मेहसूस होती है।

मुवअज़े हसना का असर आपके शार्गिद शेख़ अब्दुल्लाह जबाई(रह॰अ॰) का बयान है के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के मुवअज़े हसना से मुतास्सिर होकर एक लाख से ज़ायद फ़ुस्साक़ो फ़ुज्जार और बद ऐतक़ाद लोगों ने आपके हाथ पर तौबा की और हज़ारहा यहूदी और इसाई दायराऐ इस्लाम में दाख़िल हुए।

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने एक मर्तबा खुद इर्शाद फरमाया के मेरी आरज़ु होती है के हमेशा ख़लवत गज़ीन रहूं। दश्त बयाबान मेरा मस्कन हों। ना मख़्लूक़ मुझे देखे ना मैं उसको देखूं लेकिन अल्लाह तआला को अपने बन्दों की भलाई मंज़ूर है। मेरे हाथ पर पाँच हज़ार से ज़ायद इसाई और यहूदी मुसलमान हो चुके हैं। और एक लाख से ज़्यादा बदकार और फिस्क़ व फिजूर में मुबतला लोग तौबा कर चुके हैं और ये अल्लाह तआला का ख़ास फज़्ल व इनआम है। (अख़्बार-उल-अख़्यार)

यहूद व नसारा का क़बूले इस्लाम बग़दाद के बाशिन्दों का बड़ा हिस्सा हज़रत के हाथ पर तौबा से मुर्शफ हुआ और निहायत कसरत से इसाई, यहूदी और दूसरे ग़ैर मज़ाहिब के लोग मुर्शफ बइस्लाम हुए। शेख़ उमरअलकोमानी का कहना है के आपकी मजालिसे शरीफ़ा में से कोई मजलिस ऐसी नहीं होती थी जिस में यहूद और नसारा इस्लाम क़बूल ना करते हों। या डाकू, क़ज़्ज़ाक़, क़ातिलउन्नफ़्स, मुफ़्सिद और बदऐतक़ाद लोग आपके दस्ते हक़ परस्त पर तौबा ना करते हों। (अख़्बार-उल-अख़्यार)

इसाई राहिब का मुसलमान होना इसी तरह एक दफा एक इसाई राहिब आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उसका नाम सुनान था। सहायफ़ क़दीमा का ज़बरदस्त आलिम था उसने हज़रत के दस्ते हक़ परस्त पर इस्लाम क़बूल किया और फिर मजमअे आम में खड़े होकर बयान किया के मैं यमन का रहने वाला हूं मेरे दिल में ये बात पैदा हुई के मैं इस्लाम को क़बूल कर लूं और इस पर मेरा मुसम्मिम इरादा हो गया के यमन में सब से आला व अफ़्ज़ल शख़्सीयत के हाथ पर इस्लाम क़बूल करूंगा।

इसी सोच बिचार में था के मुझे नींद आई और मैंने हज़रत सय्यदना ईसा अला नबय्यिना व अलेहिस्सलाम को

ख़्वाब में देखा आपने मुझे इर्शाद फरमाया ऐ सुनान! बग़दाद शरीफ जाओ और शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के दस्ते हक़ परस्त पर इस्लाम क़बूल करो। क्योंके वो उस वक़्त रूए ज़मीन के तमाम लोगों से अफ़्ज़ल व आला हैं। (सक़ीनात-उल-औलिया)

तेरह इसाईयों का क़बूले इस्लाम शेख़ उमर-अल-कीमानी(रह॰अ॰) फरमाते हैं के एक दफ़ा आपकी ख़िदमते अक़्दस में तेरह अश्ख़ास इस्लाम क़बूल करने के लिए हाज़िर हुए। मुसलमान होने के बाद उन्होंने बयान किया के हम लोग अरब इसाई हैं। हम ने इस्लाम क़बूल करने का इरादा किया था और ये सोच रहे थे के किसी मर्दे कामिल के दस्ते हक़ परस्त पर इस्लाम क़बूल करें।

इसी असना में हातिफ़े ग़ैब ने आवाज़ दी के बग़दाद शरीफ़ जाओ। और शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के मुबारक हाथों पर इस्लाम क़बूल करो क्योंके जिस क़द्र ईमान उनकी बर्कत से तुम्हारे दिलों में जांगुज़ीन होगा उस क़द्र ईमान उस ज़माने में किसी दूसरी जगह से ना मुमकिन है चुनांचे हम उस ग़ैबी इशारा के मातहत बग़दाद आए और अलहम्दुलिल्लाह के हमारे सीने नूरे हिदायत से मामूर हो गए। (क़लायद-उल-जवाहर)

बादशाह और ऊमरआ की नियाज़मंदी शेख़ मोफ़िक़उद्दीन इब्ने क़दामा साहब मुफ्ति का बयान है के मैंने किसी शख़्स की आपसे बढ़ कर तअज़ीमो तकरीम होते नहीं देखी। आपकी मजालिसे वअज़ में बादशाह, वुज़राअ और ऊमरआ नियाज़मंदाना हाज़िर होते थे। और आम लोगों के साथ मोअद्दबाना और ख़ामोश बैठ जाते थे। उल्मा और फ़ुक़ेहा का तो कुछ शुमार ही ना था।

अपने वअ़ज़ में मतलक़ किसी की रिवायत नहीं करते

थे और जो बात हक़ होती बरमला कह देते ख़्वाह उसकी ज़द किसी बड़े से बड़े आदमी पर पड़ती। आपकी इसी बेबाकी और आलाऐ कल्मातुलहक़ में बेमिसाल जुराअत की वजह से आपके मवअज़ ऐसी शमशीर बुर्रां बन गए थे जो मुसीबत व तुग़यान के झाड़ झंकार को एक ही बार में क़तअे कर दे।

हिकायत एक दफ़ा ख़लीफ़ा के महल्लात का नाज़िम अज़ीज़ुद्दीन आपकी मजलिस में बड़े तज़्को एहतशाम के साथ आया। ये शख़्स ख़लीफ़ा का मोअतमिद ख़ास और मुक़र्रब था और बड़ा साहिबे असर अमीर था। उसके आते ही आप ने अपनी तक़रीर का मोज़ू बदल दिया और उसकी तरफ इशारा करते हुए फरमाया, तुम सब की ये हालत है के एक इंसान दूसरे इंसान की बन्दगी करता है। अल्लाह की बन्दगी कौन करता है। उसके बाद आपने उससे मुख़ातिब होकर फरमाया, खड़ा हो, अपना हाथ मेरे हाथ पर रख दे ताके इस फ़ानी घर यानी दुनिया से भाग कर रब्बुलआलमीन की तरफ लपकें। और उसकी रस्सी को थाम लें। अनक़रीब तुझ को खुदा की तरफ लौटना होगा और वो तेरे आमाल का मुहासबह करेगा।

इस्लाह व ततहीर ग़र्ज़ वअज़ व नसीहत में आपकी बेबाकी बे मिसाल थी। बाज़ अवक़ात उसमें निहायत तेज़ी और तुंदी पैदा हो जाती थी आप फरमाते थे के लोगों के दिलों पर मेल जम गया है जब तक उसे ज़ोर से रगड़ा नहीं जाएगा दूर ना होगा। मेरी सख़्त कलामी इंशाअल्लाह उनके लिए आबे हयात साबित होगी। एक दफा अपने वअज़ के मुताल्लिक़ आपने फरमाया के मेरा वअज़ के मिंबर पर बैठना तुम्हारे क़लूब की इस्लाह व ततहीर के लिए है ना के अल्फ़ाज़ के उलट फैर और तक़रीर की खुशनुमाई के लिए है। मेरी सख़्त कलामी से मत भागो। क्योंके मेरी

तरबीयत उसने की है। जो दीने ख़ुदावंदी में सख़्त था। मेरी तक़रीर भी सख़्त है और खाना भी सख़्त और रूखा सूखा है। पस जो मुझ से और मेरे जैसे लोगों से भागा उसको फलाह नसीब नहीं हुई जिन बातों का ताल्लुक़ दीन से है उनके मुताल्लिक़ जब तू बेअदब है तो मैं तुझ को छोड़ूंगा नहीं और ना ये कहूंगा के उसको किये जा। तू मेरे पास आए या ना आए परवा ना करूंगा। मैं क़ुव्वत का ख़्वाहाँ ख़ुदा से हूँ ना के तुम से। मैं तुम्हारी गिन्ती और शुमार से बेनियाज़ हूँ।

आप के समझाने का अंदाज़ आप के समझाने का अंदाज़ ये था के जब कोई आप की मजलिस में शरीयत के ख़िलाफ काम करने वाला हाज़िर होता या कोई तायब होकर तौबा तोड़ देता तो आप फरमाते के ऐ शख़्स हम ने तुझ को पुकारा लेकिन तूने जवाब नहीं दिया। हम ने तुझे रोकना चाहा लेकिन तू नहीं रूका। हम ने तुझे हलाकत से बचाना चाहा लेकिन तो शरमिंदा नहीं हुआ। हम ने तेरी बुराईयों को वाज़ेह किया और तू जानता था के हमें तेरे अयूब का इल्म भी है। हम ने तुझे दिनों और महीनों की मोहलत अता की। हम ने बरसों तुझे बशारतें सुनाई लेकिन तेरी नफ़रत में इज़ाफ़ा होता चला गया और हम तुझे ज़ायद से ज़ायद फ़िस्क़ो फिजूर में मुबतला पाते रहे।

ऐ शख़्स अगर तूने अहेद करने के बाद अहेद शिकनी कर के खुद को अपने पहले अहेद की तरफ रूजू कर लिया तो फिर ये बता के अगर हम तेरी जानिब मुतावज्जेह ना हों फिर तू किस तरह सीधी राह पर आएगा क्या तुझे ये इल्म है के अगर हम तुझ से दरगुज़र कर के तुझे ना डरायें तो फिर तू कब तक सीधा हो जाएगा अगर हम

तुझे दफा कर के फरामोश कर दें और तेरे रूजू होने को क़बूल करें तो तेरा क्या हश्र होगा। क्या तुझे याद नहीं के तू हमारे पास खौफ़ज़दा होकर आया था और आजज़ी के साथ हमारे दरवाज़े पर पड़ा रहा। फिर हम से मुनहरिफ हो कर लौट गया। हालांके तू हमारी मोहब्बत का दावेदार था। किस क़द्र हैरानकुन बात है के तूने हमारा क़ुर्ब हासिल करके भी अल्लाह की मोहब्बत का ज़ायक़ा चखा लेकिन उसके बावजूद भी हमारी जमाअत से कट गया ऐ शख़्स अगर तू सच्चा होता तो हमारी मुवाफ़्क़त करता अगर हम से मोहब्बत होती तो हमारी मुख़ालफ़त ना करता। अगर हमारे अहबाब में से होता तो हमारे दरवाज़े से ना भागता और खुशी के साथ हमारी सज़ाओं में लज़्ज़त हासिल करता। ऐ शख़्स! काश तू पैदा ही ना हुआ होता और जब पैदा हो गया तो मक़्सदे तख़लीक़ को समझता। ऐ ख़्वाबदीदा शख़्स! बेदार हो, आँखें खोल और देख के तेरे सामने अज़ाब के लश्कर सज़ा के लिए पहुँच चुके हैं और तू उनका मुसतहिक़ भी है लेकिन रहीम व करीम रब की वजह से मेहफ़ूज़ है।

ऐ कूच करने वाले! अपने सफर के लिए ज़ादे राह तैयार कर ले और मुझ से ये हुक्म सुनता जा के कसरते मालो जाह और तवील ज़िन्दगी से फ़रेब ना खा। क्योंके गर्दिशे लेलो नहार के नतीजे में अजीब व ग़रीब वाक़ेयात पेश आते रहते हैं। तुझ से क़ब्ल भी उस दुनिया में बहुत से नामवर पैदा हुए। तू अपनी हिफ़ाज़त कर। ख़बरदार हो जा के ये दुनिया तुझे क़त्ल करने के लिए शमशीर बदस्त है। ये बहुत ही ग़द्दार और मक्कार है उसे जब भी मौक़ा मिलेगा तुझ को लूट लेगी। और तुझ जैसे कितने ही लोग उसकी चमक व दमक और उसके हिर्स व तमअ से फरेब

ख़ा चुके हैं। अगर तूने उसकी इताअत की या उसकी क़समों पर कान लगाए या उसको मुराद व ख़्वाहिश समझ लिया तो ये तुझे फरेब ही फरेब में सितमे क़ातिल का जाम पिला देगी। उसने बहुत सी बस्तियों को इस तरह उजाड़ दिया के अहले बस्ती खून के आंसू बहाए चले और यौमे बअस तक के लिए वहाँ रोक दिये गए।

इल्मी शान

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की इल्मी शान बहुत बुलंद है। अल्लाह तआला ने आपको ज़ाहिरी और बातिनी इल्म में कामिल दसतरस अता फरमाई। क़ुरआन व हदीस पर आप पूरी तरह उबूर रखते थे। आपका हाफ़्ज़ा बड़ा बाकमाल था जिस चीज़ पर ज़रा सा ग़ौर फरमाते फौरन अज़ बरयाद हो जाती। ज़ाहिरी उलूम के अलावा आपने जब बेपनाह रियाज़त की तो उस वक़्त मुशाहेदा के ज़रिये बे पनाह उलूम आप पर ज़ाहिर हुए। और असरारो रमूज़ इतने ज़्यादा मिले के जब कोई इल्मी बात करता तो आप फौरन उसके असरार बयान फरमा देते।

बयान किया जाता है के जब आप ने दर्स व तदरीस और खुत्बात का आग़ाज़ फरमाया तो दुनिया आपके इल्म पर हैरान हुई। आप ऐसे ऐसे निकात बयान फरमाते के बड़े बड़े उल्मा के इल्म में ना होते इसलिए थोड़े ही अर्से में आपके इल्म की शौहरत दूर व नज़दीक में बहुत जल्द फैल गई। आपकी दर्सगाह से बहुत जईय्यद उल्मा सैराब हुए ग़र्ज़ हज़रत सय्यद ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) दीनी उलूम का अनमोल ख़ज़ाना थे और तशनगाने उलूमे दीनिया ने उससे बे पनाह फायदा उठाया।

आपके इल्मो फ़ज़्ल की शौहरत सुनकर लोग सेंकड़ों कोस का पुर सऊबत सफर तय करके आपकी ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होते और इल्म के इस बहेरे ज़खार से सेराब होते वुस्अते इल्म के लिहाज़ से आप तमाम उल्मा फ़िक़हाऐ ज़माना पर सब्क़त ले गए और दुनियाए इस्लाम में कोई ऐसा आलिम नहीं था जो आपके तबहरे इल्मी, अज़मत और कमाल का मुतअर्रिफ ना हो गया हो। इस ज़िम्न में चन्द वाक़ेयात यहाँ दर्ज किये जाते हैं जिन से आपकी इल्मी वुस्अत का बख़ूबी अंदाज़ा हो सकेगा।

आपके फरज़न्दों का बयान सय्यद शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, शेख़ अब्दुलवहाब, शेख़ इब्राहीम (फरज़न्दाने हज़रत शेख़) शेख़ अबु-अल-हसन उमर कीमानी और शेख़ अबु-अल-हसन उमर बज़ाज़ का मुत्तफ़िक़ा बयान है के हम 557हि॰ में हज़रत शेख़ के घर पहुँचे जो आपके मदरसे बाबे अज़ज में वाक़ओ है। उस वक़्त आप दूध नोश फरमा रहे थे। आपने दूध छोड़ दिया और देर तक मुसतग़रिक़ रहे फिर फरमाने लगे अभी अभी मेरे लिए इल्मे लुदनी के सत्तर दरवाज़े खोल दिये गए हैं उनमें से हर दरवाज़े की वुस्अत ज़मीनो आसमान के दरमियान फराख़ी के मिस्ल है उसके बाद आपने तबक़ाए ख़ास के मुआरिफ बयान करना शुरू कर दिये उससे हाज़रीन हैरत व दहशत में डूब गए। हमने कहा हमें यक़ीन नहीं आता के हज़रत शेख़ के बाद कोई ऐसा कलाम कर सके।

शेख़ यूसुफ हमदानी(रह॰अ॰) का बयान शेख़ यूसुफ बिन अय्युब हमदानी(रह॰अ॰) से मरवी है के एक दफा उन्होंने हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) से फरमाया के लोगों को वअज़ व नसीहत करो। उन दिनों हज़रत शेख़ नोजवान थे। उन्होंने फरमाया हुज़ूर! मैं एक अजमी आदमी हूँ। बग़दाद के फसीह-उल-लिसान लोगों के सामने कि तरह बोलूं? उन्होंने फरमाया तुम ने फ़िक़ह, उसूल फ़िक़ह, अक़ायद, नह्, लुग़त और तफ़्सीर-उल-क़ुरआन के उलूम हासिल किये हैं तुम किस तरह लोगों के सामने तक़रीर करने के क़ाबिल नहीं हो? मिंबर पर बैठो और वअज़ कहो। मैं तुम्हारे अन्दर ऐसा बीज देख रहा हूँ जो खुर्मा (समरआवर) का दरख़्त बन जाएगा।

सौ फ़िक़हा के सवालों के जवाब शेख़ अबु मोहम्मद मफ़रह बिन नबहान शीबानी(रह॰अ॰) का बयान है के जब हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰)

का शुरू शुरू में शोहरा हुआ तो बग़दाद के अकाबिर फ़िक़्हा और उल्मा में से सौ आदमी आपकी ख़िदमत में ये तय कर के आए के उनमें से हर फ़िक़ीहा मुख़्तलिफ़ उलूम में आप से अलग अलग मसायल पूछेगा उससे उनका मक़्सद ये था के इस तरह वो आपको ला जवाब कर देंगे।

रावी का बयान है के जिस वक़्त ये लोग मेहफ़िल में आए मैं भी वहाँ मौजूद था। हर शख़्स अपनी अपनी जगह पर बैठ गया और मेहफ़िल जम गई। उस वक़्त हज़रत शेख़ के सीने से नूर की एक तलवार निकली जो उन सौ फ़िक़ीहों के सीनों पर तेज़ी से गुज़र गई। उसे सिर्फ़ वही लोग देख रहे थे, फज़्ले ख़ुदावंदी जिनके शामिल हाल था। हर फ़िक़ीहा के सीने पर तलवार क्या गुज़री के सब को हैरान, परेशान और मुज़तरिब करती गई। उसके बाद उन्होंने मिल कर चीख़ मारी, कपड़े फाड़ डाले और सर खोल दिये। और तमाम फ़िक़ीहा आप की कुर्सी पर टूट पड़े। उन्होंने अपने सर आपके क़दमों में रख दिये। इस मौक़े पर तमाम अहले मजलिस ने बुलंद आवाज़ से इस क़द्र हाहू की जिससे बग़दाद कांप उठा। हज़रत शेख़ ने उनमें से हर एक को अपने सीने से लगाना शुरू किया। जब तमाम को सीने से लगा चुके तो एक एक को पकड़ कर फरमाना शुरू किया के तेरा सवाल ये है और उसका जवाब ये है। अलग़र्ज़ सौ के सौ फ़िक़्हा के सवालात और उनके मुकम्मल जवाबात उन्हें सुना दिये।

रावी का बयान है के मजलिस के इख़्तिताम पर मैंने उन फ़िक़्हा से हाल पूछा, तो उन्होंने बताया के जिस वक़्त हम हज़रत शेख़ की मेहफ़िल में आन बैठे तो हमारा सारा इल्म लोहे क़ल्बो दिमाग़ से महू हो गया। यूं लगता था जैसे हमें इल्म की हवा भी नहीं लगी। फिर जिस वक़्त हज़रत शेख़ ने हमें सीने से लगाना शुरू किया तो इल्म वापस

आ गया। हैरांगी की ये बात है के अपने जो सवाल हम भूल गए थे उन्होंने वो हमें बता दिये और उनके ऐसे ऐसे जवाबात दिये जो खुद हमें भी मालूम ना थे।

अल्लामा इब्ने जोज़ी(रह०अ०) का एत्राफ़े कमाल मश्हूर मोहद्दिस, मोअर्रिख़ और फ़िक़ीहा (मालिकी) अल्लामा इब्ने जोज़ी(रह०अ०), सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह०अ०) के हम अस्र थे। वो 510हि० 1116ई० में बग़दाद में पैदा हुए। और 597हि० 1200ई० में फ़ौत हुए। उन्होंने फ़िक़ह इमाम मालिक(रह०अ०) की ताईद में अहादीस पर बहुत जिरेह की। और इमाम ग़ज़ाली(रह०अ०) की मश्हूर किताब अहया-उल-उलूम में ज़ईफ़ अहादीस पाई जाती हैं उन पर भी बहेस की। निहायत ज़बरदस्त ख़तीब और वअज़ थे। उनकी चन्द मश्हूर तसानीफ़ के नाम ये हैं:

अलमुल्तज़िम, अलमुलतसक़त अलमुल्तज़िम, अलमुनतज़िम फ़ी तारीख़-उल-उमम, तरयाक़-उल-ज़नूब, तज़क़रात-उल-एक़ात, कफातुल मजालिस फ़ीअलवअज़, अलमुजतना मिन अलमुजतबा, कशफ़उन्न नक़ाब अन-उल-असमअ व अलअलक़ाब

कहते हैं के वफ़ात से पहले उन्होंने वसीयत की के मैंने अपनी ज़िन्दगी में जिन क़लमों से हदीस लिखी है उनका तराशह मेरे हुजरे में मेहफ़ूज़ है मरने के बाद मुझे गुस्ल दें तो गुस्ल का पानी उस तराशह से गर्म करें। चुनांचे उनकी वसीयत पर अमल किया गया। तराशह इतना कसीर था के पानी गर्म होकर भी बच रहा। जमाल-उल-हफ्फ़ाज़ आपका लक़ब था और बहुत से लोग उन्हें तफ़्सीर व हदीस का इमाम मानते थे।

सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह०अ०) की अज़मत व कमाल का अंदाज़ा इस बात से बख़ूबी किया जा सकता है के अल्लामा इब्ने जोज़ी(रह०अ०) जैसे आलिम भी आपके

तबहरे इल्मी के मुतअर्रिफ़ हैं। बयान किया जाता है के इब्ने जोज़ी(रह॰अ॰) इब्तिदा में सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के मुख़ालिफ़ थे और आपके इर्शादात व मवअज़ पर वक़्तन फ़वक़्तन एतराज़ करते रहते थे। एक दिन हाफ़िज़ अबु-अल-अब्बास अहमद से इसरार करके उन्हें अपने हमराह सय्यदना ग़ौस-उल-सिक़लैन(रह॰अ॰) की मजलिस में ले गए। उस वक़्त आप क़ुरआने हकीम का दर्स दे रहे थे। इर्द गिर्द तलबा व तलान्दा का हुजूम था शेख़ अबु-अल-अब्बास अहमद(रह॰अ॰) और अल्लामा इब्ने जोज़ी(रह॰अ॰) हल्क़ाऐ दर्स से परे हट कर बैठ गए। इतने में क़ारी ने एक आयत पढ़ी। सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने उसका तर्जुमा बताया और फिर तफ़्सीरी निकात बयान करने शुरू कर दिये। पहले नुक्ते पर हाफ़िज़ अबु-अल-अब्बास अहमद(रह॰अ॰) ने अल्लामा इब्ने जोज़ी(रह॰अ॰) से पूछा क्या आपको उसका इल्म है? उन्होंने इसबात में सर हिलाया। फिर दूसरे नुक्ता पर यही सवाल किया और अल्लामा इब्ने जोज़ी(रह॰अ॰) ने इसबात में जवाब दिया। हत्ता के ग्यारह तफ़्सीरी निकात तक अल्लामा इब्ने जोज़ी(रह॰अ॰) इसबात में जवाब देते रहे। उसके बाद जो सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने बारहवाँ नुक्ता बयान किया तो अल्लामा इब्ने जोज़ी(रह॰अ॰) को अपना इल्म जवाब देता नज़र आया और उन्होंने कहा ये नुक्ता मुझे मालूम नहीं। उधर सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का बयान इस तरह जारी था के इल्म का एक दरया है जो उमंडता ही चला आता है और कहीं रूकने का नाम नहीं लेता उसके बाद यके बाद दीगरे आपने इस आयत के चालीस तफ़्सीरी निकात व रमूज़ बयान फरमाए बारहवीं से चालीसवें नुक्ते तक अल्लामा इब्ने जोज़ी(रह॰अ॰) अपने इल्म की बेबसी का एत्राफ़ करते रहे और हैरत व

इसतअजाब के आलम में सर धूंदते रहे। आखिर बेइख़्तियार होकर पुकार उठे अब मैं क़ाल को छोड़ कर हाल की तरफ रूजू करता हूँ।

लाइलाहा इल-लल्लाह मोहम्मदुर्र रसूल अल्लाह।

फिर जोशो हिजान में अपने कपड़े फाड़ डाले और आप के क़रीब पहुँच कर आप के तबहरे इल्मी और अज़मत का एत्राफ कर लिया। हाफ़िज़ अबु-अल-अब्बास(रह॰अ॰) कहते हैं के ये वाक़ेया देख कर हाज़रीने मजलिस के जोशो इज़्त्राब का ठिकाना ना रहा। (क़लायद-उल-जवाहर)

इल्मी वुस्अत अबु मोहम्मद-अल-ख़शाब-उल-नहवी (रह॰अ॰) का बयान है के मैं जवानी में इल्मे नहू पढ़ा करता था और मुझे बेहद इश्तियाक़ था के किसी उस्तादे कामिल की शार्गिदी इख़्तियार करूं जो मुझे नहू और दूसरे उलूम पर उबूर करा दे। इसी असना में शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के इल्मो फ़ज़्ल की शौहरत आम हुई। जो शख़्स एक दफा आपकी मजलिस में जाता। हमेशा के लिए आपके इल्मो फ़ज़्ल का मोतक़िद हो जाता। जब बकसरत लोगों से आपकी तारीफ व तोसीफ सुनी तो मैं भी एक दिन आपकी मजलिस में जा पहुँचा। मेरे वहां पहुँचते ही आप मेरी तरफ मुख़ातिब हुए और फरमाया "अगर तुम हमारे पास रहो तो हम तुम्हें सीबोया(रह॰अ॰) का ज़माना दिखा देंगे।"

मैं तो दिल से यही चाहता था चुनाँचे उसी वक़्त से आपकी ख़िदमत में रहना शुरू कर दिया। थोड़े ही अर्से में आपने मुझे मसायले नहविया व उलूमे अक़्लिया व उलूमे नक़्लिया पर ऐसा उबूर करा दिया के मेरे वहेमो गुमान में भी नहीं आ सकता था। मैंने आप जैसा मुफस्सिर, मोहद्दिस, फ़क़िहा और दूसरे उलूम का माहिरे कामिल सारी उम्र नहीं देखा।

इल्मो फ़ज़्ल में मर्तबा शेख़ अब्दुल्लाह जवाई बयान करते हैं के हज़रत शेख़ का एक शार्गिद उम्र हलावी बग़दाद से बाहर चला गया और जब चन्द साल ग़ायब रह कर बग़दाद वापस आया तो मैंने पूछा के तुम कहाँ ग़ायब हो गए थे? उसने कहा मैं मिस्रे शाम और बिलादे मग़रिब में घूमता फिरा। जहाँ मैंने तीन सौ साठ मशायख़इक्राम से मुलाक़ात की लेकिन उनमें से एक भी ऐसा ना मिला जो इल्मो फ़ज़्ल में हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) का हम पल्ला हो और सबको यही कहते सुना के हज़रत मोसूफ हमारे शेख़ व पैश्वा हैं।

मुहिब्बउद्दीन इब्ने नजार अपनी तारीख़ में रक़मतराज़ हैं के आपका शुमार जीलान के सरबरआवर्दा ज़ाहेदीन में से था और उल्माऐ रासख़ीन में ऐसे इमाम थे जो अपने इल्म पर अमल पेरा होते हैं। आप से बेशुमार करामतों का ज़हूर हुआ। आपने बग़दाद ओने के बाद उलूम फ़िक़ा, उसूल व फ़रोअ की तालीम हासिल की और समाअते हदीस मुकम्मल कर के वअज़ व नसीहत में मशग़ूल हो गए। जब आपके फज़ायलो करामात की शौहरत हुई तो आप मख़्लूक़ से अलहेदगी इख़्तियार करके खाना नशीन हो गए। मुख़ालफ़त नफ़्स के सिलसिले में शदीद मुजाहेदात किये और सऊबतों को हासिले ज़ीस्त बना लिया। फिक्रो फ़ाक़ा की हालत में बादिया पेमाई करते और वीरानों में अक़ामत गज़ीन हो जाते।

हाफ़िज़ ज़ेनउद्दीन ने अपनी तसनीफ "तबक़ात" में लिखा है के शेख़ अब्दुल क़ादिर बिन अबी सालेह मूसा अब्दुल्लाह बिन जंगी दोस्त बिन अबी अब्दुल्लाह अल्जीली सुम्मा बग़दादी, ज़ाहिद शेख़ वक़्त अल्लामाए दहर क़ुदवतुलआरफ़ीन, सुल्तान-उल-मशायख़ और सरदार अहले तरीक़त थे। आपको ख़ल्क़उल्लाह में क़बूलियत आम

हासिल हुई। अहले सुन्नत को आपकी ज़ात से तक़वीयत हासिल हुई और मुब्तदेअेन ज़िल्लत और रूसवाई से हमकिनार हुए। आपके अक़वाल व अफ़आल और करामात व मकाश्फ़ाते ज़बान ज़दे ख़ास व आम हुए। एत्राफ़ व अक्नाफ से मसायले शरई मालूम करने के लिए इसतफ़्तअ आते जिनके जवाबात दिये जाते। अमरअ व बुज़रआ ख़लीफ़ा और अवाम सबके दिलों में आपकी अज़मत व हैबत बैठ गई।

ताज-उल-आरफ़ीन और ग़ौस-उल-आज़म(रह॰अ॰)

शेख़ अबु-अल-हसन और शेख़ माजिद कुर्दी का बयान है के एक दफा ताज-उल-आरफ़ीन हज़रत अबु-अल-वफ़ा मिंबर पर बैठ कर लोगों को वअज़ व नसीहत और हक़ायक़ व मुआरिफ़ बयान फरमा रहे थे के इतने में हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) मजलिस में दाखिल हुए। उस वक़्त आप नोजवान थे और नए नए बग़दाद में आए थे। शेख़ अबु-अल-वफ़ा ने अपनी गुफ़तगू रोक दी और हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) को मजलिस से निकाल देने का हुक्म दिया। चुनाँचे आपको निकाल दिया गया। और ताज-उल-आरफ़ीन ने दोबारा अपनी गुफ़्तगू शुरू कर दी। इतने में हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) फिर मजलिस में आ गए। ताज-उल-आरफ़ीन ने दोबारा बात काट कर आपको निकाल देने के लिए कहा। लोगों ने आपको बाहर भेज दिया। ताज-उल-आरफ़ीन ने फिर सिलसिला कलाम शुरू कर दिया। हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) तीसरी बार फिर मजलिस में दाखिल हुए। अब की दफा ताज-उल-आरफ़ीन मिंबर से उतरे, हज़रत शेख़ से मुआनक़ा किया उनकी आँखों के दरमियान बोसा लिया और फरमाया बग़दाद वालो! अल्लाह के वली के लिए

खड़े हो जाओ। मैंने मजलिस से इनको निकाल देने का हुक्म अहानत के लिए नहीं बल्के इस लिए दिया था के तुम लोग उन्हें अच्छी तरह पहचान लो। मुझे रब्बे तआला के इज़्ज़ो महेद की क़सम! इनके सर पर हक़ की रोशनी है जिसकी किरनें मशरिक़ व मग़रिब से तजावुज़ कर गई हैं। फिर हज़रत शेख़ को खिताब कर के फ़रमाया ऐ अब्दुल क़ादिर अब वक़्त हमारे लिए है आईंदा तुम्हारे लिए हो जाएगा ऐ अब्दुल क़ादिर! हर मुर्ग़ आवाज़ निकालता है, और ख़ामोश हो जाता है मगर तुम्हारा मुर्ग़ क़यामत तक चीख़ता रहेगा। फिर उन्हें अपना सज्जादा, क़मीज़ तसबीह, पियाला और असा इनायत फरमाया। उनसे कहा गया के आप उन्हें बेअत कर लें मगर उन्होंने फरमाया उनकी पैशानी पर मख़्रूमी (हज़रत अबु सईद मख़्रूमी) का हिस्सा लिख दिया गया है।

रावी का बयान है के जब मजलिस ख़त्म हो गई और ताज-उल-आरफ़ीन मिंबर से नीचे उतरे तो आप उसके निचले ज़ीने पर बैठ गए और हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) का हाथ पकड़ कर फरमाया ऐ अब्दुल क़ादिर! तेरा एक वक़्त आएगा पस जब वो वक़्त आए तो इस (यहाँ ताज-उल-आरफ़ीन ने अपनी रेश मुबारक हाथ से पकड़ कर अपनी तरफ इशारा फरमाया) बूढ़े को याद रखना।

शेख़ उमर बज़ाज़ का बयान है के ताज-उल-आरफ़ीन(रह॰अ॰) ने जो तसबीह हज़रत शेख़ को अता की थी वो जिस वक़्त इसे ज़मीन पर रखते तो वो एक एक दाना कर के खुदबखुद गर्दिश करती रहती। हज़रत शेख़ के विसाल के वक़्त ये तसबीह आपकी शलवार की जेब में थी जो शेख़ अली बिन बअेती ने ले ली। उनके बाद ये तसबीह शेख़ मोहम्मद बिन फायद

के हिस्से में आई और ताज-उल-आरफ़ीन ने आपको जो पियाला दिया था उसकी केफ़ियत ये थी के जो शख़्स उसे हाथ में लेने का इरादा करता तो वो खुदबखुद उसकी तरफ हरकत करता।

आपका लक़ब महीउद्दीन होने की वजह

बअज़ हज़रात ने जब हज़रत शेख़ के लक़ब "महीउद्दीन" की वजह दरयाफ़्त की तो आपने फरमाया के मैं 511हि॰ में जुमअे के दिन एक सफ़र में नंगे पाँऊ बग़दाद वापस हुआ तो एक शख़्स का मेरे क़रीब से गुज़र हुआ जो बहुत ही बीमार और कमज़ोर था हत्ता के उसका रंग भी तबदील हो चुका था उसने मुझ से कहा अस्सलाम अलेका या अब्दुल क़ादिर! मैंने उसके सलाम का जवाब दिया। फिर उसने मुझे अपने क़रीब बैठने के लिए कहा तो मैं उसके पास बैठ गया। बैठते हुए मैंने देखा के उसका जिस्म तवाना होता जा रहा है और रंग में भी निखार पैदा हो गया है ये देख कर मैं उससे ख़ौफ़ज़दा हो गया तो उसने पूछा के मुझे पहचानते हो? मैंने कहा के खुदा की क़सम! मैं नहीं पहचानता। तब उसने कहा के मैं "दीन" हूँ। जो हालात की वजह से मिट चुका था। लेकिन अल्लाह ने मौत के बाद तेरे हाथ से मुझे फिर हयाते नो अता फरमाई है।

हज़रत शेख़ फरमाते हैं के जब मैं वहाँ से उठ कर जामअे मस्जिद में दाख़िल हुआ तो वहाँ मेरी मुलाक़ात एक ऐसे शख़्स से हुई जिसने मुझे या सय्यीद महीउद्दीन के लक़ब से मुख़ातिब किया और जब मैंने नमाज़ का क़सद किया तो बहुत से लोग दौड़ते हुए आए और मेरे हाथ को बोसा देंने लगे और या महीउद्दीन कहते जाते थे हालांके उससे क़ब्ल मैं कभी उस नाम से नहीं पुकारा गया था।

गौसे आज़म का तबहुरे इल्मी मोहम्मद बिन अलहुसैनी मोसली बयान करते हैं के मैंने अपने

वालिद माजिद से सुना के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) तेरह उलूम पर बहेस किया करते थे और मदरसे में दौराने दर्स अपनों और ग़रीबों पर बे लाग तबसरा फरमाया करते। दिन के इब्तिदाई हिस्से में तफ़्सीर और हदीस व उसूल की तालीम देते और ज़ोहर के बाद क़िरआत के साथ क़ुरआन मजीद की तालीम देते थे।

आपके सर मुबारक पर तीन चादरों की तोज़ीह

मोहम्मद बिन अबी-अल-अब्बास अलख़िज़्र-उल-हुसैनी अलमूसली अपने वालिद माजिद का वाक़ेया बयान करते हैं के 551हि० में उन्होंने एक रात ये ख़्वाब देखा के एक बहुत वसी मैदान है जिस में बहरोबर के तमाम मशायख़ जमा हैं उनके वस्त में हज़रत शेख़ जलवा अफ़रोज़ हैं। तमाम मशायख़ के सरों पर अमामे हैं उनमें से किसी के अमामा पर तो एक चादर और किसी के अमामा पर दो चादरें हैं लेकिन हज़रत शेख़ के अमामा पर तीन चादरें हैं। दौराने ख़्वाब ये ख़याल पैदा हुआ के हज़रत शेख़ के अमामा पर ये तीन चादरें कैसी हैं।

नींद से बैदार होकर देखा के हज़रत शेख़ सिरहाने खड़े फरमा रहे हैं के "एक चादर तो शरीअत की है, दूसरी हक़ीक़त की और तीसरी शरफ व इज़्ज़त की।"

दीनी ख़िदमात

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की दीनी ख़िदमात बे पनाह हैं क्योंके आपने जिस दौर में बग़दाद में हसूले इल्म के बाद मुसतक़िल क़याम फरमा लिया तो उस दौर में मुसलमानों में बे पनाह बेएतादालियाँ आ चुकी थीं। लोगों में तरह तरह के फ़ितने पैदा हो चुके थे। एक तरफ फितनाए ख़ल्के क़ुरआन, एतज़ाल और बातीनियत की तहरीकें मुसलमानों के लिए ख़तराऐ ईमान बनी हुई थीं। दूसरी तरफ उल्माऐ सूअ और नामनिहाद सूफ़ी लोगों को दीन व ईमान से बरगज़िश्ता कर रहे थे। मरकज़े इस्लाम बग़दाद में बदकारी, फ़िस्क़ और मुनाफ़्क़त का बाज़ार गर्म था। ख़िलाफ़ते बग़दाद दिन बदिन ज़वाल पज़ीर थी। सलजोक़ी आपस में लड़ रहे थे। जिस सुल्तान की ताक़त बढ़ जाती उसी के नाम का ख़ुत्बा पढ़ा जाता। अब्बासी ख़लीफ़ा दम ना मार सकता था। और बातनिया तहरीक के पैरवुओं ने मुल्क में उधम मचा रखा था। किसी अहले हक़ की जान व इज़्ज़त मेहफ़ूज़ नहीं थी। ऐसे पुर आशूब दौर में आपने वअज़ और दर्स व तदरीस के ज़रिये इस्लाह का बीड़ा उठाया।

दर्स व तदरीस हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने तकमीले मुजाहेदह के बाद दर्स व तदरीस का आग़ाज़ किया। मदरसे में बाज़ाब्ता तौर पर तदरीस का बन्दोबस्त फरमाया। मदरसे के तालिब इल्मों को खुद भी पढ़ाते थे। मदरसे में रोज़ाना एक सबक़ तफ़्सीर का, एक हदीस का, एक फिक़ह का और एक इख़्तिलाफ आईम्मा अहले सुन्नत और उनके दलायल का होता। अलावा अज़ीं उलूमे तरीक़त के मुतलाशियों को रमूज़े शरीअत समझाए जाते थे। ज़ोहर के बाद तजवीद की तालीम होती थी। मज़हब अहले सुन्नत को आपके

दर्स व तदरीस से बड़ा फरोग़ हासिल हुआ। और उसके मुक़ाबले में बदअेतक़ादी और बिदआत का बाज़ार सर्द पड़ गया। आप खुद अक़ायद व उसूल में इमाम अहमद बिन हंबल(रह॰अ॰) और मोहद्दसीन के मसलक पर थे। आपकी तालीमी जद्दोजहेद ने अहले सुन्नत की शान बढ़ा दी और दूसरे मज़ाहिब के मुक़ाबले में उनका पलड़ा भारी हो गया।

बहर सूरत दूरदराज़ से लोग आपसे उलूमे शरीअत व तरीक़त हासिल करने के लिए जूक़ दर जूक़ आते। आप पूरी तवज्जोह से उनकी इल्मी तशंगी दूर करते और वो इल्म के इस बहरेज़ख़ार से सेराब होकर घरों को लौटते। चन्द सालों के अन्दर अन्दर आपके तिलांदा और इरादातमंद तमाम ईराक़, अरब, शाम और दूसरे मुमालिक में फैल गए।

एक दिन दौराने दर्स इब्ने समूल आपकी ज़ियारत को हाज़िर हुए वो फरमाते हैं के जब मैंने उस सब्रो तहम्मुल पर हज़रत शेख़ से इज़्हारे हैरत किया तो आपने फरमाया के ये मुशक़्क़त मेरे लिए सिर्फ एक हफ्ता की है। इसके बाद अल्लाह तआला इस मुशक़्क़त को ख़त्म कर देगा। चुनाँचे मैंने एक एक दिन शुमार करना शुरू कर दिया। हत्ता के हफ्ते के आख़री दिन उसका इन्तिक़ाल हो गया और मैं उसके जनाज़े में शरीक हुआ लेकिन मुझे इस पर बहुत तआज्जुब रहा के हज़रत शेख़ को एक हफ्ता क़ब्ल ही उसके इन्तिक़ाल की इत्तिला मिल चुकी थी।

तालिब इल्मों के साथ हज़रत शेख़ का सलूक

अहमद बिन मुबारक बयान करते है। के एक अजमी शख़्स ऊबी नामी आप से तालीम हासिल करता था लेकिन वो इस दर्जा कुंद ज़हेन और ग़बी था के बहुत मुश्किल से उसकी समझ में कोई बात आती थी। उसके बावजूद हज़रत शेख़ इन्तिहाई सब्रो तहम्मुल के साथ

उसको दर्स दिया करते थे।

आपके तिलांदा हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) इल्मी दुनिया में मिस्ले आफ़्ताब बन कर चमके। आपके शार्गिदाने अज़ीज़ में से बड़े बड़े शौहरत याफ़्ता आलिम बने जिन्होंने अहले दुनिया से हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की तरबीयत की बिना पर इल्मो इरफान में सिक्का मनवाया आपके शार्गिदों की तअदाद तो बेहद और बे शुमार है वो शार्गिद जिन्हें नामवरी हासिल हुई उन में से चन्द के असमाएग्रामी मनदर्जा ज़ेल हैं।

मोहम्मद बिन अहमद बिन बख़्तियार, अबु मोहम्मद अब्दुल्लाह बिन अबु-अल-हसन-अल-जबानी, ख़ल्फ़ बिन अब्बास-अल-मिसरी, अब्दुल मुनअम बिन अली अलहरानी, इब्राहीम-अल-हदाद अलयमनी, अब्दुल्लाह-अल-असदी अलयमनी, अतीफ इब्ने ज़ियाद अलयमनी, उमर बिन अहमद-अल-यमनी अलहजरी, मुदाफअे बिन अहमद, इब्राहीम बिन बशारत-उल-अद्‌ल उमर बिन मसऊद-अल-बज़ाज़, उनके उस्ताद मीर बिन मोहम्मद-अल-जीलानी, अब्दुल्लाह-अल-बताएही नज़ील बअेलबक, मक्की बिन अबु उस्मान-अल-साअदी और उनके बेटे अब्दुर्रहमान, सालेह, अब्दुल्लाह बिन अलहसन बिन अलअक्बरी, अबु-अल-क़ासिम बिन अबु बकर अहमद, उनके भाई अहमद अतीक, अब्दुलअज़ीज़ बिन अबु नस्र-अल-जुनायदी, मोहम्मद बिन अबु-अल-मकारिम अलहुज्जत-उल-याकूबी, अब्दुल मलिक बिन रियाल और उनके साहिबज़ादे अबु-अल-फ़रज, अबु अहमद-अल-फ़ज़ीलत, अब्दुर्रहमान बिन नजम-उल-ख़ज़रजी, याहिया-अल-तकरीनी, हलाल बिन उमय्यह-अल-अदनी, यूसुफ मुज़फ़्फ़र-उल-आकोली, अहमद बिन इसमाईल बिन हम्ज़ा, अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन अलमनसूरी, सदूनाह-अल-मीरीफ़ीनी,

उस्मान-अल-बासरी, मोहम्मद-अल-वअज़-उल-ख़्यात, ताजउद्दीन बिन बततह, उमर बिन अलमदायनी, अब्दुर्रहमान बिन बक़ा, मोहम्मद-अल-नख़ाल, अब्दुलअज़ीज़ बिन कलफ, अब्दुल करीम बिन मोहम्मदुल मिसरी, अब्दुल्लाह इब्ने मोहम्मद बिन अलवलीद, अब्दुल मोहसिन बिन अलदवेरह, मोहम्मद बिन अबुअल हुसैन, दलफ़-उल-हरीमी, अहमद बिन अलदीब्क़ी मोहम्मद बिन अहमद-अल-मोअज़्ज़न, यूसुफ़ बिन हब्बतुल्लाह-अल-दमिश्क़ी, अहमद बिन मतीअ, अली बिन अलनफ़ीस, अलमामूनी, मोहम्मद बिन अल्लेस-उल-ज़रीर अलशबरीफ़, अहमद बिन मनसूर, अली बिन अबुबकर् बिन इदरीस, मोहम्मद बिन नसरह, अब्दुल लतीफ बिन मोहम्मद-अल-हरानी रहमहमुल्लाह।

फ़तवा नवीसी आपके इल्मो फ़ज़्ल का जब चार दांगे आलम में शोहरा हुआ तो हर तरफ से बकसरत इसतफ़्तअ आने लगे। आप बिलउमूम मज़हब हंबली और मज़हब शाफ़अई(रह०अ०) के मुताबिक़ फ़तवा देते। फ़तवा नवीसी की सरअत का ये आलम था के कभी कोई इसतफ़्तअ आपके पास रात भर भी नहीं रहा। और ना कभी आपको फतवा देने में ग़ोरो फ़िक्र करने की ज़रूरत पेश आई। आप इसतफ़्तअ पढ़ते ही उसका जवाब तहरीर फरमा देते थे। उल्माऐ ईराक़ आप कें फतावे की सहेत और जवाब की सरअत पर बेहद तअज्जुब करते। और बहुत तारीफ़ करते। शेख़ मोफ़िक़उद्दीन बिन क़दामा(रह०अ०) का बयान है के हम 561हि० में बग़दाद पहुँचे उस वक़्त शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) का इल्मो फ़ज़्ल और दर्स व इफ़्तअ में कोई हमसर ना था। तालिब इल्मों और फतावा के सायलों को आपकी मौजूदगी में किसी दूसरे की हाजत ना थी।

आपके साहिबज़ादे हज़रत शेख़ ताजउद्दीन

अब्दुर्रज़्ज़ाक़(रह॰अ॰) का बयान है के एक मर्तबा विलाटे अजम से आपके पास एक इसतफ़्तअ आया जो उससे पहले अक्सर उल्मा ईराक़ के सामने पेश हो चुका था मगर किसी ने उसका तसल्ली बख़्श जवाब नहीं दिया था। इसतफ़्तअ की सूरत ये थी के एक शख़्स ने क़सम खाई के वो कोई ऐसी इबादत करेगा जिसमें इबादत के वक़्त कोई दूसरा शरीक नहीं होगा। अगर वो ऐसी इबादत ना कर सके तो उसकी बीवी को तीन तलाक़। ऐसी इबादत कौन सी हो सकती है?

तमाम उल्मा उसका जवाब देने से क़ासिर रहे। जब सय्यदना हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के पास ये इसतफ़्तअ आया तो आपने फ़ौरन उस पर ये फतवा दे दिया के वो शख़्स मक्का मोअज़्ज़मा चला जाए मुताफ़ उसके लिए खाली कर दिया जाए और वो एक हफ़्ता तक तनहा तवाफ करे।

ये जवाब सुनकर उल्मा हैरान रह गए क्योंके यही एक सूरत थी जिस में वो शख़्स तनहा इबादत कर सकता था और उसकी क़सम पूरी हो सकती थी। ये फतवा मिलते ही वो शख़्स मक्का मोअज़्ज़मा रवाना हो गया। इसी तरह आपके तमाम फतावे इल्मो हिकमत का मज़हर और ज़हेन रसा का शाहकार होते थे।

हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का मसलक

शेख़ अबु तक़ी मोहम्मद बिन अज़हर सोरफ़ीनी(रह॰अ॰) बयान करते हैं के मुकम्मल एक साल मेरे ऊपर ऐसा गुज़रा क मुझे हर लम्हा ये तमन्ना रहती थी के किसी की रिजाल-उल-ग़ैब में से ज़ियारत करूं।

चुनांचे एक रात मैंने ख़्वाब में हज़रत इमाम हंबल(रह॰अ॰) के मज़ार की ज़ियारत की। जहाँ एक और शख़्स भी मौजूद था उस वक़्त मुझे (ख़्वाब ही में) ये

ख़याल आया के ये ज़रूर रिजालुलग़ैब में से है लेकिन बैदारी के बाद मेरी ये ख्वाहिश रही के काश मैं उस शख़्स को आलमे बैदारी में देख सकता।

चुनाँचे यही ख़्वाहिश लिए हुए मैं इमाम हंबल(रह॰अ॰) के मज़ार की जानिब चल पड़ा, वहाँ पहुँच कर मैंने वैसा ही शख़्स देखा जैसा के ख़्वाब में देख चुका था लेकिन जब मैं तेज़ी से ज़ियारत के लिए बढ़ा तो वो मेरे सामने से निकल गए। और जब मैं दरयाए दजला तक उनका पीछा करते हुए पहुँचा तो दरयाए दजला के दोनों किनारे इतने क़रीब कर दिये गए के उसमें सिर्फ एक ही क़दम का फ़ासला बाक़ी रह गया। चुनाँचे वो साहब क़दम बढ़ा कर दूसरे किनारे पर पहुँच गए। मैंने उनको क़सम देकर कहा के ठहर कर मुझ से गुफ़्तगू करते जाईये। जब वो ठहर गए तो मैंने पूछा के आपका मसलक क्या है? तो उसके जवाब में उन्होंने फरमाया के मिल्लते हनफ़िया का पैरूकार हूँ। शेख़ अबुतक़ी(रह॰अ॰) का कहना है के जब मुझे उनके हनफ़ी होने का इल्म हुआ तो वापसी पर मैंने ये तय किया के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ख़िदमत में पूरा वाक़ेया बयान करूंगा। लेकिन मैं आपके मदरसे के दरवाज़े ही पर पहुँचा था के बग़ैर दरवाज़ा खोले घर के अन्दर से ही आप ने फरमाया:

"ऐ मोहम्मद सीरफ़ीनी! रूए ज़मीन पर मशरिक़ो मग़रिब में उस वक़्त कोई वलीअल्लाह सिवाए अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) के हनफ़ी मसलक का नहीं है।"

तफ़रीह-उल-ख़ातिर में उसी बात को यूं बयान किया गया है के एक रात हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने रसूले अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को देखा के वहां इमाम अहमद बिन हंबल(रह॰अ॰) अपनी दाढ़ी पकड़े खड़े हैं और हुज़ूर से अर्ज़ कर रहे हैं के या रसूल

अल्लाह(स॰अ॰स॰)! अपने प्यारे बेटे मही‌उद्दीन को फरमाइये के उस बूढ़े की हिमायत करे। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने मुसकुराते हुए फरमाया ऐ अब्दुल क़ादिर! उनको दरख़्वास्त पूरी करो। तब आपने इर्शादे नबव्वी(स॰अ॰स॰) पर अमल करते हुए उनकी इल्तिमास क़बूल फरमाई और फ़ज्र की नमाज़ हंबली मुसल्ले पर पढ़ाई।

एक रिवायत में है के एक मर्तबा हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) इमाम अहमद बिन हंबल(रह॰अ॰) के मज़ार शरीफ पर गए तो इमाम साहब क़ब्र से निकले और एक क़मीज़ इनायत की और आपसे मुआनक़ह किया और फरमाया ऐ अब्दुल क़ादिर! बेशक मैं इल्मे शरीअत व हक़ीक़त, इल्म हाल व फअेल में तुम से इम्तियाज़ रखता हूँ।

एक और रिवायत में है के एक मर्तबा हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की रूहानी मुलाक़ात हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा(रह॰अ॰) से हुई तो हंबली मज़हब इख़्तियार करने और हनफ़ी मज़हब इख़्तियार ना करने की वजह दरयाफ़्त फरमाई। हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने जवाब दिया के उसकी दो वजूहात हैं एक ये के हंबल मज़हब मुक़ालदीन की कमी के बाअस ज़ईफ़ हो चुका है। दूसरे ये के इमाम अहमद बिन हंबल(रह॰अ॰) मिस्कीन हैं और मैं भी मिस्कीन हूँ और मेरे नाना रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने भी अल्लाह तआला से मिस्कीनी तलब की थी। और दुआ की थी के ऐ अल्लाह! मुझे मिस्कीनी की हालत में रख और इसी हालत में मार और क़यामत के रोज़ मिस्कीनों के साथ उठा।

तरबीयते मुरीदैन हज़रत शेख़ फरमाते हैं के राहे सलूक के राहरवों के लिए उलूम शरअया और इसतलाहाते सूफिया से वाक़िफ होना बहुत ही ज़रूरी है और उससे

किसी वक़्त भी ग़ाफ़िल ना होना चाहिए। नीज़ राहे सलूक तय करने वाले शेख़ के लिए मुरीद को ऐसी तरबीयत देना ज़रूरी है जो सिर्फ खुदा के लिए हो और उसमें अपनी ज़ाती ग़र्ज़ क़तअन शामिल ना हो।

शेख़ के लिए ये भी ज़रूरी है के वो मुरीद के साथ नासहाना तर्ज़ इख़्तियार करे। उसको बनज़रे शफ़्क़त देखे और अगर एहमाल हो के मुरीद रियाज़त ना कर सकेगा तो उसके साथ मेहरबानी और नर्मी का सलूक करे उसकी तरबीयत इस तरह करे जिस तरह के माँ शीरख़्वार बच्चे की करती है या बाप अपनी औलाद की तरबीयत शफ़्क़त से करता है उस पर इतना बार हरगिज़ ना डाले जो उसकी ताक़त से बाहर हो।

फिर जब मुरीद ये अहेद करे के मैं गुनाहों से मुजतनिब होकर अल्लाह तआला की इताअत करता रहूंगा उस पर उस वक़्त सख़्ती करना जायज़ है और हदीस शरीफ के मुताबिक़ अहेद लेना भी बुनियादी शै है क्योंके हुज़ूरे अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने भी बेअते रिज़्वान के वक़्त सहाबाइक्राम(र०अ०) से अहेद लिया था।

तमाम उल्मा व मशायख़ जनाब शेख़ की ख़िदमत में निहायत एहत्राम व तअज़ीम से मोअद्दिब बैठा करते थे और आपके उन मुरीदों की तादाद जिन्होंने दीन व दुनिया की सआदतें हासिल कीं, बहुत ज़्यादा है। उनमें से एक भी ऐसा नहीं जिसकी मौत बग़ैर तौबा के वाक़े हुई हो, हत्ता के आपके इरादतमंदों के मुरीद भी सात सिलसिलों तक दाख़िले बहिश्त होंगे। (क़लायद-उल-जवाहर)

अहले निसबत के लिए बशारत शेख़ ग़रसीनी बयान करते हैं के जब हज़रत शेख़ ने दारोग़ाए जहन्नुम से दरयाफ़्त किया के क्या तुम्हारे पास मेरा कोई सोहबतयाफ़्ता मौजूद है? तो उसने जवाब दिया खुदा की क़सम! कोई

मौजूद नहीं है। फिर आप ने फरमाया के मेरा हाथ मुरीदैन पर इस तरह साया फग्न है जिस तरह आसमान ज़मीन पर साया किए हुए है। अगरचे मेरे इरादतमंद आली मरतबत नहीं हैं लेकिन मैं तो आली मरतबत हूँ। खुदा की क़सम! मेरे क़दम उस वक़्त तक पीछे नहीं हटेंगे जब तक के मैं उन सब को लेकर जन्नत में दाखिल ना हो जाँऊ।

एक शख़्स ने हज़रत से सवाल किया के आपका उस शख़्स के मुताल्लिक़ क्या ख़याल है जिसने ना तो आप से बेअत की और ना आप से खुरक़ह पहना लेकिन आपसे निसबत रखता है तो उस पर आपने फरमाया के जिसको मुझ से निसबत हसिल है उसको काबातुल्लाह से भी वाबस्तगी हासिल हो जाएगी। ख़्वाह उसके आमाल पसंदीदा हों या वो नापसंदीदा राहों पर गामज़न हो। फिर भी मेरे ही सोहबत याफ़्तगान में शुमार होगा और जो शख़्स मेरे मदरसे के रास्ते से भी गुज़र जाएगा क़यामत के दिन उसके अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ कर दी जाएगी। (क़लायद-उल-जवाहर)

पाँच नसलों तक खुशख़बरी क़ाज़ी अलक़ज़ात अबु सालेह नस्र(रह॰अ॰) का बयान है के मेरे वालिद शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़(रह॰अ॰) और चचा शेख़ अब्दुलवहाब(रह॰अ॰) (फरज़न्दाने हज़रत शेख़(रह॰अ॰)) का बयान है के हज़रत शेख़ ने फरमाया के मुबारक हो उस शख़्स को जिसने मुझे देखा या मेरे देखने वालों को देखा उसी तरह आपने मुतावातिर उन पाँच नस्लों के लोगों के लिए खुशी और मुबारकबाद के अलफ़ाज़ इर्शाद फरमाए जो मुसलसल हज़रत शेख़ के देखने वाले और उनके बाद उन्हें देखने वाले बन कर आलमे वजूद में आते रहे।

शेख़ अबु-अल-क़ासिम बज़ाज़ की रिवायत कर्दा बातों में से ये रिवायत है के हज़रत शेख़ ने फरमाया के हुसैन हल्लाज फिसल गया उस दौर में कोई ऐसा शख़्स

मौजूद ना था जो उसे थाम लेता। अगर मैं उस ज़माने में मौजूद होता तो ज़रूर उसका हाथ पकड़ लेता। मेरे मुरीदैन और मुहिब्बीन में से क़यामत तक जिस शख़्स की सवारी भी फिसलेगी उसका हाथ मैं पकड़ लूंगा। (खुलासात-उल-मफ़ाखिर)

मुरीदों के लिए दुआ शेख़ आरिफ़ बिल्लाह हज़रत अबु-अल-नजीब सहरवरदी(रह॰अ॰) अपने वालिद से रिवायत करते हैं के हर रात हज़रत शेख़ हम्माद दबास(रह॰अ॰) की भिनभिनाहट सुनी जाती थी। ये आवाज़ शहद की मक्खियों की आवाज़ से मुशाबह होती थी। हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) उस ज़माने में आपकी ख़िदमत में रहते थे 508हि॰ में हज़रत शेख़ हम्माद के बअज़ असहाब ने शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी से कहा के इस भिनभिनाहट के बारे में शेख़ से पूछें। आपने दरयाफ़्त किया तो उन्होंने फ़रमाया के मेरे बारह हज़ार मुरीद हैं। मैं हर रात उनके नाम दोहराता हूँ और उनमें से हर शख़्स की हाजत और ज़रूरत के लिए अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ। अगर मेरे किसी मुरीद से कोई गुनाह सरज़द हो जाता है तो उसी महीने के अन्दर या वो मर जाता है या वो तौबा कर लेता है। ये इस लिए होता है ताके वो गुनाह में ज़्यादा वक़्त रह कर आदी ना हो जाए। हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने फ़रमाया के अगर अल्लाह तआला ने अपने हाँ मुझे कोई ख़ुसूसी मर्तबा अता फ़रमाया तो मैं अपने रब से अहेद लूंगा के क़यामत तक मेरे मुरीदैन में से कोई शख़्स भी बग़ैर तौबा के ना मरे और मैं इस बात पर उनका ज़ामिन होंगा। हज़रत शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) ने फ़रमाया के अल्लाह तआला ने मुझे मुशाहेदा कराया के अनक़रीब हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) को ये मुक़ाम व मनसब हासिल

हो जाएगा। और उनके मुरीदैन पर उस बुलंद मर्तबे का साया वो दराज़ फरमा देगा। (ख़ुलासात-उल-मफ़ाख़िर)

हमनशीनों पर तवज्जह अबु अब्दुल्लाह हुसैन बिन विदराफी बिन अली बग़दादी(रह०अ०) शेख़ अबु मोहम्मद(रह०अ०) के हवाले से बयान करते हैं के एक दिन हमारे शेख़ हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) की तक़रीर के दौरान लोगों पर सुस्ती और काहिली के आसार नुमायाँ होने लगे आपने आसमान की तरफ़ निगाह उठाई और ये अश्आर पढ़े

ला तुसक़नी वहदी फमा उदत्तनी
अन्नी अश्शह बिहा अला जल्लासी

(मुझे तनहा बादाऐ मआरफ़त ना पिला क्योंके ऐसे मौक़ों पर अपने हम नशीनों को महरूम करने का तूने मुझे आदी ही नहीं बनाया)

अन्तुल करीम वहल यलीक़ तकर्रमा
इन याअदम अलनिदमा दौरअलकास

(तू तो करीम है। क्या फय्याज़ी का ये तक़ाज़ा है के साथियों को गर्दिशे जाम से महरूम कर दिया जाए)

रावी का बयान है के ये अश्आर सुनते ही लोगों में खूब जोश व ख़रोश पैदा हुआ और मजलिस पर एक ख़ास रंग छा गया। चुनाँचे एक या दो आदमियों का इसी मजलिस में इन्तिक़ाल हो गया। (ख़ुलासात-उल-मुफ़ाख़िर)

मुरीदों के लिए ज़मानत तल्बी शेख़ अबु सऊद(रह०अ०), मोहम्मद-उल-अलयानी(रह०अ०) और उमर बज़ाज़(रह०अ०) बयान करते हैं के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) ने अल्लाह तआला से इस बात की ज़मानत हासिल कर ली है के ता हश्र उन का कोई मुरीद बग़ैर तौबा के वफ़ात नहीं पाएगा। हत्ता के आपके मुरीदों के मुरीद भी सात सिलसिलों तक जन्नत में दाख़िल

किए जाएंगे। क्योंके वो फरमा चुके हैं के मैं अपने हर मुरीद का ज़ामिन हूँ और हस्बे अहवाल व मरातिब उनकी निगेहदाश्त भी करता रहूंगा। अगर मेरे किसी मुरीद से शर्मनाक फअेल मग़रिब में सरज़द होता है तो मैं मशरिक़ में उसकी पर्दापोशी करता रहता हूँ और खुश नसीब हैं वो लोग जिन्होंने मुझे देखा और हसरत है उन लोगों पर जिन्होंने मुझे नहीं देखा। (क़लायद-उल-जवाहर)

मुरीदों के लिए तौफ़ीके तौबा की दुआ हज़रत सुहैल बिन अब्दुल्लाह तसतरी (रह०अ०) से रिवायत है के एक दफा सय्यदना शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०अ०) कई दिन तक बग़दाद से ग़ायब रहे अहले बग़दाद बहुत मुज़तरिब हुए और आपकी जुसतुजू करने लगे। किसी शख़्स ने आकर बताया के मैंने आपको दरयाए दजला की तरफ जाते देखा है। लोगों का एक अंबूहे कसीर दरया पर पहुँचा तो देखा के आप दरया के पानी पर चल कर हुजूम की तरफ आ रहे हैं और हज़ारहा मछलियाँ अंबूहे दर अंबूहे आकर आपके पाँऊ चूम रही हैं। इतने में नमाज़ का वक़्त हो गया। लोगों ने देखा के एक बहुत बड़ी सब्ज़ जाएनमाज़ आपके अेन सामने हवा में मोअल्लिक़ हो गई। उस पर दो सतरें लिखी हुई थीं। एक सतर में:

"अला इन्ना औलियाअल्लाही ला ख़ौफुन अलेहिम वलाहुम यहज़नून"

और दूसरी सतर में:

"सलामुन अलेकुम अहलल बेती इन्नहू हमीदुन मजीदुन" लिखा हुआ था।

आप इस जाएनमाज़ पर खड़े हो गए और बहुत से अफ़राद ग़ैब से नमूदार होकर आपके पीछे सफें बांध कर खड़े हो गए। उन लोगों के चेहरे निहायत बावक़ार थे और आँखें पुरनम थीं। अहले बग़दाद ने भी अब किनोर

पर अपनी सफें आपके पीछे बांध लीं और सब ने अजीब कैफ़ो सरवर के आलम में नमाज़ अदा की। नमाज़ के बाद आपने ये दुआ बुलंद आवाज़ से पढ़ी:

"अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका बिहक़्क़ी मोहम्मदिन हबीबिका व ख़ेरातिका मिन ख़लक़िका इन्नका ला तक़बीज़ रूहा मुरीदिन ओमुरीदीही अला ज़वावीए इल्ला अला तौबती"

(इलाही! मैं तेरे हबीब और बहतरीन ख़लायक़ हज़रत मोहम्मद सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को वसीला बना कर तेरी बारगाह में इल्तिजा करता हूँ के तू मेरे मुरीदों और मुरीदों के मुरीदों की रूह तौबा के बग़ैर क़ब्ज़ ना करना।)

उस वक़्त आपके लबों से एक सब्ज़ रंग का नूर निकल रहा था जिसका रूख़ आसमान की जानिब था। दुआ के ख़ात्मे पर रिजालुल ग़ैब ने "आमीन" कहा और ग़ैब से सब लोगों ने ये आवाज़ सुनी:

"अबशिर फइन्नी क़ुदिसतजीबतू लका" (ख़ुश हो जाओ मैंने तुम्हारी दुआ क़बूल कर ली)

मुरीद की दिलजोई का वाक़ेया शियूख़ की एक जमाअत से मरवी है के एक दफ़ा तिफ़्सोंज में शेख़ अबु मोहम्मद अब्दुर्रहमान तिफ़्सोंजी ने बरसरे मिंबर कहा के औलिया अल्लाह में मेरी मिसाल कलिंग परिन्दे की है जो सब से ज़्यादा दराज़ गर्दन होता है। शेख़ अबु-अल-हसन अली बिन अहमद हुसैनी जो ख़ुद बुलंदी अहवाल के मालिक थे खड़े हो गए। अपना पोसतीन उतार फेंका और कहने लगे मैं तुम से कुश्ती लड़ना चाहता हूँ। शेख़ अब्दुर्रहमान थोड़ी देर के लिए ख़ामोश हो गए फिर अपने रफ़्क़ाअ से कहने लगे के इसके जिस्म का एक बाल भी ऐसा नहीं जो इनायते रब्बानी से ख़ाली हो। फिर उन्हें हुक्म दिया के अपना पोसतीन पहन लो। उन्होंने कहा

के जिससे एक दफा मैं अपने आप को निकाल चुका हूँ दोबारा उसमें दाखिल ना होंगा फिर जन्नत की तरफ रूख़ कर अपनी बीवी को आवाज़ दी, फातिमा! ज़रा मेरे पहनने के लिए कपड़े देना। उसने ये आवाज़ सुन ली हालाँके उस वक़्त वो जन्नत में रास्ते पर उनके कपड़े डाल रही थीं। शेख़ अब्दुर्रहमान ने पूछा के तुम्हारा मुर्शिद कौन है? उन्होंने कहा के मेरे शेख़ सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) हैं। इस पर शेख़ अब्दुर्रहमान ने कहा के मैंने तुम्हारे शेख़ का ज़िक्र ज़मीन पर तो ज़रूर सुना है मगर मैं चालीस साल से दरकाते कुद्रत की मंज़िल में हूँ, वहाँ तो मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। फिर शेख़ अब्दुर्रहमान ने अपने असहाब के एक गिरोह से फरमाया के तुम लोग बग़दाद जाओ। शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी से मेरा सलाम कहो और मेरी तरफ से कहो के मैं चालीस बरस से दरकाते कुद्रत में हूँ मैंने तो आपको वहाँ कभी आते जाते नहीं देखा। इधर उसी वक़्त हज़रत शेख़(रह॰अ॰) ने अपने मोअतक़दीन में से एक जमाअत को शेख़ अब्दुर्रहमान तिफ़्सोंजी के पास तिफ़्सोंज जाने का हुक्म दिया और फरमाया के मुरीदैन की एक जमाअत तुम्हें रास्ते में मिलेगी जिसे उन्होंने इस इस तरह का पैग़ाम देकर मेरी तरफ रवाना किया है। तुम लोग उन्हें वापस ले जाना और शेख़ अब्दुर्रहमान तिफ़्सोंजी को मेरा सलाम पहुँचाने के बाद कहना के आप दरकात में हैं और जो शख़्स दरकात में हो उसे उसकी क्या ख़बर जो हुज़ूर में है और जो हुज़ूर में है उसे मख़्दअ वाले का क्या इल्म। मैं मख़्दअ में हूँ। बाबे सतर से आता जाता हूँ जहाँ आप मुझे नहीं देख सकते। इसकी निशानी ये है के फलाँ वक़्त आपके लिए जो ख़ुलअत निकली वो मेरे हाथ से निकली वो ख़ुलअते रज़ा है और फलाँ रात आपके लिए जो ख़ुलअत निकली वो भी मेरे हाथ से निकली

और वो तशरीफ़ फतह है और मज़ीद अलामत ये है के दरकात में बारह हज़ार औलिया के रूबरू आपको खुलअते विलायत पहनाई गई और वो एक सब्ज़ रंग का जुब्बह है जो सूरह इख़्लास की शक्ल में ये भी आपके लिए मेरे हाथ से जारी हुआ है। उन लोगों ने अभी आधा रास्ता तय किया था के उन्हें शेख़ अब्दुर्रहमान(रह०अ०) के रिफक़ाअ मिल गए। चुनाँचे उन्हें हमराह लेकर ये हज़रात शेख़ अब्दुर्रहमान(रह०अ०) के पास पहुँचे और उन्हें हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) का पैग़ाम पहुँचाया। उन्होंने कहा के शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) सच फरमाया वो अबु-अल-वक़्त और बादशाहे ज़माना हैं।

अक़्लीमे विलायत की बादशाही

आपके फरमान "मेरा क़दम हर वली की गर्दन पर" की तफ़्सील

हाफ़िज़ अबु-अल-अज़्ज़ अब्दुल मुग़ीस बिन हर्ब बग़दादी(रह०अ०) बयान करते हैं के जिस वक़्त हम लोग सलब की ख़ानक़ाह में हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो मशायख़ ईराक़ की एक जमाअत आपकी मजलिस में मौजूद थी जिसमें बहुत से मश्हूर मशायख़ भी थे, जिन में से बाज़ के नाम ये हैं:

शेख़ अली बिन अलहुय्यती, शेख़ बक़ा इब्ने बतू, शेख़ अबु सईद केलवी, शेख़ अबु-अल-नजीब सहरवर्दी, शेख़ शहाबउद्दीन सहरवर्दी, शेख़ उस्मान क़ुरशी, शेख़ मकारिम-उल-अक्बर, शेख़ मित्र जागीर, शेख़ सदक़ा बग़दादी, शेख़ याहिया मरतअश, शेख़ ज़ियाउद्दीन, शेख़ क़ज़ीब-उल-बान मूसली, शेख़ अबु-अल-अब्बास यमानी, शेख़ अबु बकर् शीबानी, शेख़ अबु-अल-बर्कात ईराक़ी, शेख़ अबु-अल-क़ासिम उमर बज़ाज़, शेख़ अबु उमर सुल्तान बताएही, शेख़ अबु-अल-मसऊद अत्तार, अबु-अल-अब्बास अहमद इब्ने अली जोसक़ी सरसरी, शेख़ माजा करदी, शेख़ अबुलअेला वग़ैरा हम रहमहुमुल्ला तआला।

हज़रत ग़ौस-उल-सिक़लैन शाह महीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) मिंबर पर जलवा अफ़्रोज़ थे और एक बलीग़ ख़ुत्बे के दौरान यक लख़्त आप पर हालते कशफ तारी हुई और आप ने अल्लाह के हुक्म से ये इर्शाद फरमाया के

"क़दामी हाज़ा अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह"

(मेरा ये क़दम हर वली अल्लाह की गर्दन पर है) उन सबने आपका ये इर्शाद सुन कर अपनी गर्दनें ख़म कर दीं। उनके अलावा कुर्राहए अर्ज़ पर जहाँ जहाँ कोई क़ुतब, अब्दाल, या वली था उसने भी आपकी आवाज़ सुनी और अपनी गर्दन झुका दी। बयान किया जाता है के ये फरमान सुनते ही शेख़ अली बिन अलहुय्यती मिंबर के पास गए और हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का क़दम मुबारक पकड़ कर अपनी गर्दन पर रखा। मजलिस में मौजूद औलिया अल्लाह ने अपनी गर्दनें झुका दीं। (क़लायद-उल-जवाहर)

शेख़ अदी बिन मुसाफिर(रह॰अ॰) का बयान

शेख़ अबु मोहम्मद यूसुफ़-अल-आक़ोली(रह॰अ॰) फरमाते हैं, के एक दफा मैं हज़रत शेख़ अदी बिन मुसाफिर(रह॰अ॰) की खिदमत में हाज़िर हुआ तो शेख़ अदी ने मुझ से पूछा के आप कहाँ के रहने वाले हैं तो मैंने अर्ज़ किया के बग़दाद शरीफ़ का रहने वाला हूँ और शेख़ ग़ौस-उल-सिक़लैन(रह॰अ॰) के मुरीदैन में से हूँ। आपने इर्शाद फरमाया खूब! खूब! वो तो क़ुतबे वक़्त हैं। जबके उन्होंने *क़दामी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* फरमाया तो उस वक़्त तीन सौ औलिया अल्लाह और सात सौ रिजाल-उल-ग़ैब ने, जिनमें से बअज़ ज़मीन पर बैठने वाले और बअज़ हवा में उड़ने वाले थे। उन्होंने अपनी गर्दनें झुका दीं। पस ये मेरे नज़दीक उनकी अज़मत व बुज़ुर्गी के लिए काफी दलील है। (बहुज्जत-उल-असरार)

शेख़ अहमद रफ़अई(रह॰अ॰) का बयान

शेख़ अबु मोहम्मद यूसुफ़-अल-आक़ोली(रह॰अ॰) ही बयान करते हैं के एक अर्से के बाद मैं हज़रत शेख़ अहमद रफ़अई(रह॰अ॰) की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ और शेख़ अदी(रह॰अ॰) का मनदर्जा बाला मक़ोला

जो उन्होंने शहनशाहे बग़दाद(रह॰अ॰) के मुताल्लिक फरमाया था, बयान किया। तो आपने फ़ौरन फरमाया *सदक़शेख़ू अदीयुन।* के शेख़ अदी(रह॰अ॰) ने बिलकुल सच फरमाया है।

क़लायद-उल-जवाहर में लिखा है के जब हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने *क़दमी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* फरमाया तो शेख़ अहमद रफाई(रह॰अ॰) ने अपनी गर्दन को झुका कर अर्ज़ किया *अला रक़ाबती* (मेरी गर्दन पर भी) मौजूदा हाज़रीन ने अर्ज़ किया। हुज़ूरे वाला! आप ये क्या फरमा रहे हैं? आपने इर्शाद फरमाया के उस वक़्त बग़दाद शरीफ़ में हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने *क़दमी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* का एलान फरमाया है और मैंने गर्दन झुका कर तामीले इर्शाद की है।

शेख़ अबु मदयन मग़रिबी(रह॰अ॰) का बयान

एक दिन ,शेख़ अबु मदयन मग़रिबी(रह॰अ॰) ने मग़रिब के शहर में अपनी गर्दन को नीचे करते हुए कहा *अल्लाहुम्मा इन्नी उशहिदूका व उशहिदू मलाएकताका इन्नी समेअतू वआतअतू* ऐ अल्लाह! मैं तुझ को और तेरे फरिश्तों को गवाह बनाता हूँ के मैंने तेरा हुक्म सुना और तेरी इताअत की।

आपके मुरीदैन ने आपसे इन अल्फ़ाज़ के कहने का सबब पूछा तो आपने इर्शाद फरमाया के शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने आज बग़दाद शरीफ़ में फरमाया है *क़दमी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह।* उसके बाद कुछ अर्से बाद हज़रत ग़ौस-उल-आज़म के मुरीदैन बग़दाद शरीफ से वापस आए तो हज़रत अबु मदयन मग़रिबी(रह॰अ॰) के मुरीदैन ने वो दिन और वो वक़्त बताया जब हज़रत अबु मदयन(रह॰अ॰) ने अपनी

गर्दन को नीचे किया था तो गौसे पाक(रह॰अ॰) के मुरीदैन ने तसदीक करते हुए कहा के उसी रोज़ उसी वक्त गौसे आज़म(रह॰अ॰) ने बगदाद शरीफ में *क़दमी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* का एलान फरमाया था।

शेख माजिद-उल-कुरवी(रह॰अ॰) का बयान

आपका इर्शाद है के जब सय्यदना गौसे आज़म ने *क़दमी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* इर्शाद फरमाया था तो उस वक्त कोई वली अल्लाह ज़मीन पर बाक़ी ना रहा के जिसने तवाज़ुअे और आपके अलू मर्तबा का एअ्राफ करते हुए गर्दन ना झुकाई हो और ना ही उस वक्त सालेह जिन्नात में से कोई ऐसी मजलिस थी के जिसमें इस अम्र का ज़िक्र ना हुआ हो। तमाम दुनियाए आलम के सालेह जिन्नात के वफ्द आपके दरवाज़े पर हाज़िर थे उन सब ने आपको सलाम का हदया पेश किया और सब के सब आपके दस्ते मुबारक पर तायब होकर वापस पलटे (बहुज्जत-उल-असरार)

शेख अबु सईद केलवी(रह॰अ॰) का बयान

शेख अबु सईद केलवी(रह॰अ॰) का बयान है के जब हज़रत शेख(रह॰अ॰) ने *क़दमी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाही* फरमाया तो उस वक्त आपके क़ल्ब पर तजल्लियाते इलाही वारिद हो रही थीं और रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की तरफ से एक खुलअते बातिनी भेजा गया जिसे मलायका मुकर्रबीन की एक जमाअत ने लाकर औलियाऐइक्राम के झुरमट में हज़रत शेख को पहनाया। उस वक्त मालयका और रिजाल-उल-गैब आपकी मजलिस के गिर्दागिर्द सफ दर सफ हवा में इस तरह खड़े थे के आसमान के किनारे उनसे भरे नज़र आ रहे थे उस वक्त रूए ज़मीन पर कोई वली

ऐसा ना था के जिस ने अपनी गर्दन आपके फरमान के आगे ना झुकाई हो। (क़लायद-उल-जवाहर)

शेख़ अबु-अल-मुफाख़िर अदी(रह॰अ॰) का बयान

शेख़ अबु-अल-मुफाख़िर अदी(रह॰अ॰) ने फरमाया के मैंने अपने चचा शेख़ अदी बिन मुसाफिर(रह॰अ॰) से दरयाफ़्त किया के क्या मोतक़दमीन मशायख़ में से किसी ने कहा के मेरा क़दम हर वली की गर्दन पर है? फरमाया नहीं। मैंने अर्ज़ किया फिर इस अम्र के क्या मायनी हैं के शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने ऐसा कहा है। फरमाया ये बात इस अम्र को ज़ाहिर करती है के वो अपने वक़्त में फर्द हैं। मैंने दरयाफ़्त किया के क्या हर वक़्त के लिए एक फर्द होता है? फरमाया हाँ लेकिन उनमें से किसी को सिवाए अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) के इस फरमान का अम्र नहीं हुआ। मैंने कहा क्या उनको इस अम्र का हुक्म हुआ था। फरमाया क्यों नहीं। तमाम औलिया ने अपने सरों को इस हुक्म ही की वजह से झुकाया था। क्या तुम को मालूम नहीं के मलायका ने आदम अलेहिस्सलाम को हुक्म के बग़ैर सज्दा नहीं किया।

शेख़ हयात बिन क़ैस हरानी का बयान

एक शख़्स ने तीन 3 रमज़ान-उल-मुबारक सन 599हि॰ को हरान की जामऐ मस्जिद में हाज़िर होकर शेख़ हयात बिन क़ैस हरानी(रह॰अ॰) से जब बेअत होने दरख़्वास्त की तो आपने पूछा के "तुम्हें मेरे अलावा किसी और से भी निसबत हासिल है?" उसने जवाब दिया के "मैं हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) से मनसूब रहा हूं लेकिन ना तो मैंने उससे ख़िरक़ह हासिल किया और ना ही कुछ और हासिल कर सका। इस पर हज़रत शेख़ ने कहा के हम ने भी तवील अर्से तक आपके साय में ज़िन्दगी गुज़ारी है और आपके नूरे मआरफ़त से बहुत ही खुशगवार जाम पिये हैं।

आप जिस वक़्त सांस लेते तो आपके दहन मुबारक से एक शुआअ नमूदार होती जिससे पूरा आलम मुनव्वर हो जाता था और तमाम अहले मआरफ़त के अहवाल उनके मरातिब के एतबार से आप पर रोशन हो जाया करते थे और जिस वक़्त आप को ये कहने का हुक्म दिया गया के *क़दमी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* तो अल्लाह तआला ने तमाम औलियाइक्राम के क़लूब में अनवार का इज़ाफ़ा फ़रमाया। उनके उलूम में बर्कत अता की, उनके मरातिब में रफ़अत बख़्शी और उन्हें सर झुका देने के सिले में अम्बिया(अ०स०) व सिद्दीक़ीन और शहोदआ और सालेहीन के ज़ुमरे में शामिल कर दिया गया।" (क़लायद-उल-जवाहर)

औलिया की जमाअत की ताईद मशायख़ की एक अज़ीम जमाअत से ये मनक़ूल है के हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) ने जब *क़दमी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिलाह* का एलान फ़रमाया तो उस वक़्त एक बहुत बड़ी जमाअत हवा में उड़ती हुई नज़र आई। वो जमाअत आपकी ख़िदमत में हाज़िर होने के लिए आई और सय्यदना हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम ने उनको आपको ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होने का हुक्म फ़रमाया था। जब आपने एलान फ़रमाया तो तमाम औलिया अर्रहमान ने आपको मुबारकबाद दी और इस तरह बदया तबरीक पेश किया:

"ऐ बादशाह व इमामे वक़्त ऐ क़ायम बअम्रे इलाही! ऐ वारिसे किताब अल्लाह व सुन्नते रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम! ऐ वो आली मरतबत के ज़मीन व आसमान जिसका दसतरख़्वान हैं और तमाम अहले ज़माना जिसके अहलो अयाल हैं, ऐ वो ज़ी वक़ार जिसकी दुआ से बारिश बरसती है जिसकी बर्कत से जानवरों के

थनों में दूध उतरता है, जिसके रूबरू औलियाइक्राम सर झुकाए हुए हैं। जिसके पास रिजाले गैब की चालीस सफें नियाज़मंदाना तरीक़ से खड़ी हुई हैं, उनकी हर सफ में सत्तर सत्तर मर्द हैं, ऐ वो आली मुक़ाम जिसके हाथ की हथैली पर ये लिखा हुआ है के अल्लाह तआला उसके साथ किए गए वादे को पूरा करेगा और जिसकी तीन साला उम्र शरीफ़ा ही में फरिश्ते उसके इर्दगिर्द फिरते थे और उसकी विलायत की खबर देते थे।" (बहुज्जत-उल-असरार)

शेख़ लोअ लोअ अरमनी का ताईदी बयान

शेख़ लोअ लोअ अरमनी बयान करते हैं के जिस वक़्त अबु अलख़ैर अता मिसरी के क़ल्ब में मेरे मुताल्लिक़ ये खयाल पैदा हुआ के मुझे किसी से वाबस्ता होना चाहिए तो मैंने शेख़ अता को बताया के मेरे शेख़ तो अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) हैं और उन्होंने जब ये फरमाया था के *क़दमी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह।* तो रूए ज़मीन के तीन सौ तेरह औलिया अल्लाह ने सर ख़म कर दिये थे जिन में सत्राह हरेमैन शरीफेन में थे। साठ ईराक़ में। और चालीस अजम में, तीस शाम में, बीस मिस्र में, सत्ताईस मग़रिब में, ग्यारह हबशाह में, ग्यारह वादी याजूज व माजूज में, सात सरांदीप में, सेनतालीस कोहे काफ़ में, और बहेरे मुहीत में।

उनके अलावा और बहुत से मशायख़ ने बताया है के शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) ने ये जुमला अल्लाह के हुक्म से कहा था और उनको ये इजाज़त दे दी गई थी के जो वली अल्लाह भी उनसे मुनकिर हो उसको माज़ूल कर दिया जाए उस वक़्त मशरिक़ व मग़रिब के तमाम औलियाइक्राम ने गर्दनें झुका दी थीं।

उसके अलावा उस वक़्त बहुत से मशायख़ ने ये भी फरमाया था :

"उस शख़्स को खूबी हासिल हुई जो पाकीज़गी के दरयाओं में सेराब हुआ, जो बिसाते मआरफ़त बैठा, जिसने अज़मते रबूबियत और अजलाले वहेदानियत का मुशाहेदा किया, जिसने मुक़ामे किब्रायाई में नूर को भी गुम कर दिया। जो दर्जाबर्जा मनाज़िल तय करता हुआ मुक़ामे क़रार की रफ़अतो तक पहुँचा। जिसके लिए रूहे अज़्ली की हवाएँ चलाई गईं। जिसने अतसाले अब्र ज़रिये अनवार के चश्मों से गुफ़्तगू की। जिसको असरार बातिनी के तवस्सुल से मुक़ामे हुज़ूरी हासिल हुआ। जिसने हया पर क़ायम रह कर खुद को आलमे महवीयत में ग़र्क कर दिया, जिसके ज़रिये अदब के चश्मे फूटे। जिसने गुफ़्तगू में इन्किसारी से काम लिया। जो मुक़र्रब बारगाहे इलाही हुआ। और जिससे एज़ाज़ के साथ खिताब किया गया उस पर अल्लाह तआला की जानिब से तहय्यित व सलाम हो।"

शेख़ मकारिम(रह०अ०) का बयान आपने फरमाया के खुदा शाहिद है जिस वक़्त हज़रत शेख़ ये कलमात अदा किए यानी *क़दमी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* तो एत्राफ़े आलम में क़रीब या बईद कोई ऐसा वली नहीं था जिसने क़ुतबियत के परचम का मुशाहेदा ना किया हो। जो हज़रते शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) के हाथ में था या ताजे ग़ोसियत का मुआयना ना किया हो जो आपके सर मुबारक को ज़ीनत बख़्श रहा था, यहाँ उस खुलअते फाख़रा को ना देखा हो जो आप ज़ेबे तन किए हुए थे और जो के तसर्रूफ नामे के साथ बारगाहे इलाही से आपको अता हुआ था। और उस खुलअत की बर्कत से आपको ये इख़्तियार कुल्ली दे दिया गया था के आप अपने दौर के जिस वली को चाहें मअज़ूल कर सकते हैं आपको शरीअत व तरीक़त से इस तरह सरफराज़ कर दिया गया था के जब आपने

ये जुमला फरमाया "मेरा क़दम हर वली की गर्दन पर है।" तो उसी वक़्त रूए ज़मीन के तमाम औलियाइक्राम ने अपना सर ख़म कर और अपने क़लूब को आपका मतीअ बना दिया था। हत्ता के उनमें दस अफ़राद तो अब्दाले वक़्त थे और बाक़ी तमाम अेयान व सलातीने तरीक़त थे। (क़लायद-उल-जवाहर)

शेख़ ख़लीफ़ा अक्बर(रह॰अ॰) का बयान

शेख़ ख़लीफ़ा अक्बर(रह॰अ॰) ने सरवरे कायनात, फख़्रे मौजूदात, बाअइसे तख़्लीके कायनात अलेह अफ़ज़ल-उल-सलात अकमल-उल-तहिय्यात वल तसलीमात को ख़्वाब में देखा और अर्ज़ किया के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने *क़दमी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* का एलान फरमाया है, तो सरकारे दो आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने इर्शाद फरमाया *सदाक़श्शेख़ अब्दुल क़ादिर फकेफ़ा ला वहुवल क़ुत्बु वअना अरआहू।* शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) ने सच कहा है और वो क्यों ना कहते जबके वो क़ुतबे ज़माना और मेरी ज़ेरे निगरानी हैं। (क़लायद-उल-जवाहर)

इस फरमान का मफ़्हूम सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की ज़बान मुबारक से "मेरा क़दम हर वली की गर्दन पर" के अलफ़ाज़ का सादिर होना सभी तसलीम करते हैं और किसी को इससे इंकार नहीं अल्बत्ता इन अलफ़ाज़ के मफ़्हूम व मआनी के मुताल्लिक़ इख़्तिलाफ है। बाज़ लोग इस क़ोल के तेहत औलियाए हाज़िर (यानी आपके ज़माने के तमाम औलियाए हाज़िर व ग़ायब) के अलावा औलियाए मुतक़द्मीन व मुताख़रीन को भी लाते हैं। उसके बरअक्स दूसरे लोगों का ख़याल है के आपका ये फरमान सिर्फ औलियाए वक़्त के साथ मख़सूस था क्योंके औलियाए मुताक़द्मीन में सहाबाइक्राम(र॰अ॰)

ताबेईन(रह॰अ॰) और तबेअ ताबेईन(रह॰अ॰) भी शामिल हैं जिनकी फ़ज़ीलत और बरतरी मुसल्लिम हैं और गौसे आज़म(रह॰अ॰) भी तसलीम फरमाते हैं और औलियाए मुताखरीन में हज़रत महेदी अलेहिस्सलाम हैं, हज़रत मुजद्दिद अल्फे सानी(रह॰अ॰) ने इसी ख़याल से इत्तिफाक़ किया है। आप एक मकतूब में तहरीर फरमाते हैं के जानना चाहिए के ये हुक्म उस वक्त के औलिया के साथ मख़सूस है पहले और बाद में आने वाले औलिया इस हुक्म से ख़ारिज हैं।

हज़रत ख़्वाजा अवैस क़रनी(रह॰अ॰)

तफरीहुलख़ातिर फी मुनाक़िब शेख़ अब्दुल क़ादिर में इब्ने महीउद्दीन अरबली ने मनाज़िल-उल-औलिया फी फज़ायल-उल-असफ़िया के हवाले से लिखा है के हुज़ूर सय्यदे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़(र॰अ॰) और हज़रत अली(र॰अ॰) को हज़रत अवैस क़रनी(रह॰अ॰) के पास जाने की वसीयत फरमाई और फरमाया के अवैस क़रनी(रह॰अ॰) को मेरा सलाम और कमीज़ पहुँचा कर कहना के वो मेरी उम्मत की बख़्शिश की दुआ करें।

चुनांचे जब ये हज़रात गए और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का फरमान सुनाया तो अवैस क़रनी(रह॰अ॰) ने सज्दे में जाकर उम्मते मोहम्मिदया(स॰अ॰स॰) की बख़्शिश की दुआ माँगी। निदा आई अपना सर उठा ले के मैंने तेरी शफाअत से निस्फ उम्मत को बख़्श दिया। और निस्फ को अपने मेहबूब गौसे आज़म(रह॰अ॰) की शफाअत से बख़्शूंगा जो तेरे बाद पैदा होगा। अवैस क़रनी(रह॰अ॰) ने अर्ज़ किया के ऐ परवरदिगार! तेरा वो मेहबूब कौन है और कहाँ है के मैं उसकी ज़ियारत करूं। निदा आई के वो *मक़अदे सिदक़िन इन्दा मलिकिन मुक़्तदरिन* और *इना*

फ़तादल्ला फकाना क़ाबा क़ोसीनी ओ अदना के मुक़ाम पर है। वो मेरा मेहबूब है और मेरे मेहबूब(स०अ०स०) का भी मेहबूब है। वो क़यामत तक अहले ज़मीन के लिए हुज्जत होगा। और सिवाए सहाबा(र०अ०) के और आईम्मा(रह०अ०) के तमाम अव्वलीन व आख़रीन औलिया की गर्दनों पर उसका क़दम मुबारक होगा जो उसे क़बूल करेगा मैं उसको दोस्त रखूंगा। अवैस क़रनी(रह०अ०) ने गर्दन झुकाई और कहा के मैं भी उसे क़बूल करता हूं।

हज़रत जुनैद बग़दादी(रह०अ०) तफरीह-उल-ख़ातिर फी मनाक़िब शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) में इब्ने महीउद्दीन अरबली ने मकाशफाते जुनैदिया के हवाले से लिखा है के सय्यद अलतायफ़ा जुनैद बग़दादी(रह०अ०) एक रोज़ मिंबर पर बैठे जुमअे का खुत्बा दे रहे थे के आपके क़ल्बे मुबारक पर तजल्लियाते इलाही का वरूद हुआ और आप बहेरे शहूद व माकाशफा में मुसतग़रिक़ हो गए। और फरमाया *क़दामुहू अला रक़ाबती बेग़ेरे* जुहूदिन यानी मेरी गर्दन पर इसका क़दम बग़ैर किसी इंकार के और मिंबर की एक सीढ़ी उतर आए। नमाज़े जुमआ और खुत्बे से फारिग़ होने के बाद लोगों ने आप से इन कलमात के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त किया। आपने फरमाया के हालते कशफ में मुझे मालूम हुआ के पाँचवी सदी हिजरी के वक़्त में हुज़ूर सय्यदे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की औलादे पाक में से एक बुज़ुर्ग क़ुतबे आलम होगा। जिसका लक़ब महीउद्दीन और नाम अब्दुल क़ादिर होगा और वो अल्लाह तआला के हुक्म से कहेगा के *क़दामी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* मेरे दिल में ये ख़याल आया के जब मैं उसका हम ज़माना नहीं हूं तो उसके क़दम के नीचे अपनी गर्दन क्यों रखूं। तो हक़ तआला की तरफ से अताब आया के किस चीज़ ने तुझे

पर ये अम्र भारी कर दिया पस मैंने फौरन अपनी गर्दन झुका दी और वो कहा जो तुम ने सुना।

ख़्वाजा बहाअउद्दीन नक़्शबंद(रह०अ०) आपसे हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०) के इस क़ोल *क़दामी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो आप ने इर्शाद फरमाया के गर्दन तो दरकिनार आपका क़दम मुबारक *अला ऐनी ओ अला बसीरती* मेरी आँखों पर है (तफरीह-उल-ख़ातिर)

हज़रत ख़्वाजा मईनुद्दीन चिश्ती(रह०अ०)

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मईनुद्दीन चिश्ती ख़ुरासान के पहाड़ों में मुजाहेदात और रियाज़ियात में मशग़ूल थे जब हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०) ने बग़दाद शरीफ में मिंबर पर बैठ कर फरमाया *क़दामी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* तो ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने रूहानी तौर पर ये इर्शाद आली सुन कर अपनी गर्दन इस क़द्र ख़म की पैशानी ज़मीन को छूने लगी और अर्ज़ की *क़दामाका अला रासी व ऐनी* यानी आपके दोनों क़दम मेरे सर और आँखों पर हैं।

हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०) ने ख़्वाजा साहब के इस इज़हारे नियाज़मंदी से खुश होकर फरमाया के सय्यद ग़यासउद्दीन के साहबज़ादे ने गर्दन झुकाने में सब्क़त की है जिसके सबब अनक़रीब विलायते हिन्द से सरफराज़ किए जाऐंगे।

हज़रत बाबा फरीद गंजशकर(रह०अ०)

तफ़रीह उलख़ातिर में इब्ने महीउद्दीन अरबली(रह०अ०) ने निकात-उल-असरार के हवाले से लिखा है के एक दफा बाबा फरीदउद्दीन गंज शकर(रह०अ०) के मजलिस मुबारक में वलियों की गर्दनों पर हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०) के क़दम मुबारक का ज़िक्र आया। बाबा साहब ने फरमाया

के आपका क़दम मुबारक मेरी गर्दन पर ही नहीं बल्के मेरी आँख की पुतली पर है इसलिए के मेरे पीर ख़्वाजा मईनुद्दीन चिश्ती(रह॰अ॰) उन मशायख़ में से हैं जिन्होंने आपका क़दम मुबारक अपनी गर्दन पर रखा। अगर मैं उस ज़माने में होता तो हक़ीक़ी मायनों में आपका क़दम मुबारक अपनी गर्दन पर रखता और फ़ख़ से अर्ज़ करता के आपका मुबारक मेरी आँख की पुतली पर भी है।

हज़रत ख़्वाजा सुलैमान तोनस्सवी(रह॰अ॰)

मख़्ज़नुल असरार में लिखा है के ख़्वाजा सुलैमान तोनस्सवी(रह॰अ॰) सिलसिलाऐ चिश्ती के बड़े कामिल बुज़ुर्ग हुए हैं आपकी ज़ियारत के लिए आपके चन्द मुरीद तोंसा शरीफ जा रहे थे। उनके हमराह एक शख़्स जो सिलसिला क़ादिरया से तअल्लुक़ रखता था रवाना हुआ। दौराने गुफ़्तगू हज़रत ग़ौसे आज़म के क़दम मुबारक का ज़िक्र आया। क़ादरी मुरीद ने कहा के आपका क़दम मुबारक अव्वलीन व आख़रीन जुमला औलियाइक्राम की गर्दनों पर है। सुलैमान तोनस्सवी(रह॰अ॰) के मुरीदों ने कहा के लेकिन हमारी पीर व मुर्शिद की गर्दन पर नहीं है। क्योंके हमारे पीर इस ज़माने के ग़ौस हैं जब तोंसा शरीफ पहुँचे तो क़ादरी मुरीद ने सारा वाक़ेया हज़रत सुलैमान तोनस्सवी(रह॰अ॰) को सुना दिया। आपने दरयाफ़्त फरमाया के हज़रत शेख़ का क़दम मुबारक महेज़ औलियाइक्राम की गर्दनों पर है या आम लोगों की गर्दनों पर भी है? क़ादरी मुरीद ने कहा के सिर्फ औलियाइक्राम की गर्दनों पर है अवाम इससे मुसतसना है। तब शेख़ सुलैमान तोनस्सवी(रह॰अ॰) जलाल में आए और कहा के ये कम्बख़्त मुरीद मुझे वलीअल्लाह तसलीम नहीं करते वरना हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का क़दम मुबारक मेरी गर्दन पर ज़रूर तसलीम करते।

कदम का मतलब शेख-उल-इस्लाम शहाबउद्दीन अहमद असकलानी(रह॰अ॰) से जिस वक्त ये पूछा गया के हज़रत शेख(रह॰अ॰) के इस कोल *कदामी हाज़िही अला रकाबती कुल्ली वलीय्यिअल्लाह* का मफहूम क्या है? तो आपने कहा के इसका ज़ाहिरी मफहूम तो ये मालूम होता है के उनसे ऐसी ख़ारिके आदात करामातें ज़हूर पज़ीर होती रहेंगी जिनका सिवाए मुआनिदीन के और कोई फर्द इंकार नहीं कर सकेगा। क्योंके हमारे आईम्मा ने करामातों के लिए ये उसूल बताया है के अगर किसी से मुताबिके शरीअत करामातें ज़ाहिर हों जैसे के शेख अब्दुल कादिर(रह॰अ॰) से होती रहीं तो वो मकबूल हैं। लेकिन अगर मुताबिके शरीअत ना हों तो वो मरदूद हैं।

शेख-उल-इस्लाम अजीज़उद्दीन फरमाते हैं के इस कद्र तवातुर के साथ किसी की करामतें नहीं मिलतीं जितनी के सुल्तान औलिया शेख अब्दुल कादिर जीलानी(रह॰अ॰) से ज़हिर हुईं। हज़रत शेख(रह॰अ॰) निहायत दर्जा इस्लाम थे और कवानीने शरियह पर सख़्ती से अमल पेरा थे और उनकी तरफ तमाम लोगों को मुतवज्जेह करते थे। मुख़ालफीने शरीअत से हमेशा इजहारे तनफ्फुर करते। अपनी तमाम तर इबादत, मुजाहेदात के बावजूद आप बीवी बच्चों का पूरा पूरा ख़याल रखते थे। आप फरमाते थे के जो शख़्स हकूक अल्लाह व हककुलइबाद की राहों पर गामज़न रहता है। वो बनिसबत दूसरे लोगों के मुकम्मल और जामअे होता है क्योंके यही सिफत शारअे अलेहिस्सलाम हुजूर अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की भी थी। उसी मुकाम पर पहुँच कर हज़रत शेख अब्दुल कादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने फरमाया था के मेरा कदम हर वली अल्लाह की गर्दन पर है। क्योंके उस दौर में और कोई फर्द आप के हम मर्तबा नहीं था। जिसमें ये तमाम कमालात

मुजतमअे होते और इस कोल से आपकी अज़मत व तकरीम मक़सूद है क्योंके आप दरहक़ीक़त तआज़ीम व तकरीम के मुस्तहिक़ भी हैं अल्लाह तआला जिसको चाहता है सिराते मुस्तक़ीम अता फरमाता है।

बअज़ हज़रात क़दम से मुजाज़ी माअनी मुराद लेते हैं और अदब के मुतक़ाज़ी भी ये बात मालूम होती है जिसका वक़ु आम तौर पर मुमकिन है लिहाज़ा क़दम से मुराद "तरीक़ा" बयान किया है। जैसे कहा जाता है *फुलानुन अला क़दामी हमीदिन।* यानी फ़लां उम्दा तरीक़ा पर है या फ़लां बड़ा इबादत गुज़ार है या अदबे आला का हामिल है या फिर उससे तरीक़त व क़ुर्बे इलाही और मुनतहाऐ मुक़ाम है और अगर क़दम से हक़ीक़ी क़दम मुराद लिया जाए तो फिर इसके मफ़हूम का इल्म अल्लाह ही को है। ग़ालिबन हक़ीक़ी क़दम शेख़ की मुराद भी नहीं है क्योंके ये कई वजूह की बिना पर ना मुनासिब मालूम होता है।

उनमें से एक बड़ी वजह ये है के इस तरह उन इसलाफ़ का एहतराम बे माअनी सा होकर रह जाता है जिस पर असासे तरीक़त क़ायम है। जैसे के हज़रत जुनैद बग़दादी(रह॰अ॰) का क़ौल है।

दूसरी वजह ये है के ऐसे अज़ीम ज़ी इल्म आरिफ़ कामिल के कलाम को फुसाहत व बलाग़त के आला नमूने पर महमूल ना करना इन्साफ के तक़ाज़े के ख़िलाफ है लिहाज़ा ज़्यादा फसीह व दिल नशीं मफ़हूम वही है जो इब्तिदा में बयान किया गया। बाक़ी पौशीदा मफ़हूम का इल्म तो आलम-उल-ग़ैब हक़ सुबहाना व तआला को ही है।

अलमुख़्तसर क़दम के मुजाज़ी माअनी लिए जायें तो उससे मुराद आपका तरीक़ा विलायत है उस माअनी के मुताबिक़ हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के फरमाने आली

का ये मतलब होगा के आपका तरीक़ा विलायत दीगर तमाम औलियाए अव्वलीन व आख़रीन के तरीक़ों से बरतर है। क़दम के हक़ीक़ी माअनी लिए जाएँ तो उससे मुराद आपका पाए मुबारक है।

एक और माअने के मुताबिक़ क़दम से मुराद क़ुर्ब व वसले इलाही के लिहाज़ से आपका आली मर्तबा होना है। इस माअने के मुताबिक़ हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०) के फरमाने आली का ये मफ़्हूम होगा के तमाम औलियाए अव्वलीन व आख़रीन के मरातिब की जो इन्तिहा है वो आपके मरतबे की इब्तिदा है। क्योंके ज़ाहिरी बुलंदी के लिहाज़ से इंसान की गर्दन और सर उसके जिस्म का इन्तिहाई मुक़ाम है जबके उसका क़दम इब्तिदाई मुक़ाम है।

मनदर्जा बाला तीनों माअने क़दम के मफ़्हूम को शामिल हैं और तीनों ही दुरूस्त हैं।

अख़लाक़े ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰)

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) का अख़लाक़ हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के अख़लाक़े हसना का मुंह बोलता पर तो है। आपकी ज़ाते ग्रामी में ख़ुल्क़े अज़ीम के तमाम मुहासिन मौजूद थे। अल्लाह तआला ने आपको बे पनाह ख़ूबियाँ अता फरमाईं। आप बड़े आली मरतबत थे। आपका जाह व जलाल क़ाबिले रश्क था, इज़्ज़त और वुस्अते इल्म के लिहाज़ से आप बड़ी अलू शान के मालिक थे। अल्लाह तआला ने आपकी अज़मत और रफ़अत के चार सू डंके बजा दिए। आपके पास जो भी आता वो आपके अख़लाके हमीदा से मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रहता।

हज़रत शेख़ मोअम्मिर जरादह(रह॰अ॰) फरमाते हैं के मैं अपनी ज़िन्दगी में हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) से बढ़ कर कोई खुश अख़लाक़, फ़राख़ हौसला, करीमउन्नफ्स, रक़ीक़-उल-क़ल्ब, मोहब्बत और तआल्लुक़ात का पास करने वाला नहीं देखा। आप अपनी अज़मत और अल्वे मरतबत और वुस्अते इल्म के बावजूद छोटे की रियाअत फरमाते। बड़े की तोक़ीर करते। सलाम में सबक़त फरमाते। कमज़ोरों के पास उठते बैठते, ग़रीबों के साथ तवाज़ुअे और इन्किसारी के साथ पेश आते हालाँके आप कभी किसी सरबरआवर्दा या रईस के लिए तअज़ीमन खड़े नहीं हुए और किसी वज़ीर या हाकिम के दरवाज़े पर गए। (क़लायद-उल-जवाहर)

शेख़ अब्दुल्लाह जबाई(रह॰अ॰) बयान करते हैं के हज़रत ग़ौसे पाक(रह॰अ॰) ने मुझ से इर्शाद फरमाया के मेरे नज़दीक खाना खिलाना और हुस्ने अख़लाक़ अफ़ज़ल व अकमल हैं। आपने इर्शाद फरमाया के मेरे हाथ में पैसा

नहीं ठहरता। अगर सुबह को मेरे पास हज़ार दीनार आए तो शाम तक उनमें से एक पैसा भी नहीं बचे। ग़रीबों और मोहताजों में तक़सीम कर दूं और लोगों को खाना खिलाऊं। (क़लायदुलजवाहर)

शेख़ महीउद्दीद अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन हामिद-उल-बग़दादी आपके मुताल्लिक़ फ़रमाते हैं के आप ग़ैर मोहरिज़ब बात से इन्तिहाई दूर, हक़ और माअक़ल बात से बहुत क़रीब रहते। अगर अहकामे ख़ुदावंदी और हदूदे इलाही में से किसी पर दस्तदराज़ी होती तो आपको जलाल आ जाता खुद अपने मामले में कभी गुस्सा ना आता। और अल्लाह इज़्ज़ोजल के अलावा किसी चीज़ के लिए इन्तेक़ाम ना लेते। किसी साहिल को वापस ना करते। ख़्वाह बदन का कपड़ा ही क्यों ना उतार कर देना पड़े। (क़लायद-उल-जवाहर)

अलइमाम-उल-हाफ़िज़ अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन यूसुफ़-उल-बरज़ाली शिबली(रह०अ०) आपका ज़िक्र इन अलफ़ाज़ में करते हैं के आप मुसतजाब-उल-दअवात थे। अगर कोई इबरत और रक़्त की बात की जाती तो जल्दी आँखों में आँसू आ जाते। हमेशा ज़िक्र व फ़िक्र में मश्ग़ूल रहते। बड़े रक़ीक़-उल-क़ल्ब थे, शगुफ़्ता रू, करीमउन्नफ़्स, फ़राख़ दस्त, वसीअ-उल-इल्म, बुलंद अख़लाक़ और आली नसब थें। इबादात व मुजाहेदात में आपका पाया बुलंद था। (क़लायद-उल-जवाहर)

शेख़ अब्दुर्रहमान बिन शुऐब(रह०अ०) फ़रमाते हैं के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) बेहद मुनकसिरूल मिज़ाज, करीमउन्नफ़्स और वसी-उल-अख़लाक़ थे। मसाकीन और ग़ुरबा पर बेहद शफ़्क़त फ़रमाते और फ़रमाते के अमीरों की तो सब इज़्ज़त करते हैं इन ग़रीबों से कौन मोहब्बत करता है। (क़लायद-उल-जवाहर)

शेख़ मोफ़िक़उद्दीन बिन क़दामा(रह॰अ॰) का बयान है के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ज़ातेग्रामी ख़सायले हमीदा और अख़लाके हस्ना का मजमुआ था। आप जैसे औसाफ़ का शेख़ मैंने कोई नहीं देखा।

शेख़ अबु-अल-क़ासिम बज़ाज़ का बयान है के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की सोहबत में हम ने जो ज़माना गुज़ारा एक तरह से वो ख़्वाब का ज़माना था। जब हम बैदार हुए तो हज़रत शेख़ हम में मौजूद ना थे। आपके आदात पसंदीदा और औसाफ़ पाकीज़ा थे। आप शरीफ़उन्नफ़्स और फ़राख़्दस्त थे। हर रात दस्तरख़्वान बिछाने का हुक्म देते। और मेहमानों के साथ मिल बैठ कर खाना खाते। ग़रीब और कमज़ोर लोगों के साथ उठते बैठते। तालिबे इल्मों की नाज़ बरदारी करते। रूफ़्क़आ में से जो शख़्स मौजूद ना होता उसके बारे में पूछते, अहबाब की ख़ैर ख़ैरियत की तरफ ध्यान रखते। उनकी मोहब्बत का पास करते और लग़ज़िशों से दरगुज़र फरमाते। जो शख़्स आपके वास्ते क़सम खा बैठता उसकी तसदीक़ फरमाते उस बारे में अपनी मालूमात मख़्फ़ी रखते आपकी ख़िदमत में बैठने वाला हर शख़्स यही समझता के आपको मैं ही सब से ज़्यादा अज़ीज़ हूं आप से बढ़ कर साहिबे शर्म व हया मैंने नहीं देखा।

शेख़ उमर जब कभी हज़रत शेख़(रह॰अ॰) का ज़िक्र करते तो ये अश्आर पढ़ते

अलहम्दुलिल्लाही अन्नी फी जवार फतन
हामी अलहक़ीक़त नफ़्फ़ाअ व ज़र्रार

अल्लाह का शुक्र है के मैं एक ऐसे जवान की पनाह में हूं जो हक़ीक़त का हामी दोस्तों का नफ़अ रिसाल और दुश्मनों के लिए ज़रर रिसाल है।

लम यरफ़ा अलतरफ अलइन्दा मुकर्रमत

मिनल हया वलम यग़ज़िज़ अला आर

हया की वजह से शराफ़त और बुज़ुर्गी के अलावा वो किसी की तरफ़ निगाह ही नहीं उठाता और ना किसी आर पर चश्म पोशी करता है।

मुख़्तसर ये के आप ख़सायले हमीदा और औसाफ़े हसना के मुजस्समा थे। सीरत व किरदार के लिहाज़ से वक़्त के शयूख़ में कोई आपका हमपल्ला ना था। आपके हुस्ने सलूक का ये आलम था के ग़ैर मुस्लिम भी आपके गुरवीदा हो जाते थे और आपके मुहासिने अख़लाक़ को देखकर ग़ैर मुस्लिमों के दिल में इस्लाम की हक़्क़ानियत घर कर जाती थी क्योंके आप इस्लामी अख़लाक़ और इंसानी औसाफ के पेकर और अमली नमूना थे। अक्सर घर ही में रहा करते थे या दर्स व तदरीस के सिलसिले में वअज़ की जगह तशरीफ़ ले जाया करते थे। जुमअे के सिवा और किसी दिन अपने मदरसे बाहर नहीं जाते थे। जुमअे के दिन ख़च्चर पर सवार होकर जामअे मस्जिद या मुसाफिर खाने में तशरीफ़ ले जाया करते।

इसतग़ना आपके अख़लाके हसना का एक वस्फ इसतग़ना है आप दुनयवी तमअे से बाहर बिलकुल बेनियाज़ थे। आपके तवक्कल और इसतग़ना की ये केफ़ियत थी के सारी उम्र किसी बादशा अमीर या वज़ीर के पास नहीं गए। और ना कभी उनके अतियात क़बूल किए। अगर कभी आपकी मजलिस में ख़लीफ़ा की आमद होती तो क़सदन उठ खड़े होते। और अपने दौलतख़ाने के अन्दर तशरीफ ले जाते। जब ख़लीफ़ा और उसके साथी बैठ जाते तो बाहर तशरीफ़ ले जाते। ये इसलिए था के ख़लीफ़ा के लिए आपको तअज़ीमन खड़ा ना होना पड़े। जहाँ तक मुमकिन था आप दुनियादारों से इजतनाब फरमाते। जब ऐसे लोग आपकी मजलिस में आते तो आप उनको

निहायत सख़्त अलफ़ाज़ में वअज़ व नसीहत करते। और
फ़रमाते के उनके दिल का मैल बहुत सख़्त है और तुंद व
तेज़ अलफ़ाज़ की सख़्ती ही उसे खुरच सकती है।

अपने क़रीब तरीन अज़ीज़ों यानी अहलो अयाल के
बारे में भी कभी ज़्यादा मोहब्बत और रूजूअ ना फरमाते
थे। अपनी मोहब्बत और शफ़्क़त को जायज़ हद से आगे
ना बढ़ने देते थे। दुनिया के मालो मताअ से तो क़तअन
कोई दिलचस्पी ना थी मगर दुनयावी नेअमतों से जो
अल्लाह तआला की ताफ से उन्हें मरहमत की गई थीं
इसतेफादा करने से भी गुरेज़ ना फरमाया।

जब आपके हाँ कोई बच्चा पैदा होता आप उसे अपने
हाथ में लेकर फरमाते के ये मईय्यत है। जब कोई बच्चा
मर जाता तो आप पर कुछ असर ना होता क्योंके उसके
पैदा होते ही उसकी मोहब्बत अपने दिल से निकाल देते थे।
कमाले इसतग़ना ये था के वअज़ अवक़ात मजलिसे वअज़
के दौरान में आपके लड़कों और लड़कियों की वफ़ात की
ख़बर आती तो आप *इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजीऊन*
पढ़ कर ख़ामोश हो जाते और फिर अपना वअज़ जारी
रखते। जब मईय्यत को गुस्ल देकर मजलिस में लाया जाता
तो आप मिंबर से उतर कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते।

खिलाफ़े शरअे काम करने वालों से आप बेज़ारी का
इज़हार फरमाया करते थे। और किसी ग़रीब पर किसी
अमीर को कभी तरजीह ना दिया करते थे। हर मामले में
अदलो इन्साफ और हक़ सदाक़त का पूरा पूरा पास करते।
आप फरमाया करते थे के अल्लाह तआला को मालो
दौलत नहीं बल्के तक़वा और नेक आमाल अज़ीज़ हैं।

आप अपने हल्क़ा बगोशों का बड़ा ख़याल रखते थे।
मजलिस में ये देखा करते थे के कौन कौन नहीं आया।
जो ना आता उसके बारे में दरयाफ़्त फरमाते अगर पता

चलता के वो बीमार है तो उसकी बीमार पुरसी को तशरीफ़ ले जाते या उसके घर आदमी भेज कर ख़ैरियत दरयाफ़्त करते।

दरया दिली हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) अल्लाह की राह में ख़र्च करने में बड़े दरया दिल थे। अगर किसी ज़रूरतमंद को देखते तो जो कुछ मयस्सर आता उसे इनायत कर देते उसके बारे में हज़रत अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन ख़िज़्र हुसैनी(रह॰अ॰) से रिवायत है के एक मर्तबा हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की नज़र एक परेशान हाल व कबीदा ख़ातिर फ़क़ीर के ऊपर पड़ी। एक इंसान को इस आलम में देख कर आपका दिल तड़प उठा और बिला ताख़ीर दरयाफ़्त किया *माशानुका?* (तुम्हारा क्या हाल है) इज़हारे मजबूरी के साथ फ़क़ीर ने जवाब दिया के मुझे दरया के उस पार जाने की हाजत है लेकिन पैसे ना होने के बअस बसयार आजज़ी के बावजूद मल्लाह ने अपनी कश्ती पर बिठलाने से इंकार कर दिया जिससे मेरा दिल टूट गया है। अगर मेरे पास भी कुछ होता तो आज ये महरूमी मुझे क्योंकर होती!

हुस्ने इत्तिफ़ाक़ के सरकार ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के पास भी उस वक़्त कुछ ना था मगर उसकी परेशानी आप से बर्दाश्त ना हो सकी और खुदाए क़ादीर व क़दीर की बारगाह में दस्त बदुआ हुए। मअन एक शख़्स ने आकर आपकी ख़िदमत में अशरफ़ियों से भरी हुई थेली पेश की आप बहुत खुश हुए और फ़ौरन उस फ़क़ीर को बुला कर फ़रमाया के लो ये थेली ले जा कर मल्लाह को दे दो और कह देना के अब कभी भी किसी फ़क़ीर और नादार को कश्ती में बिठलाने से इंकार मत करना।

शेख़ अबु-अल-अब्बास अहमद बिन

इसमाईल-अल-मअरूफ़ इब्ने तिबाल का बयान है के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) के पास जिस वक़्त कोई शख़्स सोना लाता तो आप उसे हाथ ना लगाते और लाने वाले से फरमाते के इसे मुसल्ले के नीचे रख दो। जब ख़ादिम आता इसे हुक्म देते के मुसल्ले के नीचे जो कुछ पड़ा है उसे उठा लो और तबाख़ी और सब्ज़ी फ़रोश को दे आओ। आपका गुलाम मुज़फ़्फ़र रोटियों का थाल लेकर हज़रत शेख़ के दरवाज़े पर खड़ा रहता जब कभी ख़लीफ़ा की तरफ से ख़ुलअत भिजवाई जाती तो फरमाते के ये आटे वाले अबु-अल-फतह को दे दो (वाज़ेह रहे के हज़रत शेख़, उल्मा और दूसरे मेहमानों के लिए आटा इसी अबु-अल-फतह से बतौर क़र्ज़ मंगवाया करते थे।

ख़ास आपकी ख़ूराक उस गेहूँ से तैयार की जाती जो आपके बअज़ रूफ़्क़अ हर साल आपकी ख़ातिर काश्तकारी करके रिज़्के़ हलाल के तौर पर मोहय्या करते आपके असहाब में से कुछ लोग इसे पीसते और हर रोज़ चार पाँच रोटियाँ पकाई जातीं जो दिन के आख़री हिस्से में हज़रत के पास लाई जातीं। आप उनमें से हाज़िरीन मे एक एक टुकड़ा तक़सीम फरमाते और बाक़ी अपने लिए रख छोड़ते। अगर आपकी खिदमत में कोई हदया पेश किया जाता तो उसे तमाम हाज़रीन में तक़सीम फरमा देते। आप हदया क़बूल फरमाते और खुद भी हदया देते। जो चीज़ बतौर नज़र पेश की जाती उसे क़बूल फरमाते और इसतेमाल में लाते।

शेख़ अबु-अल-ख़ैर बशीर बिन मेहफ़ूज़ का बयान है के एक दफा में शेख़ अबु सऊद हरीमी, शेख़ मोहम्मद बिन फायद, शेख़ अबु-अल-क़ासिम उमर बिन मसऊद बज़ाज़, शेख़ अबु मोहम्मद हसन फारसी, शेख़ जमील

साहब ख़तवा, शेख़ अबु हफ़्स उमर अज़ाल, शेख़ ख़लील बिन शेख़ अहमद सरसरी, शेख़ अबु-अल-बर्कात ईसा बिन ग़नायम बताएही हमामी, शेख़ अबु-अल-फतह नस्र बिन अबु-अल-फरह बग़दादी, अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन वज़ीर अबु-अल-मुज़फ़्फ़र बिन हबीरा, अबु-अल-फतूह अब्दुल्लाह बिन हब्तुल्लाह और अबु-अल-क़ासिम अली बिन मोहम्मद, हज़रत सय्यदी शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) की ख़िदमत में उनके मदरसे में हाज़िर थे। आपने फरमाया तुम में से जो शख़्स इस वक़्त जो भी हाजत तलब करे मैं उसे अता करूंगा और उसकी वो हाजत पूरी करूंगा। शेख़ अबु-अल-सऊद(रह०अ०) बोले के मैं तर्के इख़्तियार चाहता हूँ, शेख़ मोहम्मद बिन फायद(रह०अ०) ने कहा के मैं मुजाहेदे पर क़ुव्वत चाहता हूँ। शेख़ उमर बज़ाज़(रह०अ०) ने अर्ज़ की के मैं ख़ौफे इलाही की दरख़्वास्त करता हूँ। शेख़ हसन फारसी(रह०अ०) ने गुज़ारिश की के ताल्लुक़ बिल्लाह में मुझे जो केफियत हासिल है उसमें इज़ाफा चाहता हूं। शेख़ जमील बोले मैं हिफ़्ज़े वक़्त की दौलत माँगता हूं शेख़ उमर अज़ाल ने कहा के मुझे इल्म में ज़्यादती की नेअमत मिले। शेख़ ख़लील सरसरी(रह०अ०) ने अर्ज़ किया मैं उस वक़्त तक ना मरूं जब तक क़ुतबियत के मुक़ाम पर फायज़ ना हो जाऊं। शेख़ अबु-अल-बर्कात हमामी ने कहा के मैं मोहब्बते इलाही में इसतग़राक़ चाहता हूं। शेख़ अबु-अल-फ़तूह बोले मैं क़ुरआन और हदीस के हिफ़्ज़ का ख़्वाहिशमंद हूँ। रावी (अबु-अल-ख़ैर) कहते हैं के मैंने अर्ज़ की, के मुझे ऐसी मअरफ़ते इलाही नसीब हो जिससे मैं वारदाते रब्बानिया और उसके ग़ैर में फर्क कर लूं। अबु उबैदउल्लाह बिन हबीरा ने कहा के मैं विज़ारत की नियाबत चाहता हूँ। शेख़ अबु-अल-फ़तूह

बिन हब्बुल्लाह ने कहा के मैं मुन्तज़िम दौलतख़ाना बनना चाहता हूँ। अबु-अल-क़ासिम बिन साहब बोले के मैं बावे अज़ीज़ का दरबान बनना चाहता हूँ।

हज़रत शेख़(रह॰अ॰) ने फरमाया :

"कुल्लन्न नुमिद्दू होलाई व होलाई मिन अताअई रब्बिका वमा काना अताऊ रब्बिका महज़ूरा।" (बनी इस्राईल)

(आपके रब की इस अता में से तो हम इनकी भी इम्दाद करते हैं और उनकी भी। और आप के रब की ये अता किसी पर बन्द नहीं)

शेख़ अबु-अल-ख़ैर का बयान है के अल्लाह की क़सम! जिस शख़्स ने जो चीज़ भी तलब की थी वो उसे मिल कर रही। सिवाए शेख़ सरसरी के, इसलिए के अभी उनकी क़ुतबियत का वादा नहीं आया था।

ग़रीब परवरी ग़रीबों और मिस्कीनों के लिए आप मुजस्सिम रहमत थे उन लोगों से आप बेहद मोहब्बत करते उन्हें अपने साथ बैठाते, खाना खिलाते और उनकी जो भी ख़िदमत बन आती, करते, फरमाते थे अल्लाह माल व दौलत को प्यार नहीं करता बल्के उसे तक़वा और आमले सालेहा मेहबूब हैं बे शुमार ग़ुरबअ व मसाकीन आपकी तवज्जह और फ़ैज़े सोहबत से विलायत के दर्जे पर पहुँचे या जईय्यद आलिम बन गए और दुनियादार अमराअ ने उनके क़दम छूए। जब आप घर से निकलते या जुमअे के दिन जामअे मस्जिद को तशरीफ़ ले जाते तो लोगों के हुजूम सड़कों पर जमा हो जाते, उनमें ग़ुरबअ मसाकीन, अग़नियाअ हर क़िस्म के लोग होते थे। कई ख़स्ता हाल लोग आपको रास्ते में रोक लेते और दुआ कराते। आप निहायत ख़ुन्दा पेशानी से उनकी इसतदआ क़बूल फरमा कर ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से दुआ माँगते। और अपने रोके जाने

का बुरा ना मानते।

अबु सालेह नस्र अपने वालिद शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ (इब्ने शेख़ सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰)) की ज़बानी बायान करते हैं के लोगों में शौहरत और मक़्बूलियत के बाद मेरे वालिदग्रामी ने सिर्फ एक हज किया। इस सफर में आते जाते हुज़ूर की सवारी की मुहार मेरे हाथ में थी। वापसी पर जब हम हल्ला में पहुँचे तो हज़रत शेख़ ने फरमाया के इस जगह का सब से ग़रीब और मिस्कीन घराना तलाश करो। हम ने एक वीरान घर देखा जो बालों के खैमे पर मुश्तमिल था। इसमें एक ज़ईफ-उल-उम्र शख़्स और उसकी बूढ़ी बीवी और एक लड़की क़याम पज़ीर थे। हज़रत शेख़ ने उस ज़ईफ-उल-उम्र शख़्स से उसके घर में उतरने की इजाज़त तलब की जो उसने बखुशी दे दी।

चुनाँचे हज़रत शेख़ और आपके रूफ़्क़अ उस वीराने में उतर पड़े, इनते में शहर हल्ला के मशायख़, रूऊसा और अकाबरीन आपकी ख़िदमत में हाज़िर होने लगे उनका इसरार था के हज़रत शख़ उनके हाँ फरोकश हों या कम अज़ कम यहाँ ना रहें मगर आपने सबको इंकार फरमाया। लोगों ने गाय बकरियाँ, मुख़्तलिफ़ खाने, सोने और चाँदी के अंबार आप के सामने लगा दिये और सफर के लिए सवारियाँ तैयार कर लीं। चारों तरफ से लोग आप की ख़िदमत में हाज़री देने के लिए परवाना वार आने लगे। हज़रत शेख़ ने अपने रूफ़्क़अ से फरमाया के जो मालो असबाब यहाँ मौजूद है उसमें से अपना हिस्सा मैं इस घराने के लिए वक़्फ कर चुका हूँ। रूफ़्क़अ ने अर्ज़ किया के हम ने भी अपने अपने हिस्से राहे खुदा में उन लोगों को दे दिए हैं। चुनाँचे वो तमाम मालो असबाब आपने उस ज़ईफ-उल-उम्र और उसकी बच्ची के हवाले कर दिया। रात वहाँ गुज़ार कर सहरी के वक़्त वहाँ से कूच फरमाया।

रावी का बयान है के कई बरस बाद में हल्ला से गुज़रा तो मैंने देखा के वही ज़ईफ़-उल-उम्र शख़्स बस्ती में सब से ज़्यादा मालदार है। पूछने पर उसने बताया के ये सब कुछ हज़रत शेख़ की उसी एक रात की बर्कत है। वही माल व मवेशी बढ़ कर ये सूरत इख़्तियार कर गए हैं।

ग़र्ज़ ये के ग़रीबों और मिस्कीनों में बैठ कर आपको बे पनाह मुसर्रत होती और फरमाते के अमीरों की हम नशीनी की आरज़ू तो हर शख़्स करता है, उन ग़रीबों की मोहब्बत किसे नसीब होती है। आप हर मामले में ग़रबों को अमीरों पर तरजीह देते थे। ये कभी नहीं हुआ के आप ने किसी ग़रीब आदमी को नज़रअंदाज़ कर के मतमूल शख़्स की तरफ तवज्जह की हो।

ईसार हज़रत सय्यद ग़ौसे आज़म(रह०अ०) का जज़्बाए ईसार बे मिस्ल है क्योंके आपने हमेशा दूसरों के मुफाद को अपनी ज़रूरियात पर तरजीह देते हुए उनकी मदद की। एक रोज़ का ज़िक्र है के आप कई वक़्त से फाक़े से थे और कहीं जा रहे थे के असनाए राह में भूक लगने के सबब सर चकराने लगा। मजबूरन लड़खड़ाते हुए क़रीब की मस्जिद में पहुँच कर एक गोशे में लेट गए। नागाह एक अजमी नोजवान कुछ रोटियाँ और भुना हुआ गोश्त लेकर मस्जिद में दाख़िल हुआ और आपके पास बैठ गया। खाने से पहले उसने आपको आवाज़ दी और इसरार पैहम से अपने साथ बैठा लिया। दौराने तआम में गुफ़्तगू के ज़रिये ये बात वाज़ेह हो गई के आप जीलानी तालिबे इल्म हैं, तो अजमी ने दरयाफ़्त किया के आप अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) को भी जानते हैं? फिर जब उसे मालूम हुआ के अब्दुल क़ादिर यही हैं तो खाते खाते आबदीदा हो गया और कहने लगा के मैं कई दिन से आपकी तलाश में सरगर्दां हूँ और ज़ादे राह ख़त्म हो जाने के बाअस तीन

दिन फ़ाके से गुज़ारने के बाद आज आपकी वालिदा के भेजे हुए आठ दीनारों में से ये खाना लाया हूं। अब आप मेरी तरफ से नहीं बल्के मैं आपकी जानिब से खा रहा हूं। लिल्लाह आप मुझे इस ख़्यानत के लिए माफ फरमा दें। आपका दरयाऐ करम तो हमा वक़्त मोजज़न रहा करता था। सरकार ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने फरमाया के नादिम व पशेमान होने की क्या ज़रूरत है। माल तो खुदाए क़दीर का है। हम और तुम दोनों ही उसके बन्दे हैं। तुम्हें हाजत थी अगर खर्च कर लिए तो उसमें बुराई क्या है। फिर आपने ना सिर्फ ये के उसकी खूब अच्छी तरह ख़ातिर व तवाज़ुओ की बल्के उन आठ दीनारों में से चन्द दीनार भी अता फरमा दिए। यहाँ तक के उन आठ दीनारों में से तीसरे ही दिन, जो साल डेढ़ साल तक आपके इख़्राजात के लिए काफी थे, एक भी ना बचा, जो भी ग़रीब नज़र आया उसे दे दिया।

सख़ावत और फय्याज़ी हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) सख़ावत और फय्याज़ी में अपनी नज़ीर आप थे। सख़ावत का ये आलम था के जो कुछ पास होता उसी वक़्त इनायत कर देते। अपनी ज़रूरत पर दूसरों की ज़रूरत को हमेशा मुक़द्दम रखते थे आप बहुत बड़े सख़ी, आला तरीन सेर चश्म, बेलाग फय्याज़ थे आपकी बख़्शिश व अता की कोई इन्तिहा ना थी, क.ोड़ों रूपे दस्त मुबारक से तक़सीम फरमा दिए।

वैसे तो आप फराख़ी व तंगी हर हाल में ख़र्च करने के आदी थे और बे दरीग़ राहे खुदा में खर्च किया करते थे लेकिन बफज़्ले इलाही जब वो वक़्त आया के आपकी खिदमत में लोगों की जानिब से नज़रो फतूहात की आमद शुरू हुई फिर तो कोई हसरो शुमार ही नहीं था। हज़ारों लाखों रूपे नज़राने में योमिया आते थे मगर अल्लाह रे

आपकी फय्याज़ी और दरया दिली के सारी की सारी रक़म उसी दिन राहे खुदा में बाँट देते थे। बड़ी से बड़ी रक़में नज़राने में आती थीं। बिलकुल मामूली दर्जे पर कम से कम पन्द्रह बीस हज़ार रूपया योमिया आमदनी थी मगर हाथ में आया नहीं के ग़रीबों, मिस्कीनों और मोहताजों के पास पहुँच गया। रोज़ाना दिन की आमदनी दिन के उजाले ही में तक़सीम हो जाती थी।

सख़ावत और फय्याज़ी का एक दरया था जो हर वक़्त मोजें मार रहा था। एक दुनिया आसताना ग़ोसियत माअब से फेज़याब हो रही थी। हर चहार जानिब आपकी बख़्शिश व अता की धूम मची थी। दूर दूर से लोग सुन कर आते और दीनी व दुनयवी हर मुराद से शाद काम होकर लौटते थे। दुनिया व आख़िरत की ज़ाहिरी व बातिनी हर दौलत यहाँ तक़सीम हो रही थी। किसी सवाली का आपने महरूम वापस नहीं किया और दिया भी तो फय्याज़ी के साथ इतना दिया के दामने मुराद भर गया बल्के तंगीए दामाँ की शिकायत हो गई। माँगने वाले ने जो कुछ भी माँगा उसे मिला। हमेशा आपकी नज़र सवाल पर जाती सवाली पर ना जाती थी। मुसतहिक़ व ग़ैर मुसतहिक़ की तमीज़ किए बग़ैर सवाल हुआ नहीं के दस्ते सखा अपना काम कर गया। अक्सरो बेश्तर तलब से पहले ही अ़ता फरमा देते थे। सवाल रद करना आपकी फित्रत के खिलाफ था।

एक दिन एक फक़ीर काफी देर तक हज़रत की खिदमत में हाज़िर रहा और अर्ज़ की के सय्यदी। पहले तो यहाँ रोज़ाना दरयाए सख़ावत ठाठें मारा करता था लेकिन आज बिलकुल सकून है और दरयाए सख़ावत थमा हुआ मालूम होता है उस वक़्त एक सौ चालीस गुमराह और बदकार लोग मजलिस में मौजूद थे आपने उन सबको अपने दोनों जानिब खड़ा कर लिया और फिर उन पर

अपनी तवज्जह डाली एक ही नज़र में सब के दिल की दुनिया बदल गई। और सब मर्तबा विलायत पर फायज़ हो गए। आपने फरमाया जा आज की सख़ावत यही है।

हक़ गोई हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) में हक़ गोई का अख़लाक़ी वस्फ़ बहुत नुमायाँ था आपकी हक़ गोई और बे बाकी ने उस दौर के सलातीन व अमराअ को बड़ी हैरत में डाल रखा था। खरी और सच्ची बात कहने में आप किसी बड़ी से बड़ी शख़्सीयत का लिहाज़ नहीं करते थे और इस बारह में किसी मसलेहत या ख़ौफ को पास तक नहीं फटकने देते थे। कोई तबक़ा ऐसा ना था जो आप के दायराऐ इस्लाह से बाहर हो।

आप मअरूफ का हुक्म देते और मुनकिर से रोकते थे। ख़ुलफाअ को, वज़ीरों को, क़ाज़ियों को, अवाम को और सबको अमर बिलमअरूफ और नहीअनिलमुनकर का ये काम बड़ी सफ़ाई से भरे मजमअे में और बरसरे मिंबर होता था। जो ख़लीफा किसी ज़ालिम को हाकिम बनाता आप उस पर नकीर करते। और अल्लाह के मामले में किसी मलामत करने वाले की मलामत आपको हक़ के इज़हार से ना रोकती थी।

शरीफ अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन ख़िज़्र बिन अब्दुल्लाह हुसैनी मोसली(रह०अ०) का बयान है के मेरे वालिद कहते थे के मैंने तेरह साल हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) की खिदमत की। इस दौरान मैंने नहीं देखा के कभी उन्होंने कोई ना शाईस्ता काम किया हो। मुत्तबअे सुन्नत होने की वजह से तबीयत में नफ़ासत रहती। रावी का कहना है के उस अर्से में ना तो आप किसी बड़े आदमी के लिए कभी खड़े हुए और ना किसी हाकिम के दरवाज़े पर गए ना कभी किसी हाकिम के बिछोने पर बैठे

और ना ही उसके दस्तरख़्वान से भी कुछ खाया (सिवाए एक मौक़े के) आप बादशाहों और उनके दरबारियों के पास जाने को किनह समझते थे अगर किसी बादशाह या वज़ीर ऐसे मोअज़्ज़िज़ लोग आपकी खिदमत में हाज़री देते तो आप उनके आने से पहले उठ कर घर तशरीफ ले जाते ताके उनके लिए उठना ना पड़े वो जब आकर बैठ जाते तो हज़रत शेख़ वापस तशरीफ लाते। आप उनसे सख़्त और दुरूश्त लहजे में गुफ्तगू फरमाते और उन्हें वअज़ व नसीहत में इन्तिहाई मुबालग़ा फरमाते। वो लोग आपके हाथ चूमते और आपके सामने मोअद्दिब होकर आजज़ी से बैठते। अगर कभी ख़लीफ़ाऐ वक़्त को ख़त लिखने की नोबत आती तो उसे यूं तहरीर फरमाते :

"अब्दुल क़ादिर तुझे फलाँ काम का हुक्म देता है और उसका हुक्म तुझ पर नाफ़िज़ है, वो तेरा पेशवा और तुझ पर हुज्जत है।"

ख़लीफ़ा के पास जब ये ख़त पहुँचता तो वो इसे बोसा देकर कहता के बिला शुबह हज़रत शेख़ ने सच फरमाया।

ग़र्ज़ ये के किसी हाल में भी आप सच्चाई का दामन ना छोड़ते थे ख़्वाह आपकी जान ख़तरे में पड़ जाती मगर आप हक़ बात कहने से कभी नहीं चूकते थे यहाँ तक के ख़लीफा और जाबिर हाकिमों के सामने भी सच्ची बात ही कहते थे ख़्वाह उन्हें कड़वी लगती। बड़े से बड़े आदमी से कभी मरऊब ना होते थे और ना दूसरे दुनियादार उल्मा की तरह उनका पास ख़ातिर करते थे। जो बात कहनी होती मिंबर पर खड़े होकर बरसरे आम बयान कर देते।

एक मर्तबा ख़लीफ़ा-अल-मुक़्तज़ा लामिरबिल्लाह ने एक ज़ालिम शख़्स याहिया बिन सईद को बग़दाद का क़ाज़ी मुक़र्रर कर दिया। लोग उसके ज़ुल्मो सितम से खूब वाक़िफ थे और उसका तक़र्रूर पसंद ना करते थे मगर

ख़लीफा के सामने एत्राज़ करने की किसी को जुर्रअत ना थी। ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) को जब इल्म हुआ तो आपने मिंबर पर चढ़ कर ख़लीफा से अललएलान कह दिया (ख़लीफा मजलिस में मौजूद था) के तुम ने एक ज़ालिम शख़्स को क़ज़ा के ओहदे पर मामूर कर दिया है। कल अपने ख़ुदा को जो अपनी मख़्लूक़ पर बेहद मेहरबान है क्या जवाब दोगे? ये सुन कर ख़लीफ़ा पर हैबत तारी हो गई और लरज़ने लगा। उसकी आँखों से आँसू निकल आए (यानी अपने फअेल पर नादिम होने के बाअस) और उसी वक़्त याहिया बिन सईद की माअज़ूली का हुक्म जारी कर दिया।

अफ़्व और दरगुज़र हजरत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) अफ़्व का पेकरे जमील थे अगर किसी से ज़ियादती हो जाती तो आप दरगुज़र फरमाते जिस ज़माने में आप मदरसे निज़ामिया पढ़ाते थे उस दौर में खसूसी तौर पर आप ने तलबा की ग़लतियों और कोताहियों से दरगुज़र फरमाया। किसी पर ज़ुल्म होता देखते तो आपको जलाल आ जाता लेकिन खुद अपने मामले में कभी गुस्सा ना आता। अगर ब-तक़ाज़ाऐ बशरी आ भी जाता तो "ख़ुदा तुम पर रहम फरमाए" से ज़्यादा कुछ ना कहते। अगर कोई शख़्स किसी मामले में क़सम खा बैठता तो आप मान लेते ख़्वाह हक़ीक़ते हाल कुछ ही क्यों ना होती। दूसरों के अयूब की तशहीर आपको सख़्त नापसंद थी। ताल्लुक़ात का बेहद लिहाज़ और पास फरमाते थे। तलबा की बातों को बर्दाश्त करते और उनके उकता देने वाले सवालात का निहायत तहम्मुल से जवाब देते। छोटों की रिआयत फरमाते और बड़ों की तौक़ीर करते। सलाम में हमेशा सब्क़त फरमाने की कोशिश करते। आप फरमाया करते थे अगर बुराई का बदला बुराई से दिया जाए तो ये दुनिया ख़ूंख़्वार

दरिंदों का घर बन जाए।

बयान किया जाता है के सरकार ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के रहमो करम का दरयाऐ बेकरां हर आन मोजज़न था। रहमतो राफ़्त के चश्मे हर लम्हा जारी रहते थे। इत्तिफाकन कभी आपको गुस्सा आ जाता और हालते जलाल में ज़बान पर कोई सख़्त बात आ जाती जिस से किसी की दिल शिकनी होती तो फ़ी-अल-फोर आपका दिल रहमोकरम भरे जज़्बात से लबरेज़ हो जाता और उसे कबीदा ख़ातिर देख कर आप बेक़रार हो जाते।

अजज़ो इन्किसारी हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की तबीयत में आजज़ी और इन्किसारी के औसाफ भी कमाल हद तक मौजूद थे। आप बड़े मुनकसिरूलमिज़ाज बुज़ुर्ग थे। आपकी आजज़ी का ये आलम था के विलायत और बुज़ुर्गी के बुलंद मर्तबे पर फायज़ होते हुए भी अपने छोटे बड़े काम खुद ही अंजाम दे लेते खुद बाज़ार से जाकर सोदा ख़रीदते, घर अगर कभी आपकी बीवियों में से किसी की तबीयत ख़राब हो जाती तो खुद घर के सारे काम दस्ते मुबारक से कर लेते थे खुद ही आटा गूंध कर रोटियां पका लेते थे। बच्चों को बिठला कर खिला भी देते थे अक्सर कुँए से पानी खींच कर कंधे के ऊपर घर ले आते थे। बिला अक्राह घर में झाडू भी लगा लिया करते थे। ग़र्ज़ किसी काम से आपको आर ना था।

आम मालूमाते ज़िन्दगी में आप के अज्ज़ो इन्किसार का ये आलम था के कोई बच्चा भी आप से मुख़ातिब होकर बात करता तो आप हमा तन गोश हो जाते। मफ़्लूकुलहाल लोगों को गले लगा लेते फुक़रअ के कपड़े साफ करते और उनकी जूएँ निकालते।

एक दफा एक गली में चन्द बच्चे खेल रहे थे। आप

का गुज़र उधर से हुआ। एक बच्चे ने आपको रोक लिया और कहा मेरे लिए एक पैसे की मिठाई बाज़ार से खरीद लाईए। आपकी जबींने मुबारक पर शिकन तक ना आई और फौरन बाज़ार जाकर एक पैसे की मिठाई लाकर उस बच्चे को दी। इस तरह कई और बच्चों ने आप से मिठाई लाने को कहा और आपने हर एक की ख़्वाहिश पूरी की। आपका ये अज्ज़ो इन्किसार बच्चों, आम लोगों और ग़रबा व मसाकीन के लिए मख़्सूस था। सलातीन, अमराअ और वूज़राअ के लिए आप एक मुजस्सिमाऐ हैबत थे। उनके सामने अज्ज़ो इन्किसार आपके मसलक के यक्सर ख़िलाफ था।

आपका ये तर्ज़े ज़िन्दगी कुछ घर ही तक मोकूफ ना था बल्के जहाँ कहीं भी आप तशरीफ़ ले जाते या हालते सफर में होते और किसी मंज़िल पर पहुँच कर क़याम फरमाते तो वहाँ पर भी आपका यही अन्दाज़ हुआ करता था यानी अपना तमाम काम अपने ही हाथों से किया करते थे। आटा गूंधते, रोटियाँ पकाते और दूसरों को भी खिलाते थे। सफर की हालत में इस क़िस्म के कामों में जब आप मशग़ूल होते तो ख़ुद्दामइक्राम कमाल अदब के साथ उन मशग़ूलियतों से अपने आपको अलहेदा रखने के कई तरीके इख़्तियार करते थे। ताहम ख़ुद्दाम की कोशिशें और तदाबीर उस वक़्त बेकार साबित हो जाती थीं जब आप ये फरमा देते थे के मैं भी तुम्ही जैसा एक इंसान हूँ। तुम रोटियाँ पकाते हो तो मैं क्योंकर ना पकाऊँ।

सरकारे दो जहाँ सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम और मुक़द्दस सहाबाइक्राम रिज़्वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन का यही तर्ज़े अमल था। पैग़म्बरे इस्लाम(स०अ०स०) मदीना तय्यबा में होते तो अपना काम ख़ुद करते थे। सफर में होते तो तक़सीम कार ख़ुद फरमा देते थे और

सहाबाइक्राम(र०अ०) की तरह कोई ना कोई काम अपने लिये भी मख़्सूस फरमा लेते थे। जब इतनी अज़ीम शख़्सीयत के मालिक होते हुए अल्लाह के रसूल(स०अ०स०) और लायक़ सद एहत्राम सहाबा(र०अ०) उन कामों को अपने हाथों से किया करते थे तो मेरी क्या मजाल है के मैं एहत्राज़ करूं और दूसरों के ही सर डाल दूं। ज़िन्दगी के हर माहोल में पैग़म्बरे इस्लाम ही की इत्तिबाऐ निजात का ज़रिया है।

एक दफ़ा खच्चर पर सवार होकर आप कहीं जा रहे थे। रास्ते में कुछ फ़ुक़राअ खाना खा रहे थे। उन्होंने आपको खाने में शिर्कत की दअवत दी। आप खच्चर से उतर पड़े और उनके साथ खाना खाया। और फरमाया। "अल्लाह को तकब्बुर ना पसंद है।"

सब्रो साबित क़दमी हज़रत सय्यद ग़ौसे आज़म (रह०अ०) को अवायले उम्र ही से बड़े ना मसायद हालात से वास्ता पड़ा। ज़िन्दगी भर बेपनाह मुसीबतें और दुश्वारियाँ बर्दाशत कीं। उम्र का बेश्तर हिस्सा फ़ाक़ह मस्ती में गुज़रा मगर आपने मसायब व तकालीफ, फ़िक्र व फ़ाक़ह तंगदस्ती व नादारी के जिस माहोल में रह कर कमाल हासिल किया उसकी नज़ीर बहुत कम मिलती है। सरकार ग़ौसे आज़म(रह०अ०) बहुत ज़हीन, बड़े महेन्ती, बेहद मुतहमिल व साबिर बेख़ौफ़ व मुसतकिल मिज़ाज इंसान थे। तकमीले उलूम ज़ाहिरी व बातिनी की अपने अन्दर का कामिल ज़ोक़ रखते थे।

परवरदिगारे आलम अपने इन बन्दों की मदद फरमाता है जो खुद अपनी मदद करते हैं आप ने भी अपनी मदद की हुसूले कामयाबी के लिए अज़्मे मुहक्कम फरमा लिया तो खुदाऐ क़दीर ने आपके अज़्म व इरादे को कामयाब बना दिया। आप ने इब्तिदाई दौर में हिम्मत व साबित

क़दमी से काम लिया तो आप जो कुछ होना चाहते थे उससे भी सवा हो के रहे।

शेख़ हम्माद(रह०अ०) ने आपके अन्दर महेज़ पुख़्तगी पैदा करने की ग़र्ज़ से आपको ज़दोकूब किया। सख़्तियां भी कीं। हद ये के सर्दी के मौसम में हमराह जाते हुए पुल पर से दरया में धकेल दिया। मगर झट आप दरया से निकल कर फिर उनके हमराह हो गए।

कभी कभी शेख़ हम्माद(रह०अ०) आपसे इर्शाद फरमाते थे के आज मेरे पास बहुत काफी खाना आया था। मैंने खुद खाया दूसरों को तक़सीम लेकिन तुम्हारे लिए कुछ ना रखा। हज़रत शेख़ हम्माद(रह०अ०) का ये इर्शाद सुन कर भी कभी आप बददिल ना हुए, दामने सब्र हाथ से नहीं छोड़ा।

शेख़ हम्माद(रह०अ०) ये तर्ज़े अमल देखकर मजलिस के दीगर हज़रात को भी ईज़ा पहुँचाने की जुराअत होने लगी। लेकिन किसी क़िस्म की तकलीफ़ से आप कभी भी दिलबर्दाशता ना हुए। एक मर्तबा मजलिसे हम्मादिये के एक बुज़ुर्ग ने सरकार ग़ौसे आज़म(रह०अ०) को किसी किस्म की कोई तकलीफ़ पहुँचाई। हस्बे माअमूल आपने सब्र से काम लिया मगर शुदह शुदह शेख़ हम्माद को इसकी ख़बर पहुँच गई। उन्होंने उन बुज़ुर्ग को सख़्त तनबीह की और फरमाया बेअदब गुस्ताख़! तुम शेख़ अब्दुल क़ादिर को क्यों अज़यत पहुँचाते हो। तुम में से कोई भी तो उनकी गर्दे राह को नहीं छू सकता। फिर सरकारे ग़ौसे आज़म(रह०अ०) को बुला कर हज़रत शेख़ हम्माद ने फरमाया:

"अब्दुल क़ादिर! अब तक मैंने जो कुछ तुम्हारे साथ किया वो सिर्फ पुख़्तगी और तरबीयत के लिए था और तुम्हारे पुख़्तगी व इसतेक़ामत पहाड़ की मानिंद हो गई है

ख़ुदावंदे कुद्दूस तुम्हें बेपनाह इज़्ज़त देगा।"

पच्चीस साल तक एक हालत और नोंइय्यत से मुजाहेदे करते रहना शब व रोज़ इन्तिहाई अज़यतें, तकलीफें और सख़्तियां बर्दाश्त करना। पूरे पन्द्रह साले तक हर रात दो रकअतों में पूरा कुरआने अज़ीम पढ़ना, बेसरो सामानी के आलम में रहना। घास और पत्तों पर गुज़र अवक़ात करना। मुकम्मल अहेद जवानी को रियाज़ियात व मुजाहेदात व हुसूले इल्म की जद्दोजहेद में गुज़ार देना इंसानी सब्रो इसतक़लाल का बहुत ज़बरदस्त और अज़ीमुश्शान मुज़ाहेरा है।

अहेद तालिब इल्मी के बाद को तो सकरो जज़्ब के ज़माने से भी ताअबीर किया जा सकता है मगर तालिबे इल्मी का ज़माना तो ख़ालिस होशो ख़ुर्द का दौर था। अभी आप पढ़ ही चुके हैं के इस ज़माने में आपकी क्या हालत थी।

ऐन शबाब का आलम का था लेकिन इस दौर को भी आप ने उस तौर से गुज़ारा के अगर ये कहा जाए तो क़तई मुबालेग़ा ना होगा के दुनिया के किसी भी तालिबे इल्म ने इस तरह ये दौर ना गुज़ारा होगा। सारा सारा दिन मदारिस में अक्रेज़ी, मेहनतो दिमाग़ सोज़ी करना। पूरी पूरी रात बेदारी के साथ ख़ुराबात व खण्डरात और वीरानों में पड़े रहना ना बिस्तर ना तकिया, ना बदन पर पूरा कपड़ा, ना सोने की जगह ना खाने ठिकाना, महीने भर में एक दिन शिकम सेर हैं। घर से आए हुए दीनार फ़क़ीरों हाजतमंदों को तक़सीम कर दिए हैं और फिर उनत्तीस दिन फाक़ेकशी में गुज़ार रहे हैं। फाक़े भी ऐसे वेसे नहीं बल्के यूं के तीन दिन कुछ भी मयस्सर ना हुआ ना साग मिले ना पत्ते। लेकिन माअमूलात में कोई फ़र्क़ नहीं आया। दिन भर इसी तरह हुसूले इल्म की जुसतुजू और रात भर रियाज़तें

और बेदारियां, इस क़द्र सख़्तियां और मसायब जब दामने सब्र व इसतक़लाल को पारा पारा करने लगते अमवाजे मसायब सर से गुज़रने लगतीं तो ज़मीन के ऊपर लेट जाते और *फ़इन्ना माअल उसरी यूसरा इन्ना माअल उसरी यूसरा* पढ़ने लगते थे। परवरदिगारे आलम अपने फ़ज़्ले बे निहायत से आपके क़ल्बे मुबारक को तक़वीयत अता फ़रमा देता और अमवाजो हवादिस वापस लौट जाते थे। ज़हेन का बोझ हल्का हो जाता था और दिमाग़ी कोफ़्त दूर हो जाती थी और फिर आप ताज़ा व ताज़ा होकर अपने इल्मी व रूहानी मशाग़िल में मशग़ूल हो जाते।

शेख़ इमाम अहमद बिन सालेह बिन शाफ़अे जेली का बयान है के एक दफ़ा मैं हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के साथ मदरसा निज़ामिया में गया वहां फ़ुक़ेहा और फ़ुक़राअ की एक जमाअत जमा हो गई। आपने क़ज़ा व क़द्र के बारे में ख़िताब किया। तक़रीर के दौरान छत से आपकी गोद में एक बड़ा सांप आन गिरा। जो लोग वहां मौजूद थे सब भाग खड़े हुए। आप तनहा बाक़ी रह गए। वो सांप आप के कपड़ों में घुस गया और जिस्म पर घूमने लगा। थोड़ी देर बाद आपके ग्रेबान से निकला और गर्दन पर लिपट गया उस दौरान ना तो आप ने तक़रीर रोकी और ना ही नशिस्त में कोई तबदीली की। कुछ देर बाद वो सांप नीचे उतर आया और आपके सामने अपनी दुम पर खड़ा हो गया और चिल्लाने लगा। आपने उसके साथ ऐसा कलाम फ़रमाया जिसे हम लोग ना समझ सके। उसके बाद वो चला गया अब लोग वापस आए और सांप की गुफ़्तगू के बारे में पूछने लगे। आपने फ़रमाया उसने मुझ से कहा के मैंने बेशुमार औलिया को आज़माया लेकिन आप जैसा साबित क़दम मैंने नहीं देखा। मैंने उससे कहा के जिस वक़्त तू मेरी गोद में गिरा है, मैं क़ज़ा व

क़द्र से मुताल्लिक़ गुफ़्तगू कर रहा था। तू तो एक मामूली सा कीड़ा है जिसे क़ज़ा व क़द्र चला फिरा रही है अगर उस वक़्त मैं उठता अपनी नशिस्त में तबदीली करता तो मेरा फ़अेल मेरे क़ोल के मुताबिक़ ना रहता।

हमदर्दी और शफ़्क़त हज़रत ग़ौस आज़म(रह॰अ॰) का रवय्या बड़ा हमदर्दाना और मुशफ़्फ़क़ाना था। मजलिस में आने वालों के लिए हर वक़्त हमदर्दी का इज़हार फ़रमाते अगर कोई मिलने वाला चन्द रोज़ ना आता तो दूसरों से उसकी ख़ैरो आफ़ीयत दरयाफ़्त फ़रमाते और बअज़ अवक़ात यूं भी करते के ख़ादिम से कहते के जाकर के मालूम करो के फ़लाँ शख़्स कहीं किसी परेशानी में तो नहीं मुबतला हो गया। तबीअयत तो नहीं ख़राब हो गई है। जब तक उसकी ख़ैरियत ना मालूम फ़रमा लेते मुतमईन ना होते अगर वो शख़्स बीमार होता और उसकी अलालत की ख़बर आपको मिलती तो उसकी अयादत को तशरीफ़ ले जाते। अपनी तमाम ज़िन्दगी में अपने हल्क़ा बगोशों और अपनी बारगाह के तमाम हाज़िरबाश हज़रात में से जिस किसी की भी अलालत की ख़बर पाते ज़रूर ज़रूर उसकी अयादत को तशरीफ़ ले जाते। और बहुत क़रीब जाकर बैठते थे। देर तक इतमीनान व तसल्ली बख़्श बातें करते और हमदर्दी का इज़हार फ़रमाते थे।

अहबाब में से एक शख़्स बग़दाद मुक़द्दस से काफ़ी फ़ासले पर एक गाँव में रहते थे एक मर्तबा वो बीमार पड़े। आपको उनकी अलालत की ख़बर मिली तो आप सफ़र की तमाम दुशवारियाँ बर्दाश्त करके उसी गाँव में उनकी अयादत फ़रमाने तशरीफ़ ले गए इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त वो घर की बजाए अपने खजूरों के बाग़ में लेटे हुए थे आपने उसी बाग़ में जाकर अयादत फ़रमाई। इस बाग़ में दो दरख़्त ऐसे थे जो खुश्क हो गए थे और साहिबे

बाग़ उसके कटवाने का इरादा कर चुके थे। दौराने गुफ्तगू उसका ज़िक्र आया आपने उन दरख़्तों में से एक दरख़्त के नीचे बैठ कर वुज़ू किया और दूसरे के नीचे खड़े होकर दो रकअत नमाज़ अदा की उसके बाद हफ़्ते के अन्दर ही उन दरख़्तों में दोबारा ज़िन्दगी आ गई और शदाब होकर बकसरत फलने लगे। रिवायत की शहादत ये है के आपकी तशरीफ आवरी ऐसी बर्कत का बाअस बनी के उनके कारोबार में भी काफी तरक़्क़ी हो गई।

ग़र्ज़ ये बीमारों की अयादत करने में जो अज़ीम दर्जा और सवाब है सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) उससे पूरी तरह आगाह थे इसलिए आप उस सवाबे अज़ीम के हुसूल का कोई मौक़ा हाथ से ना जाने देते।

हज़रत शेख़ शहाबउद्दीन उमर सहरवरदी(रह॰अ॰) के दोस्त शेख़ नजमउद्दीन(रह॰अ॰) फरमाते हैं के एक मर्तबा मैं सरकार ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के पास चिल्ले में था। चालीसवीं दिन मैंने देखा के शेख़ सहरवरदी(रह॰अ॰) एक पहाड़ की चोटी पर बैठे हैं और एक पैमाना हाथ में है जिसे जवाहरात से भर भर कर पहाड़ के नीचे खड़े हुए लोगों के ऊपर फेंक रहे हैं ये मंज़र देखकर मैं बेहद मुतहय्यर हुआ के लोग उन जवाहरात को जब चुन लेते हैं तो इतने ही जवाहरात फिर पैदा हो जाते हैं और आप उसी पैमाने से भर कर फिर नीचे लोगों के सामने फेंक देते। ऐसा मालूम होता था जैसे कोई चश्मा है जिससे जवाहरात उबल रहे हों जब मैं चिल्ले से बाहर आया तो हज़रत शेख़ सहरवरदी(रह॰अ॰) से उसका ज़िक्र किया। हज़रत शेख़ सहरवरदी(रह॰अ॰) ने फरमाया नजमउद्दीन! तुम ने जो कुछ मुशाहेदा किया वो हक़ीक़त है। ये दौलत सरकार ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की बदौलत हासिल हुई है। इल्मे कलाम के अवज़ मुझे ये नेअमत अता की गई है ये

सरकार ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का करम था।

चूंके शेख़ सहरवरदी(रह॰अ॰) से आपने इल्मे कलाम सलब फ़रमा दिया था इसलिए उसका बदला ज़रूरी था। यही सिफ़्ते करीम है के जब वो किसी से कोई चीज़ मसलेहतन ले लेता है तो उसका कई गुना बढ़ा कर बदला अता करता है आप करीम बिन करीम हैं, भला आप क्योंके बदला ना इनायत फरमाते। दिया और इस क़द्र दिया के जिसकी कोई मिसाल मौजूद नहीं।

शेख़ अबु मोहम्मद अली बिन अबी बकर याक़ूबी का बयान है के हज़रत शेख़ अली बिन हुय्यती मेरा हाथ पकड़ कर हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ख़िदमत में ले गए। और उनसे कहा ये मेरा ग़ुलाम है हज़रत शेख़ ने अपना कपड़ा उतार कर मुझे पहना दिया और फ़रमाया तुम ने आफ़ियत का कुरता पहन लिया। इसे पहने हुए मुझे पैंसठ बरस होने को आए हैं। इस दौरान मुझे कभी कोई ऐसी तकलीफ नहीं पहुँची जिसका मैं शिकवह करूं।

एक और मौक़े पर मुझे आपकी ख़िदमत में ले गए और उनसे कहा के मैं उसके लिए आप से एक बातिनी ख़ुलअत तलब करता हूँ। हज़रत शेख़ ने ये सुन कर देर तक अपना सर झुकाए रखा। इतने में मैंने देखा के आपसे नूर की एक किरन ज़ाहिर हुई और मुझ से चिमट गई। पस मैं क़ब्र वालों और उनके हालात देखने और फरिश्तों को अपने अपने मुक़ाम पर मुख़्तलिफ ज़बानों में तसबीह करते मुलाहेज़ा करने लगा और हर इंसान की पैशानी पर जो लिखा है मैं उसे बा आसानी पढ़ने लगा। मेरे लिए और कई अज़ीमुश्शान अम्र ज़ाहिर कर दिए गए और मुझे फ़रमाया गया के ख़ौफ ना करो ले लो। शेख़ अली ने फ़रमाया मुझे ख़तरा है के उसकी अक़्ल ज़ायल ना हो

जाए। उस पर हज़रत शेख़ ने मेरे सीने पर अपना हाथ मारा तो मैंने अपने बातिन को सनदान की तरह मज़बूत पाया उसके बाद जो चीज़ें मैंने देखीं और सुनीं उनमें से किसी शै से मैं नहीं डरा और मैं अब तक मलकूत की राहों में उसी चमक के नूर से रोशनी ले रहा हूँ। जब मैं पहले पहल बग़दाद में दाख़िल हुआ उस वक़्त वहाँ किसी इंसान को जानता था ना किसी इमारत को। मैंने एक ख़ूबसूरत मदरसे में पनाह हासिल की। ये मदरसे हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) का था। इत्तिफाक़ से उस वक़्त वहाँ मेरे अलावा कोई शख़्स मौजूद ना था। मैंने सुना के मदरसे में वाके एक घर में एक शख़्स दूसरे से कह रहा है ऐ अब्दुर्रज़्ज़ाक़! बाहर निकल और देख वहाँ कौन है? वो बाहर निकले और फिर अन्दर वापस गए और कहा वहाँ तो कोई नहीं है। हाँ अल्बत्ता गाँव का एक लड़का खड़ा है फरमाया उस लड़के की तो बहुत बड़ी शान है। फिर हज़रत शेख़ मेरे पास तशरीफ ले आए। आपके पास रोटियाँ और तआम था। उससे पहले मैंने कभी आपको नहीं देखा था। आपकी हैबत और जलाल की वजह से मैं खड़ा हो गया। फरमाने लगे अली आओ और वो तआम मेरे आगे रख दिया। फिर फरमाया अल्लाह तुझ से नफा दे। ये कलमा तीन बार फरमाया। फिर फरमाया के अनक़रीब एक ऐसा ज़माना आएगा जिस में तेरी अहतियाज होगी और तू आली हो जाएगा। अब मुझे देख लो मैं हज़रत शेख़ की दुआ का समरा हूँ। (ख़ुलासात-उल-मफाख़िर)

मख़्लूक़े ख़ुदा की भलाई आप ने हमेशा मख़्लूक़े ख़ुदा की भलाई की, अपने पास आने वालों की राहे हिदायत की तरफ राहनुमाई फरमाई, बेशुमार मख़्लूक़े ख़ुदा को दुआओं के ज़रिये निजात के रास्ते पर गामज़न किया अगर कोई परेशान हाल आया तो उसकी बात सुनकर ह

मुमकिन मदद की। मख़्लूके ख़ुदा आपको अपना ग़मख़्वार जानते हुए जूक़ दर जूक़ आती थी और आप की सोहबत से सकून हासिल करके जाती। मख़्लूके ख़ुदा की भलाई के चन्द वाक़ेयात हस्बे ज़ेल हैं :

शेख़ अबु-अल- क़ासिम उमर बिन मसऊद बज़ाज़ का बयान है के शबे जुमआ चाँद रात रमज़ान-उल-मोअज़्ज़म 5क्ष्हि॰ में आधी रात के वक़्त हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने अपने मोअज़्ज़िन से फरमाया के मीनार पर चढ़ कर पहली अज़ान दे दो। उसने हुक्म की तामील की। फिर थोड़ी देर बाद तीसरे पहर के आग़ाज़ में उसे फरमाया दूसरी अज़ान दे दो। उसने दे दी। अव्वल सहर में फिर उससे फरमाया के मीनार पर चढ़ कर तीसरी अज़ान कह दो। उसने कह दी। थोड़ी देर बाद उसे फरमाया के सहरी की निदा कर दो उसने वो भी कर दी। सुबह के वक़्त आपके ख़ास असहाब ने उस बात का राज़ पूछा तो फरमाया के जिस वक़्त मैंने उसे पहली अज़ान का हुक्म दिया उस वक़्त अर्श में ज़बरदस्त हर्कत पैदा हुई और उसके नीचे से निदा करने वाले ने पुकारा के मुक़र्रबीन में से अख़्यार लोगों को चाहिए के वो उठ खड़े हों। जिस वक़्त मैंने दूसरी अज़ान कहने के बारे में हुक्म दिया उस वक़्त अर्श में पहले से ज़रा कम हर्कत पैदा हुई और अर्श के नीचे से एक मनादी ने पुकारा के उठ खड़े हों औलियाऐ अबरार। और जिस वक़्त मैंने तीसरी अज़ान के लिए कहा तो अर्श में हर्कत पैदा हुई मगर पहले दोनों दफा की बनिसबत कम और उस वक़्त अर्श के नीचे से आवाज़ आई के सहर के वक़्त मग़फरत तलब करने वाले उठें। मैंने उन आवाज़ों से पहले मर्तबे वाले लोगों को आगाह किया के ये तुम्हारा वक़्त है फिर दूसरे मर्तबे के लोगों को मुतनब्बह किया के उठो अब तुम्हारा वक़्त है और आख़िर

में तीसरे मर्तबे को इत्तिला दी के उठो अब तुम्हारा वक़्त है।

शेख़ अब्दुल्लाह जबाई का बयान है के एक दफ़ा हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने फ़रमाया के मेरी तमन्ना है के इब्तिदाऐ हाल की तरह मैं जंगलों और वीरानों में रहूं। जहाँ मैं किसी को देखूं और ना कोई मुझे देखे.... फिर फ़रमाया अल्लाह तआला ने मेरे ज़रिये अपनी मख़्लूक़ की मनफ़अत का इरादा किया चुनाँचे यहूद व नसारा में से पाँच हज़ार से ज़्यादा आदमी मेरे हाथ पर मुसलमान हुए और एक लाख से ज़ायद डाकू और ठग मेरे हाथ पर तायब हुए और ये एक अज़ीम फ़ायदा है।

शेख़ ख़लीफ़ा बिन मूसा इराक़ी का बयान है के एक दफ़ा मैं हबश के इलाक़े से गुज़ारा मैंने देखा के एक बुज़ुर्ग हवा में बैठे हैं। मैंने उन्हें सलाम किया उन्होंने मुझे सलाम का जवाब दिया। मैंने उनसे पूछा आप हवा में क्यों बैठे हैं। उन्होंने फ़रमाया ख़लीफ़ा! मैंने हवा की मुख़ालफ़त की है, अब मैं हवा के एक क़ुब्बे में महबूस हूं।

रावी का बयान है के उसके बाद मैं हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ज़ियारत के लिए आपकी ख़ानक़ाह में आया। क्या देखता हूं के वही बुज़ुर्ग हज़रत शेख़ के सामने मोअद्दिब बैठे हैं। उन्होंने हज़रत शेख़ से बातें कीं। हक़ायक़ व मुआरिफ़ के मसायल पूछे मगर मैंने ये बातें ना समझीं। उसके बाद हज़रत शेख़ उठ कर चले गए और मैं उस बुज़ुर्ग के साथ तनहा रह गया। मैंने उनसे कहा अजीब बात है के मैं आपको यहाँ देख रहा हूं। उन्होंने कहा तो क्या अल्लाह का कोई बरगज़ीदा वली, मुक़र्रब या हबीब ऐसा है जिसकी यहाँ आमदोरफ़्त या यहाँ से इक्तिसाबे फ़ैज़ ना हो। मैंने पूछा के मैंने तो आपकी गुफ़्तगू से कुछ नहीं समझा। उन्होंने फ़रमाया के हर मुक़ाम के जुदा अहकाम हैं। हर हुकम के लिए माफ़ी हैं फिर हर

माअनी के लिए इबारत है जिससे उस की ताबीर की जाती है। इस इबारत को वही शख़्स समझ सकता है जिसने उसके माअनी समझे हैं और उसका माअना वही समझता है जिसके लिए उसका हुक्म साबित हो चुका हो और हुक्म उसी के लिए साबित होता है जो उस मुक़ाम का हामिल होता है। फिर मैंने पूछा हज़रत शेख़ की जो ताज़ीम और उनके सामने तवाज़ेअ का जो मुज़ाहेरा मैंने आज आपसे देखा है ऐसा पहले कभी नहीं देखा, उन्होंने कहा के मैं उस शख़्स की तवाज़ोअ क्यों ना करूं जिसने मुझे वाली बनाया और तसर्रूफ़ अता फरमया। मैंने कहा के आपको किस चीज़ का वाली बनाया गया है और किसी चीज़ पर आपको तसर्रूफ अता किया गया है? उन्होंने कहा मुझे सौ एैन मर्दों पर मुक़द्दम होने का वाली और उनके अहवाल पर मुतसर्रूफ बनाया गया है मगर उन्हें वही शख़्स देख सकता है जिसको अल्लाह चाहे।

मेहमान नवाज़ी आप बड़े बुलंद दर्जे के मेहमान नवाज़ थे जो शख़्स भी मेहमान की हैसीयत से आता उसकी हस्बे इसतताअत मेहमान नवाज़ी करते थे।

अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन अहमद ने अपनी तारीख़ में लिखा है के जब शेख़ मोफिक़उद्दीन से जनाब शेख़ के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो उन्होंने फरमाया के मुझे अपने साथियों के साथ आपकी आख़िर उम्र में शर्फे मुलाक़ात नसीब हुआ। आपने हमें अपने मदरसे में ठहराया और दौराने क़याम निहायत शफ़्क़त और तवज्जह से पेश आए। अक्सर अपने साहज़ादे को रोशनी और दूसरे इन्तेज़ामात की निगरानी के लिए भेजते थे और चेमा अवक़ात हमारे लिए खाना घर से भिजवाते। नमाज़ों के अवक़ात जब आप बाहर तशरीफ लाते तो इमामत के फायज़ आप ही अंजाम देते। मैं दौराने क़याम आप

से किताब-उल-मुल्की पढ़ता, और हाफ़िज़ अब्दुलगनी "अलहदाया" पढ़ते थे।

आपके पास मुवह ज़राई ज़मीन का एक क़तआ था जिसमें आप दीहातियों से काश्त करवाते और आपके बअज़ मसाहिब गुल्ला पीस कर चार पाँच रोटियाँ तैयार कर देते फिर आप उन रोटियों में से एक एक टुकड़ा हाज़रीने मजलिस में तक़सीम फरमा देते और जो कुछ बाक़ी बचता उसको अपने लिए रख लेते। रोज़ाना रात को आपका एक गुलाम रोटियों का तबाक़ लिए हुए दरवाज़े पर खड़े होकर सदा लगाता, क्या किसी को रोटी की ज़रूरत है क्या किसी को रात बसर करने के लिए जगह दरकार है?

हज़रत शेख़ के पास जब कहीं से हदया आता तो आप सब का सब या उसका कुछ हिस्सा हाज़रीने मजलिस में ज़रूर तक़सीम फरमा देते और हदया भेजने वाले के पास बतौर इज़्हार तशक्कुर ख़ुद भी हदया अरसाल फरमाते आप अहबाब की नज़र भी क़बूल फरमाते।

अल्लामा इब्ने नज्जार अपनी तारीख़ में तहरीर करते हैं के हज़रत शेख़ फरमाया करते थे के जब मैंने तमाम आमाल की छान बीन और जुसतुजू की तो मुझे मालूम हुआ के सब से बेहतर अमल खाना खिलाना और हुस्ने अख़लाक़ से पेश आना है और अगर मेरे हाथ में पूरी दुनिया की दौलत भी दे दी जाए तो मैं उसे भूकों को खाना खिलाने में सर्फ कर दूं क्योंके मेरे हाथ में सुराख़ हैं जिनमें कोई चीज़ ठहर नहीं सकती और अगर मेरे पास हज़ारों दीनार आ जाएँ तो मैं रात गुज़रने से क़ब्ल ही ख़र्च कर डालूं।

जमाल गौसे आज़म(रह०अ०)

अल्लाह तआला ने हज़रत गौसे आज़म(रह०अ०) को ज़ाहिरी शक्ल व सूरत में भी बे पनाह हुस्न व जमाल से नवाज़ा। आपके मुताल्लिक रावायान इस हक़ीकत पर मुत्तफिक हैं के हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी बेहद हसीन जमील थे। कसरते रियाज़त और ज़ुहेद की वजह से आपका जिस्म मुबारक क़द्रे नहीफ था। शेख़ अबू अब्दुल्लाह का बयान है के हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) का क़द मयाना, सीनह कुशादा और रंग गंदमी था। आँखें सरमगीन और नूरे मअरफ़त से लबरेज़ थीं, भवें बारीक और मिली हुई थीं। सर अक्दस बड़ा और आपके आली दिमाग़ होने का शाहिद था। सर अक्दस और रेश मुबारक के बाल निहायत मुलायम और चमकदार थे। रेश मुबारक बहुत गुनजान और ख़ूबसूरत थी। सर के बाल बिलअमूम कान की लो तक रहते थे। दांत हर किस्म की आलायश से पाक और मोतियों की तरह दमकते थे रुख़सारों का रंग मेदा व शहाब था। चेहरा किताबी और नाक सतवाँ थी। होंट पतले और निहायत दिलआवेज़ थे। जब बात करते तो मालूम होता के मुंह से फूल झड़ रहे हैं। आवाज़ निहायत बुलंद थी और उस ज़माने में जबके आला बकरुठलसोत (लाऊडस्पीकर) का तसव्वुर तक भी ना था आपकी आवाज़ सत्तर सत्तर हज़ार के मजमेअ में दूर व नज़दीक हर एक को यकसाँ पहुंचती थी। हथेलियाँ कुशादा और नर्म थीं। हाथ पाँव की उंगलियाँ सीधी और खुशनुमा थीं। चेहरा मुबारक पर नूर बरसता था। आप को देखकर ही यक़ीन कामिल हो जाता था के आरिफ कामिल और मुकर्रब इलाही हैं।

कमाले गुफ़्तगू आप जिस वक़्त कलाम फरमाते थे

मजलिस गूंज उठती थी। आवाज़ मुबारक में क़ुदरती ऐसा रोअब था के जब भी आपने गुफ़्तगू फरमाई या मजमअे आम में कुछ इर्शाद फरमाया तो तमाम सामईन और मुख़ातिब दम बखुद होकर मुतवज्जह हो जाते थे। किसी को हज़रत के कलाम से ग़ैर मुलतफत होने की मजाल ना थी। अजीब बात ये थी के सब दूर दराज़ नज़दीक वाले हज़रात आपकी आवाज़ को यकसाँ सुनते थे और हर एक को ऐसा मालूम होता था जैसा के हज़रत उनके क़रीब ही इर्शाद फरमा रहे हैं। कलाम करते वक़्त किसी को बजुज़ सकूत के दम मारने की गुंजाईश ना होती थी। जो कुछ हुक्म इर्शाद फरमाते उसी वक़्त उसकी बजाआवरी और तामील हो जाती थी। (बहुज्जत-उल-असरार)

शेख़ अबु मोहम्मद अब्दुल लतीफ बिन अबी ताहिर बग़दादी सूफी का बयान है के जिस वक़्त हमारे शेख़ हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) बहुत अहम और अज़ीम ख़िताब फरमाते तो उसके बाद यूं गोया होते। मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ। तुम कहो के तूने सच कहा। मैं तो ऐसी यक़ीनी बातें करता हूँ जिन में कोई शक व शुबह नहीं। मुझे बुलवाया जाता है तो मैं बोलता हूँ। मुझे (ख़ज़ाना ग़ैबी से) अता किया जाता है तो मैं तक़सीम करता हूँ। मुझे हुक्म दिया जाता है तो मैं वो काम करता हूँ। ज़िम्मेदारी उसकी है जो मुझे हुक्म देता है तुम्हारा मुझे झुटलाना दीनी ऐतबार से तुम्हारे लिए ज़ेहर क़ातिल है और अंदेशा है के इस तरह तुम्हारी दुनिया व आख़िरत बर्बाद हो जाए। मैं बहुत बड़ा दरया हूँ। मैं बड़ा क़त्ल करने वाला हूँ। और डराता है तुम को अल्लाह अपनी ज़ात से। अगर मेरी ज़बान पर शरीअयत के क़ुफ़्ल ना होते तो जो कुछ तुम अपने घरों में खाते हो या बचा कर छोड़ते हो। मैं तुम्हें उन तमाम की ख़बर देता। तुम लोग मेरे सामने शीशे

की तरह हो जो कुछ तुम्हारे पेट में है और तुम्हारे ज़ाहिर में है मुझ से मख़्फ़ी नहीं। अगर हुक्म ख़ुदावंदी की लगाम मेरी ज़बान पर ना होती तो साअे यूसुफी अपने अन्दर मौजूद चीज़ से मतलअ करता मगर इल्म दलील का मोहताज है (या फरमाया) इल्म आलिम के दामन में इसीलिए पनाह हासिल करता है के वो उसके मख़्फ़ी भेद ज़ाहिर ना करे।

आपकी मजालिस में बअज़ अवक़ात हाज़रीन की तअदाद सत्तर सत्तर हज़ार से भी तजावुज़ कर जाती थी और लोग कई कई फरलाँग तक फैले होते थे लेकिन आपकी आवाज़ दूर और नज़दीक हर शख़्स को यक्साँ पहुँचती थी। हालाँके कोई दूसरा शख़्स गला फाड़ कर भी चिल्लाता तो उसकी आवाज़ इतने मजमअे में दूर के लोगों तक बमुश्किल पहुँचती थी उसके बरअक्स आप निहायत मुतानत और वक़ार के साथ अपना वअज़ फरमाते और उसका एक एक लफ़्ज़ हर शख़्स को यकसाँ और साफ साफ सुनाई देता।

<u>नज़र मुबारक</u> हुज़ूर (रह॰अ॰) जिस शख़्स या जिस इजतमअे पर नज़रे जमाल बकमाल से तवज्जह फरमाते वो कैसा ही सख़्त तबअे, संगदिल क्यों ना होता, ख़ाशअे, ख़ाज़अे, मतीअ और ग़ुलाम बन जाता। (तफ़रीह-उल-ख़ातिर)

शेख़ मकारिम का बयान है के मैं एक दिन हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह॰अ॰) की ख़िदमत में उनके मदरसे में हाज़िर था के उस दौरान फिज़ा में दर्राज नामी परिन्दा उड़ता हुआ गुज़रा। मेरे दिल में ख़याल आया के क्या ही अच्छा होता के मैं दर्राज का गोश्त जौ के साथ खाता। इस ख़याल के आते ही हज़रत शेख़ ने मेरी तरफ देखा, और मुसकुराए। और फज़ा की तरफ निगाह उठाई, इतने में दर्राज मदरसे के सहन में आन गिरा और

भाग कर मेरी रान पर सवार हो गया। हज़रत शेख़ ने फरमाया ऐ मकारिम! तुम्हें जिस चीज़ की ख़्वाहिश है वो ले लो या अल्लाह तआला तुम से इसे जौ के साथ खाने की ख़्वाहिश छीन लेगा। उस वक़्त से आज के दिन तक दराज के गोश्त से मेरी नफ़रत का ये आलम है के अगर इसे भून पका कर मेरे सामने रखा जाए तो मैं उसको छू भी बर्दाश्त नहीं कर सकता हालाँके उससे पहले ये मुझे सबसे ज़्यादा पसंद था।

एक दफा मैं आप की मजलिस में मौजूद था उस वक़्त आप व-असलीन के मुक़ामात और आरफीन के मुशाहेदात के सिलसिले में कलाम फरमा रहे थे यहाँ तक के तमाम लोग अल्लाह तआला के इश्तियाक़ में तड़पने लगे। मैंने सोचा के आख़िर मक़्सूद किस तरह हासिल होगा? आपने कलाम रोक दी और मेरी तरफ रूख करते हुए फरमाया तेरे और तेरी मुराद व मक़्सूद के दरमियान सिर्फ दो क़दमों का फासला है। एक क़दम से दुनिया छोड़ दे और दूसरे से अपने नफ़्स को। फिर सिर्फ तू है और तेरा रब।

पसीने की खुशबू मुफ़्ती ईराक़ हज़रत महीउद्दीन अबू अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन हामिद-अल-बग़दादी(रह॰अ॰) हज़रत ग़ौसे पाक(रह॰अ॰) के ख़सायल बयान करते हुए फरमाते हैं "तय्यब-उल-ईराक़" के आपका पसीना खुश्बूदार था (क़लायद-उल-जवाहर)

आपके हाथों का कमाल शेख़ अली बिन इदरीस याक़ूबी(रह॰अ॰) बयान करते हैं के मेरे शेख़ मुझे एक दफा 560हि॰ में आप की ख़िदमत में ले गए। हज़रत थोड़ी देर ख़ामोश रहे। उसके बाद मैंने देखा के आप के जिस्मे अतहर से नूर की शुआएँ निकल निकल कर मेरे जिस्म में मिल गई हैं। उस वक़्त मैंने अहले क़बूर को देखा और उनके हालात और मरातिब व मनासिब को देखा

और फ़रिश्तों को भी देखा। नीज़ मुख़्तलिफ आवाज़ों में मैंने उनकी तसबीहें सुनीं और हर एक इंसान की पैशानी पर जो कुछ लिखा था उसको मैंने पढ़ा और बहुत से वाक़ेयात और अजीब व ग़रीब उमूर मुझ पर मुनकशिफ़ हुए। फिर आपने मुझ से फरमाया डरो मत। तो मेरे शेख़े तरीक़त हज़रत अली बिन हुय्यती ने हज़रत की ख़िदमत में अर्ज़ की हुज़ूरे वाला! मुझे उसकी अक़्ल ज़ायल होने का डर है। तो आपने अपना हाथ मुबारक मेरे सीने पर रखा। फिर जो कुछ मैंने देखा मैं उससे क़तअन ना घबराया और फ़रिश्तों की तसबीहों को मैंने फिर सुना। और अब तक मैं आलमे मलकूत में उस रोशनी से मुसतफ़ीद होता हूँ (क़लायद-उल-जवाहर)

शेख़ क़बीर आरिफ बिल्लाह अली बिन हुय्यती(रह॰अ॰) का बयान है के एक दफा मैं हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ज़ियारत के लिए बग़दाद हाज़िर हुआ। उस वक़्त आप छत पर चाश्त की नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने फिज़ा में निगाह उठाई तो देखा के मर्दाने ग़ैब की चालीस सफें ईसतादा थीं और हर सफ में सत्तर मर्द थे। मैंने उनसे कहा के तुम लोग बैठ क्यों नहीं जाते। उन्होंने कहा आपकी नमाज़ मुकम्मल हो जाए या नमाज़ पूरी फरमा लें। इजाज़त फरमाएंगे तब बैठेंगे। ये इसलिए के आपका हाथ हमारे हाथों के ऊपर आपका क़दम गर्दनों पर और आपका हुक्म हम पर रवाँ है। जिस वक़्त आपने सलाम फैरा तो ये लोग जल्दी से आपकी ख़िदमत में आए। सलाम अर्ज़ करने और हाथ चूमने लगे।

आपकी उंगली के असरात शेख़ अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन कामिल नीसानी का बयान है के मैंने शेख़ अबु मोहम्मद शावर मोहली से सुना के मैं हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ज़ियारत के लिए

बग़दाद में दाख़िल हुआ और एक मुद्दत तक आपकी ख़िदमत में मुक़ीम रहा। फिर जब मैंने मिस्र के लिए रवांगी का इरादा किया तो ख़याल आया के ये सफ़र मख़्लूक़ और ज़ादे राह के बग़ैर क़दम तजरीद पर तय करना चाहिए। मैंने हज़रत शेख़ से इजाज़त तलब की तो आपने मुझे ये वसीयत फरमाई के मैं किसी से कुछ ना माँगूं। ये फरमा कर अपनी दोनों उंगलियाँ मेरे मुंह में रख दीं और फरमाया के उन्हें चूस लो। मैंने उन्हें चूस लिया। फिर फरमाया जाओ हिदायत याफ़्ता और राशिद होकर। मैं बग़दाद से मिस्र की तरफ चल पड़ा। ना कुछ खाता था ना पीता था मगर जिस्मानी क़ुव्वत दिन बदन बढ़ रही थी।

एक मर्तबा रात के वक़्त आपके हमराह शेख़ अहमद रफाई(रह•अ•) और अदी बिन मुसाफिर(रह•अ•) हज़रत सय्यदना इमाम अहमद बिन हंबल(रह•अ•) के मज़ार पुर अनवार की ज़ियारत के लिए तशरीफ ले गए मगर उस वक़्त अंधेरा बहुत ज़्यादा था। हज़रत ग़ौसे आज़म(रह•अ•) उनके पेश पेश थे आप जब किसी पत्थर या किसी दीवार या क़ब्र के पास से गुज़रते तो आप उंगली से इशारा फरमाते, उस वक़्त आपकी अंगुश्त मुबारक चांद की तरह रोशन हो जाती थी। इसी तरह वो सब हज़रात आपकी उंगली मुबारक की रोशनी से हज़रत सय्यदना इमाम अहमद बिन हंबल(रह•अ•) के मज़ार मुबारक तक पहुँच गए। (क़लायद-उल-जवाहर)

आपका लिबास मुजाहेदात के ज़माने में आपने बड़ा सादा लिबास इस्तेमाल किया। मगर जब आप मसनदे रूश्दो हिदायत पर जलवा अफ़रोज़ हो गए तो आपने उस दौर के उल्मा जैसा लिबास इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। बयान किया जाता है के आपका लिबास बड़ा उम्दा जाज़िबे नज़र और क़ीमती होता था। शायद ही कोई मौक़ा

ऐसा आया हो के आपने एक अर्शफी फी गज़ से कम क़ीमत का कपड़ा ज़ेब तन किया हो। कपड़े के ताजिर दूरदराज़ से आपके लिए गराँ बहा कपड़े और मलबूसात लाते थे। बावजूद इतनी उम्दा और गिराँ क़ीमत पोशाक के आप इसे एक दिन से ज़्यादा नहीं पहनते थे हर रोज़ नया लिबास तब्दील फरमाते और पहला लिबास गुरबा और मसाकीन को दे देते। एक दफा एक अमामा कई हज़ार अर्शफियों पर ख़रीदा और उसे थोड़ी देर के लिए बाँध कर उतार दिया और फिर मसाकीन को खैरात कर दिया। इसी तरह हर जुमअे को आप नई पापोश पहनते थे और पहली गुरबा को दे देते थे। आपकी पापोश भी निहायत क़ीमती होती थी। गिराँबहा लिबास और पापोश के इसतेमाल से आपका मक़्सद मोहताजों को नफा पहुँचाना था।

हिकायत बग़दाद शरीफ के लए मशहूर बज़ाज़ शेख़ अबु-अल-फज़्ल अहमद बिन क़ासिम क़ुरशी से मरवी है के एक दफा हुज़ूर ग़ौसे पाक(रह॰अ॰) का ख़ादिम मेरे पास आया और उसने कहा के मुझे एक ऐसा क़ीमती और उम्दा कपड़ा दरकार है जिसके एक गज़ की क़ीमत एक अर्शफी हो। ना उससे कम ना उससे ज़्यादा। मैंने पूछा ऐसा क़ीमती कपड़ा किसके वासते दरकार है। ख़ादिम ने हुज़ूर का नाम लिया। उस वक़्त मेरे दिल में ख़तरा गुज़रा के जब फ़ुक़रअ ऐसा क़ीमती लिबास ज़ेबे तन करेंगे तो बादशाहे वक़्त यानी ख़लीफा कौन सा कपड़ा पहनेगा। उन्होंने तो बादशाह के लिए कोई कपड़ा बाक़ी ही नहीं छोड़ा।

अभी ये ख़तरा मेरे दिल में गुज़रा ही था के मेरे पाँऊ में ग़ैब से एक कील ऐसी चुभी के क़रीब-उल-मर्ग हो गया। हर चन्द उसको बाहर निकालने की कोशिश की मगर नाकाम हुई। फिर मुझ को उठा कर आँहज़रत(रह॰अ॰) की ख़िदमत में लाए तो आपने इर्शाद फरमाया, ऐ

अबु-अल-फ़ज़्ल! तूने अपने दिल में हम पर क्यों एतराज़ किया। खुदा की क़सम! मैंने उस कपड़े को ना पहना जब तक के मुझे ये ना कहा गया के तुझे मेरे हक़ की क़सम। एक क़मीज़ ऐसे कपड़े का पहन जिसकी क़ीमत फ़ी गज़ एक अर्शफ़ी हो। (तफ़रीह-उल-ख़ातिर)

हज़रत अब्दुल्लाह जबाई का बयान है के मैं मौसम सर्मा के दरमियान में सख़्त जाड़े के दिनों में हज़रत शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ करता था उस मौसम में आप के जिस्म पर सिर्फ़ एक कुर्ता और सर पर एक टोपी होती थी और आपके जिस्म से पसीना बह रहा होता था। आपकी ख़िदमत में हाज़िर रहने वाले लोग गर्मियों की तरह पंखे से आपको हवा दे रहे होते थे।

आपकी टोपी मुबारक शेख़ अबु उमर वसीरोफ़ीनी (रह॰अ॰) फ़रमाते हैं के हज़रत गौसे आज़म (रह॰अ॰) की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुआ तो आप ने मुझे इर्शाद फ़रमाया। *"ज़ोद बादशाह के खुदा तआला तेरा मुरीदे बद बदनाम वे अब्दुलग़नी बिन नुक़्ते के मरतबा रूबे बुलंद तर वाशदाज़ वसया रे औलिया व खुदा तआला बुवे मफ़ाख़रत कन्द बर मलाएका"*। (अनक़रीब तुम को अल्लाह तआला मुरीद देगा जिसका नाम अब्दुलग़नी बिन नुक़्ता होगा। जिसका रूत्बा बहुत से औलिया अल्लाह से बुलंद तर होगा उसकी वजह से अल्लाह तआला मलायका पर फ़ख़्र करेगा।") बाद अज़ाँ आपने अपनी टोपी मुबारक मेरे सर पर रख दी। *"खुशी व खुन्की आँ बदमाग़े मन रसीद व अज़दमाग़ बदल मलकूत बरमन कशफ़ गश्त शनेदम के आलम व आँचा दर आलम अस्त हक़ तआला सुबहानाहू मेगूयंद"* (टोपी रखने की ख़ुशी और उसकी ठंडक मेरे दिमाग़ में पहुँची और दिमाग़ से दिल तक आलमे मलकूत का हाल

मुझ पर वाज़ेह हो गया और मैंने देखा के जहान और जो कुछ इस जहान में है सब अल्लाह तआला की तसबीह बयान करता है (नफ़्हात-उल-नफ़्स)

आपकी क़मीज़ मुबारक की बर्कत एक दफ़ा हज़रत अली बिन अबी नसर-उल-हुय्यती (रह०अ०) अपने मुरीद शेख़ अली बिन इदरीस याक़ूबी (रह०अ०) को सय्यदना ग़ौसे आज़म (रह०अ०) की ख़िदमत में ले गए और आप शेख़ अली बिन अबी नसरूलहुय्यती (रह०अ०) से बहुत मोहब्बत रखते थे। उनकी रिआयत से आप शेख़ अली बिन इदरीस याक़ूबी (रह०अ०) के साथ निहायत तलत्तुफ़ से पेश आए और अज़राहे शफ़्क़त अपनी क़मीज़ उतार कर उन्हें पहना दी। फिर उनसे मुख़ातिब होकर फरमाया "अली तुम ने तंदरूस्ती की क़मीज़ पहन ली।" शेख़ अली बिन इदरीस याक़ूबी (रह०अ०) का बयान है के उस क़मीज़ मुबारक को पहने हुए आज मुझे पैसंठ बरस हो चुके हैं लेकिन आज तक मुझे कोई बीमारी नहीं हुई (क़लायदुलजवाहर)

ख़ुराक गुरबा व मसाकीन के लिए तो आपका दस्तरख़्वान निहायत वसी था लेकिन अपनी ख़ुराक बहुत कम और सादा होती थी उसे रूखी सूखी कहना ज़्यादा मौज़ूं होगा। अक्सर फाक़ह करते और हफ़्ते में सिर्फ दो दिन यानी दो शंबा और जुमअे को खाना तनावुल फरमाते। खाना अक्सर बिला नमक होता था और खाने में से मुर्ग़न व लज़ीज़ अशिया यानी घी, दूध और गोश्त अक्सर छोड़ देते थे। ये आपकी आम ख़ुराक थी। वरना कभी कभार उम्दा से उम्दा गिज़ा भी खा लेते और पुर तकल्लुफ दअवत भी क़बूल फरमा लेते थे।

ख़ुश्बू का इस्तेमाल हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की तरह आपको ख़ुश्बू पसंद बहुत थी तबअन अफ़ूनत और बदबू से सख़्त मुतनफ़िर थे। हर रोज़ गुस्ल

फरमाते और खुश्बू व इत्र लगा कर इबादत में मशगूल हो जाते।

आपके मामूलात के मुताल्लिक़ रिवायात

अबु सालेह का बयान है के मेरे वालिद अब्दुर्रज्ज़ाक़ ने हमें बताया। अबु-अल-हसन का कहना है के हमें शेख़ उमर बज़ाज़ ने ख़बर दी। अबु ज़ेद कहते हैं के हमें अबु इसहाक़ इब्राहीम बिन सईद राज़ी ने ख़बर दी के हमारे शेख़ सय्यदी महीउद्दीन अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) उल्मा का लिबास पहनते थे। आप तीलिसान औढ़ते और खच्चर पर सवारी करते। आप बुलंद कुर्सी पर बैठ कर कलाम फरमाते। आपके कलाम में तनतनह और तेज़ी होती। आपकी बात तवज्जह से सुनी जाती। जिस वक़्त आग़ाज़ करते ख़ामोशी छा जाती और जिस बात का हुक्म करते उसे बजा लाने में लोग जल्दी करते। सख़्त दिल आदमी आपको देख लेता तो नर्म और मुनकसिर हो जाता। अगर तू हज़रत शेख़ को देख ले तो गोया सारे जहान के लोगों को देख ले। आप जब नमाज़े जुमआ की ख़ातिर जामअे मस्जिद की तरफ निकलते तो बाज़ारों में लोग ठहर जाते और आपके वसीले से अल्लाह तआला से अपनी हाजतें तलब करते। दुनिया में आपका शोहरा और ग़लग़ला था। आपका तरीक़ा हुस्ने ख़ल्क़ और ख़ामोशी था। एक दफा जुमअे के दिन आप मस्जिद में छींके तो आपकी छींक के जवाब में हर तरफ से *"यर हमकुल्लाह"* (अल्लाह आप पर रहम करे) *"व हमबिक"* (और अल्लाह आपकी बर्कत से लोगों पर रहम फरमाए) का शोर उठा। उस वक़्त ख़लीफा मुसतनजिद बिल्लाह अब्बासी जामअे मस्जिद के मक़्सूरह में मौजूद था। उसने घबरा कर पूछा ये शोर कैसा है? उसे बताया गया के शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) छींके हैं। वो ये सुनकर दहशतज़दा रह गया।

शेख़ अबुलहसन अली बिन मोहम्मद बिन अहमद बग़दादी सूफ़ी का बयान है के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह•अ•) इन्तिहाई पुर हैबत और रोअबदार शख़्सियत के मालिक थे। आप जिस वक़्त किसी की तरफ़ निगाह उठाते तो यूं लगता था के ये शख़्स कांपने लगेगा और बसा अवक़ात वाक़ई ऐसे लोग कांपना शुरू कर देते थे। आप जिस वक़्त बैठते तो लोगों की एक जमाअत ऐसी आपको घेर लेती जो देखने में शेर मालूम होते थे। ये लोग आपके अेहकाम बजा लाने और फ़रमान की पैरवी करने के सिलसिले में इशाराऐ अबरू के मुंतज़िर होते थे।

शेख़ अबु उमर व उस्मानी हरीफ़ीनी का बयान है के शेख़ बक़ा(रह•अ•), शेख़ अली बिन हुय्यती(रह•अ•) और शेख़ अबु सअद क़ीलवी(रह•अ•) ऐसे मशायख़ जिस वक़्त हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह•अ•) की ख़ानक़ाह में आते तो उसके दरवाज़े झाड़ देते और छिड़काव करते और अन्दर दाख़िल होने के लिए इजाज़त के मुंतज़िर रहते। इजाज़त मिलने पर जब ये हज़रात दाख़िल होते तो खड़े हो जाते यहाँ तक के हज़रत शेख़ उन्हें बैठने का हुक्म फ़रमाते फिर ये हज़रात पूछते हमें अमान है? इर्शाद होता तुम्हें अमान है। उसके बाद बा अदब होकर ये लोग बैठ जाते। जिस वक़्त आप सवार होते अगर उनमें से कोई साहब मौजूद होते तो वो आपके आगे ग़ाशिया उठा कर चन्द क़दम तक चलते अगरचे आप ऐसा करने से उन्हें रोकते मगर वो यही जवाब देते के यही तो वो ज़रिया है जिससे तक़र्रुब इलाल्लाह हासिल होता है।

इबादात इबादते इलाही से आपको ख़ास शग़फ़ था (आपके मुजाहेदात व रियाज़ियात का हाल पीछे बयान हो चुका है। मुजाहेदात व रियाज़ियात के बाद जब आपने अहयाऐ दीन की जद्दोजहद का आग़ाज़ फ़रमाया तो उस

वक़्त भी इबादत के ज़ौक़ व शौक़ में मतलक़ फ़र्क़ ना आया। हमेशा बावज़ू रहते। जब हदस लाहक़ होता तो उसी वक़्त ताज़ा वज़ू फ़रमाते और दो रकअत तहियातुल वज़ू पढ़ते। शबबेदारी की ये केफ़ियत थी के चालीस साल तक इशा के वज़ू से सुबह की नमाज़ पढ़ते रहे। पंद्रह बरस तक ये हाल रहा के ईशा की नमाज़ के बाद एक पांऊ पर खड़े हो जाते और क़ुरआन शरीफ पढ़ते पढ़ते सुबह कर देते थे। अक्सर एक तिहाई रात में दो रकअत नफ़िल अदा करते। हर रकअत में सूरहऐ रहमान या सूरहऐ मुज़म्मिल की तिलावत करते। अगर सूरह इख़्लास पढ़ते तो उसकी तअदाद सौ बार से कम ना होती। अगर बतक़ाज़ाऐ बशरी सोना नागुज़ीर होता तो अव्वल शब किसी क़द्र सो रहते। फिर जल्दी उठ कर इबादते इलाही में मश्ग़ूल हो जाते। ग़र्ज़ आपकी रातें मुराक़्बे, मुशाहेदे और याद ईलाही में गुज़रती थीं। नींद आप से कोसों दूर रहती थी। खुद फरमाते हैं के मुझे दर्दे इश्क़ नींद से मानअे है। रात के वक़्त कभी दौलत कदा से बाहर तशरीफ ना लाते, ख़्वाह ख़लीफ़ा ही मुलाक़ात के लिए क्यों ना हाज़िर होता।

रोज़े निहायत कसरत से रखते थे। बअज़ दफ़ा कई कई दिन तक मुसलसल एक ही रोज़ा रखते और फिर दरख़्तों के पत्तों, जंगली बूटियों और गिरी पड़ी मुबह चीज़ों से रोज़ा इफ़्तार फरमाते। ग़र्ज़ क़ायम-उल-लील और सायम फीन्नहार रहना (यानी रात को बेदार रहना और दिन को रोज़े रखना) आपकी आदते सानिया बन चुकी थी। शेख़ अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन अबी-अल-फतह हरवी(रह०अ०) का बयान है के मैं आपकी ख़िदमत में चन्द रातें सोया। आपका ये हाल था के एक तिहाई रात तक नफ़िल पढ़ते और फिर ज़िक्र करते फिर *अलमुहीत-उल-रब्बुल शहीद-उल-हसीब-उल-मनआल-उल-ख़ालिक़-उल-ब*

ती-उल-मुसख्खिर का विर्द करते।

मैंने अपनी आँखों से देखा के कभी आपका जिस्म लागिर हो जाता, कभी फर्बा, किसी वक़्त मेरी निगाहों से ग़ायब हो जाते। फिर थोड़ी देर बाद वहाँ आ मौजूद होते और कुरआन करीम पढ़ते। यहाँ तक के रात का दूसरा हिस्सा गुज़र जाता। सज्दे बहुत तवील करते, अपने चेहरे को ज़मीन पर रगड़ते, तहज्जुद अदा फरमाते और मुराक़्बे व मुशाहेदे में तुलूअे फज्र तक बैठे रहते। फिर निहायत अज्ज़ो नियाज़ और खुशूअ से दुआ माँगते। उस वक़्त आपको ऐसा नूर ढांप लेता के नज़रों से ग़ायब हो जाते यहाँ तक के नमाज़े फज्र के लिए खलवत कदे से बाहर निकलते।

सिलासिल तरीक़त में हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का फ़ेज़

तरीक़त के चार सिलसिले अरबो अजम में मशहूर हैं ये सिलसिले क़ादरिया, चिश्तिया, नक्शबंदिया और सहरवरदिया के नामों से माअरूफ़ हैं। क़ादरिया सिलसिला के बानी तो आप बज़ात खुद ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ही हैं क्योंके इस सिलसिले का इजा आपके इस्मेग्रामी की निसबत से हुआ है। दीगर सिलासिल यानी चिश्तिया, नक्शबंदीया और सहरवरदिया के अकाबिर बुज़ुर्गों को भी हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की ज़ाते अक्दस की तवज्जह से बेपनाह फ्यूज़ व बर्कात हासिल हुए इसलिए आपका फेज़ चहार सिलासिल ही में फैला हुआ है। दीगर सिलासिल के जिन बुज़ुर्गों ने सिलसिला क़ादरिया से फेज़ हासिल किया वो हस्बे ज़ेल हैं।

1-हज़रत ख़्वाजा मईनउद्दीन चिश्ती(रह॰अ॰)

हज़रत ख़्वाजा मईनउद्दीन चिश्ती(रह॰अ॰) जिस दौर में सियाहत करते हुए बग़दाद तशरीफ़ ले गए तो आपकी मुलाक़ात तो आपकी मुलाक़ात हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) से हुई और पाँच माह तक आप उनके पास रहे। एक रिवायत में है के हज़रत ख़्वाजा मईनउद्दीन चिश्ती की हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) से एक पहाड़ में मुलाक़ात हुई और ख़्वाजा साहब आपकी सोहबत में सत्तावन दिन रहे और आपसे बेशुमार फ़्यूज़ व बर्कात हासिल किए।

ख़्वाजा मोहम्मद गेसूदराज़ ने लताएफ-उल-ग़रायब में लिखा है के जब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मईनउद्दीन चिश्ती(रह॰अ॰) ने खरासान की पहाड़ी पर बैठे हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के फरमान *क़दामी हाज़िही अला*

...क़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह को रूहानी तौर पर सुनकर गर्दन खम करने में सब्क़त की और कहा के आपका क़दम ना सिर्फ मेरी गर्दन पर है बल्के सर और आँखों की पुतलियों पर भी है, तब हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने खुश होकर कहा के ग़यासउद्दीन का लड़का (मईनउद्दीन) गर्दन खम करने में सब्क़त ले गया और इस्से अदब की वजह से अल्लाह और रसूल(स॰अ॰स॰) का मेहबूब बन गया। और अनक़रीब उसको विलायते हिन्द की बागडोर दी जाएगी।

२-हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंद(रह॰अ॰)

शेख अब्दुल्लाह बलख़ी(रह॰अ॰) अपनी किताब ख़ारिक़-उल-अहबाब फी मआरफ़त-उल-अक़ताब में लिखते हैं के एक रोज़ हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) एक जमाअत के साथ खड़े थे। के बुखारा की तरफ मुतवज्जह हुए और हवा को सूंघा और फरमाया के मेरे विसाल के एक सौ सत्तावन साल बाद एक मर्द क़लन्दर मोहम्मदी मुशर्रिब बहाउद्दीन मोहम्मद नक्शबंदी(रह॰अ॰) पैदा होगा जो मेरी खास नेअमत से बहरावर होगा। चुनाँचे ऐसा ही हुआ (तफरीह-उल-ख़ातिर)

मनक़ूल है के जब ख़्वाजा बहाउद्दीन ने अपने मुर्शिद सय्यद अमीर कलाल से तलक़ीन ली तो उन्होंने इस्मे ज़ात के विर्द करने का हुक्म दिया लेकिन आपके दिल में इस्मे आज़म का नक्श ना जमा जिससे आपको परेशानी हुई। इसी घबराहट में जंगल की तरफ निकले। रास्ते में हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई उन्होंने आप से फरमाया के मुझे इस्मे आज़म हुज़ूर ग़ौसे पाक से मिला। आप भी उनकी तरफ मुतावज्जह हों। दूसरी रात हज़रत ख़्वाजा साहब ने ख़्वाब में हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) को देखा के आपने अपने दस्ते मुबारक से इस्मे आज़म

को ख़्वाजा साहब के दिल पर जमा दिया क्योंके हाथ की पाँच उंगलियाँ लफ़्ज़ *अल्लाह* की शक्ल पर हैं और उसी वक़्त आपको अल्लाह का दीदार हो गया और इसी सबब आपका लक़ब नक़्शबंद मशहूर हो गया। जब इस बात का लोगों में चर्चा हुआ तो उन्होंने आपसे दरयाफ़्त किया के ये क्या मामला था। आपने फरमाया ये उस मुबारक रात के फ़्यूज़ व बर्कात हैं जिसमें के हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने मुझ पर इनायत फरमाई।

आप से हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के फरमान *क़दामी हाज़िही* की निसबत दरयाफ़्त किया गया तो आप ने फरमाया के आपका क़दम मुबारक मेरी गर्दन बल्के मेरी आँखों पर है।

३-हज़रत शहाबुद्दीन सहरवरदी(रह॰अ॰)

हज़रत शेख़ शहाबुद्दीन सहरवरदी(रह॰अ॰) फरमाते हैं के जवानी में इल्मे कलाम से मुझे बड़ी दिलचस्पी थी। बहुत सरगर्मी से मैं हासिल कर रहा था। कई किताबें मुझे हिफ़्ज़ हो गई थीं और मैंने उसमें दर्जा इज्तेहाद हासिल कर लिया था। मेरे चचा शेख़ नजीबउद्दीन(रह॰अ॰) सहरवरदी मुझ को उससे बाज़ रहने की ताकीद करते थे लेकिन मैं बाज़ नहीं आता था।

एक रोज़ वो मुझे सरकार ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की बारगाह में ले गए। आसतानाऐ आलिया से जब क़रीब हुए तो कहने लगे के इस वक़्त हम एक सच्चे और हक़्क़ानी नायबे रसूल की बारगाह में बारयाब हो रहे हैं। जिसके क़ल्बे अतहर पर तजल्लियाते इलाही हर वक़्त कामिल तौर पर जलवा फ़गन रहती हैं इसलिए ज़रूरी है के मोअद्दब व होशियार हैं ताके हम फ़्यूज़ व बर्कात से महरूम न वापस हों।

यही ख़्याल व तसव्वुर लिए हुए हम बारगाहेग्रामी में हाज़िर हुए क़द्रे तवक्कुफ़ के बाद चचा मोहतरम ने अर्ज़ किया ये मेरा भतीजा इल्मे कलाम की तहसील में महू रहता है और मेरी सख़्त ताकीद के बावजूद नहीं मानता। ये सुन कर सरकार ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने अपना दस्ते मुबारक जो मेरे सीने पर रखा तो मेरे सीने से इल्मे कलाम काफ़ूर हो गया। जो कुछ मुझे याद था सब भूल गया। अपनी ये कैफ़ियत देखकर मुझे बड़ा सदमा हुआ। आपने फ़ौरन मेरी बददिली का एहसास फ़रमा लिया और मुसकुराने लगे। साअन मैं भी शाद हो गया के उसी वक़्त आपकी तवज्जह से मेरे क़ल्ब के ऊपर इल्मे लदन्नी के दरवाज़े खुल गए और इल्मो हिकमत की रोशनी चमकने लगी। इसके बाद आपने फ़रमाया के उमर अब तुम मशाहीरे ईराक़ में से हो गए। चुनाँचे ऐसा ही हुआ के हज़रत उमर सहरवर्दी(रह॰अ॰) एक जदीद सिलसिलाए मअरफ़त के बानी की हैसियत से दुनियाए इस्लाम में मशहूर हुए और अर्साए दराज़ तक बग़दाद मुक़द्दस में आपकी धूम रही। सरकार ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के बाद आप ही का बोल बाला और बकसरत अल्लाह की मख़्लूक़ आपकी जानिब राग़िब हुई। (क़लायद-उल-जवाहर)

4-हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया

फ़वाइद-उल-ख़ातिर में असरार-उल-सालकीन के हवाले से लिखा है के जब ख़्वाजा निज़ामउद्दीन औलिया मेहबूबे इलाही मक्का मुकर्रमा की तरफ़ रवाना हुए और सफ़र तय कर के बग़दाद शरीफ़ पहुँचे तो उस वक़्त हज़रत सय्यद उमर हज़रत ग़ौसे पाक(रह॰अ॰) के सज्जादा नशीन थे उन्होंने आपको बुलाने के लिए एक ख़ादिम भेजा आपने फ़रमाया के तुम्हारे शेख़ मुझे कैसे जानते

हैं? उसने कहा के वो आपको उस रोज़ से जानते हैं जब से के आप हिन्दुस्तान से चले हैं। तब आप उनके इर्शाद के मुताबिक़ तशरीफ लाए सय्यद उमर(रह०अ०) ने अपने दस्ते मुबारक से सिलसिलाए क़ादरिया की खिलाफत व इजाज़त इनायत करते हुए खिरकई पहनाया।

करामाते ग़ौसे आज़म(रह०अ०)

करामत इसबाते विलायत की सब से बड़ी रोशन दलील है। हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) की विलायत चूंके एक मुसल्लिमा हक़ीक़त है इसलिए आपकी करामात भी बरहक़ हैं। अल्लाह तआला ने अपने औलियाऐइक्राम को बड़ी बुलंद शान से नवाज़ा है इसलिए अल्लाह तआला ने आपको बे पनाह करामात भी अता फ़रमाई। करामत का इज़हार ग़ैबी ताक़त के ज़रिये होता है। अल्लाह तआला अपने वली को मुकर्रम रखने के लिए अक़्ल को हैरान करने वाला वाक़ेया अपने वली के ज़रिये ज़ाहिर करता है जो करामत कहलाती है। अल्लाह तआला ने हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) के ज़रिये बेशुमार करामात का इज़हार किया लिहाज़ा सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह०अ०) की करामात का कसरत से होने पर तमाम मोअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है।

हज़रत इमाम याफई(रह०अ०) बयान फरमाते हैं के सरकार ग़ौसे आज़म(रह०अ०) की करामात की तअदाद हद्दे शुमार से अफ़्ज़ूं हैं और अक्सर पाए तवातुर को पहुँची हुई हैं।

शेख़ अली बिन अबी नस्र-उल-हुय्यती(रह०अ०) का बयान है के मैं ने अपने ज़माने में कोई शख़्स हज़रत के शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) से बढ़ कर साहिबे करामत नहीं देखा जिस वक़्त कोई शख़्स आपकी करामात देखना चाहता देख लेता।

शेख़-उल-इस्लाम अज़ीज़उद्दीन बिन अब्दुस्सलाम (रह०अ०) का क़ौल है के शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) की करामात जिस क़द्र तवातुर से मनक़ूल हैं और किसी वली की नहीं।

इमाम नूदी(रह॰अ॰) का क़ौल है के जिस कसरत के साथ मोअतबर और सक़ह रावियों की ज़बानी सय्यदना शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की करामात हम तक पहुँची हैं और किसी वली की करामात इस तरह नहीं पहुँचीं।

शेख़ अब्दुलहक़ मोहद्दिस दहेलवी ने भी यही बात कही है के आपकी करामात रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह और बेशुमार हैं।

आपके दौर की क़रीब तरीन किताब बहुज्जतुल असरार, क़लायद-उल-जवाहर और ख़ुलासत-उल-मफ़ाख़िर हैं। इन्हीं कुतुब के हवाले से आपकी कुछ करामात और कमालात पेशे ख़िदमत किए जाते हैं।

लड़का पैदा होने की पैशनगोई ख़िज़्र-उल-हुसैनी (रह॰अ॰) से मरवी है के हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया के तुम मवस्सिल जाओगे। वहाँ तुम्हारे हाँ औलाद होगी। पहली दफ़ा लड़का होगा जिसका नाम मोहम्मद है। जब वो सात साल का होगा तो बग़दाद का एक अली नामी नाबीना शख़्स छः माह में क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ करा देगा और तुम चोरानवे साल छः माह और सात दिन की उम्र में अरहल शहर में इन्तिक़ाल करोगे और तुम्हारी समाअत, बसारत और आज़ा की क़ुव्वत उस वक़्त बिलकुल सही व तनदरूस्त होगी।

चुनाँचे ख़िज़्र-उल-हुसैनी के फरज़न्द अरजुमंद अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद ने बयान किया है के मेरे वालिद माजिद ख़िज़्र-उल-हुसैनी(रह॰अ॰) मवस्सिल शहर में आकर क़याम पज़ीर हुए और वहीं माह सफ़र-उल-मुज़फ़्फ़र 50अहि॰ में मेरी विलादत हुई। जब मैं सात बरस का हुआ तो वालिद मोहतरम ने मेरी तालीम के लिए एक जईय्यद हाफ़िज़े क़ुरआन

की तकर्रूरी फरमाई। वालिद बुजुर्गवार ने जब उनका नाम और वतन पूछा तो हाफिज़ साहब ने अपना नाम अली और अपना वतन बग़दाद शरीफ बताया। बादअज़ाँ मेरे वालिद माजिद ने फरमाया के इन वाकेयात से हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने मुझे पहले ही मतलअ फरमा दिया था। फिर 9 सफर-उल-मुज़फ्फर 625हि॰ को मेरे वालिद माजिद का चोरानवे साल छः माह और सात दिन की उम्र में इन्तिक़ाल हुआ। और आप के तमाम हवास और आज़ा बिलकुल सही थे। (बहूज्जत-उल-असरार)

मख़्फ़ी हालत का इल्म अबु अलफरह बिन इलहामी(रह॰अ॰) इब्तिदा में ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की करामात का इंकार करते थे लेकिन आपसे मुलाक़ात करने का भी शौक़ था। एक दिन अस्र के वक़्त आपके मदरसे के क़रीब से गुज़रे उस वक़्त मदरसे की मस्जिद में नमाज़े अस्र की तक्बीर कही जा रही थी और जमाअत खड़ी हो गई थी। अबु-अल-फरह को उजलत में वज़ू करना याद ना रहा और दौड़ कर जमाअत में शामिल हो गए। जब नमाज़ से फारिग़ हुए तो सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने उनसे मुख़ातिब होकर फरमाया के फरज़न्दे मन! तुम ने ग़ल्ती से नमाज़ बेवज़ू पढ़ ली है। वज़ू करके दोबारा नमाज़ अदा करो। अबु-अल-फरह हैरान रह गए और उसी दिन से आप के मोअतक़िद हो गए। (क़लायद-उल-जवाहर)

आपका अदा कर्दा नाम शेख़ अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन अबु-अल-फतह अलहरवी(रह॰अ॰) जो के हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के पहले ख़ादिम थे बयान करते हैं के हज़रत मेहबूबे सुबहानी(रह॰अ॰) मुझे मोहम्मद तवील कहकर पुकारते थे। एक दिन मैंने अर्ज़ किया के बन्दा नवाज़! मैं तो लोगों से छोटा हूँ। तो आपने इर्शाद फरमाया के तुम तवील-उल-उम्र और

तवील-उल-असफार हो। चुनाँचे जैसा हज़रत ने फरमाया उसी तरह वकूअ पज़ीर हुआ। शेख़ अबुअब्दुल्लाह मोहम्मद बिन अबु-अल-फतह अलहरवी की उम्र एक सौ सैंतीस साल हुई और उन्होंने दूरदराज़ के मुमालिक हत्ता के कोह काफ तक सैरो सियाहत की। (बहज्जत-उल-असरार)

लोगों का मुतवज्जह होना हज़रत अल्लामा अब्दुर्रहमान जामी साहब तहरीर फरमाते हैं के हज़रत गौस आज़म (रह॰अ॰) का एक मुरीद बयान करता है के मैं जुमअे के दिन हज़रत के हमराह जामअे मस्जिद को जा रहा था उस दिन किसी शख़्स ने आपकी तरफ तवज्जह ना की और ना ही सलाम किया। मैंने दिल में सोचा, ये अजीब बात है के इससे क़ब्ल हर जुमआत-उल-मुबारक को हम बड़ी मुश्किल से मिलने वाले लोगों के हुजूम की वजह से मस्जिद तक पहुँचा करते थे। दिल में ये ख़याल गुज़रने ना पाया था के आपने हंस कर मेरी तरफ देखा और लोगों ने आपको सलाम अर्ज़ करना शुरू कर दिया और इस क़द्र हुजूम हो गया के मेरे और शेख़ के दरमियान लोग हायल हो गए। फिर मैंने अपने दिल में ही कहा के वो हाल इस हाल से बेहतर था। तो हज़रत ने मेरी तरफ मुतवज्जह होकर फरमाया के ये बात तुम ने खुद ही चाही थी। तुमको मालूम नहीं के लोगों के दिल मेरे हाथ में हैं अगर चाहूं तो उनको फैर दूं और अगर चाहूं तो अपनी तरफ मुतवज्जह कर लूं। (नफ़्हात-उल-अनस)

बातिन का हाल जान लिया अबु-अल-फज़ल अहमद बिन क़ासिम बज़ाज़ का बयान है के एक दफा सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह॰अ॰) का एक ख़ादिम मेरे पास आया और कहा के हज़रत के लिए एक ऐसा नफीस कपड़ा दरकार है जिसकी क़ीमत फी गज़ एक अशर्फी हो। मैंने कपड़ा तो दे दिया लेकिन दिल में ख़याल

किया के शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) बादशाहों जैसा लिबास पहनते हैं, इतना खुयाल आना था के मैंने पाँव के तलवे में शदीद दर्द महसूस किया। ऐसा मालूम होता था के कोई सूई चुभ गई है। दर्द की शिद्दत से मैं बेहाल हो गया लेकिन वो किसी सूरत कम होता दिखाई नहीं देता था बिलआख़िर मैंने लोगो से कहा के मुझे उठाकर हज़रत की ख़िदमत में ले चलो। लोग मुझे आपकी ख़िदमत में लेकर पहुँचे तो आपने फरमाया अबु-अल-फ़ज़्ल! तू मेरी खुशपोशी पर एतराज़ करता है। खुदा की क़सम! मैं हुक्मे इलाही के बग़ैर अच्छा नहीं पहनता। लोग मुर्दों को अच्छा कफ़न देते हैं और मुझ को ये कफ़न हज़ार मौत के बाद हासिल हुआ फिर आपने अपना दस्ते मुबारक मेरे पाँऊ पर फेरा। यक लख़्त मेरा दर्द मोकूफ़ हो गया और मैं उठ कर फिरने लगा। (क़लायद-उल-जवाहर)

बादशाह की कुर्बत की ख़बर अबु-अल-हस्न हामिद-उल-हिरानी अलेख़्तीब(रह॰अ॰) फरमाते हैं के मैं एक दफा हज़रत की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुआ और अपना मुसल्ला बिछा कर आपके नज़दीक बैठ गया। आपने मेरी तरफ मुतवज्जह होकर इर्शाद फरमाया ऐ हामिद! तुम बादशाहों की बिसात (दसतरख़्वान) परे बैठोगे। तो जब मैं हर्रान वापस आया तो सुल्तान नूरउद्दीन शहीद ने मुझ को अपने पास रखने पर मजबूर किया और अपना मसाहिब बना कर नाज़िमे अवक़ाफ मुक़र्रर कर दिया तो उस वक़्त हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का वो इर्शाद मुझे याद आया। (क़लायदुलजवाहर)

इज़्ज़त और शौहरत की बशारत शेख़ अली बिन इदरीस याकूबी अपने वक़्त के सरताज उल्मा थे उनका बयान है के जब मैं पहले पहल बग़दाद आया तो किसी से जान पहचान ना थी। हज़रत शेख़ अब्दुल

क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के इल्मो फ़ज़्ल की शौहरत सुन कर आपके मदरसे में आया और बाहर बैठ गया। आपने अपने साहबज़ादे शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़(रह॰अ॰) से बाआवाज़े बुलंद फरमाया अब्दुर्रज़्ज़ाक़! बाहर जाकर देखो कौन आया है? वो बाहर आए और मुझे देखकर अन्दर चले गए और हज़रत को बताया के एक नोजवान बाहर बैठा है। आपने फरमाया के "ये नोजवान साहिबे इल्मो फ़ज़्ल होगा। और इज़्ज़त व नामवरी के तख़्त पर बैठेगा उसे अन्दर ले आओ।"

चुनाँचे शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़(रह॰अ॰) मुझे आपकी ख़िदमत में ले गए। आपने मुझे देखकर फरमाया अली! यहाँ बैठो। फिर आपने मुझे खाना खिलाया और फरमाया। लोग तुम से नफा उठायेंगे और वो ज़माना क़रीब है के उनको तेरी ज़रूरत होगी। अल्लाह तआला तुझे इज़्ज़त और शौहरत अता करेगा।"

इस वाक़ये के बाद अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्लो करम से मुझे नवाज़ा और मैं मुख़्तलिफ उलूम व फ़िनून में माहिर होकर शौहरत और इज़्ज़त की इन्तिहाई बुलंदियों पर पहुँचा और हमेशा सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) को याद करता रहा। (बहुज्जत-उल-असरार)

दिल की बात का इल्म शेख़ अबु-अल-बक़ा अलअक्बरी(रह॰अ॰) फरमाते हैं के एक रोज़ मैं हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की मजलिसे वअज़ के क़रीब से गुज़र रहा था के मेरे दिल में ख़याल आया के इस अजमी का कलाम सुनते चलें। इससे पहले मुझे आपका वअज़ सुनने का इत्तिफाक़ नहीं हुआ था। जब आपकी मजलिस में हाज़िर हुआ तो आप वअज़ फरमा रहे थे। आपने अपना कलाम छोड़ कर फरमाया ऐ आँख और दिल के अंधे! इस अजमी का कलाम सुनकर क्या करेगा। आपका ये फरमान सुनकर

मुझ से ज़ब्त ना हो सका और आपके मिंबर के क़रीब जाकर अर्ज़ किया के मुझे खुरक़ह पहनाएं। चुनांचे आपने खुरक़अ पहनाया और फरमाया के अगर अल्लाह तआला तुम्हारी आक़्बत की मुझे इत्तिलअ ना फरमाता तो तुम गुनाहों की वजह से हलाक हो जाते। (क़लायद-उल-जवाहर)

ख़्यानत करने से बचा लिया शेख़ अबुबकर तमयती का बयान है के एक दफा मैं हज की नीयत से मक्का मोअज़्ज़मा जा रहा था, रास्ते में एक जीलानी मुसाफिर का साथ हो गया। असनाए सफर वो शख़्स सख़्त बीमार हो गया हत्ता के उसे अपने मरने का पूरा यक़ीन हो गया। चुनांचे उसने मुझे दस दीनार, एक चादर, और एक कपड़ा दिया और वसीयत की के जब बग़दाद वापस जाओ तो ये चीज़ें शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ख़िदमत में पेश कर देना और उनसे दरख़्वास्त करना के मेरे लिए दुआए मग़फिरत करें। उसके बाद वो फोत हो गया।

हज के बाद में बग़दाद वापस आया तो मेरी नीयत बदल गई और मैंने उस मरहूम शख़्स की अमानत अपने पास ही रख ली। एक दिन कहीं जा रहा था के सरे राह शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) से मुलाक़ात हो गई। मैंने आपसे मुसाफह किया तो आपने मेरा हाथ पकड़ कर ज़ोर से दबाया और फरमाया अबुबकर! तुम दस दीनार की ख़ातिर ख़ौफ खुदा से आरी हो गए।

आपका ये इर्शाद सुनकर मुझ पर लर्ज़ा तारी हो गया और मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। जब होश आया तो दौड़ा हुआ घर गया और उस जीलानी की अमानत को सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की ख़िदमत में पेश कर दी। (बहुज्जत-उल-असरार)

लड़के की विलादत की ख़बर हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के साहबज़ादे सय्यदना

अब्दुलवहाब(रह॰अ॰) फरमाते हैं के एक दफा हज़रत गौसे आज़म(रह॰अ॰) सख़्त अलील हो गए और हम उनके इर्दगिर्द आबदीदा होकर बैठे हुए थे। तो आपने फरमाया अभी मुझे मौत नहीं आएगी। मेरी पुश्त में याहिया नामी लड़का है जिसकी ज़रूर पैदाईश होगी। सो आपके फरमान के मुताबिक़ साहबज़ादे की विलादत हुई। तो आपने उसका नाम याहिया रखा। फिर आप अर्से दराज़ तक ज़िन्दा रहे। (क़लायद-उल-जवाहर)

खजूरों की ख़्वाहिश शेख़ अबु-अल-मुज़फ्फर शम्सुद्दीन यूसुफ बिन क़ज़अली-अल-तुर्की सिब्त इब्ने अलजोज़ी(रह॰अ॰) फरमाते हैं के एक मुज़फ्फ़र नामी बुज़ुर्ग जो अहले अलजरमिया में से थे उन्होंने मुझ से बयान फरमाया के गर्मियों के दिनों में मैं आप के मदरसे की छत पर गया और वहाँ एक तरफ कमरा था जिसमें आप तशरीफ फरमा थे। आपके कमरे में एक छोटा दरीचा था। जब मैं उस कमरे में हाज़िर हुआ तो मेरे दिल में ये ख़्वाहिश पैदा हुई के खजूर के चार पाँच दाने मिलें तो मैं खाऊं। ये ख़्वाहिश दिल में पैदा हुई ही थी के आपने अलमारी का दरवाज़ा खोला और उससे खजूर के पाँच दाने निकाल कर इनायत फरमाए। (क़लायद-उल-जवाहर)

हर मोज़अ पर तक़रीर शेख़ अबु-अल-हसन साअद-उल-ख़ैरें का बयान है के मैं 529हि॰ में एक दफा शेख़ महीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की मजलिस में हाज़िर हुआ और सब लोगों के पीछे बैठ गया उस वक़्त आप ज़ुहेद के मोज़ू पर तक़रीर फरमा रहे थे। मेरे दिल में ख़्वाहिश पैदा हुई के आप माअरफ़त का मज़मून बयान करें। आपने यकायक ज़ुहेद का मोज़ू छोड़ कर माअरफ़त के मोज़ू पर तक़रीर शुरू कर दी। फिर मैंने चाहा के आप शौक़ के मोज़ू पर कलाम फरमाएँ। आपने

फ़ौरन शौक़ के मोज़ू पर तक़रीर शुरू कर दी। अब मैंने चाहा आप फ़ना व बक़ा के मसअले की वज़ाहत करें। आपने फ़ना व बक़ा का मसअला बयान करना शुरू कर दिया फिर मेरा दिल ग़ीबत व हुज़ूर के मोज़ू पर आपके इर्शादात सुनने के लिए बेताब हुआ। आपने उसी मोज़ू पर एक सेर हासिल तक़रीर फ़रमा दी। फिर बाआवाज़े बुलंद "अबू-अल-हसन! तुम्हें यही काफ़ी है।"

मैं फ़र्ते हैरत से दम बखुद हो गया और फिर आलमे बेखुदी में अपने कपड़े फाड़ डाले। (बहुज्जत-उल-असरार)

मौत की पैश्तर इत्तिला आपका एक शागिर्द इल्मे फ़िक़ह में निहायत ग़बी और कुन्द ज़हेन था लेकिन आप उसके साथे बहुत मेहनत करते। आपके एक अक़ीदतमंद इब्ने सम्हल ने एक दिन कहा "सय्यदी! आप ऐसे कुन्द ज़ेहन तालिबे इल्म पर ऐसी मेहनत फ़रमाते हैं?" आपने फ़रमाया के एक हफ़्ता बाद ये मेहनत ख़त्म हो जाएगी। इब्ने सम्हल कहते हैं के जब सातवाँ दिन आया तो वो तालिबे इल्म यकायक बीमार हो गया और शाम से पहले ही फ़ौत हो गया। (बहुज्जत-उल-असरार)

भूक अल्लाह का ख़ज़ाना है शेख़ अबु मोहम्मद अलजोनी(रह॰अ॰) बयान करते हैं के एक दफ़ा मुझ पर बड़ी तंग दस्ती के दिन आए और मेरे अहलो अयाल फ़ाक़े पर फ़ाक़ेह कर रहे थे। उसी हालत में मैं सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने मुझे देखते ही फ़रमाया "जोनी! भूक अल्लाह तआला का एक ख़ज़ाना है जिसे वो दोस्त रखता है उसी को अता फ़रमाता है। जब बन्दा तीन रोज़ तक कुछ नहीं खाता तो अल्लाह तआला फ़रमाता है के ऐ मेरे बन्दे! तूने अब तक मेरे लिए फ़िक्रो फ़ाक़ा इख़्तियार किया है। मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम! मैं तुझे खुद खिलाऊँगा।"

हज़रत के इर्शादात सुनकर मैं मबहूत हो गया। फिर फ़रमाया के जो शख़्स अपनी मुसीबत को पौशीदा रखता है अल्लाह तआला उसे दुगना अज्र देता है। ऐ जोनी! फ़िक्र को छुपाने ही में बहेतरी है। फिर आपने पौशीदा तौर पर कुछ दिया और उसे मख़्फ़ी रखने की ताकीद फ़रमाई। (क़लायद-उल-जवाहर)

शेख़ अहमद रफ़ाई(रह॰अ॰) की ज़ियारत का ख़याल शेख़ मोहम्मद इब्नुल खिज़्र(रह॰अ॰) फ़रमाते हैं के मैंने अपने वालिद माजिद से सुना के उन्होंने बयान फ़रमाया के मैं एक मर्तबा हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की ख़िदमते अक़्दस में था के दफ़्अतन शेख़ अहमद रफ़ाई(रह॰अ॰) की ज़ियारत का दिल में ख़याल आया। तो आपने फ़रमाया ऐ खिज़्र! लो शेख़ अहमद की ज़ियारत कर लो। मैंने आपकी आसतीन की तरफ नज़र उठा कर देखा तो मुझे एक ज़ी वक़ार बुज़ुर्ग नज़र आए। मैंने उठकर उनको सलाम अर्ज़ किया और उनसे मुसाफ़ह किया तो शेख़ अहमद रफ़ाई(रह॰अ॰) ने मुझे फ़रमाया ऐ खिज़्र! जो शख़्स शहनशाहे औलिया अल्लाह शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो उसको मेरी ज़ियारत करने की क्या आरज़ू। और मैं भी हज़रत की ही रूईय्यत से हूँ। ये फ़रमा कर वो मेरी नज़रों से ग़ायब हो गए।

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के बाद जब शेख़ अहमद रफ़ाई(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो बिलकुल वही शक्लो सूरत थी जिसको मैंने बग़दाद शरीफ़ में आपकी आसतीन में देखा था। हाज़िर होने पर शेख़ अहमद रफ़ाई(रह॰अ॰) ने मुझे इर्शाद फ़रमाया के क्या तुम को मेरी पहली मुलाक़ात काफ़ी नहीं हुई। (क़लायद-उल-जवाहर)

छत गिरने की इत्तिला मोहर्रम 559हि॰ में एक दिन सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) अपने मेहमान ख़ाने में तशरीफ फरमा थे। तीन सौ के क़रीब लोग भी आप की ख़िदमत में हाज़िर थे। यकायक आप उठ कर मेहमान ख़ाने से बाहर तशरीफ ले गए और तमाम लोगों को बाहर आने के लिए कहा। सब लोग दौड़ कर बाहर आए उनका बाहर आना था के उस मकान की छत धड़ाम से गिर पड़ी। आपने फरमाया मैं बैठा हुआ था के मुझे ग़ैब से इत्तिला दी गई के इस मकान की छत गिरने वाली है चुनाँचे मैं बाहर आ गया और आप लोगों को भी अपने पास बुला लिया के कोई दब ना जाए। (क़लायद-उल-जवाहर)

मख़्फी हालात से बाख़बरी शेख़ ज़ेनउद्दीन अबु-अल-हसन मिसरी(रह॰अ॰) का बयान है के मैं अपने दोस्त के हमराह हज करके बग़दाद आया। हमारे पास सिवाए एक छुरी के कुछ ना था उसे फरोख़्त कर के चावल ख़रीदे और पका कर खाए लेकिन शिकम सेर ना हुए। उसके बाद शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की मजलिस में हाज़िर हुए। आपने हमें देखकर ख़ादिम से फरमाया के चन्द फुक़रअ हिजाज़ से आए हैं। उनके पास एक छुरी के सिवा कुछ ना था। ग़रीबों ने उसे फरोख़्त करके चावल खाए लेकिन उनका पेट नहीं भरा। उनके लिए खाना लाओ। हम हज़रत की गुफ़्तगू सुन कर हैरान हुए। ख़ादिम खाना लाने गया तो मेरे दिल में शहद खाने की ख़्वाहिश पैदा हुई और मेरे रफीक़ को खीर की इश्तेहा पैदा हुई। इतने में ख़ादिम दो तबाक़ लाया। एक में खीर थी और दूसरे में शहद। ख़ादिम ने खीर वाला तबाक़ मेरे सामने रख दिया और शहद वाला मेरे दोस्त के सामने। आपने फरमाया नहीं नहीं शहद का तबाक़ ज़ेनउद्दीन के सामने रखो और खीर का उसके हमराही के सामने। मैं अब

वे इख़्तियार हो गया और आपके क़दमों पर गिर पड़ा। आपने फरमाया मरहबा वअज़े मिस्र! मैंने अर्ज़ की हुज़ूर ये आप क्या फरमाते हैं। मुझे तो अलहम्द शरीफ पढ़ने का भी सलीक़ा नहीं। आपने फरमाया के नहीं मुझे ऐसा कहने का हुक्म हुआ है।

फिर मैंने आपकी शार्गिदी इख़्तियार की और साल भर आपकी ख़िदमत में रहकर मुख़्तलिफ़ उलूम व फ़िनून में दर्जाए कमाल हासिल किया। फिर आपकी इजाज़त से बग़दाद में वअज़ कहना शुरू किया। कुछ अर्से बाद मैंने आपसे मिस्र जाने की इजाज़त तलब की। आपने इजाज़त मरहमत फरमाई और मुझे हिदायत की के दमिश्क़ पहुँचने पर तुम्हें तुर्की फौज मिलेगी जो मिस्र पर हमला करने की ग़र्ज़ से जा रही होगी। उसके जरनेल से मिलकर कह देना के इस साल मिस्र मत जाओ। वरना नाकाम हो जाओगे अल्बत्ता अगले साल आओगे तो कामयाबी तुम्हारे क़दम चूमेगी।

चुनाँचे जब मैं दमिश्क़ पहुँचा तो मुझे तुर्की फौज मिली। मैंने उसके सिपह सालार से मिलकर कहा के इस साल तुम कामयाब नहीं हो सकते। अगले साल आना। लेकिन सिपह सालार मुसिर रहा के हम इसी साल मिस्र पर हमला करेंगे। मैं तुर्की फौज को वहीं छोड़ कर मिस्र पहुँचा वहाँ ख़लीफाऐ मिस्र तुर्कों के मुक़ाबले के लिए तैयारी में मसरूफ था। मैंने उससे कहा के इंशाअल्लाह तुर्की फौज शिकस्त खाएगी और तुम फतहयाब होगे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ। जब तुर्की फौज शिकस्त खाकर मिस्र से चली गई। तो ख़लीफाऐ मिस्र ने मेरी बेहद क़द्र अफ़्ज़ाई की। दूसरे साल तुर्कों ने फिर मिस्र पर हमला किया और इस दफा वो कामयाब हो गए। मिस्र पर क़ाबिज़ होकर उन्होंने भी मेरी बहुत इज़्ज़त की। इस तरह दोनों सल्तनतों की जानिब से

मुझे डेढ़ लाख दीनार वसूल हो गए और ये सब सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की बर्कत से हुआ। मिस्र में मेरे मवअज़ व खुत्बात ने भी बहुत शौहरत हासिल की और मैं हज़रत के इर्शाद के मुताबिक़ वअज़े मिस्र के लक़ब से पुकारा गया। (खुलासत-उल-मफाखिर)

पैशगोई दुरूस्त निकली शेख़ अबु साअद अब्दुल्लाह तमयती शाफअई(रह॰अ॰) का बयान है के मैंने जवानी में तलबे इल्म के लिए बग़दाद का सफर किया। मदरसा निज़ामिया में इब्ने अलसक़अ और मैं इकट्ठे पढ़ते थे। हम दोनों मिलकर इबादते इलाही में बड़ी कोशिश करते और नेक लोगों की ज़ियारतें करते। उन्हीं दिनों बग़दाद में एक ऐसे आदमी का शोहरा था जिसके बारे में मशहूर था के वो ग़ौसे वक़्त है। जब चाहता है ज़ाहिर हो जाता है और जब चाहता है छुप जाता है। शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी इब्ने अलसक़आ और मैंने इरादा किया के उसकी ज़ियारत करें। उन दिनों शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) नोजवान थे। रास्ते में इब्ने अलसक़अ ने कहा के मैं तो उससे एक ऐसा मसअला पूछूंगा और देखूंगा के उस बारे में वो क्या कहता है। शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी बोले मआज़अल्लाह! मैं उससे कुछ पूछूं। मैं तो उसकी ज़ियारत का शरफ हासिल करूंगा. हम वहाँ पहुंचे तो वो मौजूद ना था। थोड़ी देर बाद हम ने देखा के वो वहाँ बैठा हुआ है। इब्ने अलसक़अ की तरफ रूख़ कर के उसने कहा ऐ इब्ने अलसक़अ! तेरे लिए ख़राबी हो तू मुझ से ऐसा मसअला पूछेगा जिसका जवाब मुझे मालूम नहीं। ले सुन! तेरा मसअला ये है और उसका जवाब ये है। मैं देख रहा हूं के तेरे अन्दर कुफ्र की आग भड़क रही है। फिर मेरी तरफ निगाह उठाई और कहा ऐ अबु अब्दुल्लाह! तू मुझ से एक मसअला पूछेगा फिर देखेगा के मैं इसके बारे में

क्या कहता हूं। तुम्हारा मसअला ये है और इसका जवाब ये। अपनी बे अदबी की वजह से तू दुनिया में कानों को लो तक धंस जाएगा। फिर शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) की तरफ देखा, उन्हें क़रीब बुलाया और इज़्ज़त दी फिर कहा अब्दुल क़ादिर! अपने अदब की वजह से तूने अल्लाह और उसके रसूल(स॰अ॰स॰) को राज़ी किया है। मैं देख रहा हूं के तू बग़दाद में कुर्सी पर बैठ कर लोगों को वअज़ व नसीहत कर रहा है और उस वक़्त तूने कहा है के "मेरा क़दम हर वली की गर्दन है।" और मैं देख रहा हूं के अपने वक़्त के तमाम औलिया ने तेरी अज़मत के सामने अपनी अपनी गर्दनें झुका ली हैं। ये कहकर वो ग़ायब हो गया और फिर हम ने उसे कभी ना देखा।

रावी का बयान है के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के बारगाहे खुदावंदी में कुर्ब और मक़बूलियत की निशानियाँ ज़ाहिर हुईं और ख़ास व आम सब लोगों ने उस पर इत्तिफाक़ किया। वो वक़्त भी आ गया जब आपने फरमाया *क़दामी हाज़िही अला रक़ाबती कुल्ली वलीय्यिल्लाह* और उस दौर के औलिया ने आपकी इस फज़ीलत का इक़रार भी कर लिया। अब इब्ने अलसक़अ का क़िस्सा सुनिये। उसने उलूमे शरअया में कमाल हासिल किया और अपने ज़माने के बेश्तर उल्मा पर उसने फज़ीलत हासिल कर ली। थोड़े दिनों में उसकी शोहरत फैल गई के तमाम उलूम में उससे कोई मुनाज़रा नहीं कर सकता। वो फसीहुललिसान और अच्छे अतवार का मालिक था। चुनांचे ख़लीफाऐ वक़्त ने उसे अपने मुक़र्रबीन में दाखिल किया और कुछ अर्से बाद बाशाहे रोम की तरफ उसे अपना सफीर बना कर भेजा, अपनी फसाहत, मुख़्तलिफ उलूम में महारत, और अक़्लमंदी के बाअस बादशाहे रोम के दिल में उसने घर कर लिया।

बादशाह ने नसरानी उल्मा और वअज़ीन को बुलवा कर इब्ने अलसका का उनसे मुनाज़रा कराया मगर उसने उन तमाम को लाजवाब और आजिज़ कर दिया। उस बात से बादशाह की निगाह में उसकी क़द्रो मंज़िलत और भी बढ़ गई।

उसी दौरान में अचानक बादशाह की लड़की पर उसकी नज़र पड़ गई तो उसे दिल दे बैठा। उसने बादशाह से ख़्वाहिश ज़ाहिर की के ये लड़की वो उसकी निकाह में दे दे बादशाह ने कहा के ये इस शर्त पर हो सकता है के तुम नसरानी मज़हब इख़्तियार कर लो। दिल के हाथों मजबूर होकर इब्ने अलसक़अ ने नसरानी मज़हब क़बूल कर लिया और उस लड़की से शादी कर ली। उस वक़्त उसे ग़ौस की बात याद आई और ख़याल आया के ये सारी मुसीबत उसकी बे अदबी की वजह से नाज़िल हुई है।

रहा मैं (रावी) सो मैं दमिश्क़ में आया तो सुल्तान नूरुद्दीन शहीद ने मुझे बुला कर ज़बरदस्ती विज़ारते अवक़ाफ का मुनतज़िम बना दिया। दुनिया मुझ पर ग़ल्बा करने लगी और मैं उसमें गिल गिल धंस गया। अलग़र्ज़ ग़ौस का फरमान हम में से हर एक के लिए सच्चा साबित हुआ। (खुलासात-उल-मफाख़िर)

दुआ के ज़रिये मुरीद की इस्लाह शेख़ अबु-अल-ग़नायम शरीफ हुसैनी दमिश्क़ी का बयान है के एक दफा हमारे हज़रत सय्यदी अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह॰अ॰) का एक ख़ादिम एक ही रात में सत्तर बार बदख़्वाबी का शिकार हुआ। वो अपने आपको ख़्वाब में हर बार एक नई औरत से सोहबत करते देखता उनमें से बाज़ औरतों को पहचानता था और बाज़ उसकी नावाक़िफ थीं। सुबह उठा तो हज़रत शेख़ की ख़िदमत में आया ताके आप से रात वाले वाक़ये की शिकायत करे। उसके कुछ

बोलने से पहले आपने फरमाया के रात वाले वाक़ये से परेशान ना हो। मैंने लोहे महफ़ूज़ में तेरे नाम की तरफ देखा तो उसमें पाया के तू फलाँ फलाँ सत्तर औरतों से ज़िना का अरतकाब करेगा। आपने उन औरतों के नाम और सिफात भी उसे बताए जिनमें से बअज़ को वो जानता था और बअज़ उसके लिए नावाक़िफ थीं। चुनाँचे मैंने अल्लाह तआला से सवाल किया तो उसने बेदारी से ये अम्र ख़्वाब में मुनतक़िल कर दिया। (खुलासात-उल-मफाख़िर)

बीमार लड़के का तनदुरूस्त होना शेख़ अबु-अल-हसन अलक़ुरशी(रह०अ०) फरमाते हैं के 559हि० का वाक़ेया है के मुनकरीन की एक बहुत बड़ी जमाअत दो टोकरे जिनका मुंह बंद किया हुआ था, लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुई और आप से पूछा के आप बतायें के इनमें क्या चीज़ है? आपने एक टोकरे पर दस्ते मुबारक रख कर फरमाया के इसमें एक बच्चा है जो अपाहज है। ख़िज़्र ने अपने साहज़ादे अब्दुर्रज़्ज़ाक़(रह०अ०) को हुक्म फरमाया के उस टोकरे का मुंह खोलो। खोला गया तो उसमें, अपाहज बच्चा था। आपने अपने दस्ते मुबारक से उसको उठा कर फरमाया के अल्लाह के हुक्म से उठ खड़ा हो तो वो फौरन खड़ा हो गया। फिर आपने दूसरे टोकरे पर हाथ मुबारक रख कर फरमाया इसमें सहेतमंद और बिलकुल सही बच्चा है उस टोकरे का मुंह खोल कर बच्चा को हुक्म फरमया के बाहर निकल कर बैठ जा। तो वो हस्बे इर्शाद बाहर निकल कर बैठ गया। उस पर वो तमाम मुनकरीन तायब हो गए। (नफ़्हात-उल-अनस)

बलग़मी मर्ज़ से दायमी निजात शेख़ अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन अबी-अल-फतह हरवी का बयान है के 540हि० में मैं सय्यदना ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में बैठा था के मुझे छींक आई और बलग़म मुंह से निकल

पड़ी। मुझे शर्म महसूस हुई के शायद हज़रत को कराहत महसूस हुई हो। मैं शर्म से सर झुकाए हुए था के आपने फरमाया, मोहम्मद! कोई मुज़ाएक़ा नहीं आज के बाद ना थूक और बलग़म होगा और ना रींठ। इस वाक़ये के बाद शेख़ मोहम्मद(रह॰अ॰) मुद्दते मदीद तक ज़िन्दा रहे पूरे एक सौ सेंतीस बरस की उम्र पाई लेकिन उस दिन के बाद ना कभी थूक निकला और ना रेंज़िश आई। (क़लायद-उल-जवाहर)

मफ्लूज बच्चे का तनदुरूस्त होना शेख़ अबु-अल-हसन हुब्यती(रह॰अ॰) फरमाते हैं के एक मर्तबा मैं सरकार ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के मदरसे में हाज़िर था। एक मालदार ताजिर अबु ग़ालिब फ़ज़्लउल्लाह बिन इसमाईल बग़दादी अज़जई बारयाब हुआ और बसदे अदब अर्ज़ किया के हुज़ूर आपके जद्दे करीम अलेहिस्सलातो वसलाम का फरमान है के "जब कोई शख़्स दअवत पेश करे तो क़बूल कर लेनी चाहिए।" ख़ादिम आपकी ख़िदमत में अर्ज़ गुज़ार है के मेरी दअवत क़बूल फरमा लीजिए। आपने फरमाया अगर मुझ को इजाज़त मिल गई तो ज़रूर शरीक होंगा। उसके बाद थोड़ी देर आपने मुराक़्बे में सर को झुका लिया। फिर सर मुबारक उठा कर फरमाया मुझे इजाज़त मिल गई अब मैं ज़रूर आऊँगा। मुतमईन रहो। वक़्त मोय्यना पर आप अपनी सवारी पर सवार होकर रवाना हुए। शेख़ अली बिन हुब्यती ने आपकी दायें रकाब थामी और अबु-अल-हसन ने बायें रकाब पकड़ी और ताजिर के मकान पर पहुँच गए वहाँ उल्मा व मशायखइक्राम की एक बड़ी जमाअत पहले से मौजूद थी। दस्तरख़्वान बिछाया गया और तरह तरह के खाने चुने गए। फिर एक बड़ा सा टोकरा जिसके ऊपर चादर पड़ी थी, दो शख़्स उठाए हुए लाए और दस्तरख़्वान के एक किनारे पर रख दिया उसके

बाद दाअई ने कहा बिस्मिल्लाह कीजिए। लेकिन सरकार गौ़से आज़म(रह॰अ॰) हनूज़ मुराक़्बे में सर झुकाए हुए बैठे थे। आपने खाना शुरू नहीं फरमाया इसलिए किसी को भी जुर्रात ना हो सकी।

चन्द लम्हे के बाद आपने अपने दोनों मोहत्रम रूफ़क़अ को हुक्म दिया के इस टोकरे को खोलो। हुक्म आली के मुताबिक़ दोनों ने मिलकर उस टोकरे को खोला और आपके सामने लाकर रख दिया। उसमें से एक मादरज़ाद मफ्लूज व मख्दूम बच्चा निकला। ये बच्चा अबु ग़ालिब सौदागर ही का था। सरकार गौ़से आज़म(रह॰अ॰) ने ये देखते ही फरमाया। अल्लाह हय्यी व क़य्यूम के हुक्म से तनदुरूस्त होकर खड़े हो जाओ। ये फरमाते ही वो बच्चा बिलकुल सही व सलामत और तनदुरूस्त होकर खड़ा हो गया। और ऐसा मालूम होता था के जैसे ये बच्चा कभी बीमार ही नहीं था। (बहुज्जत-उल-असरार, क़लायद-उल-जवाहर)

मर्ज़ इसतसक़अ से शिफा एक मर्तबा खलीफा अलमुसतंजिद बिल्लाह के अज़ीज़ों में से एक मरीज़ मर्ज़ इसतसक़अ में मुबतला आपकी ख़िदमत में लाया गया। उसका पेट मर्ज़ इसतसक़अ की वजह से बहुत बढ़ गया था आपने उसके पेट पर अपना हाथ मुबारक फैरा तो उसका पेट बिलकुल छोटा हो गया गोया के वो कभी बीमार था ही नहीं। (बहुज्जत-उल-असरार)

जिन्नात की फरमाँबरदारी अबु सईद अब्दुल्लाह बग़दादी(रह॰अ॰) बयान करते हैं, के 537हि॰ में मेरी एक लड़की फातिमा छत पर चढ़ी और वहीं से ग़ायब हो गई। चुनाँचे मैंने हज़रत शेख़ से इस हादसे का ज़िक्र किया। आपने फरमाया के तुम कुर्ख़ के वीरानों में पाँचवें टीले के नीचे जाकर ज़मीन पर एक ख़त खींच कर एक दायरा बना लो और बिस्मिल्लाह पढ़ कर नीयत कर लो के दे

दायरा मैं अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) की तरफ से क़ायम कर रहा हूं। उसके बाद रात को तुम्हारे पास मुख़्तलिफ सूरतों में जिन्नात की एक जमाअत आएगी लेकिन तुम ख़ौफज़दा ना होना। फिर सुबह के क़रीब एक लश्कर के हमराह उनका बादशा गुज़रेगा और तुम से सवाल करेगा के तुम्हारी क्या हाजत है? तुम कहना के शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है इसके बाद अपनी लड़की के ग़ायब होने का वाक़ेया बयान कर देना।

चुनाँचे जब मैंने हज़रत शेख़ के हुक्म पर अमल किया तो पहले मेरे क़रीब से भयानक सूरतों में कुछ लोग गुज़रे लेकिन उनमें से ना तो कोई मेरे क़रीब आया ना मेरे दायरे में दाख़िल हुआ। उनके गुज़र जाने के बाद घोड़े पर सवार बादशाह आया। उसके साथ बहुत बड़ा लश्कर था। फिर उसने दायरे के क़रीब खड़े होकर मेरी हाजत दरयाफ़्त की। मैंने बताया के मुझ को हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) ने तुम्हारे पास भेजा है।

ये सुनते ही वो घोड़े से उतरा और साथियों के साथ दायरे से बाहर बैठ गया और उसके दरयाफ़्त करने पर जब मैंने अपना मक़सद बयान किया तो उसने अपने तमाम साथियों से पूछा के इनकी लड़की को कौन उठा के ले गया था। बहुत से जिनों ने अपनी ला इल्मी का इज़हार किया। उसके बाद एक सरकश जिन्न उस लड़की को अपने हमरा लिए हाज़िर हुआ जो चीन का बाशिंदा था। जिनों के बादशाह ने पूछा के ये लड़की जो एक क़ुत्बे दारों की निगरानी में है इसे क्यों उठा कर ले आया था? उस पर उसने जवाब दिया के मेरे दिल में उसकी मोहब्बत ने घर कर लिया था। ये सुनते ही बादशाह ने उसको क़त्ल करवा दिया और मेरी लड़की मेरे हवाले कर दी। ये वाक़ेया देख कर मैंने बादशाह से कहा के आज जिस क़द्र मैंने तुझ

को हज़रत शेख़ के हुक्म का पाबंद पाया कभी किसी दूसरे को नहीं देखा। ये सुन कर उसने कहा के ख़िला शुबह हज़रत शेख़ दूर दराज़ के मुक़ामात तक सरकशों की निगरानी करते रहते हैं और तमाम सरकश आपके ख़ौफ से अपने ठिकानों में मुंह छिपाए फिरते हैं क्योंके जब अल्लाह तआला किसी को कुतबीयत अता फरमाता है तो तमाम इन्स व जिन्न पर उसको दसतरस भी दे देता है। (कलायद-उल-जवाहर)

एक औरत की जिन्न से रिहाई असफहान में से एक शख़्स सय्यद अब्दुल क़ादिर (रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की के मेरी बीवी को मिर्गी का मर्ज़ है। आमिल और झाड़ फूंक करने वाले आजिज़ आ गए हैं। हज़रत शेख़ ने फरमाया ये वादी सरांदीप के सरकश जिनों में एक जिन्न है और उसका नाम ख़ानिस है। जिस वक़्त तेरी बीवी को मिर्गी का दौरा पड़े उसके कान में कहना, ऐ ख़ानिस! सय्यद अब्दुल क़ादिर बग़दादी (रह॰अ॰) का हुक्म है के तुम फिर यहाँ मत आना। वरना हलाक हो जाओगे। वो शख़्स चला गया और दस बरस ग़ायब रहा जब वापस आया तो हम ने उससे हाल पूछा। उसने बताया के मैंने जूंही हज़रत शेख़ का पैग़ाम उसे पहुँचाया। मिर्गी के दौरे ख़त्म हो गए। और दौबारा कभी नहीं हुए अमलियात के बाज़ माहिरीन का कहना है के हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर (रह॰अ॰) की ज़िन्दगी में चालीस बरस तक बग़दाद में किसी को मिर्गी की तकलीफ नहीं हुई। आपके विसाल के बाद बग़दाद में मिर्गी की तकलीफ शुरू हुई (ख़ुलासात-उल-मफाख़िर)

जिन्नात की आपसे अक़ीदतमंदी शेख़ अबु ज़करिया बिन अबी नस्र बग़दादी (रह॰अ॰) का बयान है के मेरे वालिद एक माहिर आमिल थे। एक दफा उन्होंने अपने

अमल के ज़ोर से जिन्नात को बुलाया। लेकिन खिलाफे मामूल वो बहुत देर के बाद आए और आते ही कहने लगे ऐ शेख़ जब सय्यदना ग़ौस-उल-सिक़लैन(रह॰अ॰) वअज़ फ़रमा रहे हों हमें ना बुलाया करो। मेरे वालिद ने पूछा क्यों? कहने लगे हम उनकी मजलिस में हाज़िर होकर आपके मुवअज़े हस्ना से मुसतफ़ीद होते हैं। वहाँ आदमियों से ज़्यादा हमारी तादाद होती है। हम में से हज़ारों ने उनसे हिदायत पाई है और आपके हाथ पर बैअत की है। (क़लायद-उल-जवाहर)

एक जिन्न का असदहा की सूरत में आना

हज़रत शेख़ के साहबज़ादे हज़रत अब्दुर्रज़्ज़ाक़(रह॰अ॰) बयान फ़रमाते हैं के मेरे वालिद ने अपना एक वाक़ेया इस तरह बयान किया के एक मर्तबा रात को मैं जामेआ मनसूरा में नमाज़ पढ़ रहा था के मुझे चटाई पर रेंगती हुई कोई शै महसूस हुई और यकायक एक बड़ा असदहा मुँह खोले हुए सिज्देगाह के सामने आ गया और मैंने सज्दा करते वक़्त इसे हाथ से हटाया लेकिन जब मैं क़ायदे बैठा तो मेरे घुटनों पर आ गया और फिर गर्दन से लिपट गया लेकिन मैंने सलाम फेरा तो वो ग़ायब हो गया।

दूसरे दिन जब मैं जामअे मस्जिद के एक वीरान गोशे में पहुँचा तो देखा के एक शख़्स आँखें फाड़े खड़ा है। उसकी आँखें आम आँखों की निसबत तिघाई में हैं। चुनाँचे मैं समझ गया के यक़ीनन ये कोई जिन्न है। तब उसने मुझ से कहा के मैं ही बशक्ल असदहा कल शब दौराने नमाज़ आपको दिखाई दिया था। इसी तरह मैं अक्सर औलिया की आज़माईश कर चुका हूँ लेकिन जो साबित क़दमी आपमें पाई वो किसी में नहीं देखी। बअज़ औलिया ज़ाहिर में बअज़ बातिन में ख़ौफ़ज़दा हो गए, बअज़ पर ज़ाहिर व बातिन में इज़्तराब पैदा हो गया मगर आप न तो ज़ाहिरी

एतबार से खायफ हुए और ना बातिनी तौर पर उसके बाद वो मेरे हाथ पर तायब हुआ और मैं ने तौबा के बाद उसे बैअत कर लिया। (कलायद-उल-जवाहर)

माफी-उल-ज़मीर ज़ाहिर कर दिया शेख़ बदीअउद्दीन अबु-अल-कासिम का बयान है के एक दफा मैं मसनद इमाम अहमद बिन हंबल(रह॰अ॰) का एक नुसख़ा खरीदने बाज़ार गया। यहाँ हर शख़्स को शेख़ अब्दुल कादिर(रह॰अ॰) के इल्मो फ़ज़्ल और करामात की तारीफ में रतब-उल-लिसान पाया। मैंने इरादा कर लिया के मैं भी आपकी खिदमत में जाऊँगा अगर वो फी-अल-वाक़ुअे साहिबे बातिन हुए तो मेरे ज़मीर का हाल जान जाऐंग फिर मैंने दिल में सोचा के जब मैं शेख़ अब्दुल कादिर(रह॰अ॰) की खिदमत में जाऊँगा तो वो मेरे सलाम का जवाब ना दें और मुझ से मुंह फैर लें। फिर अपने खादिम से कहें के इस शख़्स की पैशानी के दाग़ बराबर एक छुहारा और दो वाँग शहद ले आओ। जब ये चीजें खादिम ले आए तो आप अपनी कलाह मुबारक मुझे पहना दें और मेरे सलाम का जवाब दें।

शेख़ अबु-अल-कासिम(रह॰अ॰) फरमाते हैं के मैंने जो दिल में सोचा था खुदा की क़सम वैसा ही वक़ूअ पज़ीर हुआ और फिर सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने मुझ से फरमाया। क्यों अबु-अल-कासिम! तुम यही चाहते थे।

मैं शर्म के मारे पानी पानी हो गया और आपके हाथ पर बैअत कर के आपकी शार्गिदी इख़्तियार कर ली।

ग़ायबाना तआरूफ़ शेख़ अबु उमर उस्मान अज़्दी(रह॰अ॰) से रिवायत है के एक दफा मैं अपने वतन में घर से बाहर लेटा हुआ था और खलाऐ आसमानी में देख रहा था। इतने में पाँच कबूतर परवाज़ करते हुए मेरे

ऊपर से गुज़रे। हर कबूतर बज़बाने तयूर हम्दे इलाही कर रहा था। अल्लाह तआला ने मुझे उन कबूतरों की ज़बान समझने की कुद्रत अता की और मैंने सुना के पाँच कबूतरों की ज़बान पर ये अलफाज़ जारी थे:

(1) *कुल मन काना फिदुनिया बातिल इल्ला मा काना लिल्लाही व रसूलिही*

दुनिया की हर चीज़ बातिल है सिवाए उस चीज़ के जो अल्लाह और उसके रसूल के लिए है।

(2) *सुबहाना मन आअता कुल्लि शेइन ख़ल्क़हू सुम्मा हदा*

पाक है वो रब जिसने हर चीज़ पैदा की और फिर उसको हिदायत दी।

(3) *सुबहाना मिन इन्दहू ख़ज़ायन कुल्लि शेइन वमा तुनज़्ज़लाहू इल्ला बक़द्रि मअलूम*

पाक है वो रब जिसके पास हर चीज़ के ख़ज़ाने हैं और नहीं नाज़िल करता मगर एक मुक़र्ररह अंदाज़े के मुताबिक़।

(4) *सुबहाना मिन लबिसल अम्बियाअ हुज्जत अला ख़ल्क़हू व फज़्ज़ल अलेहिम मोहम्मद सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम*

पाक है वो ज़ात जिसने अम्बियाऐइक्राम को ख़ल्के खुदा पर हुज्जत बनाकर भेजा और उन सबसे मोहम्मद सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को अफ़ज़ल बनाया।

(5) *या अहलुल ग़फलति मिन मोलाकुम क़ोमू इला रब्बीकुम रब्बि करीम यअती अलजज़ील व यग़फुरूल ज़ंबि अलअज़ीम।*

ऐ वो लोगो जो अपने मौला से ग़ाफिल हो, उठो अपने रब की तरफ पलटो। जो क़रीम है और बहुत कुछ अता करने वाला है और बहुत बड़ा गुनाह बख़्शने वाला है।

शेख़ उस्मान अज़्दी(रह०अ०) कहते हैं के मैं कबूतरों

की ज़बान से ये अलफाज़ सुनकर बेहोश हो गया। जब होश में आया तो मैंने अज़्मे समीम कर लिया के किसी मर्दे कामिल की बअेत करूंगा ये इरादा करके घर से निकल खड़ा हुआ लेकिन मंज़िल का कुछ पता ना था। असनाऐ सफर में एक बुज़ुर्ग नूरानी सूरत मिले और मेरा नाम लेकर मुझे सलाम किया। मैं हैरान था के ये मुझ से कैसे वाक़िफ हैं। यही सोच रहा था के वो बुज़ुर्ग बोले ऐ उस्मान! हैरान मत हों। मैं खिज़्र हूं। बग़दाद जाओ वहां शेख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की सूरत में तुम्हें अपना गोहर मक़्सूद मिल जाएगा। वो इस वक़्त तमाम औलिया के सरदार हैं। हज़रत खिज़्र(अ॰स॰) के इर्शादात सुनकर मुझ पर बेखुदी तारी हो गई। जब हवास बजा हुए तो अपने आपको सय्यदना शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ख़ानक़ाह के दरवाज़े पर पाया। मैं फौरन हज़रत की खिदमत में हाज़िर हुआ।

आपने मुझे देखते ही फरमाया। मरहबा ऐ मर्दे खुदा के खुदा तआला ने ज़बाने तयूर से तुझे ईरफान अता फरमाया। फिर आपने अपनी कलाहे मुबारक मेरे सर पर रख दी। मुझे यूं महसूस हुआ के कायनात की हर चीज़ मेरे सामने है। क़रीब था के अक़्लो खुर्द से हाथ धो बैठूं के हज़रत ने अपनी चादर मुझे औढ़ा दी और मैंने अपने अन्दर ताक़त महसूस की। उसके बाद मैं कई माह तक हज़रत की सरपरस्ती में मुजाहेदात व रियाज़ियात में मशग़ूल रहा। हत्ता के अल्लाह तआला ने मुझे अपने फज़्लो करम से नावाज़ा। (क़लायद-उल-जवाहर)

आपकी खिदमत में महीनों का हाज़िर होना

शेख़ अबु-अल-क़ासिम बिन अहमद बिन मोहम्मद बग़दादी हरीमी का बयान है के मैं शेख़ अबु सऊद हरीमी, शेख़ अबु अलखै़र बिन महफूज़, शेख़ अबु हफ़्स कीमानी, शेख़

अबु अब्बास असकाफ, और शेख़ सेफउद्दीन अब्दुलवहाब (इब्ने हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰)) हज़रत सय्यदना शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर थे उस वक़्त आप मलफ़ूज़ बयान फरमा रहे थे। ये आख़िर जुमआ माहे जमादी-उल-आख़िर 560हि॰ का वाक़या है के एक खूबसूरत नोजवान मेहफिल में आया और हज़रत शेख़ के पास आकर बैठ गया और कहने लगा ऐ अल्लाह के वली! आप पर सलाम हो। मैं माहे रजब हूँ। आपकी ख़िदमत में मुबारकबाद पेश करने की ग़र्ज़ से आया हूँ के इस दफा मेरे अन्दर आम लोगों के बारे में किसी क़िस्म कोई तकलीफ या बुराई नहीं लिखी गई।

रावी का बयान है के उस माहे रजब में लोगों ने सिवाए ख़ैर व खूबी और भलाई के और कुछ नहीं देखा। फिर जब रजब का आख़री दिन आया और ये इतवार का रोज़ था तो हमारी मौजूदगी में हज़रत शेख़ की ख़िदमत में एक बदसूरत शख़्स ने आकर सलाम किया उन्हें मुबारकबाद दी और कहा ऐ अल्लाह के वली! इस दफा मेरे अन्दर लिख दिया गया है के बग़दाद में वबा आए, हिजाज़ मे गरानी हो और ख़ुरासान में तलवार चले। हज़रत शेख़ खुद शअबान के महीने में कई दिन बीमार रहे।

फिर शअबान की 29 तारीख़ को जबके हम भी इत्तिफाक़ से मेहफिल में मौजूद थे। और उस वक़्त हमारे अलावा शेख़ अली बिन हुय्यती, शेख़ अबु-अल-नजीब सहरवरदी, शेख़ अबु-अल-हसन जोसक़ी और क़ाज़ी अबु यअली मोहम्मद बिन मोहम्मद बिन फरा भी आपकी ख़िदमत में मौजूद थे, एक खुश रू और बावक़ार शख़्स हाज़िर हुआ। उसने कहा ऐ अल्लाह के दोस्त! मेरा सलाम क़बूल हो। मैं रमज़ान का महीना हूँ। आपके बारे में जो चीज़ मेरे अन्दर मुक़द्दर हो चुकी है मैं आप से उसकी

माअज़रत करता हूँ और आप से रूख़सत होता हूँ और ये आपकी हमारी आख़री मुलाक़ात है। रावी का बयान है के हज़रत शेख़ ने दूसरा रमज़ान आने से पहले माहे रबीअ-उल-आख़िर में विसाल फरमाया।

रावी का बयान है के आपने बारहा मिंबर पर फरमाया के अल्लाह तआला के कई ऐसे बन्दे हैं के जिनके पास माहे रमज़ान-उल-मुबारक चल कर आता है और उन्हें कहता है के अगर मेरे अन्दर आपको कोई बीमारी लाहक़ हो या फाक़ा पहुँचे तो उस पर मैं माअज़रत करता हूँ और आपके लिए मेरे अन्दर जो चीज़ मुक़द्दर हो चुकी है उसके बारे में आपका क्या हाल है?

आपके फरज़न्द शेख़ सेफुद्दीन अब्दुलवहाब(रह॰अ॰) का बयान है के किसी महीने का चाँद दिखाई नहीं देता यहाँ तक के वो हज़रत शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हो। फिर अगर उसमें बुराई और सख़्ती लिखी गई है तो वो मक्रूह शक्ल में हाज़िर होता है और अगर उसमें ख़ैर व खूबी और भलाई मुक़द्दर है तो खूबसूरत शक्ल में आता है। (खुलासात-उल-मफाखिर)

शान ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के मुताल्लिक़ ख़्वाब

मतअद्दिद श्यूख़ से मरवी है के हम 610हि॰ में शेख़ अबु मोहम्मद अली बिन इदरीस याक़ूबी की ख़िदमत में हाज़िर थे। इतने में शेख़ सालेह अबु हफ़्स उमर-अल-मअरूफ़ बीन यदया तशरीफ लाए। शेख़ अली ने उन लोगों से कहा के तुम अपना ख़्वाब उन लोगों से बयान करो। शेख़ उमर ने कहा मैंने ख़्वाब में देखा के क़यामत क़ायम है, अम्बियाऐइक्राम और उनकी उम्मतें मैदाने क़यामत में आ रही हैं। उनमें से बअज़ अम्बिया के पीछे दो दो और एक एक मर्द भी आ रहे हैं। इसी दौरान आँहुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ लाए। आपकी उम्मत सीले रवाँ

और रात की तरह आहाता करके आ रही है उसमें मशायख़ हैं। हर शेख़ के साथ उसके मुरीदीन व मोतक़दीन हैं जो अपने अपने अनवार, खुश रूई व ताज़गी और शुमार में एक दूसरे से मुतज़ादत हैं। दरें असना मशायख़ के ज़ुमरे में एक बुज़ुर्ग आए जिनके साथ सब से ज़्यादा मख़्लूक़ थी। मैंने उनके बारे में पूछा तो मुझे बताया गया के ये शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) और उनके असहाब हैं। मैं उनकी तरफ बढ़ा और अर्ज़ की, हुज़ूर! मैंने मशायख़ में आप से बढ़कर ताबनाक और उनके पैरूकारों में आपके पैरूकारों से बढ़कर खूबसूरत लोग नहीं देखे। इस पर आपने ये अशआर पढ़े :

इज़ा काना सय्यद फी अशीरत
अला हादान ज़ाक-उल-ख़नाक़ हमाहा

(जिस वक़्त हम में कोई सरदार किसी क़बीले में होता है तो वो रूत्बे में उस क़बीले पर बरतर होता है और अगर उसे कोई तंगी पेश आ जाती है तो उसकी हिफाज़त करता)

वमा अख़्तबरत इल्ला व असबह शीखहा
वमा अफतख़रत इल्ला वकाना फताहा

(और नहीं इम्तेहान लिया किसी क़बीले ने मगर हमारा सरदार उसका शेख़ हो जाता है और नहीं फख़ किया उसने मगर हाल ये है के हम में से सरदार उसका जवांमर्द होता है।)

वमा ज़ूबत बिल अबरक़ीन ख़्यामहा
वासेह मावी अलतारीक़ीन सवाहा

(और नहीं गाड़े गए खेमे किसी क़बीले के मवाज़ेअ अबरक़ीन में, मगर हाल ये है के रात के आने वालों का मलजा व मावी उसके सिवा कोई और हो।)

रावी का बयान है उसके बाद में जाग उठा और ये

अशआर याद कर रहा था। इन्हीं श्यूख़ का बयान है के शेख़ मोहम्मद् वअज़ ख़्यात से शेख़ अली बिन इदरीस ने कहा के ऐ मोहम्मद! इसी मज़मून से मुताल्लिक़ तुम भी हज़रत शेख़ की ज़बान पर हमें कुछ सुनाओ। शेख़ मोहम्मद(रह०अ०) ने ये अशआर पढ़े:

हनियाअल सहबी इन्नी क़ायद अलरकब
असीर बिहिम क़सदन इलल मंज़िल-उल-रजब

(मेरे असहाब को मुबारक हो के मैं ही शुत्र सवारों के काफले का क़ायद हूं और मैं उसे फराख़ मंज़िल की तरफ दरमियानी चाल चला रहूं)

व अकनफ्हुम वअलकुल शुग्ल अमरहू
व अनज़लाहुम फी हज़रतुलक़्दस मिन क़रब

(मैं उनकी मदद कर रहा हूं जबके सब लोग अपने अपने काम में मशग़ूल हैं और मैं इन्हें बारगाहे क़ुदुस के क़ुर्ब में उतारता हूं)

वली मअहद कुल अलतवाएफ दूनहु
वली मिनहल अज़्ब अलमशारिब वअलशरब

(मेरे लिए एक ऐसी मंज़िल हे के तमाम गिरोह उसके वरे हैं और मेरा ऐसा घाट है के उसके आबख़ोरे और पानी के मुक़ाम शीरीं हैं)

वाहल अलसफा यसऊन ख़ल्फी व कुलहुम
लहु हम्मत अम्ज़ी मिनल साअरिम अलनसब

(अहले सफा मेरे पीछे दौड़ रहे हैं और उन सब की हिम्मतें शमशीर तराबी और सेफे क़ातओ से भी ज़्यादा तेज़ हैं।)

ये सुनकर शेख़ अली(रह०अ०) ने फरमाया ख़ूब! ख़ूब! क्या ही सच कहा तुम ने।

शेख़ अबु-अल-हसन अली बिन सुलैमान बिन ख़बाज़ हज़रत अबु-अल-हसन जोसकी की ज़बानी बयान करते

है के मैं हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उस वक़्त वहां शेख़ अली बिन हय्यती और हज़रत शेख़ बक़ा भी मौजूद थे। उस मौक़े पर हज़रत शेख़ ने फरमाया के हर तबीले में मेरा एक मर्द है जिसका कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता। हर ज़मीन में मेरा एक घोड़ा है जिससे कोई सबक़्त नहीं ले जा सकता। हर लश्कर में मेरा एक सुल्तान है जिसकी मुख़ालफत नहीं की जाती और हर मनसब में मेरा एक ख़लीफा है जो कभी माअज़ूल नहीं होता।

हज़रत गौसे आज़म(रह०अ०) के कलाम का असर

शेख़ अबु सईद अहमद बिन अबीबकर हरीमी अत्तार और शेख़ अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन फायद का बयान है के शेख़ सदक़ा बग़दादी ने एक मर्तबा एक ऐसी बात कह दी के जिस पर शरई हैसियत से सख़्त एतराज़ होता था। वो बात लिख कर ख़लीफा को पहुँचाई गई तो उसने उनकी गिरफ़्तारी और सज़ा का हुक्म जारी कर दिया। जिस वक़्त वो हाज़िर हुए और सज़ा के लिए उनका सर खोला गया तो उनके ख़ादिम ने दाशिख़ह कहकर फरयाद बुलंद की। इतने में उन्हें सज़ा देने वाले जल्लाद का हाथ शल हो गया। अल्लाह तआला ने इंचार्ज अफ़्सर के बीच में हैबत डाल दी। चनाँचे उस ने वज़ीर को सारे मामले की इत्तिला दी। अल्लाह तआला ने उसे भी मरऊब कर दिया। फिर ख़लीफा को सारी बात से आगह किया गया तो अल्लाह तआला ने उसके दिल में हैबत तारी कर दी। चुनाँचे उसने उनके रिहा करने का हुक्म दे दिया। वो रिहा होकर शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) की बारगाह में प्यादा पहुँचे। उन्होंने देखा के आम लोग मशायख़ हज़रत शेख़ के बरआमद होने का इन्तेज़ार कर रहे हैं ताके वो उन्हें खिताब करें। इतने हज़रत शेख़ तशरीफ लाए और

मशाएख़ के दरमियान बैठ गए। थोड़ी देर बाद आप कुर्सी पर चढ़े ना खुद कोई गुफ़्तगू की और ना ही क़िराअत के लिए हुक्म दिया। मगर हाज़रीन पर ज़बरदस्त वजद तारी हो गया। और ग़ैर मामूली जोशो ख़रोश उठा। शेख़ सदक़ा ने दिल में कहा के ना तो शेख़ ने कोई कलाम किया और ना कारी ने क़िराअत की ये वजद किस चीज़ पर हो रहा है। हज़रत शेख़ ने उस तरफ रूख़ फैर कर फरमाया अल्लाह के बन्दे! मेरा एक मुरीद बैत-उल-मुक़द्दस से एक क़दम में यहाँ आया और उसने मेरे हाथ पर तौबा की। आज हाज़रीन उसकी मेहमानी में मसरूफ हैं। शेख़ सदक़ा को ख़याल आया के जो शख़्स बैत-उल-मुक़द्दस से बग़दाद का फासला एक क़दम में तय करा रहा है वो किस चीज़ से तौबा करेगा। और फिर शेख़ के पास वो क्या लेने आएगा। इतने में हज़रत शेख़ ने इसकी तरफ रूख़ फैरा और फरमाया क्या नहीं है मेरी तलवार सूंती हुई और मेरी कमान चढ़ाई हुई और क्या नहीं है मेरे तीर कमान में? और क्या नहीं है मेरे तीर निशाने पर पहुँचने वाले और मेरे नेज़े जाए मक़्सूद पर लगने वाले। और क्या नहीं है मेरा घोड़ा हर वक़्त ज़ीन कसा हुआ? फिर फरमाया मैं अल्लाह की भड़काई हुई आग हूँ मैं अहवाल का सलब करने वाला हूँ। मैं बहेर नापैदा किनार हूँ। मैं हिफाज़त में हूँ। मेरा लिहाज़ किया जाता है। मैं बहरावर हूँ ऐ रोज़ेदारों! और शबबेदारों! ऐ असहाबे हील! तुम्हारे पहाड़ तोड़ डाले गए और ऐ गिर्जा वालों! तुम्हारे गिर्जे विरान कर दिए। अम्रे इलाही की तरफ रूजू करो और मैं अम्रे इलाही हूँ। और ऐ राहे (हक़) के राहियो! ऐ मर्दों! ऐ दिलैरो और बहादूरो! ऐ अब्दालो और बच्चो! आओ आओ और इस समुंद्र से ले लो जिसका कोई किनारा नहीं। ऐ प्यारे! तू आसमान में वाहिद है और मैं ज़मीन में मुनफरिद हूँ। बिलाशुबह

के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। रात दिन में सत्तर दफ़ा कहा जाता है के मैंने तुझे अपने लिए चुन लिया है ताके अपनी आँखों के सामने तेरी निगहेदाश्त करूं। अब्दुल क़ादिर! तू कलाम कर हम तुझ से सुनेंगे और ऐ अब्दुल क़ादिर! तुझे क़सम है मेरे हक़ की तू खा। और तुझे क़सम है मेरे हक़ की तू पी। तुझे क़सम है मेरे हक़ की तू कलाम कर। मैंने उसे रोके जाने से मेहफ़ूज़ कर दिया है। (ख़ुलासात-उल-मफ़ाख़िर)

गाने बजाने से तौबा हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) ईसार के मोज़ू पर तक़रीर फ़रमा रहे थे यकायक आप ख़ामोश हो गए और आसमान की तरफ़ नज़र उठाई। फिर आपने हाज़रीन से मुख़ातिब होकर फ़रमाया के "ज़्यादा नहीं सिर्फ़ सौ दीनार दरकार हैं।"

आपका इर्शाद सुनकर कई लोग सौ सौ दीनार लेकर हाज़िर हुए आपने सिर्फ़ एक शख़्स से सौ दीनार ले लिए। और अपने ख़ादिम को हुक्म दिया ये सौ दीनार लेकर मक़्बरे शोनेज़िया पर जाओ वहाँ तुम्हें एक बूढ़ा बर्बत बजाता हुआ मिलेगा उसे दीनार देकर मेरे पास ले आओ।

ख़ादिम हस्बे हुक्म मक़्बरे शोनेज़िये पर पहुँचा वहाँ फ़िलवाक़ए एक बूढ़ा बर्बत बजा कर गा रहा था। ख़ादिम ने उसे सलाम किया और वो सौ दीनार उसके हाथ पर रख दिए। बूढ़े ने एक चीख़ मारी और बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो ख़ादिम ने कहा के तुम्हें हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) बुला रहे थे। बूढ़ा फ़ौरन ख़ादिम के हमरह हो लिया। जब दोनों हज़रत की ख़िदमत में पहुँचे तो आपने बूढ़े से फ़रमाया के तुम अपना किस्सा बयान करो। बूढ़ा कहने लगा या हज़रत लड़कपन में मैं निहायत उम्दा गाता बजाता था और बर्बत नवाज़ी में कमाल रखता था लोग मेरी आवाज़ पर फ़िदा थे। लेकिन

जब मैं बड़ा हुआ तो मेरी मक़बूलियत बहुत कम हो गई। मैंने शिकस्ता दिल होकर शहर छोड़ दिया और अहद कर लिया के आईंदा सिर्फ मुर्दों को अपना गाना सुनाया करूंगा। चुनांचे मैंने क़ब्रिस्तान ही में बोदोबाश इख़्तियार कर ली और वहां ही गाता बजाता रहा। एक दिन मैं शुग़्ल में मसरूफ था के एक क़ब्र से आवाज़ आई।

"ऐ शख़्स तू मुर्दों को कब तक अपना गाना सुनाएगा अब खुदा की तरफ रूजू कर।"

मुझ पर सख़्त दहशत तारी हुई और मैंने आलमे बेखुदी में ये अशआर पढ़े।

या रब माली इद्दत यौमुल लक़ा
इल्ला रिजा क़ल्बी वनतक़ लिसानी

(ऐ मेरे रब! यौमे हश्र के लिए पास कोई सरमाया नहीं सिवाए इसके के मेरे दिल में तेरी बख़्शिश और तेरी रहमत की उम्मीद हो और मेरी ज़बान पर हम्दो सनाअ हो)

क़हामाका अलराजून यबगून अलमिना
वअख़ीबता इन अदत्तो बिल हरमान

(तेरी रहमत के उम्मीदवार कल तेरे हुज़ूर में सुरखुरू होंगे अगर मैं महरूम रह गया तो हीफ है मेरी बदबख़्ती पर)

इनकाना लायरजूका इल्ला मोहसिन
फबिमन यलविज़ वयसतजीर अलजानी

(अगर सिर्फ नेकूकार लोग ही तेरी रहमत के आरज़ूमंद होते तो तेरे गुनहगार बन्दे किस की पनाह लेते)

शीबी शफीअ यौमे अर्ज़ी वअललिका
फअसाका तनफिज्नी मिनल निरान

(मेरी ज़ईफ-उल-उम्री हश्र के दिन तेरी बारगाह में मेरी शिफ़ाअत करेगी उम्मीद है के तू इस पर नज़र करके मुझे अपने दामने रहमत में जगह देगा और जहन्नुम से बचा लेगा।)

ये अशआर मेरी ज़बान पर थे के आपके ख़ादिम ने आकर मेरे हाथ पर सौ दीनार रख दिए अब मैं गाने बजाने से तौबा करता हूँ और अपने ख़ालिके हक़ीक़ी की तरफ़ मुतावज्जेह होता हूँ। ये कहकर उसने अपना बर्बत तोड़ दिया।

उस बूढ़े की दास्तान सुनकर लोग दमबख़ुद हो गए और चालीस आदमियों ने उसी वक़्त सौ सौ दीनार उस बूढ़े को दिए। आपके ख़ादिम अबु-अल-रज़ा का बयान है के वाक़या देखकर पाँच आदमियों पर ऐसा असर हुआ के वो तड़पने लगे और तड़पते तड़पते बअसल बहक़ हो गए। (क़लायद-उल-जवाहर)

<u>नूरानी मख़्लूक़</u> शेख़ अहील अबु-अल-फलाह मुनज्जेह बिन शेख़ जलील अबु-अल-ख़ैर बिन शेख़ क़दवा अबु मोहम्मद मुतरिबा बराई अपने वालिद से बयान करते हैं के जब शेख़ मुतिर का आख़री वक़्त आया तो मैंने उनसे कहा के आप मुझे वसीयत करें के आपके बाद मैं किस की पैरवी करूं? उन्होंने कहा शेख़ अब्दुल क़ादिर की। मैंने सोचा के इस वक़्त बीमारी की ग़शी में हैं। थोड़ी देर बाद मैंने फिर पूछा के आपके बाद मैं किस की इक़्तिदा करूं? फरमाया शेख़ अब्दुल क़ादिर की। मुझे अब के भी इतमिनान ना हुआ। चुनाँचे मौक़ा पाकर मैंने तीसरी दफा फिर यही सवाल दोहराया। उस पर उन्होंने ने कहा मेरे बेटे! जिस दौर में शेख़ अब्दुल क़ादिर मौजूद हों उसमें किसी दूसरे की पैरवी और इक़्तिदा का सवाल ही पैदा नहीं होता। जब उनका इन्तिक़ाल हो गया तो मैं बग़दाद आया और हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की मजलिस में हाज़िर हुआ। उस वक़्त वहाँ शेख़ बक़ा, शेख़ अबु साअद क़ीलवी और शेख़ अली बिन हुय्यती वग़ैरा अकाबरीन मशायख़ भी मौजूद थे। इस मौक़े पर हज़रत शेख़ ने फरमाया। "मैं तुम्हारे आम बअज़ैन की तरह नहीं

हूँ।" मैं तो खुदा के हुक्म से बोलता हूँ और मेरा खिताब तो उन लोगों से है जो फिज़ा में रहते हैं।"

ये फरमा कर आपने अपना सर अक्दस फिज़ा की तरफ उठाया। मैंने भी ऊपर देखा। क्या देखता हूँ के नूरानी घोड़ों पर सवार नूरानी लोगों से आसमान भरा हुआ है। उन्होंने अपने सर झुका रखे हैं उनमें से कोई रो रहा है। कोई कांप रहा है किसी के कपड़ों में आग है। मैं ये मंज़र देखकर बेहोश हो गया। थोड़ी देर बाद जब अफाक़ा हुआ तो मैं लोगों को चीरता आपकी तरफ दौड़ा। और आपके मिंबर शरीफ पर चढ़ गया। आपने मेरा कान पकड़ कर फरमाया क्यों करम! पहली दफा तुम्हें अपने वालिद की वसीयत पर यक़ीन ना आया था? मैंने आपकी हैबत की वजह से सर झुका लिया।

हज़रत हम्माद(रह॰अ॰) की क़ब्र पर दुआ का असर

शेख़ अबु-अल-हसन ख़फाफ बग़दादी(रह॰अ॰), शेख़ अबु-अल-हसन अली बिन सुलैमान-अल-मअरूफ ख़ब्बाज़ और शेख़ जलील क़ैसर का बयान है के हज़रत शेख़ महीउद्दीन अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) ने बरोज़ चहार शंबा 27 ज़िलहज्ज 529हि॰ को क़ब्रिस्तान शोनीज़ी की ज़ियारत की। आपके हमराह फ़क़िहा, और फ़क़रअ की एक बड़ी जमाअत भी थी। आप देर तक हज़रत शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) के मज़ार के पास खड़े रहे। यहाँ तक के सख़्त गर्मी हो गई। तमाम लोग आपके पीछे खड़े थे। जब आप वापस हुए तो आपके चेहरे पर खुशी व मुसर्रत के आसार नुमायाँ थे। हाज़रीन में से किसी ने इतनी देर खड़े रहने का सबब पूछा तो फरमाया 499हि॰ निस्फ़ शअबान जुमअे के रोज़ मैं हज़रत शेख़ हम्मद(रह॰अ॰) और आपके मोअतक़दीन की एक जमाअत के साथ बग़दाद से निकला। हमारा इरादा था के नमाज़े जुमआ हम जामअे मस्जिद

रसाफा में पढ़ें जब हम नहर के पुल पर पहुँचे तो हज़रत शेख़ ने मुझे पानी में डाल दिया और ये सख़्त सर्दी का मौसम था। मैंने कहा बिस्मिल्लाह जुमअे का गुस्ल हो गया। उस वक़्त मुझ पर ऊन का जुबह था और मेरी आसतीन में कुछ वर्क थे। मैंने अपना हाथ ऊपर उठा लिया ताके वो भीग ना जाएँ। सारे लोग मुझे पानी में छोड़ कर चल दिए। मैं। पानी से निकला जुब्बे को निचोड़ा और उनके पीछे चल दिया। चूंके सर्दी की शिद्दत की वजह से मुझे काफी अज़यत पहुँची थी। शेख़ के मोअतक़दीन में से कुछ लोगों ने मुझ में तमेअ की ख़्वाहिश की शेख़ ने उन्हें झिड़का और फरमाया के मैंने उसे सिर्फ इस लिए ईज़ा दी ताके उसे आज़माऊँ। ये तो एक ऐसा पहाड़ है जो अपनी जगह से हिलने का नाम नहीं लेता।

मैंने आज शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) को उनकी क़ब्र में देखा उन पर जोहर का एक हुल्लह था और उनके सर पर याकूत का ताज। हाथों में सोने के कंगन और पाँऊ में सोने की दो दो जूतियाँ थीं अल्बत्ता उनका दाहिना हाथ बेकार था जो काम नहीं कर रहा था। मैंने उनसे उसकी वजह दरयाफ़्त की तो फरमाया ये वो हाथ है जिससे मैंने आपको फैंका था। क्या आप मुझे ये बात माफ कर देंगे? मैंने कहा हाँ! फरमाया तो अल्लाह तआला से सवाल करें के वो मेरे हाथ को ठीक कर दे। मैं ठहर गया और अल्लाह तआला से सवाल करने लगा। दरें असनअ पाँच हज़ार औलिया अल्लाह अपनी अपनी क़ब्रों में खड़े हो गए और शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) के हक़ में मेरे सवाल की क़बूलित की दुआ करने लगे नीज़ मेरे पास भी हज़रत शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) के हक़ में शफाअत करने लगे। मैं उस मुक़ाम पर अल्लाह तआला से सवाल करता रहा यहाँ तक के अल्लाह तआला ने उनका हाथ सही व सालिम

कर दिया और उन्होंने उस हाथ से मुझे मुसाफह किया। उससे मेरी खुशी की कोई इन्तिहा ना रही।

उन तीनों (रावियों) का बयान है के जब ये वाक़ेया बग़दाद में मश्हूर हुआ तो शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) के मोअतक़दीन और तिलांदा में से मशायख़ और सूफिया का एक गिरोह बग़दाद में जमा हो गया और उनके साथ साथ आम लोगों और फ़ुक़रअ की एक बड़ी जमाअत उमंड आई ताके हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) से हज़रत शेख़ हम्माद के बारे में बयान कर्दा वाक़ए की जवाब तल्बी करें। ये सारे लोग हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) के मदरसे में पहुँच गए मगर हज़रत शेख़ के जलाल और हैबत की वजह से किसी को बात करने की हिम्मत ना पड़ी। चुनाँचे खुद हज़रत शेख़ ने उनसे मतलब की बात शुरू की और उनसे फरमाया के तुम मशायख़ में से दो शख़्स मुनतख़िब कर लो उनकी ज़बान पर बात ज़ाहिर हो जाएगी जो मैंने तुम्हें बताई है।

चुनाँचे उन्होंने शेख़ अबु याक़ूब यूसुफ बिन अय्युब बिन यूसुफ हम्दानी (ये उसी वक़्त बग़दाद आए थे) और शेख़ अबु मोहम्मद अब्दुर्रहमान बिन शुऐब बिन मसऊद करदी बग़दादी रहमहुमुल्लाह के नाम पेश किए। ये दोनों बुज़ुर्ग साहिबे करामात और बुलंद अहवाल के मालिक थे। उस पर लोग हज़रत शेख़ से कहने लगे के उनकी ज़बान पर वो बात जारी होने के लिए हम आपको एक हफ़्ते की मोहलत देते हैं। उस पर आपने फरमाया नहीं नहीं आप लोग अपनी जगह से उठने ना पायेंगे के इस बात का फ़ैसला हो जाएगा। आपने अपना सर नीचा किया और उन दोनों बुज़ुर्गों ने भी अपने सर झुका लिए के अचानक मदरसे के बाहर शोर उठा। इतने में शेख़ यूसुफ बरहना पा दौड़ते हुए आए और मदरसे में दाख़िल हो गए और फरमाने

लगे। अल्लाह तआला ने अभी अभी मुझे शेख़ हम्माद का मुशाहेदा कराया और उन्होंने मुझ से कहा है के ऐ यूसुफ! तू जल्दी शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) के मदरसे में जा और वहाँ जो लोग जमा हैं–उन्हें कह दे के शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) ने उन्हें मेरे बारे में जो ख़बर दी है वो इसमें सच्चे हैं। अभी शेख़ यूसुफ की बात पूरी ना हुई थी के शेख़ अब्दुर्रहमान भी आ गए और उन्होंने भी वही बात दोहराई जो शेख़ यूसुफ कह चुके थे। इस पर तमाम बुज़ुर्ग खड़े हो गए और हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) से मआफी चाहने लगे। (खुलासातुल मफाख़िर)

ख़िरकेह की सनद का अतिया शेख़ सालेह अबु–अल–हसन अली बिन मोहम्मद बिन अहमद बग़दादी(रह॰अ॰) का बयान है के मैंने बचपन के ज़माने में 553हि॰ में ख़्वाब में देखा के नहरे ईसा का पानी खून और पीप में तबदील हो गया है और उसकी मछलियाँ सांप और कीड़े मकोड़े बन कर मेरी तरफ बढ़ रही हैं उनके ख़ौफ से भाग कर मैं अपने घर पहुँचा। घर में से एक शख़्स ने मेरे हाथ में पंखा थमा दिया और कहा इसे मज़बूती से पकड़ लो। मैंने कहा ये तो मुझे नहीं बचा सकेगा। उसने कहा तेरा ईमान तुझे बचाएगा। मैंने उसे एक कोने से पकड़ लिया। इतने में क्या देखता हूँ के मैं अपने घर में एक तख़्त पर मौजूद हूँ। मेरा ख़ौफ दूर हो गया। मैंने कहा तुम्हें क़सम है उस ज़ात की जिसने तुम्हारे सबब मुझ पर एहसान फरमया मुझे बताओ तुम कौन हो? कहा मैं तेरा नबी मोहम्मद रसूल अल्लाह (सल–लल्लाहो अलेह व सल्लम) हूँ। मैं आपकी हैबत से कांपने लगा। फिर मैंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह(स॰अ॰स॰)! आप अल्लाह तआला से मेरे हक़ में दुआ फरमाएँ के मैं उसकी किताब और आपकी सुन्नत पर मरूं। इस पर आप ने फरमया! और

तेरा पीर शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) है।

रावी का बयान है के मैंने अपनी बात तीन दफा बारगाहे रिसालत माअब में दोहराई आपने हर दफा यहां जवाब दिया। उसके बाद मैं जाग उठा। अपने वालिद और तमाम घर वालों से अपना ख़्वाब बयान किया। फज्र की नमाज़ के बाद मेरे वालिद मुझे साथ लेकर हज़रत शेख़ की ज़ियारत के इरादे से रवाना हुए। इन दिनों आप रूबात में वअज़ कहा करते थे। जिस वक़्त हम मजलिस में पहुँचे आप वअज़ कह रहे थे। लोगों के हुजूम के बाअस हमें आख़िर में जगह मिली। आपका क़ुर्ब हासिल ना हो सका। आपने कलाम बन्द कर दिया और हमारी तरफ इशारा करते हुए फरमाया के उन दो आदमियों को हमारे पास ले आओ। लोगों ने मुझे और मेरे वालिद को लोगों की गर्दनों के ऊपर उचक लिया और हज़रत शेख़ की कुर्सी के क़रीब पहुँचा दिया। इतने में हमें एक जवान ने इशारा किया। चुनाँचे मेरे वालिद और पीछे पीछे मैं हज़रत शेख़ की तरफ बढ़े। आपने फरमाया तुम हमारे पास दलील के बग़ैर नहीं आए। ये फरमा कर मेरे वालिद को अपना कुर्ता और मुझे अपने सर की टोपी पहनाई। हम लोगों के दरमियान बैठ गए। मेरे वालिद को जो कुर्ता पहनाया गया था इत्तिफाक़ से वो उल्टा था। मेरे वालिद ने इरादा किया के उसे दुरूस्त कर लें। हज़रत शेख़ ने फरमाया ज़रा सब्र करो लोगों को जाने दो। फिर जब हज़रत शेख़ कुर्सी से उतरे तो मेरे वालिद के दिल में दोबारा ख़याल आया लोगों के भरे मजमए में कुर्ता सीधा कर लूं। इतने में क्या देखता हूँ के कुर्ता बिलकुल सीधा है ये देखकर उन पर ग़शी तारी हो गई। और लोग परेशान होने लगे। हज़रत शेख़ ने फरमाया उसे मेरे पास ले आओ। हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए उस वक़्त आप क़ुब्बतुलऔलिया में तशरीफ

फ़रमा थे। ये रिबात में एक कुवा था। कुव्वतुलऔलिया इस लिए उसका नाम पड़ा के हज़रत शेख़ की ज़ियारत के लिए यहाँ औलिया अल्लाह और मर्दाने ग़ैब बकसरत वारिद होते थे। आपने मेरे वालिद से फरमाया के बेशक जिसकी दलील रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ाते ग्रामी हो और उसका पीर अब्दुल क़ादिर हो, उसके लिए करामत क्यों ना हो। ये तेरे लिए करामत है। ये फरमा कर आपने क़लम दवात और कागज़ मंगवाया और हमारे लिए अपने खिरकेह की सनद तहरीर फरमाई (खुलासात-उल-मफाख़िर)

हज़रत मअरूफ कुर्ख़ी(रह॰अ॰) का क़ब्र से हमकलाम होना एक दफा सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) शेख़ अली बिन नस्र-उल-हुय्यती(रह॰अ॰) के हमराह हज़रत शेख़ मअरूफ़ कुर्ख़ी(रह॰अ॰) की क़ब्र पर तशरीफ ले गए और क़ब्र के पास खड़े होकर फरमाया अस्सलाम अलेक ऐ शेख़ मअरूफ! आप एक दर्जा हम से आगे हैं। फिर आप वापस तशरीफ ले गए।

चन्द दिन बाद आप फिर शेख़ अली बिन नस्र-उल-हुय्यती के हमराह शेख़ मअरूफ़ कुर्ख़ी के मज़ार पर तशरीफ ले गए। और क़ब्र के पास खड़े हो कर फरमाया अस्सलाम अलेक ऐ शेख़ मअरूफ़! हम दो दर्जे आप से बढ़ गए। क़ब्र से फौरन आवाज़ आई। वअलेकुम अस्सलाम या सय्यद अहले अज़्ज़मान!

अज़ाबे क़ब्र से निजात के लिए दुआ एक दिन बग़दाद का एक बाशिन्दा आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ किया या हज़रत! आज मैंने अपने वालिद मरहूम को ख़्वाब में देखा वो अज़ाब में मुबतला थे और कह रहे थे। शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की खिदमत में हाज़िर होकर मेरे लिए दुआए मग़फिरत कराओ।

आपने ये सुनकर निहायत ख़शू व खुज़ू से उस शख़्स के वालिद के हक़ में दुआ फरमाई। दूसरे दिन वो शख़्स फिर हाज़िर हुआ और कहने लगा या हज़रत! आज मैंने ख़्वाब मैं अपने वालदि को निहायत उम्दा हालत में देखा। वो सब्ज़ लिबास में मलबूस थे। और निहायत शादां व फरहाँ थे। उन्होंने मुझे बताया के अल्लाह तआला ने हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की दुआ की बदौलत मुझे अज़ाबे क़ब्र से निजात दी और अपनी रहमतों से नवाज़ा है।

शेख़ ईसा बिन अब्दुल्लाह बिन क़ीमाज़न रूमी का बयान है के मैंने हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) को खुद ये फरमाते हुए सुना के जो मुसलमान भी एक दफा मेरे मदरसे के दरवाज़े से गुज़र जाएगा क़यामत के रोज़ उसके अज़ाब में तख़फ़ीफ होगी।

रावी का बयान है के एक दफा मैं हज़रत शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। इतने में आपको बताया गया के बाबे अज़ज के क़ब्रिस्तान में एक मुर्दे की, जब से वो दफ़्न हुआ है, आवाज़ सुनी जा रही है। आपने फरमाया क्या उसने मेरे हाथों से ख़िरक़ह पहना है? लोगों ने कहा मालूम नहीं। आपने पूछा क्या वो कभी मेरी मजलिस में आया था? लोगों ने ला इल्मी ज़ाहिर की। पूछा क्या उसने कभी मेरे खाने से खाना खाया था? लोगों ने कहा हमें इल्म नहीं। फरमाया क्या उसने कभी मेरे पीछे नमाज़ पढ़ी थी? लोगों ने उसकी भी ताईद या तनकीर नहीं की। उस पर आपने फरमाया इस क़द्र कुसूरवार और ना अहल शख़्स इसी लायक़ है। ये कहकर आपने सर झुका लिया आपसे हैबत झलक रही थी और सकून व वक़ार दो चन्द हो गया था। इतने में फरमाया के बेशक फरिश्तों ने कहा है के उसने आपका चेहरा देखा और आपके साथ हुस्ने ज़न

रखा। इस बिना पर अल्लाह तआला ने उस पर रहम फरमा दिया है उसके बाद अर्से तक लोग उसकी क़ब्र पर जाते रहे मगर किसी ने कभी कोई आवाज़ ना सुनी।

करामात की तसदीक़ का वाक़ेया बग़दाद में एक साहब अब्दुल समद बिन हमाम थे। वो सय्यदना ग़ौसे आज़म की करामात के मुनकिर थे। उनका बयान है के एक दफा जुमअे के दिन में आपके मदरसे के क़रीब से गुज़रा उस वक़्त मैं रफ़अे हाजत के लिए जाना चाहता था लेकिन नमाज़ का वक़्त क़रीब था। मैंने सोचा पहले नमाज़ अदा कर लूं फिर रफ़अे हाजत के लिए चला जाऊँगा चुनाँचे मैं मदरसे के अन्दर चला गया और मिंबर के क़रीब बैठ गया। जूं जूं नमाज़ का वक़्त क़रीब आता जाता लोगों का हुजूम बढ़ता जाता। हत्ता के मदरसे में तिल धरने की जगह ना रही इधर मुझे इस शिद्दत से हाजते बराज़ हुई के बर्दाश्त की ताक़त ना रही लेकिन लोगों की कसरत की वजह से कोई रास्ता बाहर जाने के लिए ना पाता था उस वक़्त सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह०अ०) मिंबर पर तशरीफ फरमा हो चुके थे। ऐन उस वक़्त के मेरे कपड़े नापाक होने को थे आप अपने मिंबर से उतर कर मेरे क़रीब आए और अपनी आसतीन मुबारक से मेरे सर पर साया कर लिया। माअन मैं ने अपने आपको एक बाग़ीचे में पाया जहाँ दूर दूर तक कोई आदमी दिखाई नहीं देता था। क़रीब ही पानी बह रहा था। मैं वहाँ रफ़अे हाजत से फारिग़ हुआ और तहारत कर के वज़ू किया और दो रकअत नमाज़ अदा की उस वक़्त आपने अपनी आसतीन मेरे सर से हटा ली। और ये देखकर मेरी अक़्ल चकरा गई के मैं हुजूमे ख़लायक़ के दरमियान आपके मिंबर के क़रीब ही बैठा हूँ। हालांके उस बाग़ीचे में किए हुए वज़ू की नमी अब तक मुझे महसूस हो रही थी। ख़ैर जब नमाज़ हो चुकी और मैं उठने लगा

तो अपना रूमाल जिस में मेरी कुंजिया बंधी हुई थीं गायब पाया। हर चन्द तलाश की लेकिन कहीं ना पाया। मायूस होकर घर वापस आ गया और अपने घर के ताले लोहार से खुलवाए।

उसी दिन मैं अपने किसी काम के लिए एक काफला के हमराह बिलादे अजम को रवाना हुआ। चौदह दिन के सफर के बाद हमारा गुज़र एक ऐसे मुक़ाम पर हुआ जो हूबहू वैसा ही था। जहाँ मज़कूरा जुमअे को मैंने वज़ू किया था। चूंके आगे दूर दूर तक पानी नज़र नहीं आता था इस लिए हमारे काफले ने यहीं पड़ाओ डाल दिया। मैंने उठ कर ग़ौर से देखा, तो वाक़ेई वही मैदान था। मैं सख़्त हैरत ज़दा हुआ। और वज़ू करके नमाज़ के लिए उस मुक़ाम की तरफ बढ़ा जहाँ पहले नमाज़ पढ़ी थी। क्या देखता हूं के मेरा गुमशुदा रूमाल माअ चाबियों के गुच्छे के वहाँ पड़ा है। अब तो मैं सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह०अ०) का सच्चे दिल से मोअतक़िद हो गया।

अगरचै इस वाक़ये वाले दिन ही मैंने आपकी करामात का इंकार तर्क कर दिया था। सफर से वापस आकर मैं हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ आपसे बस्दे अदब मआफी मांगी और बैअत करके हल्क़ाऐ इरादत में दाख़िल हुआ। आपने मुझे हिदायत फरमाई के जब तक मैं ज़िन्दा हूँ उस वाक़ये का ज़िक्र किसी से ना करना (क़लायद-उल-जवाहर)

मजलिस में ग़ैबी मख़्लूक़ का आना

शेख अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन अबु-अल-फतह हरवी का बयान है के एक दिन मैं हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) की मजलिस में हाज़िर हुआ आपने तक़रीर शुरू की और उसमें महू हो गए फिर फरमाने लगे अगर अल्लाह तआला मेरा कलाम सुनने के लिए किसी

सब्ज़ परिन्दे को भेजना चाहे तो वो ऐसा कर सकता है। अभी आपकी ये बात मुकम्मल ना हुई थी के सब्ज़ रंग का एक परिन्दा आया और आपकी आसतीन में घुस गया। फिर वो वहाँ से बाहर ना निकला। एक दफा आपकी तक़रीर के दौरान लोगों में सुस्ती के आसार नुमायाँ होने लगे। आपने फरमाया अगर इरादाऐ खुदा वंदी में ये बात हो के वो मेरी तक़रीर सुनने के लिए सब्ज़ परिन्दे भेजे तो वो ज़रूर भेज दे। अभी आपकी बात ख़त्म ना हुई थी के मजलिस सब्ज़ रंग के परिन्दों से भर गई जिन्हें तमाम हाज़रीने मजलिस देख रहे थे।

रावी का बयान है के एक दफा क़ुद्रत के मोज़ू पर तक़रीर जारी थी लोग हैबतज़दा और सहमे हुए थे के इसी असना में मजलिस पर से एक अजीबुलख़ल्क़त परिन्दा गुज़रा। कुछ लोग हज़रत शेख़ के कलाम की बजाए परिन्दे की तरफ मुतावज्जह हो गए उस पर आपने फरमाया क़सम है माअबूद की। अगर मैं उस परिन्दे को टुकड़े टुकड़े हो जाने का हुक्म दूं तो अभी टुकड़े टुकड़े होकर गिर जाए। अभी आप ये बात फरमा रहे थे के वो परिन्दा टुकड़े टुकड़े होकर सर-ज़मीन मजलिस पर आ गिरा। (खुलासात-उल-मफाख़िर)

मर्दान कोहे काफ़ शेख़ अबु मोहम्मद अब्दुल्लाह बताएही का बयान है के एक दिन मैं हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ख़िदमत में आपके घर हाज़िर हुआ वहाँ चार शख़्स मौजूद थे जिन्हें मैंने उससे क़ब्ल कभी ना देखा था उन्हें देखकर मैं अपनी जगह ठहर गया जिस वक़्त वो आपकी ख़िदमत से उठे आपने मुझे फरमाया उन्हें पहचानो और अपने हक़ में दुआ करा लो। बाहर निकलने से पहले मैंने उन्हें सहने मदरसा में जा लिया। और दुआ की दरख़्वास्त पेश की। उनमें से

एक ने मुझे कहा तुम्हें खुशखबरी हो, तुम एक ऐसे मर्दे राह के खादिम हो जिसकी बर्कत की वजह से अल्लाह तआला आबाद ज़मीन और पहाड़ों, खुश्क बयाबानों और दरयाओं की हिफाज़त व निगरानी करता है और उसी की दुआ की बदौलत अपनी मख़्लूक़ के नेक व बद पर रहम फरमाता है। हम और दूसरे तमाम औलिया उसके इन्फ़ाम के अंहेदो पैमान के पाबंद उसके क़दमों के साये के नीचे और उसकी हकूमत के दायरेकार में हैं इतने में वो मदरसे से बाहर निकले और ग़ायब हो गए। मैं तअज्जुब करता हुआ हज़रत शेख़(रह०अ०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने फरमाया अब्दुल्लाह! जो कुछ उन लोगों ने तुम से कहा जब तक मैं ज़िन्दा रहूं उसके बारे में मैं किसी से कुछ कहूं तो कहूं, तुम किसी से कोई बात ना करना। मैंने पूछा हुज़ूर! ये कौन लोग थे? फरमाया के ये मर्दाने कोह काफ के रोसाअ हैं। और वो इस वक़्त कोहे काफ में अपने अपने ठिकानों पर पहुँच चुके हैं।

खजूर के दरख़्तों का सरसब्ज़ होना अबु मोहम्मद-अल-वाहिद बिन सालेह बिन याहिया कुर्शी बग़दादी(रह०अ०) से रिवायत है के शेख़ अली अलहुय्ती जब अलील हो जाते थे तो शेख़ अबु-अल-मुज़फ्फर इसमाईल बिन सनान हमीरी के पुरज़िया बाग़ीचे में चले जाते थे और कई कई रोज़ वहीं तशरीफ रखते थे उस बाग़ में दो दरख़्त खजूर के बिलकुल खुश्क व बेकार हो गए थे और चार साल से उसमें फल वग़ैरा कुछ नहीं आता था। उनके कटवाने का अब इरादा कर लिया गया था। हज़रत शेख़ अली(रह०अ०) एक मर्तबा बीमार हुए तो सरकार ग़ौसे आज़म(रह०अ०) उनकी अयादत के लिए उस बाग़ में तशरीफ ले गए। अयादत से फारिग़ होकर आपने बज़ाते खुद उन दरख़्तों में से एक के नीचे बैठकर वज़ू किया और

दूसरे के नीचे दो रकअत नमाज़ पढ़ी। अल्लाह अल्लाह! आपके क़दम मुबारक की बर्कत मुलाहेज़ा कीजिये के यकबयंक वो दरख़्त शदाब हो गए। और गो के उस वक़्त फलों के आने का वक़्त भी नहीं था मगर एक हफ़्ते के अन्दर उन दरख़्तों से खजूरें भी पैदा होने लगीं।

हज़रत शेख़ सालेह उन दरख़्तों से खजूरें लेकर सरकार ग़ौसे आज़म(रह०अ०) की बारगाह में हाज़िर हुए। आप ने उनमें से चन्द खजूरें तनावुल फरमाई और दुआ दी के परवरदिगारे आलम तुम्हारी ज़मीन, तुम्हारे दराहम, तुम्हारे साअ और तुम्हारे मवेशियों में बर्कत अता फरमाए।

शेख़ सालेह का अपना बयान है के इस दुआ की ऐसी बर्कत हुई और आपका इतना करम हुआ के अब मैं एक दरहम खर्च करता हूँ तो उसके दूगुने फौरन कहीं से आ जाते हैं। घर के अन्दर अगर सौ बोरियाँ गेहूं की रखता हूँ और पचास सर्फ कर डालता हूँ और फिर देखता हूँ तो सौ की सौ मौजूद पाता हूँ। मवैशी इस क़द्र बच्चे देने लगे हैं के उनकी गिन्ती मुश्किल से याद रहती है। दूध की इस क़द्र फरावानी है के ख़त्म करने की कोशिश के बावजूद ख़त्म नहीं कर पाता। ग़र्ज़ के आपकी उस दुआ की बर्कत से बराबर मालदार होता चला जा रहा हूँ। (बहुज्जत-उल-असरार)

कमज़ोर ऊंटनी का तेज़ रफ़्तार होना

इमाम-उल-मोहद्दसीन हज़रत मुल्ला अली क़ारी(रह०अ०) ने अपनी तसनीफ़े लतीफ नज़हत-उल-ख़ातिर अलफ़ातिर में तहरीर फरमाया है के अबु हफ़्स उमर बिन सालेह बग़दादी(रह०अ०) अपनी ऊंटनी हाँकते हुए हज़रत ग़ौसुलसिक़लैन(रह०अ०) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ करने लगे के मैं हज बैतउल्लाह को जाना चाहता हूँ। मगर मेरी ऊंटनी क़ाबिले सफर नहीं। उसके सिवा मेरे पास

कोई दूसरी सवारी भी नहीं। हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने ऊंटनी की पैशानी पर हाथ रखा और एक ऐड़ी लगाई तो वो ऊंटनी बैतउल्लाह शरीफ तक किसी से पीछे ना रही। (बहुज्जतुल असरार)

मजलिस में हज़रत खिज़्र(अ॰स॰) का आना

आपके ख़ादिम ख़िताब का बयान है के एक दिन आप वअज़ फरमा रहे थे के यकायक आप पर एक अजीब केफियत तारी हुई और आप वअज़ तर्क करके तमाम अहले मजलिस के सामने हवा में परवाज़ करने लगे। दौराने परवाज़ आपकी ज़बाने मुबारक से ये अलफाज़ निकले के आप इस्राईली हैं और मैं मोहम्मदी। कुछ देर यहाँ तशरीफ रखीए और इस मोहम्मदी की चन्द बातें सुन लीजिए। चन्द लम्हात के बाद आप मिंबर पर तशरीफ ले आए और वअज़ में मशग़ूल हो गए।

मजलिस बर्खास्त हुई तो लोगों ने दौराने परवाज़ आपके इर्शादात की वज़ाहत चाही। आपने फरमाया के हुस्ने इत्तिफाक़ से आज हज़रत खिज़्र अलेहिस्सलाम का गुज़र इस तरफ हुआ। मैं उनसे मजलिस में तशरीफ आवरी के लिए कह रहा था। चुनाँचे उन्होंने मेरी दरख़्वास्त क़बूल कर ली और मजलिस में कुछ देर मेरा कलाम सुनते रहे। (क़लायद-उल-जवाहर)

आफ़्ताबा का क़िबला रूख़ होना शेख़ अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद जीली क़ज़्दीनी और शेख़ अबु इसहाक़ इब्राहीम बिन अबु अब्दुल्लाह तिबरी(रह॰अ॰) का बयान है के जब हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की शौहरत दयारो इमसार में फैली तो जीलान के तीन बुज़ुर्ग आपकी ज़ियारत के इरादे से बग़दाद आए उस वक़्त आप अपने मदरसे में थे। उन्होंने हाज़िर होने की इजाज़त चाही जो उन्हें मिल गई उन्होंने देखा के हज़रत के हाथ

में किताब है। उनका लौटा सिम्त क़िब्ले से टेढ़ा रखा है और उनका ख़ादिम उनके सामने खड़ा है। उन्होंने लोटे के टेढ़े होने और ख़ादिम की गुस्ताख़ी पर एक दूसरे की तरफ इंकारी निगाहों से देखा। हज़रत शेख़ ने किताब अपने हाथ से रख दी और उन्हें एक निगाह से देखा और ख़ादिम पर भी नज़र डाली। ख़ादिम बेहोश हो कर गिर पड़ा। फिर लोटे की तरफ देखा तो वो खुदबखुद क़िब्ले की तरफ फिर गया। (खुलासात-उल-मफाख़िर)

आपकी मजलिस में हुज़ूर(स॰अ॰स॰) का तशरीफ लाना शेख़ बक़ा बिन बत्तो(रह॰अ॰) फरमाते हैं के एक दिन मैं हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की मजलिस में हाज़िर हुआ। आप इस वक़्त मिंबर के नीचे के ज़ीने पर वअज़ फरमा रहे थे। यकायक आपने कलाम छोड़ दिया और मिंबर से नीचे तशरीफ ले आए। उस वक़्त मैंने देखा के मिंबर का पहला ज़ीना हदे नज़र तक वसी हो गया है। उस पर दीबाऐ सब्ज़ का फर्श बिछ गया है और उस पर सरदारे कायनात मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मअे सहाबाइक्राम(र॰अ॰) रोनक़ अफ़रोज़ हुए हैं। उस वक़्त शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के क़ल्ब पर अल्लाह तआला ने तजल्ली फरमाई। आप गिरने लगे थे के सरवरे कोनेन(स॰अ॰स॰) ने थाम लिया फिर आपका जिस्म सुकड़ कर चुड़िया की मानिंद हो गया। फिर आप का जिस्म बढ़ने लगा और आप इतने तवील व अरीज़ हो गए के देखने वालों को खौफ मालूम होता था। उसके बाद ये सारा मंज़र मेरी नज़र से ग़ायब हो गया।

लोगों ने शेख़ बक़ा(रह॰अ॰) से इस वाक़ये की तफसीली कैफियत पूछी तो आपने फरमाया के अल्लाह तआला पैग़म्बरों और असहाब को ऐसी क़ुव्वत अता फरमाता है के उनकी मुकद्दस अरवाह इज्साम और सिफात

मौजूदात की सूरत इख़्तियार कर लेती है। और जो शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) पहली तजल्ली पर गिरने लगे थे तो उसका सबब ये था के ये तजल्ली वो सिवाए सरवरे कोनेन(स॰अ॰स॰) की मदद के नहीं उठा सकते थे। दूसरी तजल्ली सिफाते जलाल की थी के आप बिलकुल छोटे हो गए। तीसरी तजल्ली सिफ़्ते जमाल की थी के आप तवीलो अरीज़ हो गए। और ये अल्लाह का फज़्ल है जिसको चाहे देता है और अल्लाह बड़े फज़्ल वाला है। (क़लायद-उल-जवाहर)

रसूले अकरम(स॰अ॰स॰) की ज़ियारत करवा दी

एक दिन सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) वअज़ फरमा रहे थे आपके मिंबर के क़रीब ही शेख़ अली बिन अबी नसरूल हुय्यती(रह॰अ॰) बैठे थे। दौराने वअज़ उनको नींद आ गई, सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) उस वक़्त ख़ामोश हो गए। और मिंबर से नीचे उतर कर शेख़ अली(रह॰अ॰) के सामने मोअद्दबाना खड़े हो गए। इतने में वो पसीने में तरबतर ख़्वाब से बेदार हो गए आपने फरमाया शेख़ अली! तुम इस वक़्त आक़ाऐ दो जहाँ हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को ख़्वाब में देख रहे थे। उन्होंने कहा बेशक। आपने फरमाया यही वजह थी के मैं मिंबर से उतर कर बा अदब खड़ा हो गया था लेकिन ये तो बताओ के हुज़ूर(स॰अ॰स) ने तुम से क्या फरमाया था। शेख़ अली(रह॰अ॰) ने अर्ज़ किया के हुज़ूर ने मुझे ताकीद फरमाई के हमेशा शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) की ख़िदमत में रहना। लोग बहुत मुताहय्यर हुए और शेख़ अली(रह॰अ॰) से पूछा के सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) को कैसे मालूम हो गया के आप सरवरे कोनेन(स॰अ॰स॰) के दरबार में हाज़िर हैं शेख़ अली(रह॰अ॰) ने जवाब दिया के मैं जो कुछ ख़्वाब में देख रहा था, हज़रत ग़ौसे

आज़म(रह॰अ॰) उसे आलमे बेदारी में देख रहे थे और इसीलिए आप मिंबर से उतर कर बा अदब खड़े थे। (क़लायद-उल-जवाहर)

मर्दाने गैब शेख़ अबी अब्दुल्लाह का बयान है के मैं शंबा 9 रबीअ-उल-आख़िर 552हि॰ को मग़रिब और इशा के दरमियान मदरसे की छत के ऊपर पीठ के बल पड़ा था। ये गर्मी का ज़माना था और हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) मेरे आगे रू बक़िबला मौजूद थे। मैंने आसमान व ज़मीन के दरमियान एक शख़्स को देखा जो तीर की तरह तेज़ी से गुज़र रहा था उसके सर पर निहायत लतीफ अमामा था जिसका एक शिमला उसके शानों के दरमियान लटक रहा था। ये सफेद कपड़ों में मलबूस था और उसकी कमर में कमरबंद था। जब वो हज़रत शेख़ के सर के बराबर गुज़रा तो जल्दी में यूं उतर पड़ा जैसे अक़ाब शिकार पर उतरता है। वो हज़रत शेख़ के सामने बैठ गया। और उन्हें अदब से सलाम किया फिर हवा में चला गया और मेरी नज़रों से ग़ायब हो गया। मैं हज़रत शेख़(रह॰अ॰) की तरफ उठा और उस शख़्स के बारे में पूछने लगा। आपने फरमाया तुमने उसे देख लिया? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ! फरमाया ये मर्दाने ग़ैब में से है जो सेरो सयाहत में मशग़ूल रहते हैं। उन पर अल्लाह का सलाम हो। (ख़ुलासात-उल-मफाख़िर)

ख़िरक़ह ग़ौस की बर्कात शेख़ इमाम हाफिज़ ताजउद्दीन अबुबकर अब्दुर्रज़ाक़ इब्ने शेख़-उल-इस्लाम मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) का बयान है के एक दफा 550हि॰ में मेरे वालिद ने अपनी बीवी (याहिया की वालिदा) से फरमाया के चावल पका लो। उन्होंने चावल पकाए और हज़रत शेख़ का दस्तरख़्वान भर दिया और ख़ुद सो रहें। आधी रात के वक़्त दीवार शिक़ हुई

और इसमें से एक मर्द अन्दर आ गया उसने वो सब कुछ खा लिया जो दस्तरख़्वान पर मौजूद था। फरागत के बाद वो उठने लगा। तो हज़रत के वालिद ने मुझे फरमाया के उठो उठो। उनसे अपने हक़ में दुआ करा लो। वो दीवार से बाहर निकल रहा था के मैं जिन्न की शक्ल वाले उस शख़्स से जा मिला। मैंने उससे दुआ की ख़्वाहिश का इज़हार किया तो उसने कहा के मुझे ये सब कुछ तुम्हारे वालिदग्रामी की दुआ और खिरकेह की बदौलत नसीब हुआ है। सुबह के वक़्त मैंने शेख़ अली बिन हुय्यती से इस वाक़ये का ज़िक्र किया तो उन्होंने फरमाया के आज तक जितने खिरकेह लोगों को पहनाए गए हैं उनमें खेरो बर्कत और अपने हामिल के लिए रूहानी मुक़ामात और फतूहात के एतबार से आपके वालिद ग्रामी के खिरकेह को मैंने जितना मोअस्सर देखा है ऐसा किसी को नहीं देखा। उन सत्तर मर्दों पर अल्लाह तआला ने फतूहाते ग़ैबिया के दरवाज़े खोल दिए जिन्होंने एक ही रोज़ शाम के वक़्त हज़रत शेख़ से ख़िरक़हऐ ख़िलाफत पहना। उनके सरों पर हज़रत शेख़ के हाथ की बर्कत से उन्हें अज्रे जमील अता किया गया। जिन अय्याम में मैंने तुम्हारे वालिदग्रामी को देखा उनसे बढ़ कर खेरो बर्कत वाले दिन मेरी नज़र से नहीं गुज़रे। (खुलासात-उल-मफाख़िर)

ग़ल्ले में बेपनाह बर्कत एक दफा बग़दाद में ख़ौफनाक क़हत पड़ा। आपके रकाबतदार शेख़ अबु-अल-अब्बास अहमद आपकी ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ की के कसीर-उल-अयाल हों लेकिन घर में कुछ नहीं और कई रोज़ से फाक़ह है आपने उनको तक़रीबन निस्फ मन गेहूँ दिए और फरमाया के उन्हें मिट्टी के एक मटके (या कोठे) में बन्द कर देना और उसमें एक सूराख़ कर के रोज़ाना ज़रूरत के मुताबिक़ ग़ल्लह निकाल

लिया करना। शेख़ अबुअल अब्बास अहमद का बयान है के हम पाँच साल तक गेहूँ खाते रहे लेकिन ख़त्म होने में ना आए। फिर एक दिन मेरी बीवी ने ये मटका खोल लिया तो जितने गेहूँ डाले थे उतने ही मौजूद थे। अब ये गेहूँ सात दिन में ख़त्म हो गए। मैंने इस वाक़ये का ज़िक्र आपसे किया तो फरमाया के अगर तुम उस मटके को ना खोलते तो तुम्हारा कुंबा सारी उम्र ये गेहूँ ख़त्म ना कर सकता था। (क़लायद-उल-जवाहर)

हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का रूहानी तसर्रूफ

शेख़ अबु हफ़्स उमर कीमानी(रह॰अ॰) का बयान है के एक रात में अपनी ख़लवत गाह में बैठा था के दीवार फट गई और एक निहायत बदसूरत शख़्स अन्दर दाख़िल हुआ। मैंने उससे पूछा तो कौन है? उसने कहा मैं इबलीस हूँ तुझे नसीहत करने की ख़ातिर आया हूँ। मैंने कहा तो मुझे क्या नसीहत करता है। कहने लगा मैं तुम्हे मुराक़्बे में बैठने का तरीक़ा सिखाता हूँ। वो महदूद व मक़्सूद होकर बैठ गया और उसका सर झुका हुआ था। (इस तरीक़े में घुटने खड़े करके दोनों हाथ इसमें हायल किए जाते हैं और सर घुटनों में झुका होता है) अगले रोज़ सुबह के वक़्त में हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। ताके उन्हें इस वाक़ये से मतलअ करूं। जब मैंने मुसाफह किया तो उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया और मेरे कुछ कहने से पहले फरमाया। ऐ उमर! अगरचे वो बड़ा झूटा है मगर ये बात उसने तुम से सच कही है ख़याल करना उसके बाद उसकी कोई बात क़बूल ना करना।

शेख़ अबुअलहसन का बयान है के उसके बाद में चालीस बरस तक शेख़ उमर(रह॰अ॰) के बैठने का यही अंदाज़ रहा (ख़ुलासात-उल-मफाख़िर)

फलसफे से तौबा शेख़ अबु-अल-मुज़फ़्फ़र मनसूर बिन मुबारक वासती बअज़-उल-मअरूफ़ जरादा का बयान है के मैं जवानी के अय्याम में एक रोज़ हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उस वक़्त मेरे पास उलूमे फलसफा और उलूमे रूहानियात पर मुशतमिल एक किताब थी। हाज़रीन में से किसी ने भी इस किताब के बारे में मुझ से बात ना की। अल्बत्ता हज़रत शेख़ ने किताब को देखे बग़ैर उसके मनदर्जात मालूम किए बग़ैर मुझ से फरमाया ऐ मनसूर! तेरी ये किताब बुरा साथी है। उठ खड़ा हो और इसे पानी में धो डाल। उस वक़्त मुझे ये ख़याल आया के हज़रत शेख़ के सामने से उठकर किताब को घर फैंक आँऊ और शेख़ के ख़ौफ से दोबारा उसे ना उठाँऊ अल्बत्ता किताब को धो डालने पर मेरा दिल आमादा ना हो रहा था क्योंके मुझे ये किताब बहुत पसंद थी और उसके बाज़ मज़ामीन मेरे ज़हेन में खुब चुके थे। मैं इस नीयत से उठा ही था के हज़रत शेख़ ने मुताज्जिब निगाहों से मुझे देखा। मैं उठ ना सका गोया उस वक़्त मैं क़ैद होकर रह गया था। हज़रत शेख़ ने फरमाया के अपनी ये किताब ज़रा मुझे दिखाना। मैंने उसे खोला तो वो कोरे कागज़ों का एक पुलंदा था जिसमें एक हर्फ भी लिखा हुआ ना था। मैंने किताब आपके हाथ में थमा दी। आपने उसके कुछ वर्क़ उलटाए पलटाए और फिर फरमाया के ये तो मोहम्मद बिन ख़रीस की किताब फज़ायले क़ुरआन है ये कहकर किताब आप ने मुझे दे दी। अब मैं देखता हूं तो वो वाक़ई मोहम्मद बिन ख़रीस की किताब फज़ायले क़ुरआन ही है। जो निहायत खूशख़त लिखी हुई है। उसके बाद आपने मुझे फरमाया के तुम इस बात से तौबा करते हो के ज़बान से वो बात कहो जो तुम्हारे दिल में ना हो। मैंने कहा जी हुज़ूर! हज़रत शेख़(रह॰अ॰) ने फरमाया

खड़े हो जाओ। मैं उठा तो मेरे क़ल्ब से फलसफा और रूहानियत के वो तमाम मज़ामीन हर्फे ग़लत की तरह मिट चुके थे जो इससे पहले मैं याद कर चुका था और ये मज़ामीन आज के दिन तक यूं मह्‌ हुए जैसे कभी इस ज़हेन से गुज़रे भी ना थे। (खुलासात-उल-मफाख़िर)

आपके जलाल का असर शेख़ बक़ा का बयान है के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) की ख़िदमत में एक सिन रसीदा शख़्स हाज़िर हुआ उसके साथ एक नोजवान भी था उसने आप से दरख़्वास्त की के इस लड़के के लिए दुआ फरमाएँ। ये मेरा बेटा है। हालाँके वो उसका बेटा ना था बल्के ये दोनों ग़लतकार थे। हज़रत शेख़ सख़्त नाराज़ हुए और फरमाया तुम लोग मेरे साथ भी ऐसा करने लगे हो! ये कहकर आप घर तशरीफ ले गए उसी वक़्त बग़दाद के इत्राफ़ में आग लग गई। एक मकान में बुझती के यकायक दूसरे मकान में भड़क उठती। रावी का बयान है के मैंने उस वक़्त देखा के मसायब और आफात बादल के टुकड़ों की तरह बग़दाद में उतर रहे थे। मैं जल्दी से आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। देखा तो आप ग़ज़बनाक हैं। मैं क़रीब बैठ गया और अर्ज़ करने लगा हुज़ूर! मख़्लूक़ पर रहम फरमाएँ। लोग हलाक हो रहे हैं। उनका ग़ुस्सा थम गया। मैंने देखा के मसायब के बादल छट गए और आग बुझ गई। (खुलासात-उल-मफाख़िर)

रूहानी ताक़त पर ग़ल्बा पाना शेख़ अब्दुल्लाह मोहम्मद हुसैनी(रह॰अ॰) से रिवायत है के एक दिन मैं शेख़ अली बिन अलहुय्यती(रह॰अ॰) के हमराह सय्यदना हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। दरवाज़े पर हम ने देखा के एक जवान चित पड़ा हुआ है उसने हमें देखते ही शेख़ अली बिन अलहुय्यती(रह॰अ॰) से मुख़ातिब होकर निहायत लिजाजत

से कहा के खुदारा शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) को खिदमत में मेरी सिफारिश कर दीजिएगा।

जब हम अन्दर पहुँचे और पेश्तर उसके के शेख़ अली बिन अलहुय्यती(रह०अ०) उस नोजवान के बारे में कुछ कहते आपने फरमाया अली दरवाज़े पर जो शख़्स पड़ा है वो मैं तुम्हें देता हूँ। शेख़ अली ने दरवाज़े पर जाकर उस शख़्स से कहा के सय्यदना अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) ने तेरे मुताल्लिक़ मेरी सिफारिश क़बूल फरमा ली है।

इतना सुनते ही वो शख़्स हवा में परवाज़ करके नज़रों से ग़ायब हो गया फिर हम ने आपसे उस नोजवान के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त किया आपने फरमाया ये शख़्स साहिबे हाल था आज हवा में परवाज़ करता हुआ बग़दाद पर से गुज़रा तो उसके दिल में ख़याल आया, के इस शहर में मेरी मिस्ल कोई नहीं है। मैंने बफज़्ले इलाही उसका हाल सलब कर लिया और वो उड़ने की क़ुव्वत से महरूम होकर हमारे दरवाज़े पर आ गिरा। अगर शेख़ अली उसकी सिफारिश ना करते तो वो यूंही पड़ा रहता। (क़लायद-उल-जवाहर)

खानाऐ कअबा दिखलाने का वाक़ेया आपके एक हम असर शेख़ अबु मदयन बड़े पहुँचे हुए बुज़ुर्ग थे। एक दिन उन्होंने अपने मुरीद अबु सालेह दौरान मोहम्मद-उल-ज़काली को हुक्म दिया के बग़दाद जाकर शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) से फिक्र की तालीम हासिल करो। चुनाँचे वो अपने मुर्शिद के हुक्म के मुताबिक़ हज़रत की खिदमत में बग़दाद पहुँचे। खुद उनका बयान है के मैंने शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) जैसा जलाल किसी में नहीं देखा। उन्होंने मुझे हुक्म दिया के मेरे ख़लवत खाने के दरवाज़े पर बीस दिन बैठो। मैंने हुक्म की तअमील की। बीस दिन पूरे हुए तो आपने अपने क़िब्ले की तरफ

इशारा करके फरमाया अबु सालेह इधर देखा। मैंने उधर देखा तो अपने आप को ऐन बैतउल्लाह शरीफ के सामने पाया। फिर फरमाया इस तरफ देखो मैंने दूसरी तरफ देखा तो अपने शेख़ अबु मदयन को खड़ा पाया। फिर आपने मुझ से पूछा के अब तुम बैतउल्लाह जाना चाहते हो या अपने शेख़ के पास? मैंने अर्ज़ की अपने शेख़ के पास। फिर फरमाया के एक क़दम में जाना चाहते हो या जिस तरह आए थे वैसे ही? मैंने अर्ज़ किया के जिस तरह आया था वैसे ही जाऊँगा। आपने फरमाया अच्छा जो तेरी मर्ज़ी। फिर फरमाया अबु मोहम्मद फिक्र की सीढ़ी तोहीद है और तोहीद ये है के दूई को यकसर दिल से निकाल डालो। उसके बाद आपने एक भरपूर नज़र मुझ पर डाली और तमाम जज़्बात और इरादे मेरे दिल से निकल गए और मैं दौलते फिक्र से माला माल हो गया। (क़लायद-उल-जवाहर)

अरवाहे अम्बिया(अ॰स॰) शेख़ कबीर आरिफ बिल्लाह अबु साअद क़ीलवी(रह॰अ॰) का बयान है के मैंने आँहुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को कई बार हज़रत शेख़ की मजलिस में जलवागर होते देखा। बिलाशुबह अम्बिया अलेहिमुस्सलाम की अरवाह ज़मीनों और आसमानों में सेरो सियाहत करती रहती हैं। जिस तरह हवा फिज़ा में चलती रहती है। और मैंने आपकी मजलिस में फरिश्तों को भी गिरोह दर गिरोह देखा है। नीज़ मैंने मर्दाने ग़ैब और जिन्नात को हज़रत शेख़ की मजलिस में दाख़िल होने के लिए एक दूसरे पर सब्क़त करते कई बार देखा। हज़रत ख़िज़्र(अ॰स॰) तो कसरत से मजलिस में आया करते थे एक दफा शेख़ की मजलिस के बारे में मैंने पूछा तो हज़रत ख़िज़्र(अ॰स॰) ने कहा जो शख़्स भी कामयाबी और छुटकारे का ख़्वाहिशमंद है

उसके लिए ज़रूरी है के शेख़ की मजलिस में हाज़िर है।
(खुलासात-उल-मफाखिर)

एक ताजिर की गैबी मदद का वाकेया

अबु-अल-सऊद अलहरीमी(रह॰अ॰) से मरवी है के अबु-अल-मुज़फ्फ़र अलहसन बिन नईन ताजिर ने शेख़ हम्माद-अल-दबास(रह॰अ॰) की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया। हुज़ूरे वाला! मेरा इरादा मुल्के शाम की तरफ सफर करने का है और मेरा काफिला भी तैयार है। सात सौ दीनार का माल तिजारत के लिए हरमाह ले जाऊंगा। शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) ने फरमाया अगर तुम इस साल सफर करोगे तो तुम सफर में कत्ल किए जाओगे और तुम्हारा माल व असबाब लूट लिया जाएगा। वो आपका इर्शाद सुनकर मग़मूम हालत में बाहर निकला तो सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) से मुलाक़ात हो गई। उसने शेख़ हम्माद का इर्शाद सुनाया तो आपने फरमाया अगर तुम करना चाहते तो जाओ। तुम अपने सफर से सही और तनदुरूस्त वापस आओगे। मैं इसका ज़ामिन हूँ।

आपकी बशारत सुनकर वो ताजिर सफर को चला गया और मुल्के शाम में जाकर एक हज़ार दीनार से उसने अपना माल फरूख़्त किया। बादअज़ाँ वो ताजिर अपने किसी काम के लिए हलब गया। वहाँ एक मुक़ाम पर उसने अपने हज़ार दीनार रख दिए और वहाँ ही दीनारों को भूल गया। और हलब में अपनी क़यामगाह में आ गया। नींद का ग़ल्बा था के आते ही सो गया। ख़्वाब में क्या देखता है के बद्दूओं ने उसका काफला लूट लिया है और काफले के काफी आदमियों को उन बद्दूओं ने क़त्ल भी कर दिया है और खुद उस पर भी बद्दूओं ने हमला कर के उसको मार डाला है। घबरा कर बेदार हुआ तो उसे अपने दीनार याद आए फौरन दौड़ता हुआ उस जगह पर पहुँचा

तो दीनार वहाँ वैसे ही पड़े मिल गए। दीनार लेकर अपनी क़याम गाह पर पहुँचा तो बग़दाद शरीफ़ वापस जाने की तैयारी की।

जब बग़दाद शरीफ़ पहुँचा तो उसने सोचा के पहले शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हूँ क्योंके कबीर-उल-सिन और उमर रसीदा हैं या हज़रत ग़ौसे पाक(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हूँ क्योंके आपने मेरे सफ़र के मुताल्लिक़ जो फ़रमाया था बिलकुल दुरुस्त हुआ। इसी सोच व विचार में था के हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से सोक़े सुल्तान में शेख़ हम्माद से उसकी मुलाक़ात हुई तो आपने उसको इर्शाद फ़रमाया के पहले हज़रत ग़ौस-उल-सिक़लैन(रह॰अ॰) ख़िदमते अक़्दस में हाज़री दो क्योंके वो मेहबूबे सुबहानी हैं। उन्होंने तुम्हारे हक़ में सत्तर मर्तबा दुआ माँगी है। यहाँ तक के अल्लाह करीम ने तुम्हारे वाक़ये को बेदारी से ख़्वाब में तबदील कर दिया है और माल के तलफ़ होने को नसयान से बदल दिया है। जब ताजिर हज़रत ग़ौस-उल-सिक़लैन(रह॰अ॰) की ख़िदमत हाज़िर हुआ तो आपने फ़रमाया के जो कुछ शेख़ हम्माद(रह॰अ॰) ने सुल्तान बाज़ार में तुझ से बयान फ़रमामा है बिलकुल ठीक है के मैंने सत्तर मर्तबा अल्लाह करीम की बारगाह में तुम्हारे लिए दुआ की वो तुम्हारे क़त्ल के वाक़ये को बेदारी से ख़्वाब में तबदील कर दे और तुम्हारे माल के ज़ाए होने को सिर्फ थोड़ी दे के लिए नसयान से बदल दे। (क़लायद-उल-जवाहर)

सत्तर घरों में बेक वक़्त हाज़िर होने की करामत

एक दिन रमज़ान शरीफ़ में सत्तर आदमियों ने फ़रदन फ़रदन आपको अपने घर में बवक़्त की ख़ातिर रोज़ाऐ इफ़्तार करने की दअवत दी। आपने हर एक की दअवत क़बूल फ़रमाई। हर दअवत देने वाले को किसी दूसरे

के भी मदऊ करने का क़तअन इल्म ना था आपने एक ही वक़्त में हर एक के घर उनके हमराह रोज़ाऐ इफ़्तार फरमाया। नीज़ आपने अपने आस्तानाए आलिया पर भी उस रोज़ रोज़ाऐ इफ़्तार फरमाया।

सुबह हर मदऊ करने वाले ने आपको अपने घर तशरीफ आवरी और इफ़्तारी की साअदत हासिल करने का तज़करह किया तो ये ख़बर बग़दाद शरीफ़ में खूब फैली। आपके खि़द्दाम में से एक ख़ादिम के दिल में ये ख़याल आया के हज़रत अपने आस्तानाऐ आलिया से बाहर तशरीफ नहीं ले गए तो ये लोग आपके बेक वक़्त तशरीफ आवरी और खाना तनावुल फरमाने का तज़करा कैसे करते हैं तो उसने हज़रत की खिदमते अक़्दस में हाज़िर होकर वाक़ेया अर्ज़ किया तो आपने फरमया के वो लोग अपने क़ौल में सच्चे हैं। मैंने उनमें से हर एक की दअवत क़बूल की और बेक वक़्त हर आदमी के घर जाकर खाना खाया। (तफरीह-उल-ख़ातिर)

चोर को अब्दाल बनाने की करामत शाह अबु-अल-मुआली(रह॰अ॰) ने तहरीर फरमाया है के हज़रत शेख़ दाऊद(रह॰अ॰) फरमाते थे, के चूंके हमारे पीर जहाँगीर (हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰)) के दरेदौलत पर सब लोग आते थे और तमाम अहले दौलत व साहिबे सरवत उस बारहाग के ख़ादिम थे। इसलिए चोर ने ख़याल किया के ज़रूर ऐसे जाह व जलाल वाले बड़े मालदार होंगे।

आँ रा के चुनीं जाह व हश्म रूऐ नमूद
दरे ख़ानाऐ ओ तूदाएज़र ख़्वाब्द बोद

और इरादा किया उनके घर में घुस जाओ और अपनी दिली मुराद पाओ। जब घर में दाखिल हुआ तो कुछ भी ना पाया और अंधा हो गया।

ख़फ़ाश के दरे ख़ाना ख़ुरशीद रूद
रोशन के चुनीं बे बसरो कोर शूद

आनजनाब(रह॰अ॰) पर उस स्याह बेनूर का हाल रोशन था। ख़्याल फरमाया के ये बात मुरव्वत से बईद है के हमारे घर में कामयाबी की ख़्वाहिश से आकर नाकामयाब चला जावे।

अज़ फतूहात व अज़ जिन्स महीं
कोरशुद चीज़े तवाँ दादन बायें

आप अभी इस ख़्याल में थे के हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम आए और अर्ज़ किया के आली मुमालिक के वाली! एक अब्दाल इस वक़्त क़ज़ाए इलाही से फ़ौत हो गया है जिसके लिए आप हुक्म दें उसकी जगह मुक़र्रर किया जाए। आँहज़रत(रह॰अ॰) ने फरमाया के एक शिकस्ता दिल शख़्स हमारे घर में पड़ा है जाओ उसको ले आओ ताके उसको बुलंद मर्तबे पर मुक़र्रर करें। हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम गए और उस शख़्स को आपके हुज़ूर में पेश किया। जिसको आपने एक निगाहे लुत्फ से अब्दाल बना दिया। (सीरत-उल-ग़ौस-उल-सिक़लैन)

जहाज़ को डूबने से बचाने का वाक़ेया एक दिन आप अपने मदरसे में दर्स व तदरीस में मशग़ूल थे के यकायक आपका चेहरा मुबारक सुर्ख़ हो गया और अपना हाथ चादर के अन्दर कर लिया कुछ देर बाद जब बाहर निकाला तो आसतीन से पानी टपक रहा था। तलबा, आपके जलाल से मबहूत हो गए और कुछ दरयाफ़्त ना कर सके। उस वाक़ये के दो माह बाद कुछ सौदागर बहरी सफर के बाद बग़दाद पहुँचे और बहुत से तहायफ लेकर हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आपने तलबा के सामने उनका हाल पूछा। सौदागरों ने बयान किया के दो माह हुए हम पुर सकून समुंद्र में सफर कर रहे के यकायक तेज़ व

तुंद हवा चलने लगी और समुंद्र में एक हौलनाक तलातुम पैदा हुआ। हमारा जहाज़ गर्दाब में फंस कर डूबने लगा उस वक़्त बेइख़्तियार हमारी ज़बान पर "या शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी" निकला। हमने देखा के एक हाथ गैब से बरआमद हुआ और उसने जहाज़ को खींच कर किनारे पर लगा दिया। तलबा ने उस वाक़ये की तारीख़ पूछी तो वही थी जिस दिन आपने भीगी हुई आस्तीन अपनी चादर से निकाली थी। (क़लाद-उल-जवाहर)

औलिया पर हुसूले अज़मत शेख़ अबु-अल-आस मूसली का बयान है के मेरे वालिद बुज़ुर्गवार ने ख़्वाब में देखा के बड़े बड़े अज़ीम-उल-मर्तबत औलियाइक्राम एक मेहफिल में जमा हैं और सदरे मेहफिल हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) हैं। उन औलिया अल्लाह में बाज़ के सर पर सिर्फ अमामा था। बाज़ के सर पर अमामा और एक चादर, और बाज़ के सर अमामा और उस पर दो चादरें थीं लेकिन आपके सरे अक़्दस पर अमामा और उस पर तीन चादरें थीं। मैं अभी आपकी अज़मते जमाल का मुशाहेदा कर रहा था के मेरी आँख खुल गई और ये देखकर हैरान रह गया के आप बनफ़्से नफ़ीस मेरे सिरहाने खड़े हैं मेरे बेदार होते ही फरमाया के उन तीनों चादरों के मुताल्लिक़ सोच रहे हो। उनमें से एक चादर शरीअत की है दूसरी हक़ीक़त की और तीसरा अज़मतों बुज़ुर्गी की है। (क़लायद-उल-जवाहर)

चिड़िया के मरने का वाक़ेया शेख़ उमर बिन मसऊद बज़ाज़(रह॰अ॰) बयान फरमाते हैं के एक दिन हज़रत ग़ौस-उल-सिक़लैन(रह॰अ॰) वज़ू फरमा रहे थे। एक चिड़िया ने आप पर बीट कर दी। आपने जलालियत से सर मुबारक उठा ऊपर देखा तो वो ऊपर उड़ रही थी। आपका देखना ही था के उसी वक़्त गिर कर मर गई।

आप वज़ू से फ़ारिग़ हुए तो आपने कपड़े का वो हिस्सा धोया और अपनी क़मीज़ मुबारक उतार कर मुझे दी और फ़रमाया के इसको फ़रोख़्त करके इसकी की क़ीमत ख़ैरात कर दो। ये उसका बदला है। (क़लायद-उल-जवाहर)

चूहिया के गिरने का वाक़या एक रात आप कुछ लिख रहे थे एक चूहिया ने छत में से कई बार मिट्टी गिराई। आपने हर बार मिट्टी साफ की लेकिन चूहिया बाज़ ना आई। आपने सर मुबारक उठा कर छत की तरफ नज़रे जलालत से देखा तो आपने चूहिया को देखकर फ़रमाया के तेरा सर उड़ जाए। उसी वक़्त वो चूहिया मर कर गिर पड़ी। लेकिन आप पर रक़्त तारी हो गई और आप ने लिखना छोड़ दिया। एक ख़ादिम ने अर्ज़ किया या हज़रत! ये चूहिया अपने केफ़रे किरदार को पहुँची। आप क्यों आज़ुरदह होते हैं? फ़रमाया के डरता हूँ के किसी मुसलमान से मुझे अज़्यत पहुँचे और उसका भी यही हाल ना हो। (क़लायद-उल-जवाहर)

बिच्छू के हलाक होने का वाक़या एक दिन आप सवारी पर जामअे मनसूरी नमाज़ के लिए तशरीफ ले गए। तो आपने अपनी चादर उतारी और अपने कपड़ों के नीचे से एक बिच्छू निकाल कर ज़मीन पर फैंक दिया। ये बिच्छू भागने लगा तो आपने फ़रमाया "तू अल्लाह के हुक्म से मर जा" आपकी ज़बान मुबारक से ये अलफ़ाज़ निकले ही थे के आअनन फ़आनन हलाक हो गया, फिर आपने फ़रमाया जामअे मनसूरी से यहाँ तक इस बिच्छू ने मुझे साठ दफ़ा काटा लेकिन मैंने सब्र का अज्र हासिल करने के लिए उफ्फ़ तक नहीं की। इसकी हलाकत दूसरे लोगो को आज़ार से बचाने के लिए है। (खुलासात-उल-मफ़ाखिर)

एक परिन्दे के मरने का वाक़ेया एक दिन आप अपनी मजलिस में कुद्रते इलाही के मोज़ू पर तक़रीर फ़रमा रहे थे के इतने में अजीब-उल-ख़लक़त परिन्दा फ़ज़ाए आसमानी में नमूदार हुआ लोग इश्तियाक़ से देखने लगे। आपने लोगों से मुख़ातिब होकर फ़रमाया उस ख़ालिक़े अक्बर की क़सम! अगर मैं इस परिन्दे से कहूं के तू अल्लाह के हुक्म से मर जा तो ये फ़ौरन मर जाए। अभी ये अलफ़ाज़ आपकी ज़बाने मुबारक पर ही थे के वो परिन्दा मर कर ज़मीन पर गिर पड़ा। और लोग दमबख़ुद हो गए।

वाक़ेया मुर्ग़ बरयाँ जमादी-उल-अव्वल ...हि॰ में बग़दाद की एक औरत अपने लड़के अब्दुल्लाह को साथ लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुई। और अर्ज़ किया सय्यदी! मेरा ये फ़रज़न्द आपसे बेहद अक़ीदत रखता है। मैं चाहती हूं के आपसे फ़ेज़ हासिल करे। इसे अपनी ग़ुलामी में क़बूल फ़रमाईये।

आपने उस और औरत की इसतदआ क़बूल कर ली और अब्दुल्लाह आपकी ख़िदमत में रहने लगा। हज़रत ने उसे चन्द अज़कार व अशग़ाल की तलक़ीन फ़रमाई। और मुजाहेदह व रियाज़त का हुक्म दिया।

चन्द दिन के बाद अब्दुल्लाह की माँ अपने फ़रज़न्द को देखने आई। अब्दुल्लाह बहुत दुबला और ज़र्द रू नज़र आ रहा था और जौ की रोटी खा रहा था। ये देखकर हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुई आप भी उस वक़्त खाना तनावुल फ़रमा रहे थे। एक क़ाब में भुनी हुई मुर्ग़ी रखी हुई थी जिसमें से कुछ खा चुके थे और हड्डियां पास पड़ी थीं। उस औरत से सब्र ना हो सका और कहने लगी। हज़रत! आप तो मुर्ग़ी खाते हैं और मेरे बच्चे को जौ की रोटी खिलाते हैं ये सुनकर आपने अपना हाथ मुर्ग़ी की हड्डियों पर रखा और फ़रमाया। "खड़ी हो जा उस

अल्लाह के हुक्म से जो बोसीदा हड्डियों को ज़िन्दा करता है।" आपका इतना फरमाना था के मुर्ग़ी ज़िन्दा होकर उठ खड़ी हुई और बोलने लगी। वो औरत सक्ते में आ गई। आपने उससे मुख़ातिब होकर फरमाया तेरा लड़का जब इस दर्जे पर पहुँच जाएगा। उस वक़्त जो जी चाहे खाए इस वक़्त उसके लिए जौ की रोटी ही मुनासिब है वो औरत बहुत नादिम हुई और अफ्व तक़सीर की ख़्वास्तगार हुई। (क़लायद-उल-जवाहर)

कबूतरी और कमरी का वाक़ेया एक मर्तबा अबु-अल-हसन बिन अहमद बिन वहाब अज़जी बीमार हुए तो हज़रत शेख़ उनकी बीमार पुर्सी को तशरीफ लाए। आपने उनके घर में एक कबूतरी और क़मरी देखी। अबु-अल-हसन ने अर्ज़ की। हुज़ूर ये कबूतरी छः माह से अण्डे नहीं दे रही और कमरी नो माह से ख़ामोश है। आप कबूतरी के पास तशरीफ लाए और फरमाया अपने मालिक को फायदा पहुँचा। फिर कमरी के पास आकर ठहरे और उससे फरमाया तू अपने ख़ालिक़ की तसबीह कर कमरी उसी वक़्त चेहचहाने लगी और बग़दाद के लोग जमा होकर उसकी आवाज़ सुनने लगे। कबूतरी ने बच्चे देने शुरू कर दिए और आख़िर तक जारी रहे। (ख़ुलासत-उल-मफाख़िर)

सैलाब का टल जाना एक दफा दरयाऐ दजला में ख़ौफनाक सैलाब आया और पानी दरया के किनारे से उछल कर बग़दाद की तरफ बहने लगा। अहले बग़दाद घबरा उठे और सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह०अ०) की ख़िदमत में हाज़िर होकर दुआ के ख़्वास्तगार हुए। हज़रत ने उसी वक़्त असा लिया और लोगों के साथ चल पड़े। दरया के किनारे पहुँच कर आपने अपना असाऐ मुबारक वहाँ गाढ़ दिया और फरमाया बस यहीं रूक जाओ। आपका इतना

फरमाना था के तुग़यानी थम गई। और सैलाब का पानी उतरना शुरू हो गया। हत्ता के दरया के किनारों के अन्दर अपनी असली हद पर बहने लगा। (क़लायद-उल-जवाहर)

बारिश का रूक जाना एक दिन सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) अपने मदरसे में वअज़ फरमा रहे थे। सामईन हज़ारों की तअदाद में जमा थे। यकायक सियाह बादल घिर आए और मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। लोग बारिश से बचने के लिए मुनतशिर होने लगे। आपने आसमान की तरफ नज़र की और कहा के मौलाए करीम! मैं तेरे बन्दों को जमा करता हूँ और तू उनको मुनतशिर करता है। मअन बारिश थम गई और लोग जमकर बैठ गए। शेख़ अदी बिन मुसाफिर(रह॰अ॰) और हज़रत कीमानी(रह॰अ॰) जो उस मौक़े पर मौजूद थे बयान करते हैं के मदरसे के अन्दर जहाँ तक सामईन मौजूद थे बारिश का एक क़तरा भी नहीं गिरता था लेकिन मदरसे के बाहर बारिश बदस्तूर जारी थी। (क़लायद-उल-जवाहर)

हमले का पसपा होना एक दफा बग़दाद पर एक अजमी बादशाह ने चढ़ाई की और उसकी ज़बरदस्त अफ़्वाज ने शहर का मुहासरा कर लिया। ख़िलाफते अब्बासिया उस वक़्त ज़वाल पज़ीर थी और अब्बासी ख़लीफा में दुश्मन का मुक़ाबला करने की सकत नहीं थी। चुनाँचे वो आपसे दुआ का तालिब हुआ। आपने शेख़ अली बिन अबी नसर-उल-हुय्यती(रह॰अ॰) से फरमाया। दुश्मन अफ़्वाज को पैग़ाम भेजो के वो यहाँ से चली जाएँ। उन्होंने अपने ख़ादिम को बुलाकर कहा के हमलावर लश्कर में जाओ, उसके परले सिरे पर चादर का एक ख़ेमा होगा उसमें तीन अश्ख़ास बैठे होंगे उनसे कहना के बग़दाद से चले जाओ। अगर वो कहें के हम किसी दूसरे के हुक्म से आए हैं तो तुम कहना के मैं भी दूसरे के हुक्म से आया हूँ। ख़ादिम

ने इसी तरह अमल किया। जब उसने उन तीन आदमियों को हज़रत का पैग़ाम दिया तो कहने लगे के हम खुद नहीं आए किसी दूसरे के हुक्म से आए हैं। ख़ादिम ने कहा के मैं भी किसी दूसरे के हुक्म से आया हूँ इतना सुनते ही उन लोगों ने अपना खेमा लपेट लिया और चलते बने। उनके साथ ही सारा हमलावर लश्कर मुहासरा उठाकर चल दिया।

आपकी दुआ से गुमशुदा ऊंटों का मिल जाना

एक दफा शक्कर का एक सौदागर बशरक़ज़ी चौदह ऊंटों पर शक्कर लाद कर बग़र्ज़ तिजारत कहीं जा रहा था। रास्ते में एक लक़ोदिक़ सहरा में काफले को क़याम करना पड़ा। आख़िर शब जब काफला चलने के लिए तैयार हुआ तो चार लदे हुए ऊंट कहीं ग़ायब हो गए, बशर कज़ी बहुत परेशान हुआ। इधर उधर बहतेरी तलाश की लेकिन ऊंट कहीं नहीं मिले। वो सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह०अ०) का अक़ीदतमंद था। आलमे यास में आपको पुकारा। देखता क्या है के एक नूरानी बुज़ुर्ग सफेद पोश एक टीले पर खड़े हैं और हाथ के इशारे से अपनी तरफ बुला रहे हैं। जब वो उस टीले के पास पहुँचा तो वो बुज़ुर्ग ग़ायब हो गए। उसने टीले पर चढ़ कर देखा तो दूसरी तरफ चारों ऊंट सामान समेत बैठे थे।

ख़याल में मुलाक़ात करवा देना शेख़ मोहम्मद बिन खिज़्र(रह०अ०) ने अपने वालिद से नक़ल किया है के एक दिन मैं सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह०अ०) की ख़िदमत में बैठा हुआ था के दिल में ख़याल आया क्या खूब हो क्या कभी शेख़ अहमद कबीर रफाई(रह०अ०) से मुलाक़ात हो जाए। ये ख़याल आने की देर थी के आपने मेरी तरफ देखा और फ़रमाया खिज़्र! ये शेख़ अहमद कबीर राफई(रह०अ०) बैठे हैं उनसे मुलाक़ात कर लो।

मैंने हैरान होकर ऊपर नज़र उठाई तो आपके पास एक पुरजलाल बुज़ुर्ग को बैठे पाया। मैंने उन्हें मोअदबाना सलाम किया उन्होंने फरमाया ऐ खिज़्र! जो शख़्स शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) को देख ले उसे मुझ जैसे शख़्स को देखने की आरज़ू नहीं करनी चाहिए ये फरमा कर शेख़ अहमद कबीर ग़ायब हो गए।

बेमौसम के सेब शेख़ अबु-अल-अब्बास खिज़्र बिन अब्दुल्लाह-अल-हुसैनी अलमूसली(रह॰अ॰) का बयान है के एक दिन मैंने हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की खिदमते अक़्दस में ख़लीफाए मुसतंजिद बिल्लाह अबु-अल-मुज़फ़्फ़र यूसुफ अब्बासी को देखा और उसने हज़रत की खिदमत में अर्ज़ किया के हुज़ूरे वाला! मैं ईतमेनाने क़ल्बी के लिए आपकी कोई करामत देखना चाहता हूँ और ईराक़ में वो मौसम सेब के फल का ना था। आपने अपना हाथ मुबारक हवा में फैलाया तो देखा के आपके मुबारक हाथ में दो सेब हैं। आपने एक सेब अबु-अल-मुज़फ़्फ़र को दिया और दूसरा खुद अपने पास रखा। आपने हाथ वाला सेब चीरा तो वो सफेद निकला और उसमें से कसतूरी की सी खुशबू आती थी। मगर अबु-अल-मुज़फ़्फ़र ने जब अपना सेब चीरा तो उसमें से कीड़ा निकला उस पर उसने पूछा ये क्या माजरा है के आपका सेब तो निहायत ही उम्दा और नफीस है? इस पर आप ने इर्शाद फरमाया ऐ अबु-अल-मुज़फ़्फ़र! इसको ज़ालिम का हाथ लगा जिससे इसमें कीड़ा पैदा हो गया। (बहुज्जत-उल-असरार)

क़ाफले की ग़ैबी इम्दाद शेख़ अबु उमर व उस्मान-अल-सरीफीनी व शेख़ अबु मोहम्मद अब्दुलहक़ हरीमी(रह॰अ॰) का बयान है के हम दोनों 3 सफर 555हि॰ बरोज़ इतवार हज़रत शेख़(रह॰अ॰) के मदरसे में उनकी खिदमत में हाज़िर थे आप उठे और वज़ू फरमाया। दो

रकअत नमाज़ पढ़ी। जब आपने सलाम फेरा तो एक चीख़ मारी और अपनी एक खड़ाऊं हवा में फेंक दी। वो हमारी निगाहों से ग़ायब हो गई तो दूसरी भी हवा में फेंक दी, वो भी ग़ायब हो गई। फिर बैठ गए किसी ने आपसे इस बारे में पूछने की जुर्रअत नहीं की।

तेईस रोज़ के बाद बिलादे अजम से एक क़ाफ़ला आया उन्होंने कहा हमारे पास हज़रत शेख़ के लिए कुछ नज़र है। हमने आपसे उसके क़बूल कर लेने की इजाज़त तलब की तो आपने फरमाया के उनसे ले लो। उन्होंने हमें रेशम और ख़ज़ के कपड़े कुछ सोना और हज़रत शेख़(रह०अ०) की खड़ावें दे दीं। हमने उनसे पूछा के आप लोगों को ये खड़ावें कहाँ से मिलीं। उन्होंने बताया के 3 सफर बरोज़ यकशंबा हम सफर पर जा रहे थे के कुछ बदूयों ने हम पर हमला किया। उनमें दो सरदार थे उन्होंने हमारा मालो असबाब लूटा। हमारे आदमी क़त्ल किए और एक वादी में उतर कर बाहम माल बाँटने लगे। हम वादी के किनारे उतरे। उस वक़्त हमने कहा के काश हम उस तकलीफ में सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी हसनी हुसैनी(रह०अ०) को याद करते। फिर हमने अपने अपने माल में से उनके लिए कुछ नज़र मुक़र्रर की ताके हम मज़ीद ख़तरे से बच जाएँ। बस हमें उनके याद करने की देर थी के गूंजदार आवाज़ें सुनाई दीं जो सारी वादी में फैल गईं। हम ने ख़याल किया के शायद उनके पास दूसरे बदवी आ गए हैं। इस असना में उनके कुछ आदमी हमारे पास आए और कहने लगे। आओ अपना माल ले लो और वो चीज़ देखो जिसने अचानक हमें आन पकड़ा है। वो हमें उन सरदारों के पास ले गए तो वो दोनों मर चुके थे उनमें से हर एक के पास पानी से तर एक एक खड़ाऊं पड़ी थी। उन्होंने हमारा माल वापसी कर दिया और कहा के इस अम्र में यक़ीनन कोई बड़ी बात पौशीदा है।

आपकी दुआ से कुत्ते का शेर पर ग़ालिब आना

शेख़ अबु-अल-मसऊद अहमद बिन अबु बकर हरीमी का बयान है के सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के एक हमअस्र वली अल्लाह शेख़ अहमद जाम ज़िन्दा पील(रह॰अ॰) एक हैबतनाक शेर पर सवार हो कर फिरा करते और जिस शहर में जाते वहाँ के बाशिन्दों से अपने शेर की खूराक के लिए एक गाय तलब किया करते थे। एक दफा फिरते फिराते बग़दाद पहुँचे और सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के पास कहला भेजा के मेरे शेर के लिए एक गाय भेज दीजिए। आपने जवाब में कहला भेजा के जल्द ही गाय आपको भेज दी जाएगी। शेख़ अहमद जाम की आमद की इत्तिला आपको एक दिन पहले ही मिल चुकी थी और आपने एक गाय तलाश कर रखी थी। शेख़ अहमद जाम का पैग़ाम मिलने पर आपने एक ख़ादिम के साथ वो गाय रवाना कर दी। एक मरयल सा कुत्ता आपके दरवाज़े पर पड़ा रहता था वो गाय के साथ हो लिया।

जब गाय अहमद जाम(रह॰अ॰) के पास पहुँची तो उन्होंने अपने शेर को इशारा किया के ले तेरी खूराक आ पहुँची। शेर फौरन गाय पर झपटा। अभी वो गाय तक नहीं पहुँचा था के मरयल कुत्ते ने उछल कर शेर को पकड़ लिया। और अपने पंजों से उसका पेट फाड़ डाला और उस गाय को हंकाता हुआ वापस सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के पास ले आया। शेख़ अहमद जाम(रह॰अ॰) बहुत नादिम हुए और हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर होकर मआफी के ख़्वास्तगार हुए।

हर एक की आरज़ू का पूरा होना

एक दिन सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की मजलिस बाबर्कत में मनदर्जाज़ेल असहाब मौजूद थे 1- शेख़ अबु-अल-सऊद बिन अबी बकर(रह॰अ॰) 2- शेख़ मोहम्मद बिन क़ायद

आवानी(रह॰अ॰) 3- शेख़ अबु-अल-क़ासिम उमर बज़ाज़(रह॰अ॰) 4- शेख़ अबु मोहम्मद हसन फारसी(रह॰अ॰) 5- शेख़ जमील(रह॰अ॰) 6-. शेख़ अबु हफ़्स उमर ग़ज़ाल 7- शेख़ खलील बिन अहमद सरसरी(रह॰अ॰) 8- शेख़ अबु-अल-बर्कात अली बताएही(रह॰अ॰) 9- शेख़ इब्ने अलखिज़्री(रह॰अ॰) 10- शेख़ अबु अब्दुल्लाह बिन अनवर बरऊनउद्दीन(रह॰अ॰) 11- अबु-अल-फतूह अब्दुल्लाह बिन हबुल्लाह 12- अबु-अल-क़ासिम अली बिन मोहम्मद 13- शेख़ अबु-अल-खैर मोहम्मद बिन मेहफूज़(रह॰अ॰)।

असनाऐ गुफ़्तगू मैं आपका जज़्बाऐ सख़ावत जोश में आया और आपने हाज़रीने मजलिस से फरमाया, माँगो जो माँगना है।

शेख़ अबु-अल-सऊद(रह॰अ॰) ने फरमाया। "मैं तर्के इख़्तियार करना चाहता हूँ।"

शेख़ मोहम्मद बिन क़ायद ने कहा "मैं मुजाहेदे की कुव्वत चाहता हूँ।"

शेख़ उमर बज़ाज़(रह॰अ॰) ने कहा "मैं ख़शियते इलाही चाहता हूँ।"

शेख़ हसन फारसी(रह॰अ॰) ने कहा "मेरा खोया हुआ हाल मुझे वापस मिल जाए।"

शेख़ जमील(रह॰अ॰) ने कहा "मैं हिफ़्ज़े वक़्त का आरज़ूमंद हूँ"

शेख़ उमर ग़ज़ाल(रह॰अ॰) ने कहा "मैं तवील उम्र का ख़्वाहिशमंद हूँ।"

शेख़ सरसरी(रह॰अ॰) ने अर्ज़ किया "मेरी आरज़ू है के मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा रहूं जब तक अल्लाह तआला मुझे मुक़ामे कुतबीयत पर फायज़ ना कर दे।"

शेख़ अबु-अल-बर्कात(रह॰अ॰) ने कहा "मैं इश्क़े इलाही में इनेहमाक चाहता हूँ।"

शेख़ इब्ने खिज़्री(रह॰अ॰) ने कहा "मैं क़ुरआन व हदीस हिफ़्ज़ करने का ख़्वाहिशमंद हूँ।"

शेख़ अबु अब्दुल्लाह मोहम्म्द बिन अनवरीर ने कहा "मैं नायब वज़ीर बनना चाहता हूँ।"

शेख़ अबु-अल-फतूह बिन हब्तुल्लाह ने अर्ज़ किया "मैं ख़लीफा के घर का उस्ताद बनना चाहता हूँ।"

शेख़ अबु-अल-क़ासिम बिन मोहम्मद ने कहा "मैं ख़लीफा का दरबान बनना चाहता हूँ।"

शेख़ अबु-अल-ख़ैर मुलतजी हुए "मुझे मुक़ामे मअरफ़त अता हो जाए।"

सब की तमन्नाएँ सुन कर हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने ये आयत पढ़ी: *कुल्लन नुमिद्दु होलाइ व होलाई मिन अताई रब्बिका। वमा काना अताउ रब्बिका मेहज़ूरा।* (ऐ नबी वो (वो दुनिया के तालिब) और ये (आख़िरत के तालिब सब ही को तेरे परवरदिगार की बख़्शिशे आम है। किसी पर बन्द और ममनूअ नहीं)

शेख़ अबु-अल-ख़ैर मोहम्मद बिन मेहफ़ूज़(रह॰अ॰) ने 3 रजब 593हि॰ को बयान किया के ख़ुदा की क़सम उन लोगों में से हर एक को वही कुछ मिल गया जिसकी उसने ख़्वाहिश की थी, सिवाए शेख़ ख़लील सरसरी(रह॰अ॰) के क्योंके अभी उनके मुक़ामे क़ुतबीयत पर फायज़ होने का वक़्त नहीं आया। इंशाअल्लाह वो भी मुक़र्ररह वक़्त पर अपनी आरज़ू पा लेंगे।

क़ब्र और वुअद पर तसर्रूफ़ शरीफ़ अबु-अल-अब्बास अहमद बिन शेख़ अबी अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन मोहम्मद अज़हरी हुसैनी(रह॰अ॰) अपने वालिद के हवाले से ख़बर देते हैं के हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की मजलिस में ईराक़ के अकाबिर मशायख़ सरकरदा उल्मा और सरख़ैल फ़िक़हा

हाज़िर हुआ करते थे। उनमें से शेख़ यक़ा शेख़ अबु सईद क़ीलवी, शेख़ अली बिन हुय्यती, शेख़ अबु नजीब सहरवरदी, शेख़ अबु हकीम बिन दुनिया, शेख़ माजिद कारदी, शेख़ मुतिरमा बराई, क़ाज़ी अबु-अल-अलआ मोहम्मद बिन फराअ क़ाज़ी अबु-अल-हसन अली बिन दामग़ानी और इमाम अबु-अल-फतह रहमहुमुल्लाह वग़ैरा हम सरे फेहरिस्त हैं। मशायख़ और अकाबरीन में से जो भी बग़दाद में दाख़िल होता वो लाज़मन पहले पहल आपकी ख़िदमत में हाज़री देता। हज़रत शेख़ अब्दुर्रहमान तिफ्सोंजी को अगरचे मैंने बग़दाद में नहीं देखा। ताहम मैंने बारहा देखा के वो अपने शहर तिफ्सोंज में देर तक ख़ामोश कान लगाए बैठे रहते। पूछने पर फरमाते के मैं हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) का कलाम सुन रहा था। और मैंने बारहा हज़रत शेख़ अदी बिन मुसाफिर को दानिस में देखा के आप अपने ख़लवत कदे में पहाड़ की तरफ निकलते और बरछे से दायरह खींच लेते और उस दायरे में हो जाते। फिर फरमाते के जो शख़्स मुक़र्रबीन के जोहर फर्द शेख़ अब्दुल क़ादिर बिन अबी सालेह(रह॰अ॰) का कलाम सुनना चाहे वो इस दायरे में आ जाए, उनके बड़े बड़े अहले सोहबत दायरे में दाख़िल होकर हज़रत शेख़(रह॰अ॰) कलाम सुनते। बअज़ अवक़ात उनमें से कुछ लोग ये कलाम लिख भी लेते। ये लोग दिन और तारीख़ याद रखते और जब बग़दाद उनका आना होता तो हज़रत शेख़ की मजलिस के हाज़िरबाश लोगों की तहरीरों से अपनी तहरीर का मुक़ाबला करते चुनांचे वो सही निकलते। दूसरी तरफ जिस वक़्त शेख़ अदी बिन मुसाफिर दायरे में दाख़िल होते, हज़रत शेख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) अहले मजलिस से फरमाते के शेख़ अदी बिन मुसाफिर तुम में मौजूद हैं।

अब्दालों की जमाअत शेख़ अबु-अल-हसन बग़दादी(रह॰अ॰) का बयान है के मैं हज़रत सय्यदी अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के दरवाज़े पर ज़िक्रो अज़कार में मसरूफ रहता था। और रात के वक़्त अक्सर बेदार होता था। ताके हज़रत शेख़(रह॰अ॰) की ख़िदमत का शर्फ हासिल हो सके। एक दफा माहे सफर 553हि॰ में रात के वक़्त हज़रत शेख़ अपने घर से निकले। मैंने पानी का लौटा पेश किया मगर आपने ना लिया। मदरसे के दरवाज़े पर पहुँचे तो वो दरवाज़ा खुद ब खुद खुल गया। आप आगे रवाना हुए और मैं पीछे चल पड़ा। मेरा ख़याल था के हज़रत शेख़ को मेरे पीछे आने का इल्म नहीं है। आप शहर के दरवाज़े पर पहुँचे, ये दरवाज़ा भी खुल गया आप बाहर निकले और पीछे मैं भी निकला। दरवाज़ा बन्द हो गया। थोड़ी दूर चलने के बाद मैंन महसूस किया के हम ऐसे शहर में हैं जिसे मैं नहीं जानता। वहाँ सराए की तर्ज़ के एक मकान में हम दाख़िल हुए। मकान में मौजूद छः आदमियों ने हज़रत शेख़ से सलाम दुआ की। मैं कोने में एक सतून की आड़ में दुब्का खड़ा था। इसी असना में मकान के एक हिस्से से रोने की आवाज़ आई। मगर ये आवाज़ जल्दी बन्द हो गई। इतने में एक शख़्स दाख़िल हुआ और उस तरफ चल दिया जहाँ से रोने की आवाज़ आई थी। थोड़ी देर बाद वो शख़्स एक आदमी को कंधे पर उठाए हुए वापस आया। इसके साथ एक और शख़्स था जो सर से नंगा और लंबी मूछें वाला था। वो हज़रत शेख़ के रूबरू बैठ गया। आपने उसे कलमाऐ शहादत की तलक़ीन की। उसके सर और मूंछों के बाल कतर कर दुरूस्त किए उसे टोपी पहनाई और उसका नाम मोहम्मद रखा। फिर उस जमाअत से फरमाया के मुझे हुक्म हुआ है के मरने वाले शख़्स की बजाए मैं उसे मुक़र्रर करूं। उन्होंने कहा के बसरो चश्म। उसके बाद हज़रत शेख़

उन लोगों को छोड़ कर वापस रवाना हुए और मैं भी आपके पीछे चला। चन्द क़दम ही चले थे के बग़दाद के दरवाज़े पर पहुँच गए। हस्बे अव्वल ये दरवाज़ा खुल गया। फिर आप मदरसे के दरवाज़े पर तशरीफ लाए तो वो भी खुल गया। आप घर में चले गए। अगली सुबह मैं हस्बे मामूल पढ़ने के लिए आपके सामने हाज़िर हुआ तो आपकी हैबत से मैं कुछ पढ़ ना सका। आपने फरमाया बेटे पढ़ो डरते क्यों हो? मैंने आपको क़सम दी के मुझे गुज़िशता रात वाले वाक़ये की हक़ीक़त से बाख़बर फरमायें। आपने फरमाया जो शहर तुमने देखा वो निहावंद है और छ: आदमी जिन से मुलाक़ात हुई अब्दाल और नज्बा हैं। मरने वाला शख़्स उसी जमाअत का सातवाँ फर्द था। मैं उसकी वफात के वक़्त उसके पास आया। जो शख़्स उसे कंधे पर उठाकर लाया वो अबु-अल-अब्बास खिज़्र हैं। वो उसे उठाकर लाए ताके उसके बजाए दूसरा इन्तेज़ाम किया जा सके। और जिस शख़्स को मैंने कलमा शहादत पढ़ाया वो क़सतनतूनिया का एक इसाई है। मुझे हुक्म दिया गया के मरने वाले का क़ायम मुक़ाम यही शख़्स बने। चुनाँचे वो लाया गया। मेरे हाथ पर मुसलमान हुआ और अब्दालों की जमाअत का रूक्न बना।

रावी का बयान है के उसके बाद हज़रत शेख़ ने मुझ से अहेद लिया के मैं उनकी ज़िन्दगी में उस वाक़ये का किसी से ज़िक्र न करूं।

वाक़या ज़ग़न शेख़ अबु-अल-हसन अली बिन अब्दुल्लाह(रह॰अ॰) का बयान है के एक दफा का ज़िक्र है के हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) मजलिस में वअज़ फरमा रहे थे और अहले मजलिस हमातन गोश होकर आप के इर्शादात सुन रहे थे। और हवा बहुत तेज़ चल रही थी के एक चील ने मजलिस के ऊपर आकर चक्कर लगाना और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। जिससे हाज़रीन को

वहुत तशवीश हुई। तो ज़बाने मुबारक से फरमाया ऐ हवा! इस चील के सर को पकड़ ले। इतना फरमाना ही था के उस चील का सर जुदा होकर गिर पड़ा। फिर आप मिंबर शरीफ से उतरे और उस चील का सर और धड़ दोनों को मिलाकर बिस्मिल्लाहीर्रहमानिर्रहीम पढ़ते हुए अपना हाथ मुबारक उस पर फैरा तो अल्लाह के अज़न से ज़िन्दा हो गई। और उड़ने लगी। और लोगों ने खुद उसका मुशाहेदा किया। (बहुज्जत-उल-असरार)

माले हराम से बाख़बर करने की करामत

शेख़ अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन शेख़ अबु-अल-अब्बास खिज़्र बिन अब्दुल्लाह बिन याहिया-अल-हसनी का बयान है के मेरे वालिद ने हमें मोसल में ये वाक़ेया सुनाया उन्होंने कहा एक रात हम सय्यदी हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर हसनी वलहुसैनी के मदरसे में मुक़ीम थे के ख़लीफा मुसतंजिद बिल्लाह अबु-अल-मुज़फ़्फ़र यूसुफ आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और नसीहत चाही नीज़ ज़र व जवाहर के दस तूड़े जिन्हें दस ख़ादिम उठाए हुए थे नज़र में पेश किए। हज़रत शेख़ ने फरमाया के मुझे इनकी ज़रूरत नहीं और आपने उन्हें क़बूल करने से इंकार फरमा दिया। ख़लीफा ने इसरार किया तो उनमें एक तूड़ा आपने दाहिने हाथ और दूसरा अपने बायें हाथ में लिया और उन्हें निचोड़ा तो वो खून बनकर बहने लगे। उस पर आपने फरमाया ऐ अबु-अल-मुज़फ़्फ़र! तुम्हें अल्लाह से शर्म नहीं आती। लोगों का खून जमा करके उसे मेरे सामने पेश करते हो। ये देखकर अबु-अल-मुज़फ़्फ़र बेहोश हो गया। हज़रत शेख़(रह॰अ॰) ने फरमाया मुझे माअबूदे बरहक़ के जलाल की क़सम! अगर मेरे दिल में रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के साथ क़राबत की निसबत का एहतराम ना होता तो मैं ये खून बहता छोड़ देता। यहाँ तक के

अबु-अल-मुज़फ्फ़र के घर तक बहना जाता।

सीनह मुनव्वर करने का वाक़ेया शेख़ अली बिन इदरीस याक़ूबी(रह॰अ॰) का बयान है के एक दफ़ा 560हि॰ में मैं सय्यदना ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और फ़ेज़ का तालिब हुआ आप थोड़ी देर ख़ामोश रहे। उसके बाद यकायक आपके जिस्म अक़्दस से एक नूर निकला और मेरे जिस्म में दाख़िल हो गया। उस वक़्त मैंने देखा के तमाम अहले क़ुबूर और उनके हालात मेरी नज़र के सामने हैं। फिर मैंने मलायका को देखा और उनकी तसबीहें सुनीं। ग़र्ज़ अजीब व ग़रीब हालात का इन्किशाफ मुझ पर हुआ। क़रीब था के मैं दीवाना हो जाऊँ के सय्यदना ग़ौस-उल-सिक़लैन(रह॰अ॰) ने मेरे सीने पर अपना दस्ते मुबारक फेरा। अब मैंने अपना सीनह नूर से भरपूर और फ़ौलाद से सख़्त महसूस किया। फिर मतलक़ ना घबराया और आज तक उस नूर से मुसतफ़ीज़ हो रहा हूं।

असा मुबारक का रोशन होना शेख़ अबु अब्दुलमालिक ज़ियाल(रह॰अ॰) का बयान है के एक रात मैं मदरसे आली में खड़ा था इतने में सय्यदना शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) वहाँ तशरीफ लाए आप के दस्ते मुबारक में असा था। आपको देखकर मेरे दिल में ख़्वाहिश पैदा हुई के इस वक़्त आपकी कोई करामत देखूं। मअन आप मेरी तरफ देखकर मुसकुराए और अपना असा मुबारक ज़मीन में गाढ़ दिया। वो रोशन होकर चमकने लगा और मदरसे में हर तरफ रोशनी फैल गई। एक घन्टे तक असा मुबारक इसी तरह चमकता रहा। फिर आपने उसे ज़मीन से उठा लिया तो जैसा था वैसा ही हो गया।

आपने फ़रमाया क्यों ज़ियाल तुम यही चाहते थे? शेख़ ज़ियाल कहते हैं के ये वाक़ेया 560हि॰ में पेश आया।

(क़लायद-उल-जवाहर)

रूहानी तसर्रूफ का वाक़ेया शेख़ अबु-अल-बका मोहम्मद बिन अलअज़हरी सर्राफ़ीनी(रह॰अ॰) का बयान है के मैं अल्लाह तआला से एक मुद्दत तक ये सवाल करता रहा के रिजाले ग़ैब से मुझे कोई मर्दे राह मिले। मैंने एक रात ख़्वाब में देखा के मैं हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल(रह॰अ॰) के मज़ार की ज़ियारत कर रहा हूं और उनके मज़ार के क़रीब ही एक मर्द मौजूद है। मुझे ख़याल आया के हो ना हो ये मर्दाने ग़ैब में से है। ख़्वाब से बेदार हुआ तो इसे बेदारी में देखने की तवक्क़अ मेरे दिल में यक़ीन से बदल चुकी थी। मैं उसी वक़्त हज़रत इमाम की क़ब्र शरीफ पर आया देखा तो वही शख़्स मौजूद है जिसे मैं ख़्वाब में देख चुका था। वो मेरे आगे निकला और मैं उसके पीछे पीछे चला। वो दजला पर पहुंचा तो मैंने देखा के नहर दजला के दोनों किनारे मिल गए। और वो एक क़दम भर कर नहर से पार हो गया। अब मैंने इसे क़सम देकर रोका ताके उससे कुछ बातें करूं। वो ठहर गया। मैंने पूछा तेरा क्या मज़हब है? कहने लगा *हनीफंम मुस्लिमंव वमा अना मिनल मुशरीक़ीन* यानी रास्त दीन फरमांबरदार और मैं मुशरिकों में से नहीं हूं। मैंने अपने तौर पर समझा के वो हन्फी-उल-मज़हब है। उसके बाद वो चल दिया। मुझे ख़याल आया के हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़री दूं। और उन्हें ये वाक़ेया बताऊं। मैं आपके मदरसे में आया और दरवाज़े पर रूक गया। आपने अन्दर से मुझे आवाज़ दी ऐ मोहम्मद! मशरिक़ से मग़रिब तक रूए ज़मीन पर इस वक़्त उसके सिवा कोई और हन्फी वली मौजूद नहीं है। (ख़लासात-उल-मफाख़िर)

मुशाहेदा कराने में राहनुमाई शेख़ अबु-अल-हसन बोसकी(रह॰अ॰) का बयान है के आख़िरी उम्र में मेरे दिल में एक ऐसा उक़्दह पैदा हुआ जिसके बहुत सारे उमूर मसअला ला यख़्ल की शक्ल इख़्तियार कर गए। मैं उसके हल के लिए हज़रत शेख़ अली बिन हुय्यती की ख़िदमत में आया। उन्होंने मुझे देखते ही फरमाया अबु-अल-हसन! तेरा उक़्दह अफ़आल क़ुद्रत के बारे में है। ये ज़बानी कलामी बातों से नहीं सोहबत से हल होगा। तुम शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के पास जाओ। वो उरफ़अ के बादशाह हैं और उस वक़्त मुतसर्रफीन के अफ़आल की बाग इन्हीं के हाथ में है।

शेख़ अबु-अल-हसन का बयान है के मैं बग़दाद में हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीनानी(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उस वक़्त आप अपने मदरसे के क़ुबे में तशरीफ फरमा थे और सामने एक जमाअत मौजूद थी। मैं भी सामने जाकर बैठ गया तो आपने मेरी तरफ निगाह उठाई। जो कुछ मेरे दिल में था और जिस सबब से मैं उनके पास आया था। वो सब उसी एक निगाह में उनसे मैंने समझ लिया। उन्होंने अपने मसुल्ले के नीचे से पाँच तार का बटा हुआ एक धागा निकाला। उसका एक सिरा मेरे हाथ में दे दिया दूसरा अपने हाथ में रखा उसका एक पेच खोला तो मेरे उक़्दह का एक बड़ा हिस्सा मुझ पर खुल गया और मैंने उसमें एक अम्र जलील मुशाहेदा किया आपने उसका एक और पेच खोला तो मेरे उस अक़ीदा का दूसरा बड़ा हिस्सा हल हो गया और मैंने उसमें भी बड़ा मामला देखा आप यूंही उस धागे का पेच खोलते मेरे उक़्दे गिरहें खुदबखुद खुलती जातीं और मैं ऐसे अम्र देखता जिनकी हक़ीक़त के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। यहाँ तक के आपने उसके पाँचों पेच खोल डाले उस दौरान मेरे मसअले के

सारे राज़ मुझ पर अयां हो गए और उसके तमाम मख़्फ़ी और पोशीदा राज़ खुलकर मेरे सामने आ गए। नीज़ मेरी बसीरत क़ुवाए रूहानिया के साथ उठ खड़ी हुई और उसने तमाम हिजाबात को फाड़ डाला। हज़रत शेख़(रह०अ०) ने मेरी तरफ नज़र की और फरमाया:

"पूरी क़ुव्वत के साथ उसे पकड़ लो और अपनी क़ौम को हुक्म दों के वो उसके खूब तर को ले ले।"

मैं आपके सामने खड़ा हो गया। क़सम बखुदा ना तो मैंने उनसे कोई बात की और ना हाज़रीन को मेरे मामले का कुछ पता चला। उसके बाद मैं वापस अपने मुक़ाम पर लौट आया और शेख़ अली बिन हुय्यती(रह०अ०) की खिदमत में हाज़िर हुआ। इससे पहले के मैं कुछ बोलूं आपने फरमाया क्यों, मैंने तुझे कहा नहीं था के शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) आरफीन के बादशाह और अफ़आल मुतसर्रफीन की बाग के मालिक हैं। अबु-अल-हसन! तेरे उक़्दे के सिलसिले में मुशाहेदात तेरे मुक़द्दर में ना थे मगर जिस वक़्त शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) की नज़र तेरे उक़्दे पर पड़ी तो उन्होंने तुझे उसका मुशाहेदा करा दिया। ये तो वो उक़्दा है के जिसकी अब्जद में उमरें गुज़र जाती हैं और हाँ अगर वो तुझे "मज़बूती से पकड़ लो" का जुमला इर्शाद ना फरमाते तो तेरी अक़्ल ज़ायल हो जाती और तेरा हश्र हैरान व सरगर्दा लोगों में होता। और आपने "अपनी क़ौम को हुक्म दे के वो उसका खूब तर ले ले।" फरमा के इस जानिब इशारा फरमाया है के तू मुक़्तदा है।

हज़रत गौसे आज़म(रह०अ०) की बात ना मानने की सज़ा अबु मोहम्मद बिन रजब दारी(रह०अ०) का बयान है के शेख़ इबाद(रह०अ०) और शेख़ अबुबकर बिन हमामी बुलंद अहवाल के मालिक थे। हज़रत सय्यदी शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह०अ०), शेख़ अबुबकर से फरमाया

करते थे के शरीअते मुतहरा मुझ से तेरी शिकायत करती है आप उन्हें कई बातों से मना करते थे मगर वो उनसे बाज़ नहीं आते थे एक दफा हज़रत शेख़ मस्जिद रसाफा में दाख़िल हुए तो शेख़ अबुबकर् वहाँ मौजूद थे आपने अपना हाथ उनके सीने पर फैरा और फरमाया मैं अबुबकर् को खींचता हू और उसे बग़दाद से निकालता हूँ। ये कहना था के शेख़ अबुबकर् के अहवाल और वारदात ख़त्म हो गए और उनके रूहानी मुक़ामात उनकी निगाहों से पौशीदा हो गए। वो मोज़अे क़र्फ की तरफ निकल गए। अब उनका ये हाल था के जब कभी बग़दाद में दाख़िल होने का इरादा करते मुंह के बल गिर पड़ते और अगर कोई शख़्स उन्हें उठाकर बग़दाद में दाख़िल होने की कोशिश करता तो वो भी मुंह के बल गिर पड़ता।

एक दिन उनकी वालिदा रोती चीख़ती हज़रत शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुई। अपने बेटे से मुलाक़ात का शोक़ और वहाँ जाने से अपनी माअज़ूरी का दुखड़ा सुनाने लगी आपने थोड़ी देर के लिए अपना सर झुकाया और फिर फरमाया हमने क़र्फ से बग़दाद आने की इजाज़त दे दी है मगर वो तख़्ता ज़मीन के नीचे नीचे आएगा और तेरे घर के कुंए के अन्दर से तेरे साथ गुफ़्तगू करेगा। लोगों का बयान है के शेख़ अबुबकर् हफ़्ते में सिर्फ एक बार घर के कुंए के अन्दर आते और अपनी वालिदा से मुलाक़ात करके वापस चले जाते।

शेख़ अदी बिन मुसाफिर(रह॰अ॰) ने शेख़ क़ज़ैब-उल-बान(रह॰अ॰) को हज़रत शेख़(रह॰अ॰) की ख़िदमत में भेजा ताके वो आपकी बारगाह में शेख़ अबुबकर(रह॰अ॰) की सिफारिश करें आपने उनसे मुताल्लिक़ भलाई का वादा फरमाया।

मुज़फ़्फ़र जमाल और शेख़ अबुबकर(रह॰अ॰) की

आपस में दोस्ती थी। मुज़फ़्फ़र ने इन्ही दिनों अल्लाह तआला को देखा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मुज़फ़्फ़र से फरमाया ऐ मुज़फ़्फ़र मुझ से कुछ माँग! उन्होंने अर्ज़ की मोला! मेरे भाई अबुबकर् का क़सूर माफ हो और उन्हें मुक़ाम मिले। अल्लाह तआला ने फरमाया ये मामला मेरे दुनिया व आख़िरत के वली सय्यद अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) से मुताल्लिक़ है तू उनकी तरफ जा और कह के तेरा रब फरमाता है के मैंने मख़्लूक़ पर आफ़त नाज़िल करने का इरादा किया था तूने उनकी शिफाअत की जो मैंने क़बूल कर ली और तूने मुझ से सवाल किया था के मैं रहम करूं अपनी बख़्शिश से। और मोमिनों में से जिसने तुझे देखा उस पर अपना फज़्लो करम आम करूं। सो मैंने ये बात भी क़बूल कर ली पस तू अबुबकर् से राज़ी हो जा क्योंके मैं उससे राज़ी हो गया हूँ। इतने में आँहुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का ज़हूर हुआ और आपने फरमाया ऐ मुज़फ़्फ़र! ज़मीन में मेरे नायब और मेरे उलूम के वारिस सय्यद अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) से कह दे के तेरे जद्देअम्जद का हुक्म है के अबुबकर् को उसके अहवाल व मनाज़िल वापस फेर दे। बिलाशुबह तो उससे मेरी शरीअत के मामले पर ही नाराज़ हुआ है मगर मैंने उसे माफ कर दिया है। जब मुज़फ़्फ़र को ये खुशख़बरी मिली तो वो अबुबकर् की तरफ चले ताके उसे तमाम वाक़ेयात सुनाएं और खुशख़बरी दें मगर अबुबकर् को पहले ही कशफ से ये सारी बातें मालूम हो गई थीं हालांके उससे पहले जब से उनके अहवाल गुम हुए थे उन पर किसी शै का कशफ नहीं होता था। ये दोनों हज़रात रास्ते में एक दूसरे से मिले फिर दोनों मिलकर हज़रत सय्यदी महीउद्दीन अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) की ख़िदमत में आए। आपने फरमाया ऐ मुज़फ़्फ़र! तू अपना पैग़ाम पहुँचा दे।

उसने आपसे सारा वाक़ेया बयान किया। जब वो असनाए वाक़ेया में भूलने लगे तो हज़रत शेख़(रह॰अ॰) ने उन्हें याद दिलाया। उसके बाद जिन ख़िलाफ़े शरअे अमूर की वजह से हज़रत शेख़(रह॰अ॰) अबुबकर से नाखुश थे उनसे अबुबकर(रह॰अ॰) को तौबा कराई और अपने सीने से लगाया उस कुर्बत में शेख़ अबुबकर(रह॰अ॰) को तमाम गुमशुदा अहवाल और मज़ीद कई मनाज़िल मयस्सर आ गए।

मुज़फ़्फ़र के साथ जो वाक़ेयात पेश आए थे वो उन्हें हिकायत के तौर पर बयान किया करते थे और हमने (रावी) अबुबकर(रह॰अ॰) से पूछा के तुम अपनी वालिदा से मिलने किस तरह आते थे? उन्होंने कहा मैं जिस वक़्त उसकी ज़ियारत का इरादा करता था मुझे कोई चीज़ उठा कर ज़मीन के नीचे ले जाती और घर के कुंए में खड़ा कर देती। मैं वालिदा से मिलता फिर उसी तरह वापस अपने मुक़ाम पर पहुँचा दिया जाता। (खुलासात-उल-मफाख़िर)

शेख़ जबली(रह॰अ॰) शेख़ अबु-अल-क़ासिम बताएहीं नज़ील शाम का बयान है के मैं 579हि॰ में सालेहीन की ज़ियारत के लिए कोहे लबनान की तरफ आया उस वक़्त उस पहाड़ में असफहान का एक निहायत सालेह शख़्स रहता था जिसे कोहे लबनान में तवील अर्से क़याम करने की वजह से शेख़ जबली कहा जाता था। मैं उसके पास हाज़िर हुआ। पूछा हुज़ूर! आपको यहाँ कितना अर्सा हो गया है? उन्होंने कहा साठ साल। मैंने कहा इस दौरान आपके साथ कोई अजीबो ग़रीब वाक़ेया गुज़रा हो तो बतायें उन्होंने कहा ये 559हि॰ का वाक़ेया है के एक दफा चांदनी रात को उस पहाड़ वालों को मैंने देखा के कुछ लोग दूसरों के साथ जमा हो रहे हैं और गिरोह दर गिरोह ईराक़ की तरफ हवा में उड़ रहे हैं। मैंने उनमें से एक दोस्त

से पूछा आप लोग किधर जा रहे हैं? उसने कहा हमें खिज़्र अलेहिस्सलाम ने हुक्म दिया है के हम लोग बग़दाद में कुतब वक़्त के सामने हों। मैंने पूछा कुत्बे वक़्त इस वक़्त कौन है? उसने कहा शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) मैंने साथ चलने की इजाज़त तलब की जो उसने दे दी। चुनांचे हम लोग हवा में उड़े और ज़रा सी देर में बग़दाद पहुंच गए। मैंने देखा के वो तमाम सफें बाँध कर हज़रत शेख़ के सामने खड़े हैं और उनके अकाबिर हज़रत शेख़ से अर्ज़ कर रहे हैं आक़ा! जो हुक्म हो। आप उन्हें मुख़्तलिफ़ अेहकाम दे रहे हैं और वो उनकी बजाआवरी के लिए एक दूसरे पर सब्क़त हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं। थोड़ी देर बाद आपने उन्हें वापस होने का हुक्म दिया तो वो उल्टे क़दम पीछे हटे। फिर हवा में चलते हुए सीधे खड़े हो गए। मैं अपने दोस्त के साथ पहाड़ पर वापस लौट आया तो मैंने उससे कहा के आज की रात हज़रत शेख़ के सामने तुम लोगों का अदब और उनके हुक्म की बजाआवरी में सब्क़त का जो तमाशा मैंने देखा है मैं हैरान रह गया हूं। उसने कहा मेरे भाई! हम ऐसा क्यों ना करें। ये तो वो शख़्सियत है जिसने कहा है के मेरा ये क़दम हर वली की गर्दन पर है और फिर हमें उनकी इताअत और एहत्राम का हुक्म भी तो दिया गया है।

मुख़ालफत का अंजाम शेख़ अबु-अल-हसन अली बिन याहिया बिन अबी-अल-क़ासिम अज़जी(रह॰अ॰) का बयान है के एक मर्तबा अयाद ने कहा के मैं हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) की वफ़ात के बाद ज़िन्दा रहूंगा और मैं उनके अहवाल व मुक़ामात का वारिस बनूंगा। हज़रत शेख़ ने उसका हाथ पकड़ा और फरमाया ऐ अयाद! मैं तेरी ख़्वाहिश के और तेरे दरमियान दूरी डाल दूंगा। और तेरी सिफात की चराहगाह में अपने हिज्र के घोड़े छोड़

दूंगा। ये कहकर आपने अपना हाथ उसके हाथ से छुड़ा लिया और उसका सारा हाल सलब कर लिया वो उस हालत पर एक मुद्दत तक रहा। उसी दौरान एक रात शेख़ जमील बदवी अपनी ख़लवतगाह में मौजूद थे के अचानक उन पर एक शख़्स वारिद हुआ उसने उन्हें मग़लूब कर दिया और उनका जस्सा अलहेदा फेंक दिया गया। उनमें से एक तेज़ रोशनी वाला लतीफ नूर ज़ाहिर हुआ। वो इस हाल में देख रहे हैं सुन रहे हैं अदराक कर रहे हैं फिर उनकी रूह आलमे मलाकूत की बारगाह की तरफ उठाई गई। वो एक ऐसी मजलिस में पहुँची जहाँ मशायख़(रह॰अ॰) की एक जमाअत मौजूद थी। जिनमें से कुछ लोगों से ये वाक़िफ थे और कुछ से नावाक़िफ थे। उसी असना में एक लतीफ हवा चली जिसने उन्हें मस्त कर दिया। वो लोग कहने लगे ये हवा सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के मुक़ाम की खुशबू से महक रही है उस वक़्त उनके कान में आवाज़ आई के मख़्फी वस्फ के अदराक के सिलसिले में ये सब से आला शै है। यहाँ उन्होंने अपने बातिन से निदा सुनी के ऐ अल्लाह! मैं अपने भाई इबाद के बारे में तुझ से सवाल करता हूँ। मअन उनके कान में ये बात डाल दी गई के इबाद को उनका हाल वही शख़्स वापस करेगा जिसने उससे सलब किया है उसके बाद शेख़ जमील अपने बशरी हाल की तरफ लौट आए और हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर(रह॰अ॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुए आपने फरमाया ऐ जमील! तूने इबाद के लिए सवाल किया? उन्होंने कहा जी हाँ! फरमाया उसे मेरे पास ले आओ। ये उसे आपकी ख़िदमत में ले गए आपने उससे फरमाया के ऐ इबाद! तुम हाजियों के हमराह उनके ख़ादिम बनकर चले जाओ। उसने कहा! इस वक़्त ईराक़ी क़ाफला बग़दाद से निकल रहा था। इबाद उस क़ाफले के साथ मुक़ाम

फैंद तक चला। वहाँ उसने दरख़्त देखा जिसकी वजह से उसमें वजद पैदा हुआ। ये चीखा चिल्लाया और चक्कर लगाए यहाँ तक के वजद में अपने वजूद से ग़ायब हो गया उसके मसाम खुल गए। और उनसे खून बहने लगा यहाँ तक के जब उसके क़दमों से खून बह निकला तो उसे होश आया और उसका सलब शुदा हाल उसे वापस मिल गया। इधर हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) ने शेख़ जमील(रह०अ०) से फरमाया के अल्लाह तआला ने अभी फैंद के मुक़ाम पर इबाद को उसका हाल वापस कर दिया है मैंने अल्लाह पर क़सम खाई थी के उसे उसका हाल वापस ना करे यहाँ तक के वो खूने हिज्र में ग़ोते खाए। सो आज उसने ऐसा कर लिया। फिर इबाद हाजियों के साथ चला गया और कुछ बदवियों ने उन पर हमला किया। इबाद जब भी किसी चीज़ का इरादा करता तो वो एक चीख़ मारता चुनाँचे वो चीज़ हो जाती। उन बदवियों को भगाने की नीयत से उसने चीख़ मारी मगर यही चीख़ खुद उस पर लौट आई और वो उसी जगह मर गया। फैंद में हाजियों के दरमियान उसकी मौत की ख़बर फैल गई। हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) ने उसी दिन उसकी मौत की ख़बर जमील को दे दी। हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर(रह०अ०) फरमाया करते थे के उन दो आदमियों ने मेरे हाल में मुझ से मुक़ाबला बाज़ी की। मैंने बारगाहेखुदावंदी में उनकी गर्दनें मारीं।

मलफ़ूज़ात

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) अल्लाह तआला के सच्चे दोस्त थे उनकी ज़िन्दगी का बेशतर हिस्सा दीने हक़ के प्रचार और अहयाए किताब व सुन्नत में गुज़रा आपकी तअलीमात और वअज़ों में अल्लाह तआला की तोहीद और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की सच्चे दिल से इत्तिबअ पर बहुत ज़ोर दिया गया है। आपने शरीअत और तरीक़त को लाज़िम व मलज़ूम क़रार दिया है आपके नज़दीक अल्लाह की मअरफ़त का रास्ता सिर्फ इत्तिबअे सुन्नत के ज़रिये तरीक़त के उसूलों पर अमल पैरा होना है। आपके सिलसिले तसव्वुफ का तमाम तर माख़िज़ क़ुरआन मजीद और सुन्नते नबव्वी है और उन्हीं की रोशनी में आपने मख़्लूक़े खुदा को इल्मो इरफान से अपने क़लूब को रोशन करने की दअवत दी है। आपकी तअलीमात जो मलफ़ूज़ात की सूरत में मुख़्तलिफ कतुब में मौजूद हैं उनका यहाँ खुलासा पेश किया जाता है। ताके क़ारिईन मुसतफीद हो सकें।

तोहीद तोहीद मुक़ाम क़ुद्स से होने वाले असरार व ज़मायर अख़फ़ाअ का नाम है और क़ल्ब का हदूद अफ़्कार से तजावुज़ कर के मदराजे आला तक पहुँच जाने का और इक़्दामे तजरीद से तक़र्रूब की जानिब बढ़ने और तफ़्रीद से जानिबे क़ुर्ब बढ़ जाने का। और कोनेन को लायशी समझते हुए ज़ाहिरी व बातिनी नूर के इक़्तेबास का। और बिला अज़ीमत कश्फे तजल्लियात अनवार के तहत दोनों आलमों को फना कर लेने का।

यक़ीन यक़ीन नाम है आलमे ग़ैब के असबाब व असरार की तहक़ीक़ का और मेहबूब के साथ उस इत्तिसाल का जिससे मेहबूब के सिवा तमाम ग़ैरों से इनक़ताअ हो

जाए और ज़िक्र मेहबूब के ज़रिये वहशत व ग़ीबत को इस्लाह हो सके। अगर तुम अपने नफ़्स को हालते ज़िक्र में ग़ैरउल्लाह से जुदा करके लक़ा व मुशाहेदा हुरमते वजदान को तर्क कर दोगे तो तुम अपनी अक़्ल से आजिज़ तसव्वुर किए जाओगे क्योंके मोहब्बत के साथ ग़यूबत का तसव्वुर ही नहीं किया जा सकता। जब मुराद क़ल्ब पर ग़ालिब आ जाती है तो हर शै खुदा की मलकीयत बन जाती है और ग़ैरउल्लाह से तमाम इरादे साक़ित हो जाते हैं उस वक़्त सही मअनों में ममलूक से मलकीयत ख़त्म जो जाती है और उसी हालत को ख़ालिस कहा जाता है। क्योंके जब तुम ज़िक्र में मशगूल होगे तो उससे मोहब्बत क़ायम रहेगी लेकिन जब तुम उससे अपना ज़िक्र सुनने लगो तो फिर तुम उसके मेहबूब बन जाओगे।

याद रखो! मख़्लूक़ तुम्हारे दरमियान एक हिजाब है क्योंके तुम्हारा नफ़्स कभी तुम्हारे रब के दरमियान हिजाब बना हुआ है। फिक्र एक मौत है लेकिन फिर भी लोग उसमें ज़िन्दा रहने की तमन्ना करते हैं। हाल की इब्तिदा अवाम करते हैं लेकिन हाल की इब्तिदा सिर्फ ख़्वास ही का हिस्सा है। जिस वक़्त बस्त की केफ़ियत होती है तो इनबिसात हासिल होता है और रूख़्सत को अज़ीमत में तबदील कर दिया जाता है क्योंके अज़ीमत एक क़ाबिले फ़ख़्र मुसर्रत है इसलिए के रूख़्सत नाक़िस ईमान वालों के लिए होती है और अज़ीमत कामिल ईमान वालों के लिए।

ज़िक्र आपने फरमाया है के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह तआला की जानिब से ऐसा इशारा हो जाए जो क़लूब पर असर अंदाज़ होने लगे और ये असरअंदाज़ी दायमी रहे ना तो उसमें नसयान का दख़्ल हो ना वो ग़फ़्लत व तकद्दुर का बाअस बन सके और जब ये वस्फ़ पैदा हो जाए तो नफ़्स व क़ल्ब खुद ब खुद ज़ाकिर हो जाते हैं। जैसा के

अल्लाह तआला ने फरमाया:

फज़्कुरउल्लाह ज़िक्रन कसीरन - यानी खुदा को ज़्यादा से ज़्यादा याद करो।

और अफ़्ज़ल ज़िक्र वो है जो गोशाए बातिन में मिनजानिब अल्लाह पैदा होने वाली वारदात से एक हीजान बर्पा कर दे।

हुस्ने खुल्क़ आपने फरमाया है के हुस्ने खुल्क़ नाम है मुतालेआ हक़ के बाद मख़्लूक़ात की जफाओं से असर क़बूल ना करने का। लिहाज़ा अपने नफ़्स को हक़ीर तसव्वुर करते हुए नफ़्सानी अफआल को हक़ीर तसव्वुर करो। जो मख़्लूक़ को ईमान व हिकमत वदीअत किए गए हैं उसकी क़द्रो मंज़िलत करे। यही ऐसे मुनाक़िब हैं जिनसे लोगों के जोहर खुलते हैं।

वारदात आपने फरमाया है के वारदाते इलाहिया ना तो बिला तलब हासिल होते हैं ना किसी वजह से ज़ायल होते हैं और ना किसी एक तरीक़ा से पहुँचते हैं ना उनके लिए कोई वक़्त का तईय्युन है लेकिन तवारूक शैतानिया की हक़ीक़त उसके बरअक्स है।

मोहब्बत आपने फरमाया है के मोहब्बत उस क़ल्बी लगाओ का नाम है जो मेहबूब के लिए पैदा हो और दुनिया मोहब्बत करने वालों की नज़र में अंगूठी के हल्क़ा या ग़म व अलम की मजलिस की तरह महसूस होने लगे।

मोहब्बत एक ऐसा नशा है जिसमें हर वक़्त मदहोशी का आलम तारी रहता है जिसका नशा नहीं उतरता लेकिन उसमें ये ज़रूरी है के ज़ाहिरी व बातिनी तौर पर मेहबूब से वो खुलूस क़ायम रहे जिसमें खुलूस नीयत का दख़ल रहे। मोहब्बत मेहबूब के सिवा सबसे क़तेअे तअल्लुक़ कर लेने का नाम है और जब मोहब्बत का नशा तारी हो जाता है तो मुशाहेदाऐ मेहबूब के बग़ैर मुहिब्ब होश में नहीं

आते और ना अपने अमराज़े क़ल्ब से बिला मुशाहेदाए मेहबूब शिफायाब होते हैं। ना वो मेहबूब के तज़करे के बग़ैर लज़्ज़त हासिल करते हैं ना किसी की पुकार का जवाब देते हैं।

नअेमत आपने फरमाया है के चश्मे मअरफत से मुशाहेदा करके बिसाते क़ुर्ब तक रसाई हासिल करने का नाम नअेमत है।

तसव्वुफ आपने फरमाया है के सूफी वो है जो अपनी मुराद को मुरादे हक़ के ताबअे कर दे और तर्के दुनिया करके मुक़द्दरात की मुवाफ़्क़त करने लगे। उस वक़्त उसको मुराद के मुताबिक़ आख़िरत से क़ब्ल ही दुनिया हासिल हो जाएगी और उस पर खुदा की जानिब से सलाम आने लगेगा।

तौबा आपने फरमाया है के तौबा नाम है अल्लाह तआला की उन अनायात साबिक़ा और क़दीमा के दौबारा हासिल करने का जो उसने माज़ी में अपने बन्दे पर की हैं और जब ये मुक़ाम मिल जाता है तो नापाक अज़ायम का क़ल्ब से ख़ात्मा करके उसको उस तरह रूह के सपुर्द कर दिया जाता है के क़ल्ब व अक़्ल रूह के तावे होकर रह जाते हैं। और तौबा का सही मुक़ाम हासिल होकर तमाम अमूर सिर्फ रज़ाए इलाही के लिए अंजाम पाने लगते हैं।

मअरफत आपने फरमाया है के मअरफत नाम है के कायनात की मख़्फी अशिया के मअनी से वाक़फीयत हासिल कर लेने और मशीयत में उसके हुस्न के मुशाहेदे का जिसकी बिना पर कायनात की हर शै से वहदानियत के मअनी ज़ाहिर होने लगें और फानी अशिया की फना से इल्मे हकीक़त का इस तरह अदराक होने लगे के अल्लाह तआला की अहदीयत की जानिब एक ऐसा इशारा हो जिससे हैबत रबूबियत और असराते बक़ा ज़ाहिर होने लगें

और वो इशारा लक़ा की जानिब इस तरह हो जिससे चश्मे बातिन पर जलाल खुदावंदी का ज़हूर होने लगे।

शौक़ आपने फरमाया है के बेहतरीन शौक़ वो है जिसमें ऐसी हुज़ूरी हासिल हो के कोई वक़्त भी मुलाक़ात से खाली ना रहे और वो हुज़ूरी रवीय्यत व क़ुर्ब से ज़ायल ना हो सके बल्के जिस क़द्र मुलाक़ात में इज़ाफ़ा होता जाए उसी क़द्र शौक़ में भी ज़्यादती पैदा होती चली जाए। उसी तरह जब तक अवारज़ात से इनख़ला नहीं होता उस वक़्त तक शौक़ की तकमील मुहाल है। अवारज़ात मुवाफ़्क़ते रूह इत्तिबअे अज़ायम और ख़ते नफ़्स का नाम है और जब इश्तियाक़ असबाब से खाली होता है तो फिर ये समझ में नहीं आता के किस शै ने उस दर्जा पर पहुँचा दिया। क्योंके फिर ऐसी दायमी हुज़ूरी हासिल हो जाती है के उसके सबब शौके मुशाहेदा में इज़ाफ़ा होता चला जाता है।

हम्द आपने फरमाया है के हामिद वो है जो अता व मनअ और सूदोज़ियाँ से बेनियाज़ हो। उसी मुक़ाम पर पहुँच कर बन्दे में शुक्र व हम्द के दोनों औसाफ मसावी हो जाते है। और हम्द ही वो शै है जो शहूद व कमाल की तमाम हदों को वस्फे जमाल में गुम कर देती है।

सिद्क़ आपने फरमाया है के अक़वाल व आमाल में सिद्क़ ये है के उसके ज़रिये रवीयते खुदावंदी हासिल रहे और अहवाल में सिद्क़ ये है के बन्दे के क़ल्ब में अल्लाह तआला के लिए ऐसे तसव्वुरात क़ायम हो जाएँ के खुदा की निगरानी और तवज्जह के ख़याल के अलावा इसमें और कोई शै बाक़ी ना रहे।

फना आपने फरमाया है के फना ये है के अदना तजल्ली की वजह से वली के ऊपर असरार खुदावंदी का इस तरह ज़हूर हो के पूरी कायनात उसकी निगाहों में हीच होकर रह जाए और इसी अदना तजल्ली की वजह

से वली फना हो जाए और उसकी फना ही उसकी बक़ा का सबब हो जाए लेकिन ये बक़ा खुदा तआला की लक़ा का मज़हर होगी यानी जब अल्लाह तआला का इर्शाद हो तो फना हो जाए और जब उसकी तजल्ली पड़े तो बक़ा हासिल हो जाए। इस तरह वो वली फना के बाद मुक़ाम बक़ा में पहुंच जाएगा।

बक़ा आपने फरमाया है के बक़ा उस लक़ा के बग़ैर हासिल नहीं होती जिस लक़ा के साथ फना व इनक़ताअ वाबस्ता ना हो। ख़्वाह वो चश्मे ज़दन के लिए ही क्यों ना हो और अहले बक़ा की शनाख़्त ये है के कोई फानी शै उनके ओसाफ में मसाहिब नहीं हो सकती इसलिए के फना और बक़ा आपस में एक दूसरे की ज़िद हैं।

वफा आपने फरमाया है के वफा नाम है महरूमी व नाकामी के आलम में खुदा की खुशनूदी और इताअत को मलहूज़ रखने का और अपने तमाम अक़वाल व आमाल में हुदूदे इलाही के मलहूज़ रखने का क़ौलन और फअेलन। और जब मोमिन के ख़ौफे दर्जे का वज़न किया जाए तो दोनों मसावी हों।

मुशाहेदा आपने फरमाया है के मुशाहेदा नाम है चश्मे बातिन को तमाम चीज़ों को देखने से मना करने और चश्मे मअरफ़त से मुशाहेदा बारी करने का। ताके यक़ीन व सफा क़ल्ब में इस तरह जलवा फ़गन हों के आलमे ग़ैब का मुशाहेदा होने लगे।

हिम्मत आपने फरमया है के हिम्मत नाम है अपने नफ़्स को हुब्बे दुनिया से और अपनी रूह को ताल्लुक़ अक़्बा से खाली कर लेने और अपने इरादों को अपने रब के इरादों के साथ वाबस्ता कर देने और अपने बातिन को कायनात से खाली कर देने का। ख़्वाह वो चश्म ज़दन के

लिए ही क्यों ना हो।

तजरीद आपने फरमाया है के तलबे मेहबूब में सिवाते कायनात के बावजूद मुक़ामात इसराअ को तदब्बुर से ख़ाली कर लेने और लिबासे तमानियत के साथ मुफारक़ते मख़्लूक़ को गवारा कर लेने और ख़ुलूस के साथ ख़ल्क़ से हक़ की जानिब रूजू हो जाने का नाम तजरीद है।

अनाबत आपने फरमाया है के अनाबत का मतलब है तलबे तरक़्क़ी और किसी मंज़िल पर रूक जाने से एहतराज़ करना और तरक़्क़ी करके रमूज़ बातिनी तक रसाई हासिल कर लेना और अपने इरादों पर वक़्ते हुज़ूरी एतमाद रखना। फिर तरक़्क़ी करके रब्बे करीम की जानिब कुल्ली तौर पर खुद को रूजू कर देना। उसके हुसूल के बाद अनाबत व हुज़ूरी के ज़रिये रूजू का इस तरह मुशाहेदा करने लगेगा के ग़ैरउल्लाह की जानिब से रग़बत ख़त्म हो जाएगी और ख़ौफे इलाही का ग़ल्बा हो जाएगा।

तअज़्ज़ आपने फरमाया है के तअज़्ज़ हक़ीक़त में वो है जो अल्लाह की तरफ से हो और अल्लाह ही के लिए हो। इस तअज़्ज़ का फायदा ये होगा के नफ़्स अहसासे अजज़ करने लगेगा और अल्लाह तक रसाई के लिए हौसले बुलंद हो जाऐंगे।

किब्र आपने फरमाया है के तकब्बुर वो है जो ख़्वाहिशे नफ़्स लिए हो। और तबीअत में ऐसा हीजान पैदा कर दे के खुदा तक रसाई का इरादा मग़लूब होकर रह जाए (किब्र तबई किब्र किसी से बुराई में कम नहीं होता)

हुसूल आपने फरमाया है के हुक्मे इलाही के बग़ैर ख़्वाहिश के मुताबिक़ किसी शै का हुसूल तो इनाद व शिक़ाक़ में दाख़िल है और बिला ख़्वाहिश हासिल करना मुवाफ़्क़त व इत्तिफाक़ है। किसी शै को बज़ाते खुद तर्क

कर देना निफाके वरिया है।

हया आपने फरमाया है के हया ये है के जब तक बन्दा अल्लाह तआला का हक़ अदा नहीं करता या हराम कर्दा अशिया की तरफ मुतावज्जह रहता है या उस शै की तमन्ना करता रहता है जिसका वो मुसतहिक़ नहीं है लिहाज़ा वो अल्लाह से हया करता है और ख़ौफे इलाही की वजह से गुनाहों को तर्क कर देता है और उसमें हया का जज़्बा शामिल होता है और उस वक़्त तक हया पर क़ायम रहता है जब तक ये तसव्वुर रखता है के उसकी पूरी ज़िन्दगी को अल्लाह तआला देख रहा है और उस पर मतलअ है। कभी हैबत व क़ल्ब के दरमियानी पर्दे उठ जाने की वजह से भी हया पैदा होती है।

सब्र आपने फरमाया है के मसायब व इब्तला में साबित क़दमी और शरीअत के दामन को पकड़े रहने का नाम सब्र है। सब्र की भी कई इक़साम हैं। अव्वल सब्र मअे अल्लाह। वो ये है के अवामिरो नवाही को साबित क़दमी के साथ अदा करके खुदा तआला के अेहकाम पर सब्र इख़्तियार करे और उसी के ज़रिये वो सकून हासिल करे जिसके तहत क़ज़ा व क़द्र और खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ हालते फिक्र में भी तुर्शरू हुए। बग़ैर ग़ना महसूस करने लगे।

दोम सब्र अलां अल्लाह। हर मामले में अल्लाह के वअदों की जानिब मुतवज्जह रहे क्योंके मोमिन के लिए दुनिया से आख़िरत की तरफ रूजूअ ज़्यादा आसान है मगर मजाज़ से हक़ीक़त की तरफ रूजूअ मुश्किल है और ख़ल्क़ को छोड़ कर हक़ की तरफ रूजू बनिसबत खुदा की मोहब्बत में मख़्लूक़ को छोड़ देने के। लेकिन अल्लाह की जानिब और ज़्यादा मुश्किल होता है।

और सब्र मअे अल्लाह से ज़्यादा मुश्किल है क्योंके

साबिर फक़ीर, शाकिर ग़नी से अफ़्ज़ल है और शाकिर फक़ीर उन दोनों से अफ़्ज़ल है और शाकिर व साबिर फक़ीर अफ़्ज़ल है उन लोगों से जो हुसूले सवाब की ख़ातिर मसायब को दअवत देते हों।

शुक्र आपने फरमाया है के हक़ीक़ते शुक्र ये है के निहायत आजज़ी व इन्किसारी से नअेमत का एत्राफ और गाय शुक्र की आजज़ी व हुर्मत बाक़ी रखी जाए। शुक्र के कई इक़्साम हैं। शुक्र लिसानी ये है के ज़बान से नअेमत का एत्राफ करे और शुक्र बाला रिकान ये है के ख़िदमत व वक़ार से मोसूफ रहे और शुक्र बिलक़ल्ब ये है के बिसाते शहूद पर मोअ्तकिफ होकर हुर्मत व इज़्ज़त का निगहबान रहे। फिर उस मुशाहेदे की नअेमत को देखकर दीदारे मुनईम की तरफ तरक़्क़ी करे। शाकिर वो है जो मौजूद पर शुक्र करे, शकूर वो है जो मफ़्क़ूद पर शुक्र करे और हामिद वो है के मनअ को अता और ज़रर को नफअ मुशाहेदा करे और उन दोनों वस्फ़ों को बराबर जाने और हम्द ये है के बिसाते कुर्ब पर पहुँच कर माअरफ़त की आँखों से तमाम मुहामिद व ओसाफे जमाली व जलाली का मुशाहेदा करे और उसका एत्राफ करे।

तवक्कुल आपने फरमाया है के तवक्कुल मा सिवा अल्लाह से बातिन को खाली करके अल्लाह के साथ मशग़ूलियत इख़्तियार कर लेने का और ग़ैरउल्लाह से क़तई मुसतसना हो जाने का नाम है। तवक्कुल मुकामे फना तक रसाई और पौशीदा मुक़द्दरात को चश्मे मअरफत से मुशाहेदा करने का ज़रिया हो जाता है। मसलक मअरफत में हक़ीक़त यक़ीन पर अेतक़ाद क़ायम करने का सबब बनता है इसलिए के यक़ीन इस तरह मोहरशुदा हो जाता है के जिसमें तनाक़ुस यक़ीन असरअंदाज़ हो ही

नहीं सकता। तवक्कुल हक़ीक़तन इख़्लास की तरह एक हक़ीक़त का नाम भी है और हक़ीक़ते इख़्लास नाम है आमाल के सिलसिले में तलबे जज़ा को ख़त्म कर देने का। फिर यही तवक्कुल बन्दे को मिनजानिब अल्लाह होला वक़ुव्वता से निकाल कर सकून व तमानीयत की मनाज़िल तक पहुंचा देता है।

रिजाअ आपने फरमाया है के औलिया अल्लाह के हक़ में रिजाया है के खुदा तआला के साथ हुस्ने ज़न हो मगर ना किसी नफा या दफअे ज़रर की उम्मीद पर क्योंके अहले विलायत जानते हैं के उनको उनकी तमाम ज़रूरियात से फारिग़ कर दिया गया है इसी वजह से वो मुसतग़ना रहते हैं और फिर खुदा तआला से डरता भी रहे महेज़ उसकी अज़मत व जलाल की वजह से ना उस वजह से के वो रऊफर्ठरहीम है। रिजा बिला ख़ौफे अमन बेख़ौफी है और ख़ौफ बिला रिजा ना उम्मीदी है और ये दोनों मज़मूम हैं। रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फरमाया *लोवूज़ीना ख़ौफ़लमोमिनी व रिजाअहू लाआतदाला।* अगर मोमिन का ख़ौफ़ और रिजा वज़न किया जाए तो दोनों बराबर निकलें।

ख़ौफ़ आपने फरमाया ख़ौफ के कई मुक़ाम हैं। गुनहगारों का ख़ौफ अज़ाब के सबब से होता है। आबदीन का ख़ौफ इबादत के सवाब कम मिलने या ना मिलने के सबब होता है। आश्क़ाने इलाही का ख़ौफ लक़ाए इलाही के फौत हो जाने के सबब होता है और आरफीन का ख़ौफ अज़मत व हैबते इलाही के सबब होता है यही आला दर्जे का ख़ौफ है क्योंके ये ज़ायल नहीं होता बल्के हमेशा रहता है।

फक़ीर हज़रत शेख़ ने फक़ीर के चार हरूफ (फे, क़ाफ, ये, रे) की तअरीफ को यूं समझाया है:

फ़कीर की फ़े से फना हो जाना अपनी ज़ात में और फ़ारिग़ हो जाना अपनी तअरीफ़ व सिफात से।

क़ाफ़, कुव्वते क़ल्ब के लिए है जो उसको अपने हबीब से हासिल है और क़ायम रहना उसका अपने हबीब की मर्ज़ी के तहत।

ये, (यरजू) के मअनी को ज़ाहिर करती है यानी अपने रब से पुर उम्मीद भी हैं। और (यख़ाफ़ा) ख़ायफ़ भी और तक़वे पर क़ायम रहते हुए ही हक़ पर क़ायम हैं।

रे, रक़्ते क़ल्ब और सफाई क़ल्ब की है और रूजूअ करने के लिए तमाम ख़्वाहिशात अल्लाह की जानिब से विलायत करती हैं।

फ़कीर के लिए यही मुनासिब है के उसकी फ़िक्र में जोलानी हो, उसके अंदाज़े फ़िक्र में जोहर हो। बेहतर केफ़ियत इश्तियाक़ हो, रूजू की सलाहियत हो, वसीअ-उल-क़ल्ब हो और हक़ को सिर्फ हक़ ही के लिए तलब करके सदाक़त के सिवा और कोई रास्ता इख़्तियार ना करे उसकी जिन्सी तबस्सुम से तजावुज़ ना करे उसका सवाल करना सिर्फ हुसूले इल्म के लिए हो। ग़ाफ़िलों को याददहानी कराने वाला हो। जाहिलों के लिए मोअल्लिम हो और अगर उसको अज़ियत भी पहुँचाई जाए तब भी वो किसी को अज़ियत ना दे। लग़ु चीज़ों पर ग़ोरो फ़िक्र ना करे। किसी को तकलीफ पहुँचाने वाला ना हो। हराम अशिया से एहतराज़ करता हो। शुबहात में तोकिफ इख़्तियार करे। ग़रीबों का मददगार हो। यतीमों का वली बन जाए चेहरे पर बशाशत हो लेकिन क़ल्ब ग़मगीन रहे। अपने फ़िक्र पर ख़ुशी के साथ अपनी फ़िक्र में मशग़ूल रहें। ना किसी का राज़ फ़ाश करे ना किसी की पर्दा दरी करे। उसका हर फअेल मेहरबानी के साथ हो और उसका फेज़ जारी और तरक्क़ी पज़ीर हो। उम्दा मुशाहेदा

रखता हो। फायदा पहुँचाने में सख़ावत से काम ले। आला मज़ाक़ और बेहतरीन अख़्लाक़ का हामिल हो। ऐसा नर्म दिल हो जैसे पिघला हुआ सियाल जोहर। अक्सर ख़ामोश रहता हो जब कोई उसके साथ जहल से पेश आए तो वो बुर्दबारी इख़्तियार करे अगर कोई बुरा भला कहे तो सब्र से काम ले। ना उसमें मुकम्मल जमूद हो ना हक़ की आग बुझी हुई हो चुग़लख़ोर ना हो, हासिद ना हो, उजलत पसंद ना हो। बुज़ुर्गों की तअज़ीम करे। छोटों के साथ शफ़्क़त से पेश आए। बहुत ज़्यादा मुतहम्मिल मिज़ाज हो। उसका हर फअेल अदब आमोज़ हो। उसका कलाम पुर मग़ज़ हो। ना तो किसी की ग़ीबत करे ना किसी की मुसीबत पर खुश हो। साहिबे वक़ार हो साबिर व शाकिर हो कम गो हो। सोम व सलात में अक्सर मशगूल रहता हो। सादिक़-उल-क़ोल हो। हर हाल में साबित क़दम रहे। मेहमानों की तवाज़ओ करता हो। जो कुछ भी अपने पास हो दूसरों पर खर्च करता रहे। पड़ोसी उसकी बुराईयों से मेहफ़ूज़ रहें। ना गाली दे ना ग़ीबत करे ना ग़ाफ़िल हो ना रंजीदह, ज़बान ख़ज़ाना हो लेकिन क़ल्ब ग़मज़दा। मोज़ूं गुफ़्तगू करे। *मा काना वमा यकूना* के बारे में जो लानी फिक्र रखता हो।

वजद आपने फ़रमाया है के वजद ये है के रूह ज़िक्र की हलावत में और नफ़्स लज़्ज़ते तुर्ब में मशग़ूल हो जाए और सर सबसे फारिग़ होकर सिर्फ खुदा तआला की ही तरफ मुतवज्जह हो। नीज़ वजद मोहब्बते इलाही की शराब है जब मौला अपने बन्दे को पिलाता है तो उसका वजूद सुबक और हल्का जो जाता है और उसका दिल मोहब्बत के बाज़ुओं पर उड़ कर मुक़ामे हज़रत अलक़ुद्स में पहुँच कर दरयाए हैबत में जा गिरता है। इसीलिए वाजिद गिर जाता है और उस पर ग़शी तारी होती है।

अमले सालेह आपने फरमाया है के जिसने अपने मौला से सिद्क़ व तक़्वे का मामला कर लिया वो खुदा के सिवा सबसे बेज़ार हो जाता है। अज़ीज़ो! उस बात का दावा ना करो जो तुम से मुमकिन ना हो। शिर्क से एहत्राज़ करो और क़ज़ा व क़द्र के उन तीरों से खौफ खाओ जो तुम्हें ज़ख़्मी करने की बजाए क़त्ल कर डालेंगे जिस शख़्स का राहे मौला में कुछ गुम हो जाता है तो अल्लाह तआला उसका नओम-उल-बदल अता कर देता है। जब तक नफ़्स पाकीज़गी हासिल नहीं करेगा दिल भी मज़्की ना होगा और जब तक नफ़्स गरवीदगी में असहाबे कहफ के कुत्ते की तरह ना हो जाए जो अपने लिए दरवाज़े को लाज़िम करे, तुम्हें उस वक़्त तक सालेह नहीं कहा जा सकता। जब तक तुम्हारे नफ़्स से ये सदा ना आने लगे :

याअईय्यतू हन्नफ़्स-उल-मुतमाइन्नातुर्जीअई इला रब्बिकी राज़ियतन

यानी ऐ नफ़्से मुतमइन्ना! राज़ी खुशी से अपने रब की तरफ लौट जा।

उस वक़्त क़ल्ब को वो हुज़ूरी हासिल होगी के हक़ सुबहाना तआला की तजल्लियात का मरकज़ बन जाएगा और उस पर जलाले इलाही के इनकेशाफात होने लगेंगे और उसको कामिल व अकमल बना कर विरासत उसके सपुर्द कर दी जाएगी। वो मुक़ामे आला से ये सदा सुनने लगेगा:

या अब्दीव कुल्लु अब्दी अन्ता ली वअना लका

ऐ मेरे बन्दे तू मेरे लिए है और मैं तेरे लिए

तवील तक़र्रूब के बाद ख़ासाने खुदा में शुमार होने लगेगा। ख़लीफतउल्लाह का लक़ब मिल जाएगा और निज़ामे कायनात पर क़ब्ज़ा हासिल हो जाएगा ताके ग़र्क़ होने वालों को खुश्की पर लाए। गुमराहों को हिदायत

दे और अगर किसी मुर्दे पर गुज़रे तो उसे ज़िन्दा कर दे। गुनहगारों में पहुंचे तो उनको नसीहत करे। दूर होने वालों को क़रीब कर दे और शक़ी को सईद बना दे क्योंके वलीउल्लाह अब्दाल के ताबअे होता है और अब्दाल नबी के ताबअे होते हैं और तमाम अम्बिया हुज़ूरे अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के ताबअे हैं औलिया की मिसाल बादशाह के क़िस्सा गो जैसी होती है जो हमेशा उसकी सोहबत में रहता है और रात को असरारे ममलिकत से हमकिनार होता है। इस तरह दिन रात बादशाह के क़रीब रहता है जबके हज़रत यूसुफ अलेहिस्सलाम से फरमाया गया के रात का ख़्वाब अपने भाईयों से बयान ना करना।

या बुनईय्या ला तक़सुस रूअयाका अला इख़्वातिका

ऐ फरज़न्द! तुम अपना ख़्वाब अपने भाईयों से ना कहना

दिन औलिया के लिए तक़र्रूब का सबब बनता है तो शब उनके लिए काशिफे असरार।

इस्मे आज़म आपने फरमया है के लफ़्ज़ "अल्लाह" इस्मे आज़म है लेकिन उसका असर उस वक़्त मुरत्तब होता है और इस इस्म के ज़रिये दुआएं उसी वक़्त क़बूल होती हैं के जब तुम्हारे क़ल्ब में अल्लाह के सिवा किसी ग़ैर का तसव्वुर ना हो और मुआरिफ की बिस्मिल्लाह (इब्तिदा) बमंज़िला हुक्म "कुन" के हो जाए।

याद रखो! इस्मे आज़म ऐसा हुक्म है जिससे हज़्नो मलाल दूर हो जाता है और हर काम आसान हो जाता है इसी के ज़रिये हर क़िस्म के ज़हेर का इलाज भी किया जा सकता है दर यही एक ऐसा हुक्म है जिसका नूर आम है।

अल्लाह एक ऐसा हाकिमे मतलक़ है जिसकी बारगाह बहुत बुलंद है। वो अपने बन्दों के हालात से बख़ूबी

वाक़िफ़ है। वही लोगों के क़ुलूब का निगरान है। उसको हर ज़ाहिर ग़ल्बा है। वही क़सरो किसरा के ग़ुरूर को तोड़ने वाला है। उससे एक ज़र्रा भी मख़्फ़ी नहीं, जो शख़्स अल्लाह का हो जाता है वो उसकी हिफ़ाज़त व निगरानी में आ जाता है। जो अल्लाह से मोहब्बत करता है वो किसी दूसरे की जानिब नहीं देखता। जो अल्लाह के रास्ते पर गामज़न होता है वो अल्लाह तक यक़ीनन पहुँच जाता है। जिसके अन्दर अल्लाह का इश्तियाक़ पैदा हो जाए वो अल्लाह से उन्स करने लगता है और ग़ैरउल्लाह को छोड़ देता है उसका वक़्त ख़ालिसतन अल्लाह ही के लिए हो जाता है।

अल्लाह के दरवाज़े को खटखटाओ। अल्लाह की पनाह हासिल करो। अल्लाह पर तवक्कुल रखो। अल्लाह के रास्ते से भागने वालो! अल्लाह की जानिब रूजू हो जाओ। जब अल्लाह के नाम की इस दार-उल-फ़ना में ये बर्कतें हैं तो फिर दार-उल-बक़ा में क्या हालत होगी। जब तुम अल्लाह का नाम लेकर सिर्फ़ उसी के दरवाज़े पर खड़े हा जाओगे तो तमाम हिजाबात उठ जाऐंगे अब बताओ उस वक़्त तुम्हारी क्या हालत होगी जब उसी का नाम लेकर पुकारने में मज़कूरा बाला असरात मुज़मिर हैं तो उस वक़्त का क्या आलम होगा जब तुम उसकी तजल्लियात का मुशाहेदा कर रहे होगे और दरयाऐ असल से सेराबी करते होगे।

दौलत की मिसाल इस मोहब्बत करने वाले परिन्दे की है जो दमे सहर अपने हबीब के नग़्मे अलापता है और सुबहे उम्मीद में उसकी आँख नहीं लगती। जब क़ुलूबे मुहब्बीन पर उसके क़ुर्ब की हवाऐं चलती हैं तो वो हमा वक़्त इसी के मुश्ताक़ नज़र आते हैं। इसीलिए वो फरमाता है के अगर तुम मुझ को शौक़ व मोहब्बत से याद करोगे

तो मैं तुम्हें वस्ल व कुर्ब की बशारत से याद करूंगा। अगर तुम हम्दो सना के साथ याद करोगे तो मैं अहसान व जज़ा के साथ याद करूंगा। तुम अगर तौबा के साथ याद करोगे तो मैं तुम्हें अफ़्वे गुनाह के साथ याद करूंगा। अगर तुम इख़्लास के साथ याद करोगे तो मैं मग़फ़िरत व रहमत के साथ याद करूंगा। अगर तुम इताअत के साथ याद करोगे तो मैं इनाअमो इक्राम के साथ याद करूंगा। अगर तुम फ़ानी की हैसियत से याद करोगे तो मैं बाक़ी रहने वाले की हैसियत से याद करूंगा। तुम अगर आजज़ी के साथ याद करोगे तो मैं वस्ल के साथ याद करूंगा। तुम अगर आजज़ी व इन्किसारी के साथ याद करोगे तो मैं तुम्हारी लग़ज़िशों की मआफ़ी के साथ याद करूंगा।

<u>इल्म</u> आपने फ़रमाया के मख़्लूक़ से किनारा कशी से क़ब्ल इल्म हासिल करो। क्योंके जो शख़्स इल्म के बग़ैर इबादत करता है वो इस्लाह से ज़्यादा फ़साद में मुबतला हो जाता है। तुम्हें चाहिए के शमअे शरीअत अपने हमराह लेकर इल्म की रोशनी में अमल करो। फिर अल्लाह तआला तुम्हें इल्मे लदनी का वारिस बना देगा जिससे तुम नावाक़िफ़ हो। तुम्हें चाहिए के तमाम असबाब व ज़राये से तअल्लुक़ मुनक़तअे करके रिश्तेदारों और अहबाब से जुदाई इख़्तियार कर लो ताके तुम अपने ज़ुहद की वजह से अपनी क़ुव्वते बातिनी और अपने हुस्ने अदब का मुशाहेदा कर सको। ख़ुदा के अलावा तमाम आलम व असबाब से उस ख़ौफ़ से मुनक़तअे हो जाओ ताके तुम्हारी शमअे मअरफ़त ना बुझ जाए और जब तुम चालीस दिन (एक चिल्ला) अपने रब के लिए मख़्सूस कर दोगे तो तुम्हारे क़ल्ब से हिकमत के चश्मे जारी हो जाएंगे और तुम मअरफ़ते इलाही की तपिश का मुशाहेदा करने लगोगे जिसको हज़रत मूसा (अ०स०) ने अपने शिज्रे क़ल्ब पर

महसूस किया था। इस कैफियत के बाद तुम अपने नफ़्स व ख़्वाहिश, अपने शैतान, अपनी तबीअत और अपने वजूद से कहोगे के ठहर जा। मैंने उस आग का मुशाहेदा कर लिया है जो क़ल्बे मूसा(अ॰स॰) पर रोशन हुई थी उसके बाद तुम्हारे क़ल्ब में बातिन से ये आवाज़ आने लगेगी के मैं ही तुम्हारा रब हूँ। मेरी ही इबादत करो। मेरे ग़ैर की इताअत से गुरेज़ाँ हो जाओ। मेरे सिवा किसी से तअल्लुक़ ना रखो। मेरी माअरफत हासिल करके मेरे ग़ैर को फरामोश कर दो। ग़ैर से अेराज़ करके सिर्फ मेरे इल्म मेरे कुर्ब मेरे मुल्क और मरी सल्तनत की जानिब मुतवज्जह रहो जब तुम्हें लक़ा इलाही हासिल हो जाएगा तो तुम्हारी ज़बान पर *फाऊहिया इला अब्दिही* जारी हो जाएगा और तमाम हिजाबात रफअे होकर, क़ल्ब से कदूरत ज़ायल हो जाएगी। और नफ़्स को मुकम्मल सकून हासिल होगा। फिर जब उसके अलताफ ग़ालिब आ जाएंगे तो तुम्हें ख़िताब किया जाएगा *इज़हब इला फिरऔना* ऐ क़ल्बे फिरऔन नफ़्स की तरफ मुतवज्जह कर और उनको राहे हिदायत पर चलाता हुआ मेरी जानिब ले आ और उनसे कह दे के मेरी ही इत्तिबा करें। फिर उन्हें रूश्द के रास्ते पर हिदायत करके उनसे ताल्लुक़ क़ायम कर। उसके बाद फिर क़तअे ताल्लुक़ कर के दोबारा इसतवार कर ले। और इसी तरह करता रह।

सच्चाई आपने फरमाया है के सच्चाई को अपने ऊपर लाज़िम क़रार दे लो क्योंके इसके बग़ैर इंसान क़ुर्बे इलाही हासिल नहीं कर सकता। अगर तुम अपने संगे दिल पर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के आज़ाए इख़्लास की ज़र्ब लगा लो तो उससे हिकमतों के चश्मे उबल पड़ें और तुम आरफीन की तरह इख़्लास के परों से क़फ़्स की तारीकियों से नूर क़ुद्स की वसअतों पर परवाज़ करके मक़्सदे सिद्क़

के बाग़ात में पहुंच जाओ। बन्दे के क़ल्ब में उस वक़्त तक ज़िया और नूर यक़ीन पैदा नहीं होता जब तक उसके चेहरे पर नूर की रोशनी के ख़तूत ज़ाहिर ना होने लगें। उसके बाद मलाए आला से मलाएका उसका नाम लेकर पुकारने लगते हैं और वो रोज़े हश्र सादक़ीन के ज़ुमरे में शामिल कर लिया जाता है।

लिहाज़ा तुम्हें चाहिए के ना सिर्फ़ ख़्वाहिशाते नफ़सानी से ऐराज़ करो बल्के उसमें तोहीद को जगह दो जिसकी लज़्ज़त क़लूबे आरफ़ीन को सरापा नूर बना देती है। फिर उन्हें किसी ग़ैर से लज़्ज़त हासिल नहीं होती। याद रखो बग़ैर तोशाऐ सिद्क़ व हुज़ूरी के सफ़र आख़िरत नहीं किया जाता। क़ल्ब पर क़ाबू हासिल किए बग़ैर कभी आख़िरत की मंज़िल हासिल नहीं हो सकती। जब क़ल्ब बशरीयत की किसाफ़तों से मिसफ़्फ़ा हो जाता है तो बन्दा ख़ुद ब ख़ुद ताअमीले अेहकाम करने लगता है। जिस वक़्त आरिफ़ निगाहे अक़्ल से मुशाहेदा करता है तो अनवारे इलाही उसके बातिन में नुफ़ूज़ कर जाते हैं। याद रखो! औलियाएइक्राम बारगाहे सुल्तानी के ख़्वास होते हैं और आरफ़ीन मजलिसे शाही के नदीम। औलिया के शहद में उस वक़्त तक हलावत पैदा नहीं होती जब तक वो अब्दालीन के सब्र की तलख़ियों को ना चख लें।

याद रखो! सरदारों की निगाहे अक़्ल ना तो दुनिया को देखती है ना उसकी चमक दमक से फ़रेब खाती हैं बल्के वो अपने मेहबूब के इस क़ोल बमा *अलहयातुदुनिया इल्ला मताअ-उल-ग़ुरूर* को अच्छी तरह समझने लगते हैं और अगर लज़्ज़ात व शेहवात मुसलसल तलब की जाएं तो शैतान क़ल्ब में दाख़िल होकर शेहवात की नालियों से गुज़रता हुआ सीने में दाख़िल हो जाता है। और बन्दा तलबे दुनिया के चक्कर में फ़रेब पर फ़रेब खाता चला जाता है

लिहाज़ा उसके लिए बशारत है जो मुतनब्बह होकर ग़फ़लते अक़्ल की नींद से बेदार हो गया और उसने कूचे मौला में अपने अहवाल को मसफ़्फ़ा कर के सफ़रे आख़िरत की तैयारी कर ली और उसने उन चीज़ों से अपने नफ़्स का मुहासबा करके नफ़्स से उन चीज़ों को ख़ारिज कर दिया जिनका नफ़्स से ख़ारिज होना ज़रूरी था। याद रखो के दुनिया एक गुज़रगाह है और क़यामत मसायब व तलख़ियों की आमाजगाह।

मुक़ामे फ़ना हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने फ़रमाया है के हुक्मे इलाही की तामील के लिए मख़्लूक़ से फ़ना इख़्तियार करो यानी अलहेदा हो जाओ। इस तरह तुम्हारी ख़्वाहिशात को हुक्म इलाही के और इरादों को फ़अ़ेले ख़ुदावंदी का मज़हर बना दिया जाएगा। मख़्लूख़ से (फ़ना) अलहेदगी की अलामत ये है के तुम उनसे अपनी तमाम उम्मीदें मुनक़तअ़े कर लो और ख़ुद अपनी ज़ात और ख़्वाहिशात से (फ़ना) अलहेदगी की अलामत ये है के ना तुम्हारे अन्दर किसी किस्म की हर्कत बाक़ी रहे और ना नफ़अ़ व नुक़सान का ख़याल रहे। असबाबे ज़ाहिरी से क़तअ़े ताल्लुक़ कर के सोचे लिया जाए के ये सब कुछ उसी हस्ती की तरफ से है जो अव्वल भी है और आख़िर भी।

इरादे के फ़ना की अलामत ये है के मशीयते इलाही में अपने इरादे को शामिल ना करो। बल्के उसका जो फ़अ़ेल भी तुम्हारे लिए हो। उसको इतमीनान क़ल्बी और इनशराह सदर के साथ क़बूल कर लो अपने बातिन को इस तरह आबाद कर लो के तमाम चीज़ों से बेनियाज़ होकर उनको तक़दीर के सपुर्द कर दो। फिर तुम्हें लिसाने क़ुद्रत से निदा दी जाएगी। और तुम्हारा रब तुम्हें तअलीम से संवार कर तुम्हें नूर के हुल्ले पहनाएगा। तुम्हें वो मंज़िल अ़ता कर दी जाएगी जो तुम्हारे इसलाफ़े अहले इल्म की

थी। फिर तुम्हें उस तरह कर दिया जाएगा के तुम्हारे अन्दर मईशते खुदावंदी के सिवा अपना कोई इरादा बाक़ी ना रहेगा और ये तुम्हारी निशाते सानिया होगी और अगर तुम्हारे अन्दर अपना कोई इरादा पाया जाएगा तो ये तुम्हारे वजूद के मनाफी होगा। जब तक के वो मुबय्यना वक़्त ना आ जाए। ऐसी सूरत में तुम्हें फना व बक़ा दोनों हासिल रहेंगी। हालांके फना वो आख़री हद है जहाँ सिवाए खुदाऐ वाहिद के और कुछ बाक़ी नहीं रहता जैसा के मख़्लूक़ की तख़्लीक़ से क़ब्ल था। जब तुम मख़्लूक़ से फना हो जाओगे तो तुम से कहा जाएगा के तुम पर खुदा की रहमत हो। और जब अपने इरादे से फनाईय्यत हासिल कर लोगे तो फिर भी तुम से यही कहा जाएगा के तुम पर खुदा की रहमत हो। फिर तुम्हें वो हयात बख़्श दी जाएगी जिसके बाद कभी मौत नहीं। उसके बाद ऐसा ग़ना हासिल होगा जिसके बाद कोई फिक्र नहीं। जो कुछ तुम को अता किया जाएगा उसको रोकने वाला कोई नहीं होगा। तुम्हें ऐसा इल्म अता होगा जिसके बाद जहल नहीं होगा। और ऐसा निडर कर दिया जाएगा जिसके बाद कोई ख़ौफ़ नहीं होगा और वो सआदत हासिल होगी जिसके बाद शक़ावत का वजूद ही नहीं होगा। वो इज़्ज़त हासिल होगी जिसके बाद कोई ज़िल्लत नहीं। वो क़ुर्ब हासिल होगा जिसके बाद कोई बूअद नहीं और वो लताफत हासिल होगी जिसके बाद कोई किसाफत नहीं।

तनज़ीहा बारी तआला आपने फरमाया है के तनज़ीहा खुदाऐ बुलंद व बाला से क़ुर्ब का नाम है जिसने अपनी क़ुद्रते कामिला से मख़्लूक को पैदा फरमाया जिसके तमाम काम हिकमत के मुताबिक़ हैं जिसका इल्म हर शै को मुहीत है उसका कलाम मुकम्मल और उसकी रहमतें आम हैं। उसके सिवा कोई मअबूद नहीं उसके शरीक

ठहराने वाले काज़िब हैं या जो ये ऐतक़ाद रखते हैं के उसका कोई हमनाम और मसील है। अल्लाह उन चीज़ों से पाक है उसका इल्म लातनाही है। वो रहमान व रहीम है। वो मालिक व क़द्दूस है वो अज़ीज़ व हकीम है वो वाहिदो अहद है उसने ना किसी को जना और ना वो किसी से जना गया। उस जैसी कोई शै नहीं वो समी व बसीर है उसका ना कोई मुआविन है ना कोई मददगार। उसका ना कोई शरीक है ना वज़ीर व मुशीर। ना उसका जिस्म है जिसको छू सकें ना वो जोहर है जिसको महसूस कर सकें। ना वो अर्ज़ है जो फना हो जाए। ना वा मुरक्किब है जिसके अजज़ा हो सकें ना वो ज़ी तालीफ है जिसकी केफियत बयान की जा सके। ना वो तलू होने वाली शै है ना वा तारीकी है ना रोशनी। उसके इल्म में तमाम अशिया इम्तिज़ाज के बग़ैर मोहतज़िर हैं। वो अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ उनका मुशाहेदा करता रहता है। वो क़ाहिर है वो हाकिम है वो मअबूद है। उसको कभी मौत नहीं आएगी। वो हाकिम आदिल है, क़ादिर व अरहम है वो ग़फ़्फ़ार मग़फिरत करने वाला है और सत्तार पर्दा पोशी करने वाला है। उसकी हाकमीयत अब्दी है। वो ऐसा क़य्यूम है जो कभी नहीं सोता। ऐसा अज़ीज़ है जिस पर कोई ग़ल्बा हासिल नहीं कर सकता। उसके लिए असमाए हसना हैं उसकी सिफात बहुत बुलंद हैं। ओहाम उसको कभी तसव्वुर नहीं ला सकते। ना अफ़हाम उसके समझने पर क़ादिर हैं। ना क़यास उस तक रसाई हासिल कर सकता है ना वो आम लोगों की तरह है ना ज़हेन में उसकी हदूद मुतय्यन हो सकती हैं। वो इन तमाम चीज़ों से बरतर है जिसको उसकी मसनूआत से मुशाबेहत दी जा सके। वो सांसों का शुमार करने वाला है। नफ़्स के आमाल का निगरान है। उसके पास उन सब चीज़ों की फरदन फरदन तअदाद मौजूद है

जो रोज़े मेहशर उसके सामने इन्फिरादी तौर पर पेश होंगे। वो खिलाता है ख़ुद नहीं खाता। वो रिज़्क़ देता है उसको कोई रिज़्क़ नहीं देता। वो पनह देता है उसको कोई पनह नहीं देता। उसने नमूने और मिसल के बग़ैर मख़्लूक़ को पैदा कर दिया लेकिन उसकी ये तख़्लीक़ किसी की तलब पर नहीं हुई। महेज़ तअथीर ज़माना से बेनियाज़ होकर अपने इरादा से तख़्लीक़ कर दिया जैसा के वो फरमाता है:

ज़ुलअर्शिल मजीदू फ़आलून लिम्मा यूरीद

बुज़ुर्ग व बरतर अर्श वाला है। जो चाहता है करता है।

वो अपनी क़ुद्रत में मुनफरिद है वही हालात को बदले वाला है।

कुल्ला यौमिन हुवा फी शानिन

हर दिन उसकी एक निराली शान है।

वो मुक़द्दरात को वक़्ते मोअय्यना पर पूरा करता है उसके नज़्मे ममलिकत में कोई मुआविन नहीं। उसकी हयात ग़ैर मुकतसिब है वो अपनी ला मेहदूद क़ुद्रत पर मुकम्मल तौर पर क़ादिर है। उसके इरादे में ग़ैर को क़तअन दख़्ल नहीं। वो हफीज़ है फरामोश करने वाला नहीं। वो क़य्यूम है जिससे हर गिज़ सहू नहीं हो सकता। वो मुनक़लिब करने वाला है जो क़तअन मोहलत नहीं देता। उसको मुकम्मल तौर पर क़ब्ज़ व बस्त हासिल है वो राज़ी भी होता है और ग़ुस्सा भी करता है। मआफ भी करता है और रहम भी फरमाता है वही उस शै का मुसतहिक़ है उसके लिए कहा जाए के वो अपनी मख़्लूक़ात की बीमारी और तकलीफों का दूर करने वाला है। वो अपने औसाफ़े कामिल के साथ अब्दी है। वो ऐसा रब है जो अपने बन्दों पर अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ अफ़आल का इजरा करता है। वो ऐसा आलमे हक़ीक़त है जिसका ना कोई मुशाबह है ना मसील। उसकी ज़ात व सिफात किसी से मुशाबह

नहीं। हर शै का क़याम उसके अज़्ली व अब्दी होने का आईनादार है। हर शै की हयात उसी के हुक्म पर मुबनी है। रवानी तबअे उसके जलाल में बहस करने से क़ासिर और अक़्लो फहम उसकी अज़्मत बयान करने से आजिज़। उसकी अज़्मत वाज़ेह है लेकिन अक़्ल उसकी पाकीज़गी का कोई बदल नहीं पाती और ना उसकी वहदानियत से रूगर्दानी कर सकती है। अगर अक़्ल उसकी अज़्मत व इज़्ज़त की मिसाल देना चाहे या उसकी अज़्मत व जलाल में बहस करे तो यक़ीनन वो आजिज़ होकर रह जाएगी। मुतफक्किर व दहशतज़दा होकर गिर पड़ेगी। जब उसकी तक़्दीस के लश्कर सामने आते हैं तो बयान व तक़रीर की तमाम राहें मसदूद होकर रह जाती हैं। अक़्ल पर उसकी किबरियाई के पर्दे इस तरह पड़े हुए हैं के उसकी हक़ीक़त व मअरफ़त तक रसाइं मुहाल है। आँखों को उसके नूर और उसकी अहदीस से रोक दिया गया है उसके उलूम व हक़ायक़ की ग़ायतें इस तरह क़ायम हो चुकी हैं के उनका इल्म क़ुरआन व हदीस के सिवा मुमकिन नहीं। क्योंके आँखें तो सिर्फ बर्क़ अज़ल की चमक का असर ही देख सकती हैं क्योंके ज़ाते इलाही तशबीहात के नुक़ायस से मुबर्रा होकर नक़ाब कमाल का बुरक़अ ओढ़े हुए है। उसके नूर से तजावुज़ करने की किसी में हिम्मत नहीं। वो क़दीम व अब्दी है उसकी हैबत उस दर्जा ज़ाहिर व बाहर है जहाँ तमाम अलल व अवारिज़ दम तोड़ देते हैं। वो मुनफरिद है उसमें किसी किस्म का तआहुद नहीं है उसके वजूद का अदराक ना मुमकिन है। उसके जलाल की कोई केफियत नहीं। उसके कमाल की कोई दाद नहीं दी जा सकती। वो एक ऐसा वस्फ़ है जिसके लिए वहदानियत वाजिब है। उसकी क़ुद्रत पूरी कायनात पर मुहीत है। उसको वो इज़्ज़त व अज़्मत हासिल है जहाँ तमाम तारीफें ख़त्म हो जाती

हैं। उसका इल्म अर्ज़ो समा और उनके दरमियान तमाम अशिया को मुहीत है। वो हर हर बाल और हर हर शजर के उगने के मुक़ाम से भी बाख़बर है। वो हर गिरने वाले पत्ते को भी जानता है उसके शुमार में कंकरियाँ और रेत के ज़र्रात भी हैं। वो पहाड़ों के वज़न और दरयाओं की वुस्अत से भी वाक़िफ़ है। वो बन्दों के आमाल व जज़ा को भी जानता है। कोई जगह उसके इल्म से खाली नहीं। इन तमाम चीज़ों के पेशे नज़र अक़्ल को उसकी अहदीयत की तसदीक़ करना ही पड़ती है उसकी समदीयत की कोई मिसाल बयान नहीं की जा सकती। अक़्ल में उसके अदराक की ताक़त नहीं। हर वो शै जिसको वहेमो फहेम ज़ाहिर करता हो या अक़्ल व ज़हन उसको तसव्वुर में ला सकते हों। उसकी अज़मत उन तमाम चीज़ों से मावरआ है।

हुवल अव्वलू व आख़िरूहू व ज्ज़ाहिरू वलबातीन। वहुवा कुल्ली शेइन अलीम।

वो इब्तिदा से है और इन्तिहा तक रहेगा वो अपनी क़ुद्रतों से ज़ाहिर और ज़ात व सिफात से पौशीदा है और हर चीज़ से वाक़िफ़ है।

तख़्लीक़ इंसानी आपने फरमाया है के तख़्लीक़ आदम किस क़द्र अजीबो ग़रीब वाक़ेया है, उसके सानअे खुदाऐ तआला की हिकमत उसी क़द्र असअेंज़ है अगर इंसान ख़्वाहिशात की इत्तिबाअ करता और उसकी तबीअत में कसाफ़त ना होती तो उसकी अक़्ल लतीफ़ मआनी व असरार की मालिक होती। इंसान अजीब व ग़रीब असरार का ख़ज़ाना भी है और हमा इक़्साम के अयूब का मजमूआ भी। इंसान अज़मत व नूर से लबरेज़ एक ख़ज़ाना है जिसने चश्मे अग़यार से अरूस रूह को नहाँ कर रखा है और क़ुदरत ने इसी अरूस के हुस्न व जमाल को अपने फरिश्ते सिफ़्त बन्दों को *वलक़द करामना बनी आदम*

का लिबास पहना कर व *फज़्ज़लनाहुम* की मजलिस में जगह अता फरमा कर उसके हुस्न व जमाल को दिखा दिया और अपने *आलिमुल ग़यूब वश्शहादती* होने की शहादत दिलवाई। फिर अक़्ल सीप की शक्ल में अरवाह के मोतियों को सफीनाऐ इल्म के ख़ज़ाने को बहरे वजूद में पहुँचा देती है ताके नूर यक़ीन की रोशनी चौगुनी हो जाए। और रूह मुजाहेदह के खज़ानों पर मुतसर्रिफ हो सके। इस सिलसिले में शाहे अक़्ल शाहे ख़्वाहिशात के मदमुक़ाबिल होता है और मैदान सदर में दोनों मुक़ाबला व मुक़ातला करते रहते हैं नफ़्स बादशाहे ख़्वाहिशात के लश्कर का मख़्सूस फर्द होता है और सुल्ताने अक़्ल के लश्कर के सबसे अशरफ फर्द को रूह कहा जाता है फिर एलान करने वाला इन दोनों को हुक्म देता है के ऐ लश्करे इलाही के जवाँमर्द! तैयार हो जाओ और ऐ हक़ के लश्करो मुक़ाबला करो। ऐ ख़्वाहिशात के लश्कर! सामने आ। इस तरह दोनों लश्कर एक दूसरे से मुक़ाबला करते हैं। फिर खुदा जिस जमाअत को चाहता है ग़ल्बा व तसर्रुफ़ अता करता है फिर तौफीक़े इलाही लिसाने ग़ैब के ज़रिये जिसको भी फतह व नुसरत का मसदह सुनाती है उसका झण्डा बुलंद हो जाता है और जिसकी लिसाने ग़ैब जिसका साथ देती है उससे उस वक़्त तक जुदा नहीं होती जब तक उसको सिद्क़ व तौफीक़ के मुक़ाम तक ना पहुँचा दिया जाए। फिर हक़ तआला चश्म के साथ अपने मतबअे की निगरानी करता है लिहाज़ा नफ़्स व ख़्वाहिश से जुदा होकर अक़्ल का इत्तिबअ करो। ताके तुम्हें सआदते किबरा के ऐसे रास्तों पर पहुँचा दिया जाए के तुम आसमाने ग़यूबत पर रूह की परवाज़ को हैरत से देखने लगो। तुम्हारा ये जस्दे खाकी किसाफ़ते नफ़्स के घोंसले से निकल कर तायरे लतीफ के हमराह इनायत के

परों से शजे ाला की जानिब परवाज़ करने लगे। और तुम शाखे कुर्ब पर अपना आशयाना बना कर ज़बाने शौक से इश्के इलाही की धुन में गाने लगो। नदीम अनस के साथ दस्ते मुआरिफ से हक़ायक़ के वो जवाहर चुनने लगो के किसाफते वजूद नफ़्से ज़ुलमत में महसूर होकर रह जाए। याद रखो जब इजसाम फ़ना होकर सिर्फ कुलूब बाक़ी रह जाते हैं तो उस वक़्त अगर तुम्हारे क़ल्ब पर एक नज़र भी पड़ जाए तो तुम्हें अर्श पर पहुँचा कर उलूम व हक़ायक़ अता करने के साथ असरार व मअरफ़त का ख़ज़ाना बना दिया जाएगा और तुम उस वक़्त जमाले अव्वल का मुशाहेदा करते हुए हर उस शै से गुरेज़ाँ हो जाओगे जिसमें हदूस की सिफ़्त पाई जाती हो। इस तरह तुम्हारी बसीरत बातिनी आईना कुर्ब में आलमे मलकूत का नज़ारा करने लगेगी और आयाते हक़ायक़ के ज़रिये मजलिसे कशफ में ऊरूसे फतह तुम्हारी आँख के तहत पर जलवा फग्न हो जाएगी। याद रखो सूफिया की अक़्लें ज़ुल्मते इंकार में सरदारों की ज़ीन की तरह फैली हुई हैं और अरबाबे मुआरिफ व इनायत के लिए ऐसी तीन दलीलों में जो बदगुमानियों और इरादों के हुजूम में खुद यक़ीन के वजूद से नक़ाबे शकूक को उठा देती हैं। और जहाँ तमाम दलायल क़ासिर होकर रह जाते हैं इंकारे बातिल को दस्ते हक़ से क़तअ कर देती हैं।

वरअ आपने फरमाया है के वरअ किनाया है हर शै से तौकिफ़ और उसकी तरफ से तर्के रूजू का। जब तक उसके बारे में शरीअत का हुक्म हासिल ना हो जाए अगर वो फअेल शरीअत में मौजूद है तो उसको इख़्तियार करे वरना उसको तर्क कर दे। फिर वरअ के भी तीन मदारिज हैं। अवाम का वरअ तो ये है के वो हराम व मुशतबह अशिया से एहतराज़ करें। ख़्वास का

वरअ ये है के ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से इजतनाब करें और अख़्स-उल-ख़्वास का वरअ ये है क अपने तमाम इरादों से किनारा कश हो जाएं।

अलावा अर्ज़ी वरह को बा अंदाज़े दीगर दो किस्मों में तक़सीम किया जा सकता है। अव्वल ज़ाहिरी, दोम बातिनी। ज़ाहिरी तो ये है के जिसमें अल्लाह के सिवा अपनी ज़ात का क़तई दख़्ल ना हो और बातीनी वरअ ये है के अल्लाह के सिवा किसी तरफ भी क़ल्ब रूजू ना हो और जो शख़्स वरअ का अमीक़ नज़र से मुतालआ नहीं करता उसके मरातिबे अलिया हासिल नहीं हो सकते।

जिस तरह रज़ा की राह में क़नाअत ज़रूरी है उसी तरह लिबास व तआम व गुफ़्तगू में भी क़वाअिदे वरअ नाफ़िज़ हैं इसलिए के अहले तक़वा का खाना ना तो मख़्लूक़ के दिखावे के लिए है ना किसी मुतालबे पर। और वली का खाना बिला किसी इरादे के महेज़ फ़ज़्ले इलाही पर मौक़ूफ होता है और जिसमें पहला वस्फ नहीं होगा वो बाद के ओसाफ तक हरगिज़ नहीं पहुंच सकता। लेकिन हलाल व पाकिज़ा खाना वही है जिसमें खुदा की नाफरमानी शामिल ना हो। इसी तरह उनके लिबास में भी तीन क़िस्में हैं।

अव्वल अम्बियाइक्राम का लिबास जो हलाल लिबास है जिसका हम पहले ज़िक्र कर चुके हैं ख्वाह वो लिबास रेशमी हो या रूई का या अदना।

दूसरा लिबास औलियाइक्राम का जो हुक्मे शरीअत के ऐन मुताबिक़ होता है और जिसका अदना दर्जा ये है के सत्तर औरत के साथ ज़रूरत पूरी हो जाए लेकिन इसमें उनकी ख़्वाहिश का क़तअन दख़्ल ना हो।

तीसरा लिबास अब्दालीन का है जो तहफ़्फ़ुज़े हदूद के साथ क़ज़ा व क़द्र के भी ताबअे होता है ख़्वाह वो एक

रत्ती क़ीमत का हो या सौ दीनार का। और जिसके आला अदना होने में ज़ाती ख़्वाहिश और इरादे का बिलकुल दख़्ल ना हो। बल्के सिर्फ फ़ज़्ले ख़ुदावंदी पर मोक़ूफ़ हो। और उस वक़्त तक वरअ की तकमील हरगीज़ नहीं हो सकती जब तक मनदर्जाज़ेल दस ख़सलतें अपने नफ़्स पर लाज़िम ना करे:

(1) ज़बान को क़ाबू में रखना।

(2) ग़ीबत से ज़बान को मेहफ़ूज़ रखना। कलामे इलाही में इर्शाद हुआ है।

लायक़तब बाअज़कुम बाअज़न - तुम में से एक दूसरे की ग़ीबत ना करे।

(3) किसी की हंसी ना उड़ाए और हक़ीर ना जाने। जैसा के अल्लाह तआला फरमाता है।

लायसख़र क़ौमुं मिन क़ौमिन असा अयं यकूनू ख़ेरूम मिनहुम।

यानी एक क़ौम दूसरे क़ौम की हंसी ना उड़ाए शायद के वो उससे बहेतर निकले।

(4) ना महरमों से निगाह झुका कर चलना। जैसा के फरमाने बारी तआला है।

कुललिल मोमिनीना यग़ुज़्ज़ू मिन अबसारिहिम

यानी ऐ पैग़म्बर(स॰अ॰स॰)! मोमिन से फर दीजिए के अपनी आँखें नीची रखें।

(5) रास्तबाज़ी। जैसा के अल्लाह तआला का ये क़ौल है।

वइज़ा क़ुलतुम फ़ाअदिलू - जब तुम बात कहो तो सच्ची कहो।

(6) इनआमात व अहसानाते इलाही का एत्राफ़ ताके नफ़्स ग़ुरूर में मुबतला ना हो। जैसे अल्लाह तआला का ये क़ौल है।

बलिल-लाहो यमुन्नु अलेकुम अन हदाकुम लिलईमान।

खुदा का तुम पर अहसान ये भी है के तुम को ईमान की हिदायत फरमाई।

(7) अपने माल को ग़लत राह पर ख़र्च करने की बजाए नेक कामों में ख़र्च करना। जैसे अल्लाह तआला का ये क़ौलः

वल्लज़ीना इज़न अनफ़क़ू लम युसरिफ़ू वलम यक़्तुरू।

वो लोग जब खर्च करते हैं तो मअसीयत में खर्च करने की बजाए इताअत में खर्च करते हैं और गुनाह व मअसीयत में नहीं उड़ाते।

(8) अपने नफ़्स के लिए बेहतरी और भलाई तलब ना करना। जैसे के इर्शादे बारी है।

तिल्कद्दार-उल-आख़िरतू नजअलूहा लिल-लज़ीना लायूरीदूना उलूव्वन फिलअर्ज़ी वला फसादन।

ये आख़िरत का मकान (जन्नत) उन्हीं के लिए है जो ज़मीन में बरतरी हासिल करने और फसाद करने का क़सद नहीं करते।

(9) सलात ख़म्सा का वक़्ते मोय्यना पर अदा करना जैसा के फरमाने खुदावंदी है।

हाफिज़ू अला-स्सलावाती वस्सलातिल वुस्ता व क़ोमू लिल्लाही क़ानीतीन।

नमाज़ों के अवक़ात का तहफ़्फ़ुज़ करो ख़सूसन नमाज़े अस्र का और खुशूअ व खुज़ूअ के साथ अल्लाह के सामने खड़े हो जाओ।

(10) सुन्नते नबव्वी(स॰अ॰अ॰) और इजतमअे उम्मत पर क़ायम रहना। अल्लाह तआला फरमाता है।

वइन्ना हाज़ा सिराती मुसतक़ीमा फत्तबिऊहू

बिला शुबह ये (दीन इस्लाम) मेरा सीधा रास्ता है उसी पर चलते रहो।

हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का विसाल

अल्लाह तआला की अता कर्दा ये ज़ाहिरी ज़िन्दगी फानी है। जान आख़िर एक दिन जानी है क्योंके मौत एक दिन ज़रूर आनी है। अल्लाह के बन्दे हर वक़्त अल्लाह के इस क़ानून के आगे सर तसलीम ख़म हैं, अगरचे वो मौत से पहले ही मर चुके होते हैं फना होकर बक़ा में जलवा अफ़रोज़ हो जाते हैं।

हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की ज़िन्दगी के नव्वे साल पूरे होकर जब अगला साल शुरू हो गया तो चन्द माह ही गुज़रे थे के एक रोज़ मामूली सी तबीअत ना साज़ हो गई। लेकिन आहिस्ता आहिस्ता चन्द रोज़ में उस अलालत ने शिद्दत इख़्तियार कर ली और आप चलने फिरने से मजबूर हो गए। ये अलालत दरहक़ीक़त इस बात का इशारा था के अब मशीअते ऐज़दी का बुलावा आने ही वाला है। उसके बाद यक्दम माह रबीअ-उल-सानी 561हि॰ के आग़ाज़ में मर्ज़ बहुत ज्यादा बढ़ गया और आपको अल्लाह तआला की तरफ से बा ख़बर कर दिया गया के इस दारेफानी को छोड़ने का वक़्त क़रीब है। चुनाँचे विसाल से चन्द दिन पहले आपने अपने मुताल्लिक़ा अफ़राद पर इस बात का इज़हार फरमा दिया के अब बहुत जल्द मैं तुम से जुदा होने वाला हूं और ये मर्ज़ उसी का पेशे खेमा है।

वसीयत बयान किया जाता है के अलालत के दौरान आपके साहिबज़ादा हज़रत सय्यद शेख़ अब्दुल वहाब(रह॰अ॰) ने आपकी ख़िदमते आलिया में अर्ज़ किया हुज़ूर! मुझे कुछ वसीयतें इर्शाद फरमाइये जिन पर आपके इन्तिक़ाल के बाद अमल करूं, तो आपने इर्शाद फरमाया।

अलेका बितक़वल्लाही वअतआतीही वला तख़फ अहादन वला तरजुहू वकुल्लील हवाईजा कुल्लाहा

इलल-लाही अज़्ज़ा व जल्ला वला तअतमिद इल्ला अलेही वअतलुब्हा मिनहू वला तसिक़ बिअहदिन सिवाल्लाही अज़्ज़ व जल्ला वला तअतमिद इल्ला अलेहि सुबहानाहू अत्तौहीद अत्तरहीद वजुम्माअ-उल-कुल्ली अत्तोहीद

तू अल्लाह के तक़्वा और उसकी इबादत को अपना शिआर बना। किसी और से ना डर और ना उम्मीद रख। तमाम हाजतें बुज़ुर्ग व बरतर अल्लाह के सपुर्द कर और उसी से माँग सिवाए अल्लाह के किसी और पर भरोसा ना कर और ना अेतमाद। के पाक है वो ज़ात। तोहीद को लाज़िम पकड़। तोहीद को लाज़िम पकड़। तमाम चीज़ों का मजमूआ तोहीद है।

नीज़ फरमाया के जब दिल अल्लाह तआला के साथ दुरूस्त हो जाए तो उससे कोई चीज़ ख़ाली नहीं रहती और उसके अहाताऐ इल्म से कोई चीज़ बाहर नहीं निकल सकती। मैं यकसर मग़्ज़ हूँ छिल्का नहीं हूँ।

आसार विसाल आख़िर आप पर विसाल के आसार ज़ाहिर हो गए। उस दौरान में आपने फ़रमाया के मेरे आस पास से हट जाओ क्योंके मैं ज़ाहिरन तुम्हारे साथ मगर बातिनन तुम्हारे सिवा के साथ यानी अल्लाह करीम के साथ हूँ। नीज़ फरमाया बेशक मेरे पास तुम्हारे अलावा कुछ और हज़रात भी तशरीफ लाए हूए हैं उनके लिए जगह फराख़ कर दो और उनके साथ अदब से पेश आओ इस जगह बहुत बड़ी रहमत है उन पर जगह को तंग ना करो। बार बार आप ये अल्फाज़ फरमाते थे।

"व अलेकुमुस्सलामू वं रहमतूल्लाही व बराकातूहू गुफ़रल्लाहू ली वलाकुम वताबल्लाहू अलय्या व अलेकुम।"

यानी मलायका की जमाअत और अरवाहे मुक़र्रबीन के आने पर उनके सलाम का जवाब बार बार दे रहे थे और

फरमा रहे थे बिस्मिल्लाह! आओ तुम वदाअ नहीं किए गए आप एक दिन और एक रात बराबर यही फरमाते रहे। और फरमाया, अफ़्सोस है तुम पर मुझे किसी चीज़ की परवाह नहीं है। ना फरिश्ते की और ना ही मलक-उल-मौत की। ऐ मलक-उल-मौत! हमें उसने अता फरमाया है जिसने हमें दोस्त रखा है और हमारे काम बनाए वो अल्लाह तआला है।

बयान किया जाता है के आपके साहबज़ादे अब्दुर्रहमान ने आपकी हालत दरयाफ़्त की और तकलीफ के बारे में पूछा तो फरमाया के मुझ से कोई शख़्स किसी चीज़ के बारे में सवाल ना करे। सुनो! मेरी हालत इल्मे इलाही में बदलती रहती है यानी मेरे मरातिब हर लम्हा हर आन बुलंद किए जाते हैं।

हज़रत अब्दुलजब्बार(रह॰अ॰) ने जो के आपके फरज़न्द हैं दरयाफ़्त फरमाया के हुज़ूर के जिस्म के किसी हिस्से में तकलीफ है? फरमाया तमाम आज़ा में तकलीफ है हाँ दिल मेहफूज़ है। इसलिए के वो याद इलाही का ख़ज़ीनह और जलवाए मोहम्मदी(स॰अ॰स॰) का मदीना है।

आपके पुत्र अज़ीज़ अब्दुलअज़ीज़(रह॰अ॰) ने दरयाफ़्त फरमाया आपको कौन सी बीमारी है? फरमाया मेरे मर्ज़ को जिन्न व बशर और फरिश्ते ना तो जान सकते हैं ना समझ सकते हैं। फरमाया हुक्मे इलाही से इल्मे इलाही ख़त्म नहीं होता। हुक्म मनसूख़ हो सकता है इल्म मनसूख़ नहीं होता। फिर क़ुरआन मजीद की आयत तिलावत फरमाई जिसका मफ़्हूम ये है के अल्लाह जिसको चाहता है मिटा देता है और जिसको चाहता है बाक़ी रखता है और उसी के पास असल किताब (लोहे महफूज़) है वो मुख़्तार है जो कुछ करता है किसी के सामने उसका जवाबदहे नहीं और मख़्लूक़ जो कुछ करती है उसके बारे में अल्लाह

जल्ले मुजद्दाह जवाब तलब फरमाएगा।

हज़रत के फरज़न्दाने अज़ीज़ हज़रत अब्दुर्रज़्ज़ाक़ (रह॰अ॰) और हज़रत मूसा (रह॰अ॰) कहते हैं के हज़रत अपने दोनों हाथों को बुलंद करते और फैलाते और साथ ही फरमाते जाते तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रहमतें और बर्कतें नाज़िल हों। सिद्क़े दिल से तौबा करो और सवादे आज़म में दाख़िल हो जाओ। इसी मक़्सद के लिए मैं आया हूँ ताके तुम को नबी अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के इत्तिबाअ का हुक्म दूं। नीज़ फरमाया नर्मी करो।

आख़री लम्हात विसाल से कुछ देर पहले आपने ताज़ा पानी से गुस्ल किया और नमाज़े इशआ अदा की और देर तक बारगाहे इलाही में सज्दा रेज़ रहे और सब मुसलमानों के लिए बार बार ये दुआ माँगी:

"ऐ अल्लाह! मोहम्मद सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की उम्मत को बख़्श दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की उम्मत पर रहम फरमा। ऐ अल्लाह! मोहम्मद सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की उम्मत से दरगुज़र फरमा।"

जब सर उठाया तो ग़ैब से आवाज़ आई:

"ऐ नफ़्से मुतमईन्ना अपने रब की तरफ लौट आ। तू उससे राज़ी है और वो तुझ से राज़ी है। पस मेरे बन्दों में शामिल हो जा और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।"

परवाज़े रूह बयान किया जाता है के बादअज़ाँ आलमे सुक्रात शुरू हो गया। मौत के आसार नुमायाँ हो गए और आपकी ज़बान मुबारक पर ये अलफाज़ जारी हो गए।

इसतअतनू बिलाअ इलाहा इल्ललाहू सुबहानाहू वतआला वलहय्यिल्लज़ी ला यमूतू वला यख़्शा सुबहाना मन तअज़्ज़ा बिलक़ुदरती वलक़हरलअबादा बिलमोति लाइलाहा इल्ललाहू मोहम्मदुर्र रसूलअल्लाह

मैं मदद चाहता हूं कल्मा तय्यबा लाइलाहा इल्ललाह के साथ जो पाक और बरतर है और ऐसा ज़िन्दा है जिसे मौत का ख़ौफ नहीं पाक है वो जो क़ुद्रत के साथ ग़ालिब है और बन्दों को मौत के साथ मजबूर किया *लाइलाहा इल्ललाह मोहम्मदुर्र रसूलअल्लाह।*

आपके साहबज़ादे शेख़ मूसा(रह०अ०) जो उस वक़्त हज़रत के पास थे बयान करते हैं के जब आप तअज़्ज़ुज़ पर पहुँचते तो आपकी ज़बान मुबारक में लकनत पैदा हो गई। और उस लफ़्ज़ को सहेत के साथ अदा ना कर सकी। चुनांचे आप बार बार उस लफ़्ज़ को दोहराते रहे हत्ता के आपने बुलंद आवाज़ से उसे सही तौर पर अदा कर दिया। फिर फरमाया अल्लाह अल्लाह अल्लाह! उसके साथ ही आप की आवाज़ पस्त हो गई। ज़बाने अक़्दस हलक़ के बालाई हिस्से से जा मिली और आपकी रूहे मुबारक क़फ़्से अनसरी से परवाज़ कर गई। रहमतुल्लाह अलेह। *इन्नालिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन।*

जनाज़ा व तदफ़ीन दम निकलते ही आपके विसाल की ख़बर बग़दाद और उसके गर्दोनवाह में फौरन फैल गई। हर सुनने वाले को आपके दुनिया से तशरीफ ले जाने का दिली सदमा हुआ। ये एक ऐसा आलमगीर हादसा था के जिससे यक्दम आलमे इस्लाम को इल्मो इरफान की एक बे मिस्ल शमअ से महरूम कर दिया गया। आपके विसाल की ख़बर जहाँ जहाँ भी पहुँची आपको चाहने वाले आपके फिराक़ में बेताब होकर आसतानाए ग़ौस की तरफ भाग उठे। देखते ही देखते हज़ारहा मख़्लूक़ खुदा आफ़्ताबे इल्म व मअरफत की आख़री ज़ियारत के लिए जमा हो गई।

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) के विरसा और चाहने वालों ने हज़रत के जस्दे मुबारक को

आख़री गुस्ल दिया और कफ़न पहना कर जनाज़ा की तैयार कर दी। नमाज़े जनाज़ा आपके साहबज़ादे शेख़ अब्दुलवहाब ने पढ़ाई। जनाज़े में आपके साहबज़ादगान, तिलांदा, खुल्फ़ाओ मुरीदीन और अक़ीदतमंदों की कसीर तअदाद ने शिर्कत की। आपको आपके मदरसे ही में दफ़्न किया गया। तदफीन का अमल रात को किया गया क्योंके लोगों का अज़्दहाम बहुत ज़्यादा था आपकी जुदाई में चाहने वालों में कोई ऐसा ना था जिसकी आँख अशकबार ना हो। जहाँ आपको दफ़्न किया गया जहाँ आज कल आपका रोज़ाए अक़्दस मरजओ ख़लायक़ है। बग़दाद में ये मुक़ाम बाब-उल-शेख़ के नाम से मशहूर है।

तारीख़े विसाल आपका विसाल रबीअ-उल-सानी 561हि॰ में हुआ मगर विसाल के दिन और तारीख़ के बारे में मोअर्रिख़ीन में इख़्तिलाफ है। इस ज़िम्न में चार तारीख़ें यानी 8, 10, 11, और 17 बयान की जाती हैं। वल्लाह आलम बिलसवाब।

बअज़ तज़्क़रह निगारों ने 17 रबी-उल-सानी को तरजीही क़ौल क़रार दिया है क्योंके उसी तारीख़ को आपका उर्स मुबारब होता है। आपके विसाल के बारे में क़तआ तारीख़ ये है :

सुल्ताने अस्र शाह ज़मान कुत्बे औलिया
कामिद वफ़ात रोज़ क़यामत अलामते
तारीख़ साल वक़्त वफातिश चू ख़्वासतिम
गुफ़्ता सरविश ग़ैब वफ़ातिश क़यामते

अज़दवाज और औलाद

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) ने अपनी अज़दवाज़ी ज़िन्दगी का आग़ाज़ ज़ुहेदो मुजाहेदह के बाद किया जबके आपकी उम्र 51 साल से ज़ायद हो चुकी थी। उस उम्र में भी आपने इत्तिबाअे सुन्नत के लिए निकाह किया। तज़कियाए नफ़्स के बाद बन्दे की नफ़्सानी ख़्वाहिशात रज़ाए इलाही के ताबअे हो जाती हैं इसीलिए तलबे नफ़्स मेहदूद हो जाती है।

निकाह के बारे में इर्शाद आपने फरमाया के मुद्दत से मैं इत्तिबाअे नबी अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम में निकाह का इरादा रखता था मगर इस ख़याल से निकाह करने की जुर्राअत नहीं करता था के कहीं शादी मेरी रियाज़त और इबादत में रूकावट ना बन जाए लेकिन अल्लाह ने हर काम के होने का एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा है लिहाज़ा जब वो वक़्त आया तो अल्लाह तआला के फज़्लो करम से मेरी शादी हो गई और अल्लाह तआला ने मुझे चार बीवियाँ अता कीं। और उनमें से हर एक मुझ से उन्स व मोहब्बत रखती थी।

आपके इस इर्शादात से मालूम होता है के आपके निकाह में चार बीवियाँ थीं ताहम पहले से इबादत व रियाज़त के जो अवक़ात मुक़र्रर थे उनमें कोई कमी और तकद्दुर पैदा ना हुआ। यानी जिस तरह हालते तजर्रूद में आप आला दर्जे के आबिदो ज़ाहिद थे ठीक वैसे ही निकाह करने के बाद भी इबादत और रियाज़त के बुलंद मुक़ाम पर आप क़ायम रहे और यही राहे सलूक का सब से बड़ा कमाल है के दुनियावी तअल्लुक़ात से पूरे तौर पर वाबस्ता रहने के बावजूद उनसे बे तअल्लुक़ रहे।

अज़वाज के ओसाफे हसना सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) इल्मो फज़्ल का एक मीनारे नूर थे जिसकी ज़िया पाशियों से एक दुनिया फेज़याव हो रही थी। ये कैसे मुमकिन था के आपकी अज़वाज आपके फ्यूज़ व कमालात से फेज़याब ना होतीं। चुनाँचे वो सब अख़्लाके हसना का पेकर थीं। इबादत व रियाज़त से कमाल शग़फ़ रखती थीं और सब्रो क़नाअत से कामिल तौर पर बहेरहवर थीं। आपके साहबज़ादे शेख़ अब्दुलजब्बार(रह॰अ॰) बयान करते हैं के मेरी वालिदा किसी तारीक कोठरी या मकान में दाख़िल होतीं तो वहाँ शमअ की सी मलगजी रोशनी हो जाती। एक दफा मेरे वालिद माजिद ने ये माजरा देखा, चुनाँचे वो भी इसी जगह तशरीफ ले गए जहाँ मेरी वालिदा खड़ी थीं आपके जाते ही वो रोशनी ग़ायब हो गई। मेरी वालिदा मोहत्रमा हैरान हुईं, उसके बाद आपने वालिदा मोहत्रमा से फरमाया के ये रोशनी अच्छी नहीं थी इसलिए मैंने उसको मअदूम कर दिया। और अब उसे अच्छी रोशनी में तब्दील किए देता हूँ उसके बाद से जब कभी मेरी वालिदा माजिदा किसी अंधेरे या तारीक मकान में तशरीफ ले जाती थीं तो वो रोशनी चांद की तरह मालूम होती थी।

औलाद हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) कसीर औलाद थे। चूंके आपकी चार बीवियां थीं इसलिए उन्हीं से बहुत से बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। का जाता है के औलाद नरीना में आपके बीस बेटे थे और औलाद ग़ैर नरीना में आपकी उनत्तिस बेटियाँ थीं। इतनी ज़्यादा औलाद होने के बावजूद आपने उनकी तालीम व तरबीयत बड़े उम्दा तरीक़े से की और हक़ूक़-उल-इबाद की अदायगी में कोई कमी ना रहने दी।

हज़रत अब्दुलल्लाह जबाई(रह॰अ॰) बयान फरमाते हैं के हमारे शेख़ सरकार अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰)

ने बयान फरमाया के जब मेरे घर कोई बच्चा पैदा होता है तो मैं उसे अपने हाथों में लेता हूं और ये कहकर के ये मुर्दा है उसकी मोहब्बत अपने दिल से निकाल देता हूं फिर अगर वो मर भी जाता है तो मुझे उसकी मौत में कोई रंज नहीं होता।

चुनांचे एक मर्तबा का वाक़ेया है के ऐन मजलिस वअज़ के वक़्त आपके एक बच्चे का इन्तिक़ाल हो गया मगर उस वक़्त भी आपके मामूल में क़तई फर्क़ नहीं आने पाया और आप बदस्तूर मजलिस में वअज़ फरमाते रहे और जब बच्चे को गुस्ल व कफ़न देकर आपके पास लाया गया तो खुद आपने बच्चे की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। ये है तर्के दुनिया का हक़ीक़ी मफ़्हूम, आप कसीर-उल-औलाद थे लेकिन औलाद की मोहब्बत किसी हाल में खुदा की मोहब्बत पर ग़ालिब ना आ सकी और आपके राहे सलूक के सफर में चार बीवियों और उननचास औलाद ने कोई ख़लल ना डाला आपकी औलाद में से कई आसमाने इल्मो फ़ज़्ल पर आफ़्ताब बनकर चमके और अपने आपको जलील-उल-क़द्र वालिद की जानशीनी का अहल साबित कर दिया। औलादे नरीना में से मश्हूर ये हैं:

1- शेख़ सेफउद्दीन अब्दुलवहाब(रह॰अ॰)
2- शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ताजउद्दीन(रह॰अ॰)
3- शेख़ शर्फ़उद्दीन ईसा(रह॰अ॰)
4- शेख़ अबु इसहाक़ इब्राहीम(रह॰अ॰)
5- शेख़ अबुबकर(अब्दुलअज़ीज़(रह॰अ॰)
6- शेख़ ईसा(रह॰अ॰)
7- अब्दुल जब्बार(रह॰अ॰)
8- शेख़ मूसा(रह॰अ॰)
9- शेख़ मोहम्मद(रह॰अ॰)

साहबज़ादों के अलावा आपके बअज़ पोतों और

नवासों ने भी आपकी तालीमात और बकांत से फ़ेज़ उठाया। आपकी औलाद का तआरूफ मनदर्जा ज़ेल है:

1- हज़रत शेख़ अब्दुल वहाब(रह०अ०)

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) के सबसे बड़े साहबज़ादे का इस्मे ग्रामी शेख़ सेफउद्दीन अब्दुलवहाब है। आप माहे शअबान 52अहि० में पैदा हुए आपने इल्मे फ़िक़ह और हदीस की तालीम अपने वालिद माजिद ही से हासिल की उसके बाद मज़ीद तालीम हासिल करने की ग़र्ज़ से बल्ख़, बुखारा और अजम के दूरदराज़ इलाक़ों में गए। इस तरह तक़रीबन बीस साल की उम्र में आपने तमाम उलूम व फिनून की तहसील व तकमील कर ली और 543हि० में सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह०अ०) की ज़ेरे निगरानी उन्हीं के मदरसे में दर्से दुनिया शुरू किया। ज़बरदस्त वअज़ थे और "शीरीं कलाम" के लक़ब से मशहूर थे। हज़रत के विसाल के बाद फतवा नवीसी का काम भी आपने संभाल लिया और उनके मदरसे का सारा काम संभाला। बहुत से लोगों ने आपसे इल्मो फज़्ल भी हासिल किया। आपके तमाम भाईयों में उलूम ज़ाहिरी व बातिनी और फज़्लो कमाल में आप जैसा कोई भी नहीं हुआ। गोया सरकार ग़ौसे आज़म(रह०अ०) के आप ही हक़ीक़ी जानशीन थे। आप ऐसे बा मुर्व्वत, करीमउन्नफ़्स साहिबे जूदो सखा और बा अख़्लाक़ थे के ख़लीफा नासिरउद्दीन ने आपको सितम रसीदा और मज़लूमों की मुआवनत और फरयाद रसी पर मामूर किया था। आपने उस अज़ीमुश्शान व अज़ीम-उल-मर्तबत ख़िदमत को उस हद तक मुनासिब तौर पर अंजाम दिया के आपको आम मक़बूलियत हासिल हो गई। आप आला दर्जे के फुक़ीहा बड़े ज़बरदस्त फ़ाज़िल व मतीन, अदीब और शीरीं कलाम वअज़ थे। तसव्वुफ में आपने दो किताबें

जवाहर-उल-असरार और लतायफ-उल-अनवार तसनीफ फरमाई हैं। उनके अलावा और भी आपकी तसनीफात पाई जाती हैं।

25 शाअबान 593हि॰ में आपका विसाल हुआ और आपको बग़दाद ही में दफ़्न किया गया आपके एक साहबज़ादे शेख़ अब्दुस्सलाम(रह॰अ॰) ने बड़ी शौहरत हासिल की। वो अपने दादा सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) और वालिद माजिद दोनों से फेज़याब हुए और मुद्दतों तक बग़दाद में दर्स व तदरीस और इफ़्तअ का काम सर अंजाम दिया।

2- शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़(रह॰अ॰)

हज़रत शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक ताजउद्दीन(रह॰अ॰) भी हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के साहबज़ादे थे आप अपनी दीनी ख़िदमात और इल्मी क़ाबलीयत की बिना पर सिराज-उल-ईराक़, जमाल-उल-आईम्मा, फख़र-उल-हफ्फाज़ और शरफ-उल-इस्लाम के अलक़ाब से मशहूर थे। आपकी विलादत ईराक़ में 18 ज़ीक़अदह 528हि॰ में हुई। फ़िकह की तालीम अपने वालिद बुज़ुर्गवार ही से हासिल की। इसके अलावा हदस की तालीम में दूसरे नामवर उल्मा से भी इसतफादा किया आप बड़े मोहद्दिस और जय्यद फक़िहा थे। आप सदाक़त, तवाज़अे व इन्किसारी और अख़्लाक़े हसना में पूरे ईराक़ में बड़े शौहरत याफ़्ता थे। शुरू शुरू में पनाह लोगों ने आपसे इल्मी इसतफादा किया। यही वजह है के आपके हल्क़ा दर्स से बड़े बड़े जय्यद उल्माइक्राम पैदा हुए। मगर जूं जूं राहे सलूक पर इसतक़ामत हासिल करते गए तो आप अवाम से किनारा कश होते गए। आपके मुताल्लिक़ मशहूर है के एक मर्तबा आप तीस साल तक मुराक़्बे में रहे और एक वार भी आसमान पर निगाह ना डाली आप 7 शव्वाल 603हि॰ को बग़दाद में व असल बहक़ हुए। और बाबे हर्ब

में दफ़्न किए गए जब आपकी नमाज़ जनाज़ा का एलान हुआ तो मख़्लूक़ का इतना ज़बरदस्त अज़्दहाम हो गया के शहर के बाहर ले जाकर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई गई। उसके बाद आपका जनाज़ा जामेआ रसाफा में ले जाया गया। और यहाँ पर भी आपकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गई। इस तरह मुतअद्दिद जगहों पर आपकी नमाज़े जनाज़ा अदा की गई।

आपके साहबज़ादों में शेख़ अबु सालेह(रह०अ०), शेख़ अबु अलमुहासिन फ़ज़्लुल्लाह(रह०अ०), शेख़ अब्दुर्रहीम(रह०अ०), शेख़ सुलैमान(रह०अ०) और शेख़ इसमाईल बहुत मशहूर हुए। शेख़ अबु सालेह नस्र(रह०अ०) मुद्दत तक बग़दाद के क़ाज़ी-उल-क़ज़ात रहे। अपने दौर के इमामे वक़्त तसलीम किए जाते हैं।

3- हज़रत शेख़ शर्फुद्दीन ईसा(रह०अ०)

आप भी हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) के साहबज़ादगान में से थे। आपने भी ज़ाहिरी उलूम की तकमील अपने वालिद मोहत्रम ही से की। इस्लामी और शरअई उलूम में कामिल दसतरस हासिल की। आप निहायत बुलंद पाया वअज़, मुफ़्ती और सूफी थे। मुद्दतों दर्स व तदरीस में मशग़ूल रहे फिर मिस्र चले गए। और वहाँ भी तबलीग़ व हिदायत का काम जारी रखा। और शअेरो सुख़न का मज़ाक़ भी रखते थे। कई तसानीफ अपनी यादगार छोड़ीं। आपने 572हि० में वफात पाई।

4- हज़रत शेख़ अबु इसहाक़ इब्राहीम(रह०अ०)

आप भी हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०) की औलाद मजाज़ से थे। तालीम व तरबीयत के इब्तिदाई मराहिल भी अपने वालिद मोहत्रम की ज़ेरे निगरानी तय किए। आपकी तबअे मुतावाज़अे और सूफी मनिश थी। दिन रात का बेश्तर हिस्सा इबादते इलाही में गुज़ारते। रात को तौबा

इसतग़फार और गरियाज़ारी बहुत करते। आपको मनाज़िले तरीक़त पर कामिल उबूर हासिल था। बहुत से लोगों ने आप से इल्मे तरीक़त व तसव्वुफ हासिल किया। बग़दाद की सकूनत तर्क करके वासित में मुक़ीम हो गए थे। वहीं 592हि॰ में व अस्ल बहक़ हुए।

5- हज़रत शेख़ अबुबकर अब्दुलअज़ीज़(रह॰अ॰)

आपकी विलादत 28 शव्वाल 532हि॰ में हुई। आपने हदीस का दर्स अपने वालिद माजिद से लिया उसके अलावा अबु मनसूर अब्दुर्रहमान बिन क़राज़ से फिक़ह और हदीस की तअलीम को मुकम्मल किया। आप हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के उन साहबज़ादों में से हैं जिन्होंने वालिद मोहत्रम के विसाल के बाद बा ज़ाब्ता तौर पर दर्स व तदरीस का सिलसिला जारी रखा और ग़ौसे पाक की मसनद रूश्दो हिदायत पर जलवा अफ़रोज़ रहे। बहुत से उल्मा ने आपसे इसतफादा किया आप बड़े मुत्तक़ी, ज़ाहिद और आबिद थे। इनकिसार, सालहियत की खूबी आपमें बहुत नुमायाँ थीं। 580हि॰ में आप बग़दाद से जबाल चले गए और वहीं मुसतक़िल सकूनत इख़्तियार कर ली। 18 रबी-उल-अव्वल 602हि॰ में जबाल ही में आपका इन्तिक़ाल हुआ और वहीं आपको दफ़्न किया गया। आपके एक साहबज़ादे शेख़ मोहम्मद निहायत जय्यद आलिम हुए और हज़ारहा लोगों को दीनी व रूहानी क़वायद से मुसतफीज़ किया।

6- हज़रत शेख़ अब्दुलजब्बार

आपने फिक़ह की तालीम वालिद बुज़ुर्गवार से हासिल की और शेख़ क़ज़्ज़ाज़ अबु मनसूर(रह॰अ॰) से हदीस सुनी। आला दर्जे की खूशनवीस थे। हुस्ने अख़लाक़, इत्तिबाओ रसूल, सब्रो तवक्कुल और रियाज़त व मुजाहेदे

में मुनफरिद थे। अभी जवान ही थे के 575हि॰ में पैग़ामे क़ज़ा आ पहुँचा। अपने वालिद बुज़ुर्गवार के मुसाफिर ख़ाने में मदफून हुए।

7- हज़रत शेख़ याहिया(रह॰अ॰)

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के लड़को में से एक शेख़ याहिया भी थे। उनकी विलादत 6 रबी-उल-अव्वल 555हि॰ में हुई। आपने तालीम सय्यदना ग़ौसे आज़म और शेख़ मोहम्मद अब्दुलबाक़ी(रह॰अ॰) से हासिल की। हुस्ने अख़्लाक़ और ईसारे नफ़्स में यगानाऐ रोज़गार थे। काफी लोगों ने आपसे इल्मी इसतफादा भी किया। आप अपने भाईयों में से से छोटे थे। लड़कपन के ज़माना ही में आप बग़दाद छोड़ कर मिस्र चले गए और वहाँ आपका एक लड़का भी पैदा हुआ और जिसका नाम अब्दुल क़ादिर रखा। आप अपनी किब्रसिनी के ज़माने में अपने फरज़न्द के हमराह वापस आए और फिर तों दम आख़िर बग़दाद ही में 15 शाअबान 600हि॰ में आपका विसाल हुआ और बग़दाद ही में दफ़्न हुए। हज़रत अब्दुलवहाब(रह॰अ॰) के पहलू में आपका मज़ारे अक़्दस है।

8- हज़रत शेख़ मूसा(रह॰अ॰)

हज़रत शेख़ मूसा(रह॰अ॰) की पैदाईश 535हि॰ में हुई। आप भी हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के जलील-उल-क़द्र साहबज़ादगान में से थे। आपको सिराज-उल-फ़िक़हा और जैन-उल-मोहद्दसीन कहा जाता था। फिक़ह और हदीस की तअलीम सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) और शेख़ सईद बिन अल नबअ' सें हासिल की। बग़दाद का क़याम तर्क करके दमिश्क़ जा बसे। मसलक हंबली के पीरू थे अक्सर ख़ामोश रहते थे और बड़े बड़े तवील मुराक़्बे करते थे। मिज़ाज में फरूतनी और इनकिसार हद से ज़्यादा था।

आखिर उम्र में बहुत से अमराज़ ने आ दबोचा लेकिन आपने कमाल सब्रो ज़ब्त के साथ उन अमराज़ के दुख बर्दाश्त किए।

जमादी-उल-आखिर 618हि॰ में दमिश्क़ में आपने वफात पाई। मदरसे मुजाहिदिया में आपकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गई। और जबल क़ासियों में दफ़्न किए गए।

9- हज़रत शेख़ अबु मोहम्मद(रह॰अ॰)

अलशेख़-उल-आलिम-उल-फ़ाज़िल अबु मोहम्मद भी आपके फरज़न्द थे। फिक़ह की तालीम सय्यदना ग़ौसे आज़म से हासिल की और इल्मे हदीस उस दौर के नामवर मशायख़ सईद बिन अल नबआ(रह॰अ॰) और अबु-अल-वक़्त से हासिल किया। मुद्दत तक दर्स व तदरीस में मशग़ूल रहे और बेशुमार लोगों को फेज़याब किया। 25 ज़ीक़अदा 600हि॰ में वफात पाई और बग़दाद के मक़्बरा हल्बा में सपुर्दे खाक किए गए।

10- हज़रत शेख़ अब्दुल्लाह(रह॰अ॰)

अलशेख़-उल-अजल अबुअब्दुर्रहमान अब्दुल्लाह बक़िय्यतुल सलफ थे आपने भी अपने वालिद माजिद से दर्स लिया और जवानी के आलम ही में उलूमे दीनिया में साहिबे इल्म हो गए। बहुत से लोगों ने आपसे फ्यूज़ व बर्कात हासिल किए। आपका विसाल 17 सफर 589हि॰ बग़दाद में हुआ और बग़दाद ही में मदफून हुए।

तसानीफ

हज़रत सय्यद गौसे आज़म(रह०अ०) ने बे शुमार तालिबाने हक़ व सदाक़त और मुतलाशियाने इल्मो मअरफ़त को अपनी रूहानी तवज्जह के बातिनी अनवारात से मुज़ईय्यन और मुसतफीद फरमा कर राहे मअरफ़त पर गामज़न फरमाया आपने लोगो की तरबीयत और इस्लाह का ये सिलसिला तहसीले इल्म के बाद शुरू किया जो आपकी हयात में ताँ दमे आख़िर जारी रहा। मगर आपने अहयाऐ दीन का ज़्यादा तर काम दर्स व तदरीस और मुवअज़े हस्ना के ज़रिये सर अंजाम दिया। और मुवअज़े हस्ना के साथ साथ आपने चन्द ग्राँ तसानीफ भी कीं जो आपकी इल्मी अज़मत का मुंह बोलता सबूत हैं।

आपकी ज़्यादा तर तसानीफ आपके मवअज़ और खुत्बात पर मुबनी हैं। इन तसानीफ में आपने शरीअत और तरीक़त के मसायल को पुरकशिश अंदाज़ में पेश किया है। आपके खुत्बे नासिहाना अंदाज़ में हैं जिनमें हर ख़ास व आम को नेक कामों पर अमल करने की दअवत दी गई है और बुराईयों से मना फरमाया गया है। बअज़ खुत्बों में तसव्वुफ के असरार व रमूज़ भी बयान किए गए हैं। ग़र्ज़ ये के आपकी जितनी भी तसानीफ मिलती हैं वो मुसलमानों के लिए मशअले राह हैं।

आपकी तसानीफ के बारे में अक्सर अहले इल्म की राय है के आपकी तसानीफ को पढ़ने से दिल और रूह को जो लज़्ज़त हलावत और सरवर मिलता है वो बहुत ही कम कुतुब से मिलता है क्योंके आपकी तहरीरों के पीछे आपकी रूहानीयत का असर है के पढ़ने से दिल में रक़्त और तअल्लुक़ बिल्लाह पैदा होता है जो आम मुसन्निफों की कुतुब से पैदा नहीं होता। इसलिए आपके कलमात तय्यिबात से जो लुत्फ मयस्सर आता है वो और कहीं नहीं

मिलता। आपकी तहरीरों से ऐसे ऐसे हक़ायक़ व मुआरिफ़ का इन्किशाफ होता है के इंसान सुबहान अल्लाह पुकार उठता है। आपके इर्शादात व कलाम में सिद्दीक़ीन की शान है। एक एक लफ़्ज़ दिलों को गर्माता है और क़लूबे मुर्दा को हयाते ताज़ा मिलती है। हालाते ग़ौसे आज़म में लिखा है के आज आपकी तसानीफ के मुतालआ से मुर्दा दिल ज़िन्दा हो रहे हैं। आपका कलाम गोहर नायाब की मानिंद है जो मुसलसल दरया की तरह रवाँ है। आपके कलाम में इस क़द्र तासीर, ज़ोक़ो शौक़ और दिलसोज़ी है, के बसा अवक़ात पढ़ने वाला वज्द में आ जाता है।

इमाम याफई(रह॰अ॰) ने आपकी तसनीफात की बाबत ये लिखा है के हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने मुफीद और कारआमद किताबें भी लिखी हैं और आपके इम्लाअत भी महफूज़ हैं। यानी आपके इर्शादात व खुत्बात और तक़रीरात को आपके शार्गिदों या मुरीदों ने जमा किया है।

आपकी तसानीफ में "ग़नियातुल तालिबीन" ज़्यादा शौहरत की हामिल है इसके अलावा "फतूह-अल-ग़ैब" नाम से आपकी एक और किताब बहुत मअरूफ व मक़्बूल है "फतह रब्बानी" आपके दो साल के मुवअज़े हस्ना और इर्शादात व अक़्वाल का नादिर मजमूआ है इसके अलावा "क़सीदा ग़ौसिया" नाम से आपके बअज़ अश्आर भी अर्बी नज़्म की सूरत में मौजूद हैं। आपकी तमाम कुतुब का अजमाली खाका पेश किया जाता है।

1-ग़नयत-उल-तालिबीन हज़रत सय्यद ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की ये किताब बहुत मअरूफ है अस्ल किताब अर्बी में है मगर इसके तराजिम अर्बी से फारसी और उर्दू में भी हो चुके हैं। इसमें शरीअत और तरीक़त के मसायल को एक साथ बयान किया गया है। इस किताब के इब्तिदाई हिस्से में दीन के पाँच अरकान पर मुफस्सिल

बहस की गई है उसके बाद इस्लामी आदाब व अख़्लाक़ खाने पीने, उठने बैठने, निकाह करने, बाल मुंडवाने, दाढ़ी बढ़ाने, इसतंजा करने, गुस्ल व तहारत पोशाक पहनने, सोने और सफर करने के आदाब व मसायल बिलतफ़्सील बयान किए गए हैं। वालिदैन की फरमांबर्दारी, जानवरों को दाग़ने, औरतों और गुलामों से सलूक करने, कुरआन करीम पढ़ने, सदक़ा देने और इस क़िस्म के मसायल पर कमा हक़्क़ा रोशनी डाली गई है। कुरआन और हदीस के हवालों से उन तमाम मसायल को बिलतशरीह बयान किया गया है। परहैज़गारी, अच्छे और बुरे आमाल, अवामिर व नवाही, क़ब्र के अज़ाब, मुख़्तलिफ मसायब और हाजात की दुआओं का ज़िक्र भी बड़े उम्दा तरीक़े से किया गया है। अल्लाह तआला की मअरफत, ईमान, सवाब व अज़ाब और बहिश्त व दोज़ख़ के बारे में तमाम अहादीस और आयाते कुरआनी की तफ़्सीरें इक्ठ्ठी कर दी गई हैं और बड़े दिलकश और वाज़ेह अंदाज़ में हर बात की उक़्दा कुशाई की गई है। मुख़्तलिफ फिरक़ों की तअदाद उनके अक़ायद उनके बानियों के हालात ग़र्ज़ हर शै का तज़करह मौजूद है। शबे बराअत, रमज़ान, शबेक़द्र, माहे शअबान, बुज़ुर्ग दिनों और बुज़ुर्ग मुक़ामात वग़ैरा का ज़िक्र भी किया गया है। इंसान के मवक्किलों, नफ़्स, रूह, शैतान, आऊज़ की तशरीह, अम्बिया की फज़ीलतें। तौहीद, नमाज़ तरावीह, ईदैन, क़ुर्बानी, आशूरा, मुर्दे की तजहीज़ व तकफीन, मुरीदों के आदाब, राग रंग सुनना, मुजाहेदात व रियाज़ियात ग़र्ज़ दुनयवी और उख़रवी ज़रूरत का कोई मोज़ू बाक़ी नहीं छोड़ा गया। इस लिहाज़ से ये एक लाजवाब किताब है जिसका मुतालेआ फी-अल-वाक़ऐ दुनियवी और दीनी रहनुमाई का बाअस है।

हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की इस ग्रामी क़द्र किताब

की अज़्मत और अफ़्ज़लियत का अंदाज़ा इससे किया जा सकता है के हज़रत मौलयना अब्दुलहकीम सियालकोटी जैसे बुलंद पाया बुज़ुर्ग और जय्यद आलिम ने इस किताब को हर ख़ास व आम के लिए नफअ बख़्श और क़ाबिले मुतालेआ जान कर इसका फारसी ज़बान में तर्जुमा किया और तशरीह व तोज़ीह के लिए जगह जगह क़ीमती हवाशी भी दर्ज किए हैं। उर्दू में इसके बेशुमार तराजिम हैं।

2–फतूह–अल–ग़ैब हज़रत सय्यद ग़ौस आज़म(रह॰अ॰) की दूसरी किताब फतूह–अल–ग़ैब है। ये इल्मे तसव्वुफ और मअरफ़त में बड़ी बुलंद पाया तसलीम की गई है। इस किताब में छोटे छोटे मुक़ाले हैं जिनमें क़ुरआने पाक की आयात और अहादीस के हवालों के साथ असरारे हक़ीक़त बयान किए गए हैं। हर मुक़ाला रूहानी मअरफ़त का अलमबरदार है। इस किताब में कुल अठहत्तर उनवानात हैं। इस किताब के मुतालअे से तज़किया अलक़लूब में राहनुमाई होती है अगर कोई इस किताब पर सच्चे दिल से अमल पैरा हो जाए तो इसमें अक़ायद और आमाल की सहेत पैदा हो जाएगी। इस किताब का फारसी में तर्जुमा हज़रत शाह अब्दुलहक़ मोहद्दिस दहेलवी ने किया और उर्दू में भी कई तराजिम हो चुके हैं।

3–फतह रब्बानी ये किताब हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) के खुत्बात का मजमूआ है। अस्ल किताब अर्बी में है और इसका मुकम्मल नाम "अलफतह रब्बानी वअलफेज़-उल-रहमानी" है। इस किताब में आपके तरेसठ वअज़ हैं। उन खुत्बात का एक एक हर्फ दिल से निकला है और इसी बिना पर वो दिल की गहराईयों में अपनी जगह तलाश करता है ये आपके दो साला इर्शादात व मवअज़ का मुलहिज़ है। अस्ल किताब अर्बी में है। इस किताब को हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) के नवासे

सय्यद अफीफउद्दीन मुबारक(रह०अ०) ने मुर्तब किया है और उन्होंने इस किताब को इस क़द्र उम्दगी से तहरीर किया है के पढ़कर क़ल्ब बेइख़्तियार मुतास्सिर होता है और निहायत सरवरो केफ हासिल होता है तशनगाने हिदायत के लिए ये एक चश्मा शीरीं है। जिसका आबे मुसफ़्फ़ा सेराब होने वालों के दिलों से हर क़िस्म के मेल धो डालता है। इस किताब का भी फारसी और उर्दू में तरजुमा हो चुका है।

अहले इल्म का कहना है के ये बात दुरूस्त है के उन मवअज़ व इर्शादात को किताब में पढ़ने से वो लज़्ज़त हासिल नहीं हो सकती जो सामेईन व हाज़रीने मजलिस को दहेने शेख़ से सुनकर हासिल हुआ करती थी। लेकिन चूंके कलमात और अलफाज़ वही हैं जो आपकी ज़बान मुबारक से निकला करते थे इसलिए जितना लुत्फ आज भी इनमें छुपा हुआ है वो मुतफर्रिक़ या दूसरों की तसानीफ के पढ़ने से नहीं आ सकता।

इस किताब के अलफाज़ में इतनी तासीर है के आज भी अगर कोई सच्चे दिल से सलूके क़ादिरिया पर गामज़न होना चाहे तो वो इस किताब के अेहकाम पर अमल पैरा हो जाए तो उसका बातिन खुलने की उम्मीद हो सकती है।

4–मक्तूबाते मेहबूबे सुबहानी(रह०अ०) ये किताब आपके मक्तूबात का मजमूआ है जो आप ज़िन्दगी भर अपने मिलने वालों को लिखते रहे। उन ख़तूत को आपके विसाल के बाद किताबी सूरत में इकठ्ठा कर लिया गया उन ख़तूत में मअरफ़त और तरीक़त के असरारो रमूज़ हैं। ऐसे ऐसे लतीफ निकात हैं के इंसान बेइख़्तियार सर धुनने लगता है। मक्तूबात के पैराए में आपने इल्मो इरफान के वो मोती बिखेरे हैं के तबीअत उन्हें चुनते चुनते सेर नहीं होती।

5-सर-उल-असरार फीमा यहताज अलेह-उल-अब्रार इस किताब में मुक़ामाते तसव्वुफ और मनाज़िले सलूक बयान की गई हैं ये किताब अर्बी में है और अर्से से नायाब थी मगर औलादे ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) में से साहिबे इल्म हज़रात ने इसे छपवा कर फैला दिया है और इसका उर्दू तर्जुमा भी हो गया है। ये किताबा बेहद मुफीद है और ख़्वास सऊफिया और क़ादरी सालकान के लिए नादिर तोहफा है।

6-रिसाला ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ये रिसाला भी ग़ौसि आज़म की तसनीफ है इस रिसाले में आपने उन इल्हेमात को क़लमबंद किया है जो अल्लाह तआला की तरफ से आप पर वारिद हुए। हर इल्हाम असरार व रमूज़ पर मुबनी है। अहले तरीक़त के लिए ये रिसाला एक बैश-बहा ख़ज़ाना है। इस रसाले के मुतालेअ से हक़ीक़त की तरफ बहुत जल्द रहनुमाई होती है बशर्त ये के वो राहे हक़ीक़त का सच्चा तालिब हो।

7-जिलाऐ-अल-ख़्वातिर "जिलाऐ-अल-ख़्वातिर मिन कलाम शेख़ अब्दुल क़ादिर" भी हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की 45 मजालिस के इर्शादात का मजमूआ है जो जुमआ 9 रजब 546हि॰ से शुरू हुए और 4 रमज़ान 546हि॰ को ख़त्म हुए। हज़रत शेख़ के उन मवअज़ को आपके फरज़न्द शेख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़(रह॰अ॰) ने अपने दस्ते मुबारक से लिखा। अर्सेदराज़ तक जिलाऐ-अल-ख़्वातिर क़ल्मी मख़्तूता रहा मगर अब अर्बी और उर्दू में छप गया है। ये मवअज़ भी बिलकुल फतह रब्बानी की तरह हैं उन तक़रीरों में हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) ने नेक और सालेह बनने के लिए बहुत ज़्यादा तरग़ीब दी है उर्दू में इसका तर्जुमा मोलवी मोहम्मद अब्दुलकरीम तिफ़्ली ने

किया है। जिसे पीरज़ादा इक़्बाल अहमद फारूक़ी ने बसई शफ़्क़त जीलानी खान मक्तबा नबव्विया लाहोर से शाय किया।

नीज़ आपने चौदह कसायद भी अपनी यादगार छोड़े हैं जिनमें क़सीदाऐ ग़ोसिया को आलमगीर शौहरत हासिल हुई है। ये क़सायद निहायत फसीह व बलीग़ और पुर तासीर हैं। और इनके पढ़ने से अजीब फवायद हासिल होते हैं। इनमें से नो क़सायद अस्ल अर्बी मतन और तर्जुमा के साथ किताब मज़हर-उल-जमाल मुसतफाई मुतर्जिम सूफी सय्यद नसीरउद्दीन क़ादरी में शाय हो चुके हैं।

8– <u>मुतफर्रिक़ कुतुब</u> मनदर्जा बाला तसानीफ के अलावा अलसबूअ शरीफ और दुरूदे किब्रियत अहमर और दुरूदे अक्सीरे आज़म भी आपकी तसानीफ हैं। सबूअ शरीफ हफ़्ता भर के तमाम अय्याम का वज़ीफा है। इनके अलावा आपकी एक मनाजात है जो तीन अश्आर पर मुश्तमिल है और चहलकाफ के नाम से मशहूर है। दुनियाऐ इल्म व अबद में इसका निहायत बुलंद दर्जा है।

अज़कार सिलसिलाऐ क़ादिरिया

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने बेशुमार लोगों को अपनी राहनुमाई में मनाज़िले सलूक तय करवाई और उनकी तरबीयत जिन अज़कार और तरीक़े से हुई वो तरीक़ते क़ादिरिया कहलाई और जो शख़्स इस तरीक़त पर अमल पैरा हो जाता है वो बहुत जल्द रूहानी मनाज़िल के हुसूल की तरफ गामज़न हो जाता है और इस तरीक़त में फेज़ बहुत ज़्यादा है इस तरीक़त की बुनियाद इत्तिबऐ शरीअत के साथ अल्लाह का ज़िक्र है आपके फेज़ से जिसने भी इक्तिसाब किया उसने इसी तरीक़ा से किया इस लिहाज़ से सिलसिला आलिया क़ादिरिया में निसबत बड़ी तासीर अंगेज़ होती है। सिलसिला आलिया क़ादिरिया का तरीक़ा तरबीयत और ज़िक्र हस्बे ज़ेल है:

ज़िक्र इस्मे ज़ात सिलसिला क़ादिरिया का पहला ज़िक्र इस्मे ज़ात बिलजब्र है यानी लफ़्ज़ अल्लाह का बुलंद आवाज़ से ज़िक्र करना है। ज़िक्र जब्र ऐतदाल में रहना चाहिए आवाज़ ना ज़्यादा बुलंद हो और ना ज़्यादा हल्की हो। बल्के दरमियानी हो। ज़िक्र जबरी इंसान को ज़िक्र को आदी बनाने के लिए किया जाता है।

ज़िक्र जहेरी की कई क़िस्में हैं ख़्वाह एक ज़र्बी हो या दो ज़र्बी या सह ज़र्बी या चहार ज़र्बी। यक ज़र्बी का तरीक़ा ये है के ज़ाकिर दो ज़ानो बैठकर सांस को नाफ तले बन्द करे और लफ़्ज़ अल्लाह को शदोमद और जहेर के साथ नाफ से उठाकर क़ल्ब पर ज़र्ब लगाए फिर सांस ठिकाने आने तक ठहर जाए और इस तरह बार बार ज़िक्र करे।

दो ज़र्बी का तरीक़ा ये है के ज़ाकिर दो ज़ानो बैठकर सांस बदस्तूर साबिक़ रोके और अल्लाह को बाआवाज़ बुलंद ज़ूनहे और कुव्वत से उठाकर एक ज़र्ब ज़ानोऐ रास्त

पर और दूसरी क़ल्ब पर लगाए और इसी तरह बार बार फ़स्ल करे।

सह ज़र्बी का तरीक़ा ये है के ज़ाकिर चार ज़ानो बैठे। और एक बार दायें ज़ानो और दूसरी बार बायें ज़ानो पर और तीसरी बार क़ल्ब पर ज़र्ब लगाए। तीसरी ज़र्ब सख़्त और बुलंद तर होनी चाहिए।

चहार ज़र्बी का तरीक़ा ये है के ज़ाकिर चार ज़ानो बैठे। फिर तीन ज़र्ब मज़कूरह सह ज़र्बी की मानिंद लगाए। चौथी ज़र्ब बशद्दोमद अपने रूबरू ज़मीन पर मारे।

ज़िक्र नफ़ी इसबात मिन जुमला ज़िक्र जहेरी के नफ़ी इसबात भी है जिसे मशायख़ क़ादिरिया इस्मे ज़ात के ज़िक्र की मश्क़ के बाद तअलीम फरमाते हैं इसका तरीक़ा ये है के ज़ाकिर बतौर नमाज़ रूक़िबला बैठे अपनी आँखें बन्द करे और दम रोक कर लफ़्ज़ *ला* को नाफ से उठाता हुआ दायें कंधे से ले जा कर पसे पुश्त डाल दे ताके तेहत इमाम और अक़ब तय हो जाए फिर वहाँ से *इलाह* को दिमाग़ तक पहुँचा कर खुद दायें तरफ मुख़ातिब हो जाए और ख़याल करे के मैंने तमाम आलम को पसे पुश्त डाल दिया है सब कुछ फ़ानी हो गया है। यहाँ तक के फ़ोक़ और यमीन भी तय हो गया है। फिर *इल्लल्लाह* को दायें तरफ से बायें तरफ क़ल्ब पर ले जाकर बशद्दोमद ज़र्ब करे के तीसार भी तय हो जाए और ख़याल करे के सिवाए अल्लाह के तमाम आलम फना हो गया है अब फक़्त अल्लाह की मोहब्बत मेरे क़ल्ब में है।

वाज़ेह रहे के ज़र्बात और तशदीदात के शर्त करने और उनके मकानात की मराआत में सत्तर और राज़ ये मुज़मिर है के इंसान मख़्लूक़ है। आवाज़ों पर कान धरना, नफ्ख़ात को सुनना जिहात मुख़तल्फा की तरफ मुतवज्जह होना और बातों और ख़तरात का उसके क़ल्ब में घूमना

वग़ैरा उसकी जबलत और सरशत में दाखिल है तो उल्माएं तरीक़त ने अपने ग़ैर की तरफ मुतवज्जह होने को रोक देने और ख़तरात बेरूनी को आने से बाज़ रखने का ये तरीक़ा निकाला ताके उसकी तवज्जह आहिस्ता आहिस्ता अपनी ज़ात से भी टूट कर उसका ध्यान सिर्फ अल्लाह पाक ही से लग जाए।

इस तरह पैश्वायाने तरीक़त ने अज़कार मख़सूसा के वास्ते जलसात व हईय्यात ईजाद किए हैं जिन्हें मुनासबाते मख़्फ़िया के सबब से साफीउज़्ज़हन मर्द और उलूम फिक़ह का आलिम दरयाफ़्त करता है।

बअज़ सूरत में कसरे नफ़्सी है बअज़ जलसे में खुशूअ व खुज़ूअ है। बअज़ में जमईअते ख़ातिर और दफअे वसवास है और बअज़ में निशात है और यही सर नमाज़ के क़ोमह, जलसा, रूकूअ, सजूद और क़याम व क़अऊद वग़ैरा में है। और इसी भेद की वजह से सरवरे कायनात अलेहिस्सलातो वस्सलाम ने कूलहे पर हाथ रख कर खड़ा होने से मना फरमाया है के ये अहले नार की शक्ल है। इस वास्ते की अक्सर हईय्यात में अक्सर काहिली और फतूर निशात होता है। जो सरगर्मीये इबादत का मनाफी है।

उनको याद रखना चाहिए के ऐसे अमूर को जवाज़ कार मख़्सूसा में ख़ास सिफ़्त के लिए ईजाद किए गए हैं। मुखालिफे शरअे या दाख़िले बिदआत सियह ना समझना चाहिए।

अहले सलूक को चाहिए के मजतमअ होकर नमाज़े फज्र या अस्र के बाद हल्क़ा करके ज़िक्रे इलाही करें। इजतमअे में जो फवायद हैं वो तनहाई में हासिल नहीं होते।

ज़िक्रे ख़फी फिर जब तालिब पर इस ज़िक्र जली का असर हो और उसका नूर उसमें दिखाई दे तो उसको ज़िक्र ख़फी का हुक्म दिया जाए। इस ज़िक्र जली के असर

से ये मुराद है के क़ल्ब में तहरीक ज़ोक़ व शौक़ पैदा हो और ख़ुदा के नाम से दिल में इतमिनान तसल्ली, तसकीन, चैन और राहत हासिल हो। वसवास दूर हो जाएं और हक़ तआला को उसके मा सिवाए पर मुक़द्दम रखे।

जो शख़्स दो माह या इससे कुछ ज़्यादा अर्से तक मज़कूरह शरायत के साथ फी यौम चार हज़ार बार इस्मे ज़ात के ज़िक्र पर मदावमत करे तो इंशाअल्लाह वो अपने क़ल्ब में ज़रूर ये असर मुशाहेदा करेगा और नूर और सरवर और तमानियत पाएगा ख़्वाह ज़ाकिर कैसा ही कम फ़ेहम क्यों ना हो।

पहला ज़िक्र अज़कारे ख़ुफ़िया में से इस्मे ज़ात है और उसका तरीक़ा ये है के अपनी दोनों आँखों और दोनों लबों को बन्द करे और दिल की ज़बान से *"अल्लाहुस्समीअ"* कहकर नाफ से सीनह तक चढ़े। फिर अपने तसव्वुर में *"अल्लाहू बसीरून"* कह कर सीनह से दिमाग़ तक पहुँचे। फिर वहाँ से *"अल्लाहू अलीमुन"* कह कर अर्श तक पहुँचे। फिर यही अलफ़ाज़ ख़याल करता हुआ दर्जा बदर्जा उतरे। *"अल्लाहू अलीमुन"* कहता हुआ अर्श से दिमाग़ पर उतरे और *"अल्लाहू बसीरून"* कहता हुआ दिमाग़ से सीनह पर उतरे और फिर *"अल्लाहू समीअउन"* कहता हुआ सीनह से नाफ पर उतरे और इसी तरह फिर बार बार कहता रहे। इस तरीक़े के बअज़ लोग इसमें *"अल्लाहू क़दीरून"* को भी ज़्यादा करते हैं अगर अल्लाहू क़दीरून इज़ाफ़ा करे तो तीसरी बार आसमान तक पहुंचे और चौथी बार अर्श तक।

पासअन्फ़ास अज़कार ख़फ़्या में से दूसरा ज़िक्र नफी व इसबात है। उसका तरीक़ा ये है के ज़ाकिर बेदार, होशियार और अपने हाल पर आगाह रहे जब दमबख़ुद बाहर निकले तो उसके बाहर होने के साथ ही *लाइलाहा*

का तसव्वुर करके ख़याल करे के मैंने जुमला मा सिवा अल्लाह को अपने जिस्म से निकाल दिया है और बज़रिया "ला" नफी करता हूँ।

फिर जब सांस खुदबखुद वग़ैर इरादा और क़सद के अन्दर जाए तो लफ़्ज़ "इललल्लाह" कहता हुआ क़ल्ब पर पहुँचे और ख़याल करे के अल्लाह के सिवा तमाम अशिया फना हो गई हैं और लफ़्ज़ अल्लाह का नक़्श दिल पर क़ायम रह गया है।

बुज़ुर्गाने तरीक़त ने कहा है के इस ज़िक्र का नाम पास-उन-निफास है और ख़तरात व वसवास के दफ़ओ करने में उसका बड़ा असर है।

मुराक़्बा फिर जब ज़िक्र ख़फी का असर ज़ाहिर हो और तालिब में उसका नूर मालूम हो तो उसे मुराक़्बा करने का हुक्म दिया जाए। ज़िक्र ख़फी के असर से मुराद शौक़, मोहब्बते इलाही का ग़ल्बा, उसकी तलब में हिम्मत का जम जाना, सकूत में हलावत पाना और अशग़ाल व अमूर दुनियवी से मुतनफिर हो जाना वग़ैरा है।

मुराक़्बे का तरीक़ा ये है के एक आयत क़ुरआनी या अल्लाह तआला के नाम पाक को ज़बाने तसव्वुर से पढ़े फिर उसके मअनी की तरफ मुतवज्जह होकर उस लफ़्ज़ के मफ़्हूम में इस तरह मुसतग़रिक़ हो जाए के मा सिवाए उसके कोई चीज़ ध्यान में ना रहे। उसे मुराक़्बा कहते हैं।

मुराक़्बा हुज़ूर हक़ तआला ये है के सालिक ज़बान से कहे या जिनों में ख़याल करे के *"अल्लाह हाज़िरी अल्लाह नाज़िरी अल्लाह मअई"* फिर अल्लाह की हुज़ूरी और नज़र और मईय्यत, और साथ ही उस ज़ाते मुक़द्दस के जहेत और मकान से पाक होने को खूब मज़बूत तसव्वुर करे यहाँ तक के तसव्वुर जम जाए के उसमें मुसतग़रिक़ हो जाए।

तरीक़ा मईय्यत या इस आयत का तसव्वुर करे *वहुवा मअकुम अेनमा कुनतुम* यानी तुम जहां कहीं भी हो हक़ तआला तुम्हारे साथ है और उसके साथ होने को क़याम, क़ऊद, ख़लवत व जलवत और शुग्ल व बेकारी में ध्यान करे।

इक़्सामे मुराक़्बा क़रआनिया या ये आयत पढ़े: *अेनमा तवल्लो फसुम्मा वजेहल्लाह* (जिधर तुम मुतवज्जह हो वहाँ अल्लाह की ज़ात है)

या ये आयत पढ़े : *अलम याअलम बिअन्नल्लाह यरा* (क्या इंसान नहीं जानता के अल्लाह उसे देख रहा है)

या इस आयत का मुराक़्बा करे: *नहनू अकरबा इलेहि मिन ह़बल-उल-वरीद* (हम इंसान की रगे गर्दन से भी क़रीब हैं)

या इस आयत का तसव्वुर करे: *वल्लाहू बिकुल्ली शेइन मुहीत* (अल्लाह हर एक चीज़ को घेरे हुए है)

या इस आयत का ध्यान करे: *इन्ना रब्बी मअई सयहदीन* (यक़ीनन मेरा अल्लाह मेरे साथ है वो मुझे हिदायत करेगा)

या इस आयत का मुराक़्बा करे: *हुवल अव्वलू व आख़िरू वज़्ज़ाहिररू वअलबातिनु* (अल्लाह तआला अव्वल है इससे पहले कोई चीज़ नहीं। आख़िर है जो बाद फनाऐ आलम बाक़ी रहेगा। ज़ाहिर है ब ऐतबार अपनी सिफात और अफ़्आल के बातिन है ब ऐतबार अपनी ज़ात के के उसकी हक़ीक़त को कोई नहीं समझ सकता।

ये मुराक़्बात अल्लाह अज़्ज़ोजल के साथ दिल का तअल्लुक़ होने के वास्ते अज़हद मुफीद हैं।

मुराक़्बा फना वो मुराक़्बा जो क़तअे अलायक़, तजर्रिदताम, सकर, मह्व, बेहोशी और फना के लिए मुफीद है और इस आयत का मुराक़्बा है : *कुल्लु मन अलेहा फानिंवयब्क़ी वजही रब्बिका ज़ुलजलाल वलइक्राम*

(जो कुछ ज़मीन पर है वो नेस्त व नाबूद होने वाला है और बाक़ी सिर्फ तेरे रब की ज़ात रहेगी जो बड़ाई और बुज़ुर्गी वाला है)

हज़रात क़ादिरिया के दरमियान इस मुराक़्बे फना का अक्सर मामूल है

उसका तरीक़ा ये है के अपने आपको तसव्वुर करे के मर कर फना हो गया है और ऐसी राख हो गया है जिसे हवायें उड़ाती हैं। हर शै की तरकीब और शक्ल मिट गई है और एक ऐसी हवा ग़ैब से चली के उसने पुरज़े पुरज़े उड़ा कर तमाम आलम को नेस्त व नाबूद कर दिया है। सिवाए अल्लाह तआला के कुछ भी बाक़ी नहीं रहा। इस तसव्वुर पर देर तक क़ायम रहे। शुग़ल फना बख़ूबी हासिल होगा।

<u>मुराक़्बा नेसती</u> इस तरीक़ा मज़कूरा ज़ेल का मुराक़्बा नेस्ती का बाअस है। आयत ये है:

"इन्नल मौतअल्लज़ी तफर्रूना मिनहू फइन्नहू मुलाक़ीलम। ईमा तकूनू यदरकाकुमुलमौता वलो कुनतुम फी बरूजी मुशय्यीदतिन".(यक़ीनन जिस मौत से तुम भागते हो वो तुम्हें मिलने वाली है। जहाँ कहीं भी तुम होगे, मौत तुम्हें पा लेगी अगरचे तुम ऊँचे और मज़बूत वुर्जों में होगे।)

<u>तौहीदे अफ़आली</u> जिस तालिब में मुराक़्बे का असर ज़ाहिर हो जाए और उसका नूर मुशाहेदा हो तो उसे तौहीद अफ़आली का अम्र किया जाए। तौहीद अफ़आली ये है के हर फअेल को जो आलम में ज़ाहिर हो खुदा तआला की जानिब से समझे ना ज़ेद और उम्र की तरफ से। ताके ग़ैर हक़ से ना ख़ौफ बाक़ी रहे और ना तवक़्क़अ जैसा के साअदी(रह॰अ॰) ने फरमाया:

दरीं नूअ अज़ शिर्क पोशीदा हस्त

के ज़ेदम बयाज़र्द व उम्रदम नख़स्त

आईंदा हालात का मालूम करना आईंदा हालात के कशफ के लिए चाहिए के तालिब अच्छी तरह गुस्ल करे पाकीज़ा कपड़े पहने, खुशबू लगाए और ख़लवत में मुसल्ले पर बैठे। फिर हक़ तआला से ब सअई तमाम दुआ करे के फलाँ वाक़ेया को मुझ पर ज़ाहिर कर दे।

फिर इस्मे ज़ात *या हलीमू या मुबीनू या ख़बीर* असमाऐ सलासा का इन शरायत के साथ जैसा के यक ज़र्बी तरीक़ या सह ज़र्बी तरीक़ में बयान हुआ है या ज़र्ब ज़िक्र करे यहाँ तक के अपने क़ल्ब में कशायश और नूर को पाए और सात दिन तक उस पर मदावमत करे। इंशाअल्लाह उस पर कश्फे हाल होगा।

कश्फे अरवाह मशायख़ क़ादिरिया ने कहा है के जो तरीक़ कश्फे अरवाह के लिए हमारा मुर्जर्रिब है के शरायत मज़कूरह के साथ दाहिनी तरफ सुब्बुहुन की ज़र्ब लगाए और बायें तरफ क़द्दूसुन की और आसमान में *रब्बुल मलायकत* और दिल में *वर्रूह* की।

हाजत रवाई के लिए हल मुश्किलात के लिए ये तरीक़ा है के रात को शरायत मज़कूरह के साथ तहज्जुद की नमाज़ पढ़े जिस क़द्र मुमकिन हो। फिर दायें तरफ की ज़र्ब लगाए.... और बायें तरफ या वहाब की। इसी तरह हज़ार बार करे।

इनशरह ख़ातिर इनशरहे ख़ातिर का ये तरीक़ा है के हब्से नफ़्स *"अल्लाह"* की ज़र्ब दिल पर लगाए फिर *"लाइलाह"* नाफ से पसे पुश्त ले जाकर दिमाग़ पर छोड़ दे फिर दायें तरफ *"इलाअ"* कहे फिर बायें तरफ क़ल्ब पर *"हू"* की ज़र्ब दे फिर *"अलहई"* की ज़र्ब दायें तरफ और *"अलक़य्यूम"* की ज़र्ब बायें तरफ लगाए।

दफ़अे अमराज़ जब शिफ़ाऐ मरीज़, भूक को दफ़अ करने, कशायशे रिज़्क़, या मग़लूबी दुश्मन मंज़ूर हो तो हस्बे मुराद असमाऐ हसना में से कोई इस्म लेकर बाक़ायदा दो ज़र्ब, सह ज़र्ब, या चहार ज़र्ब का ज़िक्र करे मसलन शिफ़ाऐ मरीज़ के लिए *"या शाफी"* कशायशे रिज़्क़ के लिए *"या रज़्ज़ाक़"* भूक दफ़अ करने के लिए *"या समद"* और मग़लूबी दुश्मन के लिए *"या क़ादिर"* कहे।

इसी तरह असमाऐ हसना को अपने मतलब के मवाफ़िक़ मज़कूरा बाला तरीक़े के मुताबिक़ ज़िक्र करे।

वज़ायफ़े ग़ौसिया

हज़रत शेख़ वजीहा बग़दादी(रह०अ०) का बयान है के एक मर्तबा मैंनें हज़रत सय्यद अब्दुलक़ादिर(रह०अ०) से अवरादो वज़ायफ़ और उनकी तासीर के बारे में दरयाफ़्त किया। तो हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) ने फरमाया के आमाल व वज़ायफ़ की तासीर बरहक़ है मगर वज़ीफा पढ़ने वाले में आला दर्जे का ईमान बिल्लाह, ईमान बिलरिसालत और ईमान बिलक़द्र का होना ज़रूरी है इसके अलावा आमिल को शिर्क से मुबर्रा होना चाहिए। रिज़्क़े हलाल कमाना चाहिए। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से मोहब्बत रखनी चाहिए। इबादत का खास ख़यालं रखना चाहिए। अक्सर बा वज़ू रहना चाहिए। ज़ाहिरी और बातिनी तहारत क़ी पाबंदी भी ज़रूरी है। पाँचों वक़्त की नमाज़ की पाबंदी से भी वज़ायफ़ की तासीर बढ़ जाती है। इसके अलावा तहज्जुद की नमाज़ का अहतमाम भी ज़रूरी है। और अवरादो वज़ायफ पढ़ते वक़्त खुशू व खुज़ू भी क़ायम रखना चाहिए ताके रक़्ते क़ल्ब पैदा हो और अमल बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त में दर्जा क़बूलियत पा जाए। अमल शुरू करने से पहले सदक़ा व खैरात करना भी ज़रूरी है। हराम से इजतनाब करना चाहिए अगर पढ़ने वाले में मिस्कीन नवाज़ी, ईसार, सब्र और सदाक़त की खूबियाँ भी पैदा हो जाएं तो उसके लिए बहुत बहेतर होगा बहरहाल हज़रत ग़ौसे आज़म की बयान कर्दा शरायत पर वज़ीफा पढ़ने से पहले अमल कर लेना बहुत अच्छा है। (मुनाक़िब तय्यब)

हज़रत जअफर बिन सईद बग़दादी का कहना है के रबीअ-उल-अव्वल 541हि० में हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) की ख़िदमत अक़्दस में जब मैं हाज़िर

हुआ तो आपकी ज़िन्दगी का ये दौर वो था के आप खिदमते खल्क में मसरूफ थे। आपकी ज़ात अक्दस को आसमाने अज़मत के सितारों में महर दरख़्शां की हैसियत हासिल थी। कुतबीयते किबरा का मर्तबा आपको हासिल हो चुका था आप भटके हुए लोगों को राहे हिदायत पर ला रहे थे। मैंने अर्ज़ किया के हज़रत आप मुझे ऐसा अमल बता दें जो मेरे लिए दीन व दुनिया में बहेतर हो। आपने फरमाया के अपने आपको सब्र का आदी बना ले। तोहीद से मोहब्बत कर हमेशा पाक व ताहिर रह। नमाज़ तहज्जुद से गाफिल ना हो। इबादत में खुशूअ व खुज़ूअ पैदा कर सदका व खैरात में ताखीर ना कर। कुरआने पाक और सुन्नत पर अमल कर। माले हराम से इजतनाब कर। ज़िक्रे इलाही से मोहब्बत कर। अदबे रसूल(स०अ०स) को अपनी ज़िन्दगी का मक्सद बना ले। सदाकत और रियाज़त से काम ले उसके बाद तेरा हर अमल बड़ा मोअस्सर हो जाएगा।

हज़रत सय्यद अब्दुल कादिर जीलानी(रह०अ०) के चन्द वज़ायफ मनदर्जा ज़ेल हैं:

1–सलाते गोसिया और फरयाद रसी

अबु–अल–मुआली का बयान है के जब मैंने ये वाकेया शेख अबु–अल–हसन अली जनाज़ से बयान किया तो उन्होंने फरमाया के मैंने शेख अबु–अल–कासिम उमर बज़ाज़ की ज़बानी सुना है उन्होंने कहा के मैंने हज़रत सय्यदी शेख अब्दुल कादिर जीलानी(रह०अ०) से सुना आपने फरमाया के जो शख़्स किसी मुसीबत में मुझ से फरयाद रसी चाहता है। वो मुसीबत उससे हटा ली जाती है और जो शख़्स किसी तकलीफ में मुझे मेरे नाम से पुकारता है वो तकालीफ उससे उठा ली जाती है और जो शख़्स अपनी किसी हाजत में अल्लाह तआला के हुज़ूर मेरा तवस्सुल इख़्तियार करता है उसकी वो हाजत पूरी कर दी

जाती है और जो शख़्स दो रकअत नमाज़ पढ़े। हर रकअत में फातिहा के बाद ग्यारह मर्तबा सूरह इख़्लास पढ़े फिर रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम पर दुरूद व सलाम भेजे और आपका ज़िक्र करे। उसके बाद ईराक़ की जानिब ग्यारह क़दम चले और मेरा नाम लेकर अपनी हाजत तलब करे तो अल्लाह के फज़्लो करम से उसकी वो हाजत पूरी कर दी जाएगी।

2- <u>इसतख़ारा ग़ोसिया</u> हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) ने इसतख़ारे के तीन तरीक़े बयान फरमाए हैं :

पहला तरीक़ा ये है के इशा की नमाज़ के बाद दो रकअत नमाज़ बनीयत इसतख़ारा इस तरह पढ़ें के हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद ग्यारह मर्तबा सूरह इख़्लास पढ़ें फिर रसूले करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम पर ग्यारह बार ये दुरूद शरीफ पढ़ें:

"अस्सलाम अलेका अय्यूहन्नबीय्यू व रहमातुल्लाही वबराकातुहू अस्सलामू अलेका या रसूलअल्लाह। अस्सलामू अलेका या ख़ेरा ख़ल्किल्लाह। अस्सलामू अलेका या शफीअऊलमुज़नबीन। अस्सलाम अलेका वअला आलिका व असहाबिका अजमईना अल्लाहुम्मा सल्ली अला मोहम्मदिन कमा तुहिब्बू व तरज़ाह।"

उसके बाद ये कलमात एक एक सौ बार पढ़ें:

या अलीमू अल्लिमनी :: या बशीरू बश्शिर्नी

या ख़बीरू अख़्बिरनी :: या मुबीनू बय्यिनली

उसके बाद सो जाएँ इंशाअल्लाह ख़्वाब में जवाब मिल जाएगा।

दूसरा तरीक़ा ये है के बाद नमाज़ इशा बिस्तर पर लेट कर एक हज़ार मर्तबा *या हादी या रशीदू या ख़बीरू* का विर्द करे और फिर किसी से कोई बात किए बग़ैर सो जाए इंशाअल्लाह ख़्वाब में जवाब मिल जाएगा। अगर

ना मिले तो दूसरी रात फिर ये अमल करे दूसरी रात भी जवाब ना मिले तो तीसरी शब फिर ये अमल करे। इंशाअल्लाह ज़रूर जवाब मिलेगा।

तीसरा तरीक़ा ये है के इशा की नमाज़ के बाद दो रकअत नमाज़ इस तरह पढ़े के हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद तीन तीन बार सूरह इख़्लास पढ़े उसके बाद सर शुमाल की तरफ और मुंह किबले की तरफ करके *अज़्ज़ाहिर-उल-बासित* पढ़ता हुआ सो जाए इंशाअल्लाह ख़्वाब में जवाब मिल जाएगा।

अमल बराए ज़ियारते रसूल अल्लाह अगर किसी को नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ियारत का शौक़ हो तो वो दो शंबा की रात को पाक साफ होकर नया लिबास पहने। खूशबू लगाए और नमाज़ इशा के बाद पूरी यक़सूई से मदीना मुनव्वरा की तरफ तवज्जह करे और सिद्क़े दिल से बारगाहे इलाही में इलतजा करे के उसे सरवरे कोनेन सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के जमाल अक़्दस की ज़ियारत नसीब करे उसके साथ ही निहायत सोज़ व दर्दमंदी के साथ ये दुरूद शरीफ पढ़े:

"अस्सलातूवस्सलामू अलेका या रसूलअल्लाह अस्सलातूवस्सलामू अलेका या हबीबअल्लाह अल्लाहुम्मा सल्ली अला मोहम्मादिन कमा तुहिब्बू व तरज़हू।"

उसके बाद सो जाए इंशाअल्लाह ख़्वाब में हुज़ूर रसूले मक़्बूल(स॰अ॰स॰) की ज़ियारत नसीब होगी।

मुराक़्बा तौहीद या अमल इसतक़ामत नमाज़ तहज्जुद के बाद दो रकअत नमाज़ नफिल पढ़े। हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद ग्यारह बार *कुल हुवल्लह* पढ़े। सलाम फेरने के बाद उन कलमात का सौ बार विर्द करे:

ला मअबूदा इल्लल्लाहू :: ला मक़्सूदा इल्लल्लाहू

ला मौजूदा इल्लल्लाह
इस अमल से क़ल्ब नूर मअरफत से लबरेज़ हो जाता है
और सिवाऐ अल्लाह के दिल में किसी का ख़ौफ नहीं रहता।

परेशानियों से निजात आपका इर्शादे पाक है के
कोई शख़्स परेशानियों में घिर जाए तो वो पाक साफ
हेकर अव्वल सूरेह फातिहा सात बार, फिर सूरेह अलम
नशरह सात बार, फिर सूरेह इख़्लास सात बार, फिर दुरूद
शरीफ ग्यारह बार और सज्दे में जाकर ये दुआ पढ़े :

"या क़ाज़ीयलहाजात व या काफीयलमुहिम्मात
व या दाफीअयलबलिय्यात व या हल्ललमुश्किलात
व या राफिउद्दराजात व या शाफीयलअमराज़ व या
मुजीबूहअवात व या अरहमर्राहिमीन। या आलीमा मा
फीस्सिुदूरी अख़रिजनी मिनज़्ज़ुलुमाती इलन्नोर।"

उसके बाद सरवरे कोनेन जनाब अहमद मुजतबा
सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के तवस्सुल से बारगाहे
खुदावंदी में परेशानियों से निजात के लिए इल्तिजा करे
इंशाअल्लाह उसकी आरज़ू पूरी होगी।

अमले फातिहा खेरो बर्कत, आसूदा हाली, कशायशे
रिज़्क़ और हुसूले रोज़गार के लिए ये अमल अजीबो ग़रीब
असरात का हामिल है।

इसका तरीक़ा ये है के सुबह की सुन्नतों के बाद
फर्ज़ों से पहले सूरेह फातिहा वस्ले मीम के साथ यानी
बिस्मिल्लाही र्रहमानिर्रहीम अलहम्मदुल्लाही..... ग्यारह
मर्तबा पढ़ लिया करें। नमाज़ के बाद खुशूअ व खुज़ूअ
से हुसूले मक़सद के लिए दुआ माँगें। इंशाअल्लाह बिगड़े
काम संवर जाऐंगे।

अमले आसूदा हाली नमाज़ फज्र की सुन्नतों और
फर्ज़ों के दरमियान ये कलमात रोज़ाना सौ बार पढ़ें:

"सुबहानल्लाही वबीहम्दीही सुबहानल्लाहील

अलीय्यिल अज़ीम वबीहम्दीही असतग़फिरउल्लाह"

इंशाअल्लाह ज़िन्दगी में आसूदा हाली और राहत नसीब होगी।

अमले कशायशे रिज़्क़ फज्र की सुन्नतें अदा करने के बाद और फर्ज़ अदा करने से पहले इस दुआ का रोज़ाना सौ बार विर्द करे:

"अल्लाहुम्मा आतीनी रिज़्क़न कसीरन या मुजीबत्दअवती व या अरहमर्राहीमीन"

इंशा अल्लाह, अल्लाह तआला कसीर रिज़्क़ अता फरमाएगा।

अमले गोसिया ये अमल कशायशे रिज़्क़, दफअे बला, इज़ालाऐ सिहर, अदायगीऐ क़र्ज़, तरक़्क़ी इल्म, हुसूले ज़हेदो तवक्कुल, मसायब आसमानी व अर्ज़ी और दुश्मनों के शर से मेहफूज़ रहने के लिए निहायत अजीब-उल-असर है इसका तरीक़ा ये है के नमाज़ मग़रिब के बाद दो रकअत नफिल इस तरह अदा करे के हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद ग्यारह ग्यारह बार सूरेह इख़्लास पढ़े। सलाम फेरने के बाद ग्यारह बार दुरूद शरीफ पढ़े। फिर बारगाहे इलाही में सज्दा रेज़ होकर निहायत खुशूअ व खुज़ूअ के साथ ये दुआ पढ़े :

"अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी वअनाअब्दूका या रब्बी अतलुबू व रहमतिका व अलतमीसू रिज़्वानका अल्लाहुम्मा नज्जीनी मिन अज़ाबिका व अफ़्तहली अबवाबा रहमतिका या अरहमर्राहीमीन"

फिर जनाब सरवरे कायनात सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के तवस्सुल से अपनी आरज़ू बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त में पेश करे। बहुत जल्द असर ज़ाहिर होगा।

सलात असबाअ-अल-अय्याम या अमल बुलंदीऐ दर्जात बुलंद दर्जात और अल्लाह तआला की ताईद व नुसरत के लिए सलात असबाअ-अल-अय्याम का

पढ़ना इन्तिहाई मुफीद है।

इसका तरीक़ा ये है के ज़वाल के बाद वज़ू करें और दो रकअत तहिय्यत-उल-वज़ू पढ़ें और दो रकअत नमाज़ नफिल इस तरह अदा करें के हर रकअत में सूरेह फातिहा और सूरेह इख़्लास एक एक बार पढ़ कर सौ बार *या क़हहार* और सौ बार *या राफिऊ* का विर्द करें। सलाम फेरने के बाद खुशूअ व खुज़ूअ के साथ अल्लाह तआला से उसकी हिमायत और नुसरत के लिए दुआ माँगें।

अमल बराऐ ज़ियारत ग़ौसुलआज़म(रह॰अ॰)

अगर किसी शख़्स को जनाब ग़ौसुलआज़म हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह॰अ॰) की ज़ियारत का इश्तियाक़ हो तो वो आधी रात के वक़्त उठ कर गुस्ल करे और बरहना सर खड़े होकर दो रकअत नमाज़ नफिल बनीयत कशफअरूह इस तरह पढ़े के पहली रकअत में सूरेह फातिहा के बाद तीन बार सूरेह काफिरून और दूसरी रकअत में सूरेह फातिहा के बाद तीन बार सूरेह इख़्लास पढ़े। सलाम फेरने के बाद जाए नमाज़ पर खड़ा हो जाए और अपने दिल में सय्यदना ग़ौसुलआज़म(रह॰अ॰) का तसव्वुर करके दो सौ मर्तबा ये कलमात पढ़े:

"या मीरां सय्यद महीउद्दीन अहज़रू अल्लाहुम्मा सल्ली अला मोहम्मदिन वअला नूरी मोहम्मदिन फी-अल-अरवाही"

फिर किसी से बात किए बग़ैर सो जाए। इंशा अल्लाह ख़्वाब में सय्यदना ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) की ज़ियारत नसीब होगी। अगर पहले दिन गोहर मक़्सूद हासिल ना हो तो तीन दिन तक ये अमल करे इंशा अल्लाह मुराद बरआएगी।

चहल काफ

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) के तीन अर्बी अशआर हैं जिन्हें चहल काफ कहा जाता है क्योंके इन अशआर में आपने लफ़्ज़ काफ को चालीस मर्तबा इस्तेमाल किया है। आपने ये अर्बी अशआर मुनाजात के तौर पर अपने दिल को मुख़ातिब करके कहे हैं। इन फसीह व बलीग़ अशआर में नूर मअरफ़त झलकता है और ये आपके शायराना कमालात का मज़हरातिम हैं। ये अशआर निहायत आला व अरफअ अर्बी ज़बान में हैं और अवामउन्नास को उनको समझने हत्ता के पढ़ने में भी सख़्त दिक़्क़त महसूस होती है। इन्हें समझने के लिए ये अशआर मअ तर्जुमा पेशे ख़िदमत हैं:

(1) *कफाका रब्बुका कम यकफीका वाकीफतन*
किफकाफुहा ककामीना काना मिन लकाकी

(ऐ अब्दुल क़ादिर: तेरे रब ने बहुत सी इत्तिफाक़िया मुसीबतों में तेरी किफ़ायत की और अब भी वो ऐसी मुसीबतों में तेरी क़िफायत करता है और उनकी मिसाल यूं है जैसे के कोई लश्करे जरार से बच निकले।)

यानी इस शअर में ये बताया गया है के ऐ मेरे दिल अल्लाह तआला ने तुझे बहुत से ख़तरों और वसवसों से मेहफ़ज़ फरमाया है और आईंदा भी तेरी हिफाज़त कर रहा है और करता रहेगा। इन ख़तरात और वसवसों के दूर हो जाने या उनके रूक जाने से तो ग़ाफिल और मुतमईन मत हो। ये तो ऐसा है जैसे के एक भारी लश्कर छुपकर घात लगाए हुए हो के कब तुझे ग़ाफिल पाकर दौबारा हमला आवर हो।

(2) *तकिर्रू कर्रन ककर्रिलकर्री फी कबादिन*
तहकी मु शक शकातन कलुक लुकिन लकाकी

(ये मसायब बार बार आ जाते हैं। वो एक मज़बूत

रस्सी की लड़ियों की तरह एक दूसरे के साथ यकजा हैं। फिर ये मसायव एक ऐसे नेज़ह बर्दार लश्कर के मुशाबेह हैं जो एक मोटे और सख़्त गोश्त वाले ऊंट का मानिंद हो)

यानी राहे मअरफ़त के ख़तरात बहुत से हैं फिर वो एक दूसरे के साथ पेवस्ता हैं यानी एक ख़त्म होता है तो दूसरा सामने आ जाता है और उनकी मज़बूती एक मोटे तनदुरूस्त ऊंट की मानिंद है। मक़्सद ये है के राहे हक़ के ख़तरे बहुत क़वी हैं उन्हें अल्लाह की मदद और करम से दूर किया जा सकता है।

(3) *कफाका मावी कफाकल काफी कुरबताहू*
या कोकबन काना यहकी कोकबल फलाकी

(ऐ मेरे दिल! अल्लाह तआला ने मेरे इल्म के मुताबिक़ तमाम मुसीबतों से मुझे छुटकारा दिया जिनका मुझ से वास्ता पड़ा। ऐ सितारे सिबात बक़ा और रोशनी में आसमानी सितारे की मानिंद है)

यानी ऐ मेरे दिल! जिसे मैं आसमानी सितारे की मानिंद समझता हूँ, खुदा तआला ने तुझे उन तमाम मसायब से जो मुझ पर नाज़िल हुईं, मेहफ़ूज़ रखा (या आईदा परेशानियों से और मुसीबतों से निजात दे और उनसे तेरी हिफाज़त करे।)

और बामवक्किल चहेल काफ इस सूरत से है :

बिस्मिल्लाहीर्रहमानिर्रहीम

कफाका रब्बुका या जनताईलू कम यकफीका वाकीफतन या दुलायलू किफ़्काफुहा ककामीना या जिब्राईला काना मिन कलाका या कनकाईलू तुकिरूं कर्रन ककिर्रल कर्री या नअमाईलू फी कबादिन तहकी मु शक शकातिन या कलकाईलू क लकलुकी कलाका या हमराईलू कफाका माय्यी कफाकलकाफू कुरबतुहू या इज़राईलू या कोकबा काना तहकी या दरदाईलू या कोकबल फुल्की या मीकाईलू

ज़कात का पहला तरीक़ा चहल काफ की ज़कात का तरीक़ा ये है के अव्वल तीन रोज़ रोज़ह रखे। बुध, जुमअेरात, जुमआ और तर्क हैवानात जमाली करे और शाम को दूध चावल से रोज़ा इफ़्तार करे और रोज़ाना एक फक़ीर को दूध चावल पेट भर कर खिलाए और रोज़ाना एसाले सवाब हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की रूहे अक़्दस को करे। और तीसरे रोज़ यानी जुमअे को सुबह की नमाज़ के बाद ब किनाराऐ दरिया जाकर अव्वल व आख़िर ग्यारह ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ पढ़े और चहेल काफ को ग्यारह सौ मर्तबा पढ़े। बअदहे सुबह व शाम ग्यारह ग्यारह मर्तबा का विर्द रखे। ज़कात अदा हो गई और अमल हो गया अगर किसी को आसेब जिन्न, देव, ख़बीस ईज़ा देता हों तो सात मर्तबा सरसो के तेल पर पढ़ कर दम करे और आसेब ज़दा के दोनों कानों में डाल कर शहादत की उंगलियों से कान के सोराख़ बन्द करे ताके तेल बाहर ना निकले और कुछ तेल बदन पर भी मले। इंशाअल्लाह आसेब के जलने की बू आएगी और बिलकुल जल जाएगा और फरयाद भी करेगा। ये तरीक़ा आसेब व जिन्नात के बारे में सरीअउन्नफा है।

चहल काफ की ज़कात का दूसरा तरीक़ा

चहल काफ की ज़कात का दूसरा तरीक़ा ये है के ऊरूजे माह में बरोज़ पंजशंबा बाद नमाज़ फज्र ग़ुस्ल करे और रोज़ह रखे और कपड़ा बग़ैर सिला हुआ पहने। दो रकअत नमाज़ नफिल पढ़े। अव्वल व आख़िर ग्यारह ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ पढ़े और ऐसाले सवाब ख़त्म ख़्वाजागान क़ादिरिया या चिश्तिया पढ़े और एक हज़ार एक मर्तबा चहल काफ पढ़े और सवा सेर गंदम के आटे की मीठी रोटी बनाए और चार फक़ीरों को खिलाए और शाम को खुद रोज़ह इफ़्तार करे और पंजशंबा से दो शंबा तक

पढ़े। हर रोज़ बाद इफ़्तार के एक सौ सात मर्तबा पढ़े। ये ज़कात पाँच रोज़ की है। सुबह को एक हज़ार एक मर्तबा और शाम को एक सौ सात मर्तबा रोज़ पढ़े ज़कात अदा होगी और अमल मुकम्मल होगा। ये अमल इज़ाफा रिज़्क़ के लिए लाजवाब है।

चहल काफ की ज़कात का तीसरा तरीका

अव्वल बुध, जुमअेरात और जुमआ का रोज़ह रखे और ग्यारह ग्यारह मर्तबा एक जलसे में पढ़े। अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ ग्यारह ग्यारह मर्तबा पढ़े और हर्ज़ शरीफ एक एक मर्तबा पढ़े। यानी पहले ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ पढ़े फिर एक मर्तबा हर्ज़ शरीफ पढ़े। फिर ग्यारह मर्तबा चहल काफ पढ़े फिर एक मर्तबा हर्ज़ शरीफ फिर ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ, इसी तरह तीन रोज़ पढ़े और ख़त्म ख़्वाजगान रोज़ पढ़ता रहे। और रोज़ ही दूध की खीर बनाए और एक फक़ीर को खिलाए और आधी से खुद रोज़ा इफ़्तार करे और तलूअ आफ़्ताब के बाद दरया के किनारे पर पढ़े, ज़कात अदा होगी अमल मुकम्मल होगा। हर्ज़ शरीफ ये है:

अज़म्तू अलेकुम या हुज़्राईल बिहक़्क़िल काफ़ी अजिब दअवती व सख़्ख़िर ली फी क़ज़ाई हाज्जती व हुसूली व मुरादी बिला मुक्तिन व मोहलतिन अलफा क़ूलूबुना बेना क़ूलूबिल आफियत।

फवायद चहल काफ़

चहल काफ के फवायद मनदर्जा ज़ेल हैं:

(1) बराए आसेबज़दा सरसो के तेल पर चालीस मर्तबा पढ़ कर मालिश करा दें तो आसेब दफअे होगा।

(2) अगर किसी के दर्द सर कहनह हो जाए और किसी इलाज से ना जाता हो तो माहे सफर-उल-मुज़फ़्फ़र के आख़री चहार शंबा को चहल काफ लिख कर बाँधें। दर्द

सर इंशा अल्लाह फ़ौरन दूर होगा।

(3) अगर किसी को दर्दे चश्म हो तो गुलाब के फूल पर सात बार पढ़ कर दम करके आँखों पर मले इंशाअल्लाह आराम होगा।

(4) अगर किसी के पेट में शदीद दर्द हो तो सात मर्तबा पढ़ कर नमक पर दम कर के दर्द शिकम वाले को खिलाए इंशाअल्लाह दर्द फ़ौरन दूर हो जाएगा।

(5) अगर चहल काफ को लिख कर दांतों में दबाए और एक सौ एक मर्तबा पढ़े और मुश्तबा आदमियों को सामने रखे, जो चोर होगा इंशाअल्लाह रोने लगेगा और इक़रारी होगा।

(6) अगर किसी के जोड़ों में दर्द हो तो चहल काफ को हिरन की झिल्ली पर लिख कर बाज़ू पर बाँधे इंशाअल्लाह दफ़अे होगा।

(7) अगर किसी शख़्स को बवासीर खूनी या बादी हो तो चहल काफ बिल्ली की खाल पर लिख कर गले में बाँधे और सात अदद सफ़ेद कागज़ पर लिखकर अललसुबह पिलाए इंशाअल्लाह बवासीर खूनी या बादी दूर होगी।

(8) अगर किसी शख़्स को कोई दुश्मन ईज़ा पहुँचाता हो और बाज़ ना आता हो तो शबे दो शंबा चालीस बार पढ़ कर दुश्मन के घर की तरफ दम करे। इंशाअल्लाह दुश्मन ईज़ा रसानी से बाज़ आएगा।

(9) अगर किसी शख़्स का कोई दुश्मन हो और उसको दुश्मनी से रोकना मक़सूद हो तो दरमियान अस्र व मग़रिब के बरोज़ सह शंबा सत्तर मर्तबा पढ़े क़ब्रिस्तान में बैठ कर और पुरानी क़ब्र की मिट्टी पर दम करके दुश्मन के मकान पर डाले, अन्नवाअ व इक़्साम की मुसीबतों में मुबतला हो जाएगा। और दुश्मनी तर्क कर देगा।

(10) अगर कोई शख़्स किसी की ज़बान बदगो बन्द करना चाहे तो चहल काफ को सत्तर मर्तबा नमक पर पढ़ कर दुश्मन के घर में डाले। इंशा अल्लाह ज़बान बदगोई से बंद होगी।

(11) अगर कोई शख़्स क़ैदी को आज़ाद कराना चाहे तो रोटी पर चहल काफ लिख कर एक हफ्ता खिलाए तो क़ैदी इंशाअल्लाह आज़ाद होगा।

(12) अगर कोई शख़्स अपने मतलूब को अपनी तरफ मायल करना चाहे तो मुश्क ज़अफरान से लिखकर मतलूब के रास्ते में दफ़्न करे। इंशाअल्लाह मतलूब बेचैन व बेक़रार होकर हाज़िर होगा।

(13) अगर किसी उम्मीदवारे औलाद औरत को छुहारहे पर दम करके अय्याम से पाक होने के बाद खिलाए। तीन माह तक इक्कीस छुहारहे हर मर्तबा और हर छुहारहे पर सात मर्तबा पढ़ कर दम करके खिलाए इंशाअल्लाह बा औलाद होगी।

(14) अगर किसी को मिर्गी के दौरे पड़ते हों तो पीपल के पत्ते पर लिख कर मिसरूअ के बदन पर मलें तो इंशाअल्लाह फौरन आराम व सकून होगा।

(15) अगर कोई औरत बदकारा हो तो गुलाब के फूल पर सात मर्तबा पढ़ कर दम करे और सुघाए। चन्द बार के अमल से इंशाअल्लाह बदकारी से बाज़ आजाए।

हज़रत ग़ौसे आज़म(रह॰अ॰) का ख़ुत्बा वअज़

आपके साहज़ादे शेख़ अब्दुलवहाब का बयान है के हमारे वालिद जब वअज़ के लिए खड़े होते तो पहले *अलहम्दू लिल्लाही रब्बिल आलमीन* पढ़ते फिर ख़ामोश हो जाते *अलहम्दू लिल्लाही रब्बिल आलमीन* फरमाते और ख़ामोश हो जाते फिर *अलहम्दू लिल्लाही रब्बिल आलमीन* फरमाते और ख़ामोश हो जाते उसके बाद आप असल मोज़ूअ वअज़ से पहले ये ख़ुत्बा पढ़ते:

"सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं, उसकी तमाम मख़्लूक़ात, उसके अर्श, उसके कलमात, उसके मुनतहाऐ इल्म सबके बराबर और जिस क़द्र के वो अपने लिए पसंद करे। वो ज़ाहिर व बातिन हर चीज़ का जानने वाला है। निहायत मेहरबान और रहम करने वाला है हर शै का मालिक और पाक और बे ऐब है सबसे ज्यादा हिकमत वाला है। मैं गवाही देता हूं के उसके सिवा कोई मअबूद नहीं वो वाहिद हे उसी का मुल्क है और उसी के लायक़ सब तअरीफें हैं। वो सबको ज़िन्दगी अता करता है और वही सबको मौत देता है। और वो हमेशा के लिए ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं। हर तरह की भलाई उसी के इख़्तियार में है और हर बात पर उसे क़ुद्रत है ना उसका कोई हमसर है और उसका कोई शरीक ना उसका कोई मुआविन व मददगार। एक तनहा ज़ात वाहिद और पाक व बे नियाज़ है। ना वो किसी से और ना कोई उससे पैदा हुआ। कोई उसकी हमसरी नहीं सकता। ना वो जिस्म है के घट बढ़ जाए और ना वो जोहर है के हिस में आ सके। और ना वो अर्ज़ है के नुक़्सान क़बूल कर सके। वो इस बात से भी पाक व बरतर है के उसकी तख़लीक़ की हुई चीज़ों से उसे तशबीह या निसबत दी जाए बल्के उस

जैसी कोई भी शै नहीं है, वो सबकी सुनता और सब कुछ देखता है और मैं गवाही देता हूँ के मोहम्मद सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम उसके बन्दे, उसके रसूल, उसके हबीब, उसके ख़लील और उसकी कुल मख़्लूक़ात से अफ़ज़ल हैं। उसने आपको हिदायते कामिल और दीने हक़ देकर भेजा ताके तमाम अदयान पर उसको ग़ालिब कर दे अगरचै मुशरिक़ीन को ये नापसंद हो।

ऐ अल्लाह! राज़ी हो ख़लीफाऐ अव्वल हज़रत अबु बकर सिद्दिक़ (र॰अ॰) से जो दीन के बुलंद सतून हैं जिनकी ताईद हक़ के साथ की गई। जिनकी उर्फियत अतीक़ है जो शफीक़ ख़लीफा हैं जो पाकीज़ा नस्ल से पैदा हुए जिनका नाम हुज़ूरे अक्रम (स॰अ॰स॰) के नाम से पेवस्ता है और जो हुज़ूर अलेहिस्सलाम के साथ अब्दी आराम फरमा रहे हैं।

ऐ अल्लाह! राज़ी हो ख़लीफा दोम अबु हफ़्स उमर बिन अलख़त्ताब (र॰अ॰) से जो मुख़्तसर तमन्ना रखने वाले और कसीर अमल करने वाले हैं। जिनको ना तो कभी लग़ज़िश आर्ज़ी हो सकती है और ना कभी तंगदिली लाहक़ होती है जिनको हक़ व बातिल के दरमियान फैसला करने के लिए मुनतख़िब किया गया। जिन्होंने सीधा रास्ता इख़्तियार किया और जिनकी राय के मुताबिक़ क़ुरआनी अेहकाम नाज़िल हुए।

ऐ अल्लाह! राज़ी हो ख़लीफा सोम ज़ी अलनूरीन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (र॰अ॰) से जो अशरा बअशरा के फर्द हैं। जिन्होंने ग़ज़वाऐ तबूक में कसीर फौजी सामान मोहय्या किया, जिनका ईमान बहुत मुसतेहकम था। जिन्होंने क़ुरआन की तरतीब व इशाअत फरमाई। जिन्होंने बड़े बड़े सरकश शहसवारों को ख़त्म कर दिया। जिन्होंने अपनी इमामत व क़िरआत से मेहराब व मिंबर को मुज़ईय्यन किया

और जो अफ़ज़ल-उल-शोहदा और इक्राम-उल-सअदा हैं जिनसे फरिश्ते भी हया करते थे।

ऐ अल्लाह! राज़ी हो ख़लीफा चहारम हज़रत अली बिन अबु तालिब(र॰अ॰) से जो शुजाअ, सालेह सरदार, हज़रत फातिमा(र॰अ॰) के शोहर, हुज़ूर अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के चचा ज़ाद भाई थे। जो के अल्लाह की तलवार थे जो दुर्रे ख़बर को उखाड़ने वाले थे जो दुश्मन के लश्करों को तबाह करने वाले थे जो के दीन के इमाम और आलिम, शरअ के क़ाज़ी और हाकिम और नमाज़ का पूरा हक़ अदा करने वाले, जो रसूल अक्रम(स॰अ॰स॰) पर अपना दिल व जाँ निसार करते थे।

ऐ अल्लाह! राज़ी हो हज़रत अली(र॰अ॰) की औलाद यानी सरवरे कोनेन(स॰अ॰स॰) के नवासे सबतीन-उल-शहीदेन इमाम हसन व हुसेन रज़ी अल्लाहो अन्हुमा से और आपके उम्मे मोहत्रम हम्ज़ा(र॰अ॰) और हज़रत अब्बास(र॰अ॰) और कुल मुहाजीन व अनसार से और उनसे भी जो जा हशरान का इत्तिबाअ करते रहें। इलाही इमाम और उम्मत, हाकिम और दूसरे महकूम दोनों की इसलाह कर, उन्हें नेकी की तौफीक़ दे। और एक दूसरे के शर से मेहफूज़ रख। ऐ अल्लाह तू हमारे गुनाहों को जानता है उन्हें माफ कर। तू हमारे ऐबों से आगाह है उन्हें छुपा। जिन बातों से तूने हमको मनअ किया है उनको करने का हमें मौक़ा ना दे। हमें तौफीक़ दे के हम तेरे अेहकाम की पाबंदी करें। हम को अपने ज़िक्र करने का तरीक़ा सिखा। और सब्र व शुक्र की तौफीक़ दे और इताअत व इबादत करने में हमें ख़लूस व यक़ीन नसीब कर, ऐ अल्लाह! अपना फज़्लो करम हमारे शामिले हाल रख। तू ही हमारा

मालिक और हक़ीक़ी मददगार है। तू ही काफिरों पर भी हमारी मदद फरमा।" (क़लायद-उल-जवाहर)

ख़ुत्बे के बाद आप वअज़ का असल मज़मून शुरू कर देते जो कई कई घंटों तक जारी रहता। बहेर सूरत हर वअज़ से पहले आप दुआ या ख़ुत्बा ज़रूर पढ़ते और वअज़ का ख़ात्मा भी बिलअमूम दुआईया जुमलों से करते।

खुत्बात हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०)

हज़ैरत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) के मवअज़ और खुत्बात का सिलसिला 521हि० में शुरू हुआ और 561हि० तक जारी रहा। इस अर्से के दौरान आपने बेशुमार तक़ारीर कीं। आपके वअज़ बड़े पुर असर होते थे इसलिए इन खुत्बात ने लोगों के दिलों की दुनिया बदल डाली। आपकी रूहानी तवज्जह और शीरीं ज़बान की तासीर ने बेशुमार इंसानों को राहे हक़ की तरफ गामज़न कर दिया। कई लोगों को ईमानी इसतहेकाम मिला। आपके वअज़ों से कुफ्र व शिर्क मांद पड़ गया बिदआत और ग़लत दीनी रसूम की इसलाह हुई और दीने हक़ में नोबहार आ गई। आपकी नूरानी महाफिल के वअज़ आज भी दिल में तलाशे हक़ की सच्ची तड़प पैदा करते हैं। ग़ाफिल लोगों को ग़फ़लत से बेदार करते हैं। भटके हुए लोगों को सिराते मुसतक़ीम मिलता है।

हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०) के खुत्बात और मवअज़ बिलाशुबह मुसलमानों के लिए मशअले राह हैं। ज़ाहिरी और बातिनी हालात को संवारने के लिए एक बैश-बहा खज़ाना हैं। उनके ज़रिये तालिबाने हक़ और सालकाने तरीक़त की राहनुमाई होती है। आपके ये खुत्बात "अलफतह रब्बानी" के नाम से इल्मी दुनिया में आज तक मेहफूज़ हैं। इस किताब में आपके रफीअ उश्शान खुत्बात व मवअज़ के महेज़ चन्द नमूने और इक़्तिबासात पेश किए जाते हैं। चूंके आपकी अस्ल तक़रीर अर्बी में होती थी इसलिए तर्जुमा और तलख़ीस के पढ़ने से अस्ल का लुत्फ और नफअ तो हासिल नहीं हो सकता क्योंके बअज़ अवक़ात नफ़्से मज़मून से ज़्यादा अंदाज़े बयान मोस्सर होता है। बहेर हाल इन इक़्तिबासात से आपके मवअज़ की शान और तासीर का अंदाज़ा हो सकता है।

1- वअज़ मोरिंख़ा 3 शव्वाल 545हि॰

नज़ूले तक़्दीर के वक़्त हक़ तआला शानह पर एत्राज़ करना मौत है दीन की, मौत है तोहीद की, मौत है तवक्कुल व इख़्लास की, ईमान व अलक़ल्ब लफ़्ज़ "क्यों" और "किस तरह" को नहीं जानता। वो नहीं जानता के "बल्के" क्या है। उसका क़ोल तो "हाँ" है (के हुक्म तक़्दीरी की मुवाफ़्क़त करता है और चूं व चरा के साथ राय ज़नी नहीं करता) नफ़्स की आदत ही है के मुख़ालफ़त व तज़ाअ करे। पस जो शख़्स उसकी दुरूस्ती चाहे वो उसको इतना मुजाहेदह में डाले के उसके शर से बे ख़त्र बन जाए। नफ़्स तो शर ही शर है मगर जब मुजाहेदे में पड़ता औ मुतमईन्ना बन जाता है तो ख़ैर ही ख़ैर हो जाता है औ तमाम ताक़तों को बजा लाने और मअसीयतों के छोड़ देने में मुवाफ़्क़त करने लगता है पस उस वक़्त इर्शाद होता है के "ऐ इतमिनान वाले नफ़्स! लौट अपने रब की तरफ के तू उससे खुश और वो तुझ से खुश।" अब उसका जोश भी फसीह और उसका शर भी उससे ज़ायल हो जाता है और मख़्लूक़ात में से किसी शै के साथ भी वो लगाओ नहीं रखता। और उसका नसब अपने बाप इब्राहीम (अ॰स॰) के साथ सही बन जाता है क्योंके हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम अपने नफ़्स से बाहर निकल गए और बिला ख़्वाहिश नफ़्स बाक़ी रह गए। और आपका क़ल्ब साहिबे सकून था (नारे नमरूदी में गिरने के वक़्त) आपके पास तरह तरह की मख़्लूक़ात आई और उन्होंने आपकी मदद करने के लिए अपने अपने नफ़्सों को पेश किया। और आप फरमा रहे थे के मुझे तुम्हारी मदद दरकार नहीं। वो मेरे हाल से वाक़िफ़ है और इसलिए मुझे सवाल की भी हाजत नहीं।" जब शाने तसलीम व तवक्कुल सही हुई तो आग से कह दिया गया के हो जा ठंडी और सलामती

वाली इब्राहीम पर। जो शख़्स हक़ तआला के साथ उसकी क़द्र पर राज़ी बन कर सब्र इख़्तियार करता है उसके लिए दुनिया में खुदा की बेशुमार मदद है।

आख़िरत में बेशुमार नअेमत। अल्लाह तआला फरमाता है के सब्र करने वालों को उनका पूरा अज्र बेशुबार दिया जाएगा। अल्लाह पाक से कोई चीज़ पौशीदा नहीं है उसकी नज़र के सामने से जो कुछ भी बर्दाश्त करने वाले उसकी वजह से बर्दाश्त करते हैं। उसके साथ एक साअत के लिए सब्र करो तो बरसहा बरस उसके लुत्फ़ो इनआम को देखते रहोगे। एक साअत का सब्र ही तो शुजाअत है बेशक अल्लाह सब्र करने वालों का साथी है। मदद करने और कामयाब बनाने में उसके साथ बाइसतक़बाल रहो और उसके लिए बेदार हो जाओ और उससे ग़ाफिल मत होओ अपने बेदार होने को मौत के बाद के लिए ना छोड़ो के उस वक़्त बेदार होना तुम को मुफीद ना होगा। उसके लिए बेदार बनो, उससे मिलने से क़ब्ल बेदार बनो। अपने इख़्तियारी बेदार होने से क़ब्ल वरना पशेमान होओगे। ऐसे वक़्त के पशेमानी तुम को मुफीद ना होगी और अपने क़लूब की इसलाह कर लो। क्योंके क़लूब ही ऐसी चीज़ हैं के जब वो संवर जाते हैं, तो सारे हालात संवर जाते हैं। और इसी लिए जनाब रसूल सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फरमाया है के इब्ने आदम में एक गोश्त का टुकड़ा है के जब वो संवर जाता है तो उसकी वजह से सारा बदन संवर जाता है और जब वही बिगड़ जाता है तो सारा बदन बिगड़ जाता है और वो क़ल्ब है। क़ल्ब का संवरना, परहेज़गारी, हक़ तआला पर तवक्कुल उसकी तोहीद और आमाल में इख़्लास पैदा करने से है और उसका बिगड़ना उन ख़सलतों के मअदूम होने से क़ल्ब गोया परिन्दा है। बदन के पिंजरे में गोया मोती है। डब्बे में गोया माल है

संदूक़ में पस ऐतबार परिन्दे का है पिंजरे का नहीं है। ऐतबार मोती है डब्बे का नहीं है और माल का है संदूक़ का नहीं है। ऐ मेरे अल्लाह! मेरे आज़ा का अपनी ताअत में और क़ल्ब को अपनी मअरफ़त में मशग़ूल फरमा। और मुद्दत-उल-उम्र सारी रात और सारे दिन इसी में मशग़ूल रख और हम को शामिल फरमा नेकू कार असलाफ के साथ और हमको नसीब फरमा जो उनको नसीब फरमाया था और हमारा हो जा, जैसा के उनका हो गया था।

वअज़ मोर्रिख़ा 2 ज़ीक़अद 545हि॰

साहबज़ादा! हक़ तआला के लिए तेरी इरादत सही नहीं हुई और ना तू उसका तालिब है क्योंके जो शख़्स दअवा करे हक़ तआला को मतलूब समझने का और तलब करे ग़ैर को तो उसका दअवा बातिल है। तालिबाने दुनिया की कसरत है और तालिबाने आख़िरत की क़िल्लत है और तालिबाने हक़ और उसकी इरादत में सच्चे तो बहुत ही कम हैं के कमयाबी नायाबी में किब्रीयत अहमर जैसे हैं, इस दर्जा शज़ोनादिर हैं के एक आध ही पाया जाता है। वो कुंबों क़बीलों में से एक एक दो दो हैं। वो मअदुन हैं ज़मीन में, बादशाह हैं ज़मीन के। कोतवाल हैं शहरों और बाशिंदों के, उनके तुफ़ेल मख़्लूक़ से बलायें दूर हाती हैं और उन पर बारिशें बरसती हैं। उनकी बर्कत से हक़ तआला आसमानों से पानी बरसाता है उनकी वजह से रोईदगी लाती है। वो अपने इब्तिदाए हाल में भागते फिरते हैं एक पहाड़ की चोटी से दूसरी चोटी पर। एक शहर से दूसरे शहर की तरफ और एक वीराना से दूसरे वीराना की जानिब। जब किसी जगह पर पहचान लिए जाते हैं तो वहाँ से चल देते हैं। सबको अपनी पीठ के पीछे फैंकते, दुनिया की कुंजियाँ अहले दुनिया के हवाले करते और बराबर इसी हालत पर क़ायम रहते हैं यहाँ

तक के उनके गिर्द क़िलअे तामीर कर दिए जाते हैं (के कहीं नहीं जा सकते) नहरें उनके क़ुलूब की तरफ बहने लगतीं हैं और हक़ तआला की तरफ से लश्कर उनके इर्द गिर्द फैल जाता है। और एक की जुदा हिफाज़त की जाती है। सबका अेज़ाज़ किया जाता है और निगहबानी होती है और उनको मख़्लूक़ पर हाकिम बनाया जाता है। ये सारी बातें आम अक़्लों से बाहर हैं पस उस वक़्त उनको मख़्लूक़ पर तवज्जह करना फर्ज़ बन जाता है वो तबीबों जैसे होते हैं और सारी मख़्लूक़ बीमारों जैसी। तुझ पर अफ़्सोस! दअवे करता है के तू भी उनमें से है पस बता के उनकी कौन सी अलामत तुझ में मौजूद है हक़ तआला के क़ुर्ब और उसके लुत्फ की क्या निशानी है? तू खुदा के नज़दीक किस मर्तबे और किस मुक़ाम में है। मलकूत आला में तेरा नाम और लक़ब क्या है। हर शब को तेरा दरवाज़ा किस हालत पर बन्द किया जाता है? तेरा खाना और पीना मुबाह है या हलाल ख़ालिस? तेरी ख़्वाबगाह दुनिया है या आख़िरत या क़ुर्बे हक़ तआला? तनहाई में तेरा अनीस कौन है? ख़लवत में तेरा हम नशीन कौन है? ऐ दरोग़ गो! तनहाई में तो तेरा अनीस तेरा नफीस और शैतान और ख़्वाहिश और दुनिया के तफक्कुरात हैं और जलवत में शयातीन-उल-अनस हैं जो बदतरीन हम नशीन और फज़ूल बकवास वाले हैं ये बात बकवास और महेज़ दाअवे से नहीं आती। उसमें तेरी गुफ़्तगू महेज़ हवस है जो तुझ को मुफीद नहीं लाज़िम पकड़ सकून और गुमनामी को हक़ तआला के हुज़ूर में और बे अदबी से एहत्राज़, और अगर उसमें तेरा बोलना ज़रूरी हो तो हक़ तआला के ज़िक्र से और अहले अल्लाह के ज़िक्र से बर्कत हासिल करने के लिए होना चाहिए, ना इस तरह के तू उसका मुद्दई बन जाए अपने ज़ाहिर से हालाँके तेरा क़ल्ब उससे

खाली है। हर ज़ाहिर के बातिन उसके मवाफिक़ ना हो हज़ियान है। क्या तूने जनाब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का इर्शाद नहीं सुना के जो शख़्स (ग़ीबत करके) दिन भर लोगों के गोश्त खाता रहा उसका रोज़ह नहीं हुआ आपने बयान फरमा दिया के खाना पीना और इफ़्तार करने वाली चीज़ों ही के छोड़ने का नाम रोज़ह नहीं है बल्के उसके साथ गुनाहों को छोड़ने का भी इज़ाफा करना चाहिए। पस बचो ग़ीबत से के वो नेकियों को इस तरह खा लेती है जैसे आग सूखी लकड़ियों को खा लेती है। जिस शख़्स की तक़दीर में फलाह है वो उसकी आदत कभी नहीं डालता और जो ग़ीबत में मशहूर हो जाता है उसकी लोगों में हुर्मत कम हो जाती है और बचो शहेवत के साथ निगाह करने से के वो तुम्हारे क़लूब में मअसीयत का बीज बो देगी और उसका अंजाम दुनिया में अच्छा है ना आख़िरत में। और बचो झूटी क़सम खाने से के वो आबाद शहरों को चटयल बयाबान बना छोड़ती है के माल और दीन दोनों की बर्कत ले जाती है। तुझ पर अफ़्सोस के अपनी तिजारत को झूटी क़सम से रिवाज देता और अपने दीन का ख़सारा उठाता है। अगर तुझे अक़्ल होती तो जानता के अस्ल ख़सारा यही है। तू कहता है के खुदा की क़सम! इस जैसा माल शहर भर में कहीं नहीं और ना किसी के पास मौजूद है। खुदा की क़सम! ये इतने का है और खुदा की क़सम! मुझ को इतने में पड़ा है हालांके तू अपनी सारी गुफ़्तगू में झूटा है फिर अपने झूट पर गवाही देता और अल्लाह अज़्ज़ोजल की क़सम भी खाता है के "मैं सच्चा हूँ।" अनक़रीब वो वक़्त आएगा के तू अंधा और अपाहज होगा। खुदा तुम पर रहम करे। हक़ तआला के हुज़ूर में बाअदब रहो। जो शख़्स शरीअत के आदाब से अदब ना सीखेगा उसको क़यामत के दिन आग अदब

सिखाएगी। उस मुक़ाम पर किसी ने सवाल किया के फिर जिस शख़्स में ये पाँचों ख़सलतें (दअवा कमाल, ग़ीबत, नज़र बा शहेवत, कज़िब और दरोग़ सलफी) हों उसके रोज़ेह और वज़ू के बातिल होने का हुक्म देना चाहिए? आपने फरमाया के नहीं रोज़ह और वज़ू तो बातिल ना होगा लेकिन ये इर्शाद बतरीक़े वअज़ और तहदीद व तख़्वीफ के है।

3- वअज़ मोर्रिख़ा 12 ज़ीलहज्ज 545हि॰

जनाब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फरमाया है के क़लूब पर भी ज़ंग आ जाता है क़ुरआन पढ़ना, मौत को याद रखना और वअज़ की मजलिसों में हाज़िर होना उनकी सीक़ल है पस अगर साहिबे क़ल्ब ने उस ज़ंग का तदारूक कर लिया जिस तरह के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फरमाया है तो बहेतर है वरना ज़ंग स्याही बन जाता है और क़ल्ब स्याह हो जाता है। नूर से दूर हो जाने के सबब काला पड़ जाता है। दुनिया को मेहबूब समझने और तक़वा के बग़ैर (अंधा बनकर) उस पर गिरने की वजह से। क्योंके दुनिया की मोहब्बत जिसके क़ल्ब में जगह पकड़ जाती है उसका तक़वा जाता रहता है और वो दुनिया जमा करने लगता है ख़्वाह हलाल से हो या हराम से उसके जमा करने में उसकी तमीज़ उठ जाती है और हक़ तआला से और उसके मुलाहेज़ से शर्माना ज़ायल हो जाता है।

साहिबो! अपने नबी(स॰अ॰स॰) के इर्शाद को क़बूल करो और अपने दिलों का ज़ंग उस दवा से जो आप(स॰अ॰स॰) ने तुम पर ज़ाहिर कर दी है साफ कर लो। अगर तुम में से किसी शख़्स को कोई मर्ज़ लाहक़ हो जाए और कोई तबीब उसकी दवा बताए तो जब तक उसका इस्तेमाल नहीं कर लेते ज़िन्दगी दूभर पड़ जाती है

(फिर क़ल्ब के मर्ज़ में पैग़म्बर(स०अ०स०) की बताई हुई
दवा के इस्तेमाल से वे परवाई क्यों है) अपनी ख़लवतों
और अपनी जलवतों में अपने रब्बे अज़्ज़ोजल का मुराक़्बा
रखो। उसको अपना नसब-उल-ऐन बना लो के गोया तुम
उसको देख रहे हो क्योंके अगर तुम उसको नहीं देखत
तो वो तो तुम को देख रहा है (पस उसका हर वक़्त तुम
को देखते रहने का दिल से ध्यान रखना ही मुराक़्बा है।
ज़ाकिर वही है जो अपने क़ल्ब से अल्लाह का ज़िक्र करे
और जो क़ल्ब से ज़िक्र ना करे वो ज़ाकिर नहीं। ज़बान तो
क़ल्ब की ग़ुलाम है और ख़ादिम है (और ऐतबार आक़ा
का है ना के ग़ुलाम का) वअज़ के सुनने पर मदावमत
कर। क्योंके क़ल्ब वअज़ के सुनने से जब ग़ैर हाज़िर रहने
लगता है तो अंधा बन जाता है। तौबा की हक़ीक़त ये है
के जुमला अहवाल में हक़ तआला के अम्र की अज़्मत
मलहूज़ रहे और इसीलिए एक बुज़ुर्ग ने फरमाया है के
सारी भलाई दो बातों के अन्दर है यानी हक़ तआला के
हुक्म की अज़्मत को मलहूज़ रखना और उसकी मख़्लूक़
पर शफ़्क़त करना। हर वो शख़्स जो हक़ तआला के हुक्म
की अज़्मत ना करे और अल्लाह की मख़्लूक़ पर शफ़्क़त
ना करे वो अल्लाह से दूर है।

हक़ तआला ने मूसा अलेहिस्सलाम के पास वही भेजी
थी के "रहम करता के मैं तुझ पर रहम करूं। मैं बड़ा
रहीम हूँ। जो मेरी मख़्लूक़ पर रहम करता है मैं उस पर
रहम करता हूँ। और उसको अपनी जन्नत में दाख़िल कर
लेता हूँ।" पस मुबारक हो रहम करने वालों को तुम्हारी तो
उम्र इस क़िस्से में बर्बाद हुई के उन्होंने ये खाया और हम
ने ये खाया। उन्होंने ये पिया और हम ने ये पिया। उन्होंने ये
पहना, और हम ने ये पहना। उन्होंने इतना जमा किया और
हम ने इतना जमा किया। जो शख़्स फलाह चाहे उसको

चाहिए के अपने नफ़्स को मोहर्रमात और शुबहात और ख़्वाहिशात से रोके और हक़ तआला के हुक्म को बजा लाए और ममनूआत से बाज़ रहने और उसकी तक़दीर की मवाफ़क़त करने पर जमा रहे अहले अल्लाह हक़ तआला की मईय्यत में सब्र बने रहे। और खुदा से सब्र ना सके। उन्होंने सब्र किया उसके लिए और उसी के मुताल्लिक़। उन्होंने सब्र किया ताके उसकी मईय्यत नसीब हो और तालिब बने ताके उसका क़ुर्ब उनको हासिल हो जाए। वो अपने नफ़्सों और अपनी ख़्वाहिशों और अपनी तबीअतों के घर से बाहर निकल गए। शरीअत को अपने साथ लिया और अपने रब अज़्ज़ोजल की तरफ चल खड़े हुए। पस उनके सामने आफतें आईं। होल और मसायब भी आए, ग़मूम व हमूम भी आए। भूक प्यास भी आई बरहंगी भी आई, ज़िल्लत व ख़्वारी भी आई मगर उन्होंने किसी की भी परवाह ना की ना अपनी रफ़्तार से बाज़ आए और अपनी तलब से जिस पर मुतवज्जह थे मुतग़ईय्यर हुए उनका रूख़ आगे की जानिब रहा और उनकी चाल सुस्त ना पड़ी। बराबर उनकी यही हालत रहती है यहाँ तक के क़ल्ब और क़ालिब का बक़ा मुतहक़्क़िक़ हो जाता है।

साहिबो! हक़ तआला से मिलने के लिए काम करो और उसकी मुलाक़ात से पहले उससे शर्माओ (क्या मुंह लेकर सामने जाएंगे) मोमिन की हया अव्वल हक़ तआला से है उसके बाद उसकी मख़्लूक़ से। अल्बत्ता उस सूरत में जिसको तअल्लुक़ हो दीन से और शरीअत की हदूद की हतक से, तो उस वक़्त उसको हया करना जायज़ नहीं। (बल्के अल्लाह अज़्ज़ोजल के दीन के बारे में शर्म को बालाए ताक़ रख दे और बेबाक बनकर बिला रूरिआयत नसीहत करे) दीन की हदूद को क़ायम करे और हक़ तआला के हुक्म की तामील करे (क्योंके वो हुक्म फरमाता

हैं के) दीने खुदावंदी के बारे में मुज्रिमों को सज़ा देते
वक़्त तुम को शफ़्क़त ना होनी चाहिए। जनाब रसूल
अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का ताबअे होना
जिस शख़्स के लिए सही हो जाता है तो हज़रत(स॰अ॰स॰)
उसको अपनी ज़िरह और खूद पहनाते अपनी तलवार
उसके गले में डालते, अपने अदब और ख़सायल व
आदात से उसको आरास्ता करते और अपनी ख़लअतों में
से उसको ख़लअत बख़्शते हैं और उससे निहायत खुश
होते हैं के आपकी उम्मत में कैसा होनहार निकला और
उस पर अपने परवरदिगार का शुक्रिया अदा फरमाते हैं
(के ऐसी सआदतमंद रूहानी औलाद अता फरमाई) फिर
इस अपनी उम्मत में अपना नायब उम्मत का राहनुमा और
उनको दरवाज़ाऐ खुदावंदी की तरफ बुलाने वाला बना देते
हैं। बुलाने वाले और राहनुमा आप ही थे मगर जब आपको
हक़ तआला ने उठा लिया तो आपके लिए उम्मत में से वो
लोग क़ायम कर दिये जो उनमें आपके जानशीन बनते हैं
और वो लाखों बल्के अनगिनत मख़्लूक़ में से एक दो ही
हैं। वो मख़्लूक़ को रास्ता बताते हैं। और उनकी ईज़ाओं को
बर्दाश्त करके हर वक़्त उनकी ख़ैरख़्वाही में लगे रहते हैं।
मुनाफिक़ों और फासिक़ों के मुंह पर हंसते और तरह तरह
की तदबीरें करते हैं के किसी तरह उनको इस हालत से
छुड़ायें जिसमें वो मशग़ूल हैं और हक़ तआला के दरवाज़े
पर उनको ला डालें। और इसी लिए एक बुज़ुर्ग ने फरमाया
है के "फासिक़ के मुंह पर नहीं हंसता मगर आरिफ।"
यानी आरिफ उसके मुंह पर हंसता और ऐसा ज़ाहिर करता
है गोया उससे वाक़िफ ही नहीं। हालांके वो आगाह है
उसके दीन के घर की वीरानी से और उसके दिल के चहेरे
की स्याही से और उसके खोट और तकद्दुर की कसरत से।
फासिक़ और मुनाफिक़ तो यूं गुमान करते हैं के हमारा

हाल उससे मख़्फ़ी रहा। और उसने हम को पहचाना नहीं। नहीं नहीं उसकी कोई इज़्ज़त नहीं (जिस के सबब उनका हाल मख़्फ़ी रहे) वो आरिफ़ से छुप नहीं सकते। आरिफ़ उनको पहचान लेता है। निगाह और नज़र और बात और हर्कत से। उनको शनाख़्त कर लेता है उनके ज़ाहिर और बातिन से। और उसमें मतलक़ शक़ नहीं। अफ़्सोस! तुम गुमान करते हो के तुम्हारी हालत सिद्दिक़ीन व आरफीन व आमलीन से पौशीदा रहती है। तुम किस वक़्त तक अपनी उम्रों को नाचीज़ के अन्दर ज़ाय करते रहोगे।

4- वअज़ मोर्रिख़ा 7 जमादीउस्सानी 545हि॰

आक़िल बन और झूट मत बोल। तू कहता तो ये है के मैं अल्लाह अज़्ज़ोजल से डरता हूँ हालाँके डरता है दूसरों से। ना किसी जिन्न से डर ना इंसान से ना फरिश्ते से और ना किसी जानवर नातिक़ या ग़ैर नातिक़ से, ना दुनिया के अज़ाब से डर और ना आख़िरत के अज़ाब से बस डरना तो उसी से चाहिए जो अज़ाब देने वाला है(यानी हक़ तआला) अक़्लमंद शख़्स हक़ तआला के बारे में किसी मलामत गर की मलामत से डरा नहीं करता। वो ग़ैर अल्लाह की बात से बेबहेरा है (के किसी की बात पर भी कान नहीं धरता) सारी मख़्लूक़ उसके नज़दीक (गोया) बेकस बीमार और मेहताज है। यही शख़्स और जिनकी भी उस जैसी हालत हो असल अलामत हैं जिनके इल्म से नफ़अ पहुँचता है। जो शरीअत और हक़ायके़ इस्लाम के आलिम हैं वो दीन के तबीब हैं के दीन की शिकस्तगी को जोड़ते हैं। ऐ वो शख़्स जिसका दीन शिकस्ता हो गया है उनकी तरफ क़दम बढ़ाता के वो तेरी शिकस्तगी की बंदिश करें। जिस (खुदा) ने बीमारी उतारी है वही दवा भी उतारता है। (पस इलाज से ना उम्मीद मत हो। बाक़ी रहा बीमारी में मुबतला करना तो वो ख़ास मसलेहत की

वजह से है और) वो मसलेहत को दूसरों से ज़्यादा जानता है। तू अपने रब पर उसके फअेल में तोहमत मत रख। (के बिला वजह बीमार बना दिया) इल्ज़ामात और मलामत के लिए तेरा नफ़्स दूसरों की बनिसबत ज़्यादा मुसतहिक़ है। नफ़्स से कह दे के अता उसके लिए है जो अताअत करे और असा उसके लिए है जो मअसीयत करे (पस ना तो मअसीयत करता ना अमराज़ की लाठियाँ खाता) जब अल्लाह किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फरमाता है तो (उसकी सहेत व दौलत) छीन लेता है। पस अगर वो सब्र करता है तो उसको रफअत बख़्शता है। खुश ऐशी नसीब फरमाता, अताओं से नवाज़ता और सरमाया अता फरमाता है। या अल्लाह हम तुझ से क़ुर्ब का बग़ैर बला के सवाल करते हैं। अपनी क़ज़ा व क़द्र में हमारे साथ शफ़्क़त का बर्ताओ कर और शरीरों की शरारत और बदकारों की मक्कारी से हम को बचा और हमारी हिफाज़त फरमा। जिस तरीक़े से भी तू चाहे और जिस तरह चाहे। हम तुझ से सवाल करते हैं दीन में और दुनिया व आख़िरत में अफ्व और आफीयत का। हम तुझ से सवाल करते हैं आमाले सालेहा की तौफीक़ का और आमाल में इख़्लास का। हमारी दुआ क़बूल फरमा ले।

अल्लाहुम्मग़फिर लीमोअल्लीफीही वली कातीबीही वली वालीदीहिमा

786/92

किताब पड़ने से पहले दुआ कीजिए इस जाक सा र के लिए दुनिया को अलविदा करते वक्त मेरी जवान पर कलमा ए तययव और दिल में दीदार मुस्तफा हो

आमीन

आसिफ अली बरेली शरीफ

फोन नंबर 7088866786. 9837519600